तीसरा विभाग · आर्थिक समानता

चौथा विभाग सरक्षकता

प्रकाशकका निवेदन

आर्थिक और औद्योगिक जीवनसे सम्वन्धित प्रश्नो पर गाधीजीकी रचनाओका श्री व्ही० वी० खेर द्वारा सम्पादित यह मकलन प्रकाशित करते हुअे हमे वहुत खुशी होती हे। दुनियामे और अपनी पचवर्पीय योजनाओके द्वारा सरकारने जो औद्योगिक और आर्थिक नीति अपनायी है अुसके कारण खासकर हमारे देशमे आजकल अिस विपयका वहुत महत्त्व है। अिसलिअे अिस सग्रहका प्रकाशन वहुत समयोचित है और हम आशा करते है कि अिस पुस्तकसे अुन लोगोकी अेक वडी आवश्यकताकी पूर्ति होगी, जो अिस सम्वन्धमे राष्ट्र-पिताके विचारो और आदर्शोको जानना चाहते हैं और अुनके अनुसार योजना करना चाहते हैं।

वैसे अिस विपय पर हमारे द्वारा प्रकाशित यह पहली पुस्तक नही है। गाधी-साहित्यके पाठक जानते है कि अिस विशाल और महत्त्वपूर्ण विपय पर और अिसके विभिन्न पहलुओ पर हम अभी तक काफी पुस्तके प्रकाशित कर चुके हैं — जैसे, सेंट परसेंट स्वदेशी, खादी क्यो और कैसे, हमारे गावोका पुनर्निर्माण, अहिंसक समाजवादकी ओर आदि। अिस सग्रहकी विशेपता यह है कि यह अिस प्रश्नके सारे पहलुओको अेक सुनियोजित क्रमके अनुसार अेक ही पुस्तकमे अुपलब्ध कर देता हे और अुसका सम्पादन अत्यत योग्यतापूर्वक अैसे ढगसे किया गया है कि सामान्यत आधुनिक दुनियाके और खासकर भारतके सामाजिक-आर्थिक और औद्योगिक सवाल पर गाधीजीके विचार हमारे सामने विलकुल स्पष्ट हो जाते है।

पुस्तकके परिश्रमी सपादकने अिस विपय पर गाधीजीके विचारोको अेक-साथ और सुसम्पूर्ण रूपमे पेश करनेके लिअे जो सामग्री अिकट्ठी की वह वहुत ज्यादा थी, अिसलिअे यह ज्यादा अच्छा समझा गया कि अुसका ठीक ढगसे विभाजन कर लिया जाय और अुसे खडोमे प्रकाशित किया जाय। विद्वान सम्पादकने यह कार्य वहुत अच्छी तरह कर दिया है।

सारी सामग्री अठारह विभागोमे वाट दी गयी है और चुने हुअे अश प्रत्येक विभागमे अेक निश्चित क्रमके अनुसार रखे गये है। अिसके सिवा, विद्वान सम्पादकने अेक लम्वी भूमिका लिखकर अिन सव विभागोकी सारी सामग्रीका सार

और गाधीजीके विचारोकी अेक स्पष्ट तसवीर दे दी है। ये अठारह विभाग अुनकी अुपयुक्तताके अनुसार तीन खडोमे वाट दिये गये है, जिनकी पृष्ठसख्या कुल मिलाकर करीव ८००* हो गयी है।

पहले खडमे गाधीजीकी आर्थिक और औद्योगिक विचारधाराके वुनियादी सिद्धान्तोका विवरण है। अिस पहले खण्डमे सम्पूर्ण सग्रहके पहले चार विभाग आ जाते है।

गाधीजीके अनुसार, स्वदेशी अपने पडोसीके प्रति मनुष्यका कर्तव्य वतानेवाला सिद्धान्त है। अिस दृष्टिसे देखा जाय तो यह सिद्धान्त मनुष्यके आर्थिक धर्मका निरूपण करता है। आर्थिक और औद्योगिक सघटनका सही ढाचा, आर्थिक सत्ता और अुत्पादनका विकेन्द्रीकरण, खादी और ग्रामोद्योग आदि विषयो पर गाधीजीके विचारोका स्रोत यही वुनियादी सिद्धान्त था। गाधीजीके दर्शनके अिस व्यापक पहलू और खादी तथा ग्रामोद्योग आदि अुसकी निष्पत्तियोका सग्रह सपादकने दूसरे खण्डमे किया है। अिस दूसरे खण्डमे अगले सात विभागोका समावेश हुआ है।

अिस समस्याका सारा विवेचन पश्चिमी अुद्योगवादकी पृष्ठभूमिमे किया गया है। आजकल हम सव यह स्वीकार करने लगे है कि यह पश्चिमी अुद्योगवाद आर्थिक जीवन और आर्थिक सघटनका अेक वहुत ज्यादा केन्द्रीकरणकी दिशामे ले जानेवाला सिद्धान्त है। और अिसमे कारणभूत है आवुनिक विज्ञान, यत्र-विज्ञान, साम्राज्यवादी व्यापार और व्यवसाय तथा राजनीति। व्रिटिश शासनमे आर्थिक और औद्योगिक सघटनकी अिस प्रणालीका — जो अपनी अनोखी समस्याओको जन्म देती है — हमने काफी अनुभव लिया है। गाधीजीने अिन सव समस्याओको भी छुआ है और सत्य तथा अहिंसाके अपने जीवन-दर्शनके अेक हिस्सेके तौर पर सत्याग्रहके अपने अनुपम शस्त्रका प्रयोग अुन पर किया है। अुनके विचारोका यह हिस्सा अिस पुस्तकके तीसरे खण्डमे सगृहीत हुआ है, जिसमे वाकी सात विभाग है।

अिन तीनो खडोमे से प्रत्येकके साथ अुसकी अपनी सूची जोड दी गयी है। प्रत्येक खण्डमे पृष्ठोकी गिनती अलग-अलग हुअी है।

सग्रहका यह सारा काम सपादकने शुद्ध प्रेमकी भावनासे किया है और अिसमे अुनके कुछ कीमती वर्ष खर्च हुअे है। अुन्होने अिस विषय पर गाधीजीके

* नये परिवर्धित सस्करणमें पृष्ठसख्या करीव ९०० हो गयी है। यह हिन्दी अनुवाद सितवर १९५९ में छपे नये सस्करणका ही है।

विचारोंका वैज्ञानिक अध्ययन करनेका निश्चय किया और अिसके लिअे आवश्यक अनुसंधान-कार्यकी अेक योजना बनायी। अुसका परिणाम अब अिस पुस्तकके रूपमें भेंट किया जा रहा है। श्री शंकरलाल बैंकरने पुस्तकके लिअे प्रस्तावना लिखनेकी मेहरबानी की है, जिसके लिअे मैं अुनका कृतज्ञ हूं। मैं श्री व्ही० वी० खेरको भी धन्यवाद देता हूं कि अुन्होंने अपने सुदीर्घ अध्ययनका यह फल प्रकाशनके लिअे नवजीवन ट्रस्टको सौंपा। हम यह पुस्तक अिस आशासे प्रकाशित कर रहे हैं कि हमारे राष्ट्रीय पुनर्निर्माणकी आजकी स्थितिमें हमारे लिअे और अेक हद तक दुनियाके लिअे भी — जो, अनजाने ही सही, शान्तिकी अर्थ-व्यवस्थाकी खोजमें है — यह अुपयोगी सिद्ध होगी।*

१५-१-'५७

* प्रथम अंग्रेजी संस्करणका निवेदन।

आभार-प्रदर्शन

'आर्थिक और औद्योगिक जीवन — अुसकी समस्याये और हल' का यह पहला भाग गाधीजीकी कल्पनाके अहिंसक समाजवादके लक्ष्य ओर अुसके मार्गका वर्णन करता हे। दूसरे भागमे गाधीजीकी आर्थिक शिक्षाओका वर्णन है। तीसरे भागमे खेती और अुद्योगसे सम्बन्धित समस्याओ पर अुनके विचार पेश किये गये है। अुनकी अिन रचनाओमे हमे गाधीजीके तत्सम्वन्धी सिद्धान्तोका और अिन सिद्धान्तोको व्यवहारमे कैसे अुतारा जा सकता है तथा हमे जिन समस्याओका सामना करना पड रहा हे अुन्हे हल करनेमे अुनका प्रयोग कैसे किया जा सकता है, अिस प्रश्नका अुत्तर भी मिलेगा। सक्षेपमे, वे हमे अपने आर्थिक आदर्शोकी झाकी भी कराते है और अुन्हे मूर्तिमान करनेके अुपाय भी वताते है।

गाधीजीके अपने लेखोके सिवा, अुनके भापणो या मुलाकातियोके साथकी अुनकी वातचीतके दूसरे लोगो द्वारा दिये गये विवरणोका भी समावेश अिस पुस्तकमे किया गया है। अिन लेखोके मूल शीर्पक हमेशा अुस-अुस लेखके मुख्य वक्तव्यको प्रगट नही करते थे। वे प्राय अमुक तात्कालिक प्रश्नकी ही सूचना करते थे। अत कअी जगह मैने मूल शीर्पक बदल दिये है।

मै श्री शकरलालभाअी बैंकरका, जिन्होने अिस पुस्तकके सकलनमे मेरा मार्गदर्शन किया हे, वहुत कृतज्ञ हू। गाधीजीकी राजनीतिक लडाअियोमे, चरखा-प्रचारमे और अुनके द्वारा मजदूरोके हितके लिअे किये गये काममे वे गाधीजीके अत्यत पुराने और निकटतम साथियोमे से है। वे 'यग अिडिया' पत्रके पहले प्रकाशक थे। वे अहमदावादके कपडा-मजदूर सघके सस्थापक-सदस्योमे से है और आज भी अुसके पीछे रही हुअी सच्ची शक्ति वे ही है। गाधीजीने अुन्हे अखिल भारत चरखा-सघका पहला मत्री चुना था। अिन पदो पर काम करते हुअे अुन्हे गाधीजीके विचारोको समझने और आत्मसात् करनेका अद्वितीय अवसर मिला। अिस पुस्तकके लिअे प्रस्तावना लिखकर अुन्होने मुझे वहुत अुपकृत किया है।

नवजीवन ट्रस्टके व्यवस्थापक श्री जीवणजीभाअी देसाअीने मुझे 'यग अिडिया' और 'हरिजन' की फाअिलोका अुपयोग करनेकी सुविधा दी, अुसके

लिअे मै अुनका अृणी हू। मेरी पत्नी अिन्दिराने भूमिकाकी नकल करनेमे मुझे जो सहायता दी, अुसके लिअे मै अुसे भी धन्यवाद देता हू।

जी० अे० नटेसन अेण्ड क० ने मुझे 'स्पीचेज अेण्ड राअिटिग्ज़ ऑफ महात्मा गाधी' (चौथा सस्करण) से अिच्छानुसार अुसके अश अुद्धृत करनेकी अनुमति दी। अुनकी यह सहायता मै सधन्यवाद स्वीकार करता हू। मै श्री डी० जी० तेदुलकरको अुनकी पुस्तक 'महात्मा' खड १, २, ३ और ४ से अुसके अश अुद्धृत करनेकी अनुमतिके लिअे, श्री अेस० राधाकृष्णन और अुनके प्रकाशको, जॉर्ज, अेलेन अेण्ड अनविनको 'महात्मा गाधी — अेसेज अेण्ड रिफ्लेक्शन्स ऑन हिज़ लाअिफ अेण्ड वर्क' मे से अुसके अश अुद्धृत करनेकी अनुमतिके लिअे और मि० विन्सेन्ट शीन तथा अुनके प्रकाशको, केसेल अेण्ड क० लि० को 'लीड काअिन्डली लाअिट' मे से अुसके अश अुद्धृत करनेकी अनुमतिके लिअे धन्यवाद देता हू। मै 'मॉडर्न रिव्यू' का अुसके अक्तूबर १९३५ के अकसे अेक अश अुद्धृत करनेकी अनुमतिके लिअे और 'अमृतबाजार पत्रिका' का अुसके २ अगस्त, १९३४ के अकसे अेक अश अुद्धृत करनेकी अनुमतिके लिअे आभारी हू।

बम्बअी, २७ जून १९५६

व्हो० बी० खेर

प्रस्तावना

किसी महापुरुषकी महत्ताका सही माप परवर्ती पीढियों पर असके जीवन और असके विचारोंके प्रभावमें दिखता है। हम गांधीजीको अिस कसौटी पर परखें तो हमें यही कहना होगा कि वे युग-पुरुष थे, अपने युगके निर्माता थे। समयके साथ अनके विचारोंके प्रभावका विस्तार ही हुआ है। भारतमें और दूसरे देशोंमें भी अधिकाधिक लोग अिन विचारोंकी ओर आकृष्ट हो रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय और वैदेशिक नीतिका प्रेरणा-स्रोत अनकी शिक्षायें ही हैं। लेकिन यह भी सच है कि हम अभी भी सर्वोदय समाजकी या सच्चे कल्याण-राज्यकी अनकी कल्पनासे बहुत दूर हैं। अितिहास बतायेगा कि किस तरह हमें अपना यह अद्देश्य प्राप्त करनेके पहले प्रेरणा और मार्गदर्शनकी खोजमें, बार बार अिस महान शिक्षकके ही पास आना पडेगा। अन्होंने अनेक समस्याओं पर गहराओसे विचार किया था और अनमें से कओ पर प्रत्यक्ष प्रयोग भी किये थे। जिन परिणामों पर वे पहुंचे अन्हें अन्होंने अपने जीवनमें सावधानीके साथ अतारा था और अपनी विविध प्रवृत्तियोंके द्वारा प्रभावकारक ढंगसे दुनियाके सामने अन्हें पेश किया था। जाहिर है कि मनुष्यके बुनियादी सवालों पर अनके ये विचार हमारे लिअे बहुत महत्त्व रखते हैं और अनका अध्ययन सबके लिअे अवश्य लाभकारी सिद्ध होगा।

गांधीजी मूलतः कर्म-परायण व्यक्ति थे। सार्वजनिक कार्यके क्षेत्रमें अन्होंने प्रवेश किया तबसे अपने जीवनका प्रत्येक क्षण अन्होंने दरिद्र-नारायणकी सेवामें लगाया। समाजके अिस दलित वर्गके साथ संपूर्ण तादात्म्य साधकर तथा घनिष्ठ संपर्क और अनवरत प्रयत्नके द्वारा अन्होंने अन लोगोंकी चेतनाको जगाया तथा अन्हें न्याय और जीवनकी सुख-सुविधाओंकी प्राप्तिके लिअे कोशिश करनेकी ताकत और हिम्मत दी। वे जीवनकी वास्तविकताओंसे प्रेरणा ग्रहण करते थे, लोगोंकी शक्ति और अनकी कमजोरियोंका, धर्मके प्रति अनकी स्वाभाविक रुचिका और सृष्टिके शाश्वत नियमोंमें अनकी निष्ठाका विचार करते थे और अिस तरह अन्हें आचार-धर्मके स्वाभाविक नियम प्राप्त हुअे थे। वे जीवनको असके समग्र रूपमें देखते थे, खंडोंमें नहीं, और अिसलिअे अन्होंने हमें जीवनके सारे विविध पहलुओं पर नेतृत्व

प्रदान किया है। अपने आश्रमके अन्तेवासियोके लिअे अुन्होने जो नियम निर्धारित किये थे, अुनमे हमे अुनके वुनियादी आदर्शोका मर्म मिलता है।

अुनके आर्थिक और राजनीतिक विपयो पर लिखे गये लेखोके अध्ययनसे हमे अुनके अुन सामान्य विचारोका पता चल जाता है, जो जीवनके विविध प्रश्नो पर अुनके मतामतोके मूलमे निहित है। परिस्थितियोके अनुसार वे अुन पर कही कम और कही अधिक जोर देते दिखेगे, लेकिन अुनके अिन आधारभूत विचारोका स्रोत अेक ही है — पीडित मानवताके प्रति अुनका गहरा और सक्रिय प्रेम तथा सत्य और अहिसाके वुनियादी सिद्धान्तोमे अुनकी यह अविचल निष्ठा कि अपने अुद्देश्योकी प्राप्तिके लिअे अेकमात्र विहित साधन ये ही है।

गाधीजी जन्मजात आशावादी थे। और अुनका मानव-प्रेम पापीका भी वहिष्कार नही करता था। कारण, वे मानते थे कि कोअी भी मनुष्य स्वभावसे दुष्ट नही होता, वह सिर्फ अपनी परिस्थितियोका या वातावरणका शिकार होता है। अुन्होने लोगोको मनुष्यमे रही हुअी वुराअी और मनुष्यमे भेद करना सिखाया। अिसीलिअे अुन्होने जहा अेक ओर लोगोको विदेशी सरकारसे अुसके अत्याचारोके खिलाफ लडनेके लिअे अुत्साहित किया, वहा दूसरी ओर शासनाधिकारियोके प्रति आदर और सद्भाव रखना भी सिखाया। राजाओ, जमीदारो और अमीरोके प्रति भी अुनका अैसा ही रुख था। वे अुनके दुरभिमान तथा सत्ता और अधिकारके प्रदर्शनकी कडी टीका करते थे, लेकिन अुनके साथ मित्रताका नाता जोडनेमे अुन्हे कोअी सकोच नही होता था।

लोग अुन्हे मुख्यत राजनीतिक नेता, आध्यात्मिक विचारक और रचनात्मक समाज-सुधारकके रूपमे ही पहचानते है। यह वात वहुत कम लोग जानते है कि अुद्योगो और मजदूरोसे सम्वन्धित समस्याओसे भी अुनका गहरा सम्वन्ध रहा था। अिस क्षेत्रमें गाधीजीके योगदानका विदेशोमे लोगोको वहुत ही कम ज्ञान है। यह पुस्तक अिस अज्ञानको दूर करनेमे वहुत अुपयोगी सिद्ध होगी।

सपादकने अिस पुस्तकके तीन खडोमे सामाजिक-आर्थिक और औद्योगिक सवालो पर गाधीजीके विचारोका सकलन करके जनताकी और खासकर गाधीजीकी शिक्षाओके अध्येताओकी वहुत कीमती सेवा की है। अुन्होने पुस्तककी रचना अिस विषयसे सम्वन्धित गाधीजीके लेखोके विवेकपूर्ण अध्ययनके वाद की है और वह अुन सव लोगोके लिअे वहुत अुपयोगी मार्गदर्शिकाका काम देगी, जो अिन सवालोके हलके लिअे गाधीजीसे प्रेरणा ग्रहण करना चाहते है।

जैसा कि सपादकने अपनी भूमिकामे कहा है, "गाधीजीके विचारोके साथ अज्ञानके कारण प्राय बहुत अन्याय किया जाता है।" यहा गाधीजीके अिन लेखोको व्यवस्थित रूपमे अिस तरह पेश करनेका प्रयत्न किया गया है, जिससे कि अिस विषयके विविध पहलुओ पर अुनके विचार स्पष्ट रूपसे सामने आ जाये और पाठक अुन्हे आसानीसे समझ सके। गाधीजी अत्यत गतिशील पुरुष थे। अुनके जीवनमे हम निरन्तर विकास करते रहनेका गुण देखते है। अुनके विचारोमे समय समय पर परिवर्तन हुआ दिखता है, यद्यपि जीवनके बुनियादी सिद्धान्तोमे अुनकी निष्ठामे न तो कभी कोअी परिवर्तन हुआ और न अुसमे कभी कमी आयी। अिस सकलनमे लेखोको जिस क्रमसे सजाया गया है अुसके कारण अपने जीवन-कालमे विविध प्रवृत्तियोके दरमियान गाधीजीके विचारोमे होनेवाले अिस विकासको पाठक आसानीसे देख सकेगे।

श्री खेरने अत्यत परिश्रमपूर्वक पाठकोके लिअे गाधीजीके विचारोका यह व्यवस्थित सकलन सुलभ कर दिया, अिस बात पर मै अुन्हे बधाअी देता हू। अनेक वर्षोके लेखो और भाषणोके रूपमे फैली हुअी विपुल सामग्रीमे से अुन्होने आवश्यक अशोका विवेकपूर्वक चुनाव किया और फिर अुन्हे पद्धतिपूर्वक अिस तरह सजाया है कि पाठकोको अुन्हे समझनेमे बहुत सहायता मिलती है। अिसके सिवा, श्री खेरके अिस परिश्रमके फलस्वरूप हमे अपने जीवनके अनेक महत्त्वपूर्ण पहलुओ पर गाधीजीके विचारोका अुनके अपने ही शब्दोमे अेक अैसा कीमती सकलन मिल गया है, जिसका हम अपनी आवश्यकताके अनुसार जब चाहे तब आसानीसे अुपयोग कर सकते है। अुन सब लोगोके लिअे, जो गाधीजीके विचारो और अुनकी शिक्षाओका अध्ययन करना चाहते है और खास कर अुन सामाजिक कार्यकर्ताओके लिअे जो सर्व-हित-कारी न्यायपूर्ण समाजकी स्थापनामे अनुराग रखते है, मै अिस पुस्तककी सिफारिश करता हू।

अहमदाबाद, २३–३–'५६ शकरलाल जी० बैंकर

अनुक्रमणिका

दूसरा विभाग . शरीर-श्रम

भूमिका

"अेक अन्य कारणसे भी, महात्मा गाधी — व्यक्तिश मुझे अिस बातका पूरा विश्वास है — अेक महान अैतिहासिक विभूतिके रूपमे पूजे जायेगे। वह कारण यह है वे दो अत्यत विभिन्न युगोकी ठीक सधिरेखा पर खडे हुअे है। अेक ओर तो वे भारतकी सन्त-सम्बन्धी परम्परागत धारणाको मूर्तिमान करते है और दूसरी ओर अुनमे हमे जननेताका भी अत्यत आधुनिक और अुत्कृष्ट नमूना मिलता है। अिस हद तक अुनकी अैतिहासिक स्थितिकी तुलना जान दि बैप्टिस्टसे की जा सकती है। बहुत सभव ह कि मनुष्य भविष्यमे जैसा बननेवाला है, अुसकी अुस भावी स्थितिमे पुराने किस्मके अेकागी सतका घटनाओके निर्माणमे या अितिहासकी रचनामे विशेष स्थान नही होगा। भावी मनुष्य सपूर्ण मनुष्य होगा, जिसमे आत्मतत्त्व और जड तत्त्वका सतुलन होगा। लेकिन अिस नये मनुष्यके लिअे अभीष्ट परिस्थितियोका निर्माण दोनो युगोके सधिस्थल पर आसीन गाधी जितना कर रहे है, अुतना कोअी अन्य नही।"*

— काअुण्ट हरमान केसरलिग

गाधीजी अेक जटिल और अनबूझ पहेली थे। वे सन्त भी थे और जननेता भी थे। किसी अेक व्यक्तिमे सत और जननेताका यह सम्मिश्रण अविश्वसनीय मालूम होता है, लेकिन गाधीजी तो अद्‌भुत थे और यह अविश्वसनीय सम्मिश्रण वे सचमुच सिद्ध कर सके थे। विविध धर्मोके लम्बे अितिहासमे सामान्यत यही माना जाता रहा है कि आध्यात्मिक मूल्य साधुओ और सन्यासियोकी ही चिताका विपय है, और लोगोको अुनकी खास परवाह नही करनी है। लोगोका परम्परागत विश्वास यही रहा है कि धर्मका क्षेत्र अलग है और व्यवहारका अलग है, दोनोमे कोअी पारस्परिक सम्बन्ध नही है। गाधीजी शायद पहले अैतिहासिक व्यक्ति थे जिन्होने जीवनके अिन दो महत्त्वपूर्ण क्षेत्रोके अिस कृत्रिम विभाजनको चुनौती दी। अुन्होने सामान्य दुनियादारीके जीवनमे आध्यात्मिक मूल्योका सचार किया और अुनकी

* अेस० राधाकृष्णन् द्वारा सम्पादित 'महात्मा गाधी — अेसेज अेण्ड रिफ्लेक्शन्स ऑन हिज लाअिफ अेण्ड वर्क' (जार्ज, अेलेन अेण्ड अनविन), पृ० १६९।

स्थापनाका प्रयत्न किया। लोकमान्य तिलक जैसे महान विद्वान और चोटीके नेता भी धर्म ओर व्यवहारको अलग-अलग माननेवाली अुसी पुरानी दृष्टिके समर्थक थे। अिससे सिद्ध होता है कि परम्परागत विश्वासोकी जड कितनी मजबूत होती है और वे कितनी मुश्किलसे मिटते है। जाहिर है समाजमे यह बुराअी बहुत गहरी पैठी हुअी है। लोकमान्य तिलकके अिस कथन पर कि "राजनीति दुनियादारीके व्यवहारमे निपुण दुनियादार लोगोका विषय है, साधुओका नही" लोकमान्यकी आलोचना करते हुअे गाधीजीने लिखा था

> "लोकमान्यके प्रति पूर्ण आदरका भाव रखते हुअे, मै यह कहनेका साहस करता हू कि यह विचार कि दुनिया साधुओके लिअे नही है बौद्धिक आलस्यका द्योतक है। सब धर्मोकी सारभूत शिक्षा यही रही है कि पुरुषार्थका विकास करो और पुरुषार्थका अेकमात्र अर्थ है— साधु बननेके लिअे, शब्दके पूरे अर्थमे सज्जन बननेके लिअे, तीव्र प्रयत्न। और अन्तमे जब मैने वह वाक्य लिखा जिसमे यह कहा गया था कि लोकमान्यकी मान्यताके अनुसार तो राजनीतिमे जो भी किया जाय सब अुचित ही है, अुस समय मेरे मनमे अुनके द्वारा अकसर व्यवहृत यह अुक्ति थी—'शठ प्रति शाठ्यम्'। मै मानता हू कि यह अुक्ति अेक अनिष्ट नियमका विधान करती है। और मै तो यह आशा करता हू कि अपनी विचक्षण बुद्धिके बल पर लोकमान्य स्वय ही अेक दार्शनिक प्रबध लिखकर अिस नियमकी असत्यता सिद्ध कर दिखायेगे और अिस तरह अपने देशवासियोको चकित तथा प्रसन्न कर देगे। जो भी हो, 'शठ प्रति शाठ्यम्' के नियमके खिलाफ मै अपना तिहाअी सदीका परखा हुआ अनुभव रखता हू ओर कहता हू कि सच्चा नियम 'शठ प्रति शाठ्यम्' नही, 'शठ प्रत्यपि सत्यम्' है।" *

---

* यग अिडिया, २८–१–'२० 'शठ प्रति शाठ्यम्' का अर्थ है— शठके प्रति शठताका ही व्यवहार होना चाहिये। अिसके खिलाफ गाधीजी 'शठ प्रत्यपि सत्यम्' यानी शठके प्रति भी सत्यके ही व्यवहारकी हिमायत करते है।

धम्मपदकी नीचे दी जा रही गाथाओमे भगवान बुद्धने भी यही विचार प्रगट किया है

न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचन।
अवेरेन च सम्मन्ति अेस धम्मो सनन्तनो।।
अक्कोधेन जिने कोध असाधु साधुना जिने।
जिने कदरियं दानेन सच्चेनालिकवादिन।।

व्यावहारिक आदर्शवादी. अूपर दिये गये अुद्धरणसे पाठकके मन पर अैसी छाप नही पडनी चाहिये कि गाधीजी स्वप्नसेवी थे या कि आदर्शकी कल्पनाओमे विहार किया करते थे। अैसा मान लेना बिलकुल गलत होगा। गाधीजी स्वप्नसेवी कदापि नही थे। अुनका दावा था कि वे व्यावहारिक आदर्शवादी है।*

गाधीजीके विचारोके बारेमें अज्ञान. गाधीजीके विचारोके साथ अज्ञानके कारण प्राय बहुत अन्याय किया जाता है। विविध विषयो पर गाधीजीके मतामतोके बारेमे अधिकाश लोगोकी धारणाये बहुत अस्पष्ट है। यह अज्ञान सामान्य लोगो तक ही सीमित हो, सो बात नही, वह विद्वान माने जानेवालोमे भी पाया जाता है। अिस स्थितिका कारण गाधीजीकी शिक्षाओंके वैज्ञानिक अध्ययनका अभाव है।

गाधीजीके विचारोके अध्ययनकी सही पद्धति. गाधीजीकी शिक्षाओके वैज्ञानिक अध्ययनकी सही पद्धति यह होगी कि अुनके वचनो या लेखोको समयानुक्रमके अनुसार अिकट्ठा किया जाय और अुन्हे अुन परिस्थितियोके साथ जोडा जाय जिसमे वे कहे गये अथवा लिखे गये थे। अिस तरह हम हरअेक वचनको अुसके अुचित सदर्भमे देख सकेगे। अिस पद्धतिका अनुगमन किया जाय, तो हम जान सकेंगे कि किसी विषय पर अुनके विचारोमे समयके साथ कैसा और कितना परिवर्तन हुआ है। अनेक अुदाहरणोमे हम देखेगे कि अुनके विचारोमें कोअी विशेष परिवर्तन नही हुआ है। दूसरी ओर हम यह भी देखेगे कि अमुक शब्दोके आशयमे तो अुन्होने थोडा-बहुत फर्क किया है, किन्तु अुनके बुनियादी विश्वास ज्योके त्यो कायम रहे है।

गाधीजी जैसे किसी भी महापुरुषकी शिक्षाओमे हमे अेक विशेषता और भी दीखती है। अुनका अेक हिस्सा तो अैसा होता है जो सारी मानव-जातिसे सम्बन्ध रखता है और स्थायी होता है और दूसरा हिस्सा अुस समय-विशेषकी परिस्थितियोसे सबधित होता है और अस्थायी होता है। हमे चाहिये कि हम अुनकी शिक्षाओके अिन स्थायी और अस्थायी हिस्सोको अलग-अलग रखे, ताकि अुनके तुलनात्मक महत्त्वकी कीमत हम सही सही आक सके। गाधीजीकी शिक्षाओंके अिन दो पहलुओके फर्क पर हम बादमे और ज्यादा विचार करेगे, खासकर अुनके आर्थिक विचारोके सिलसिलेमे जो कि भारतकी बीसवी सदीकी परिस्थितियोसे विशेष तौर पर सम्बन्धित थे।

---

* यग अिडिया, ११-८-'२०

गांधीजीके आदर्शवादकी विशिष्टता

अुनके आदर्शवादके मुख्य स्रोत. यहा हम गाधीजीके आदर्शवादकी विशिष्टताका विश्लेपण करेगे। अुनके धार्मिक विचारोमे अथवा सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रोसे सम्बन्धित अुनके आदर्शवादमे सर्वत्र हम कुछ सामान्य सिद्धान्त पाते है। सक्षेपमे ये सिद्धान्त अिस प्रकार है।

आदर्श अपने अतिम रूपमे तो यूक्लिडके विन्दुकी तरह — जिसे कोअी मनुष्य अकित ही नही कर सकता — अेक कल्पनाकी वस्तु है। अर्थात् यूक्लिडके अुस विन्दुकी तरह अुसे भी मूर्त रूपमे पाया नही जा सकता। यही विचार किसी अग्रेजी कविकी अिस पक्तिमे प्रगट हुआ है

"A man's reach should exceed his grasp,
Else what is heaven for?"*

आदर्शका निश्चय करनेके वाद हमारा कर्तव्य है कि हम अुसे अपनी शक्तिके अनुसार आचरणमें अुतारे। आदर्श अप्राप्य होता है, अिसलिअे अैसा नही होना चाहिये कि हम अुसे पानेकी कोशिश ही नही करे। रास्ता कठिनाअियोसे घिरा हुआ हो तो भी हमे अपने मनुष्यत्वकी रक्षाके लिअे अुस पर चलनेकी कोशिश तो करनी ही चाहिये। यही पुरुषार्थ है। आनन्द प्राप्तिमे नहीं, प्रयत्नमे है। "आशा और अुत्साहके साथ यात्रा करते रहना लक्ष्य पर पहुच जानेसे कही ज्यादा अच्छा है।" हमे अपने साधनोकी और अुनके अधिकाधिक अुपयोगकी चिन्ता करनी है। लक्ष्यकी ओर हमारी प्रगति ठीक अुतनी होगी जितनी हमारे साधनोकी शुद्धि होगी। यह रास्ता लम्बा मालूम होता है, परन्तु वस्तुत वह सवसे छोटा सिद्ध होता है।

अपनी अनन्तताके कारण आदर्श, ज्यो ज्यो हम अुसकी ओर वढते है त्यो त्यो, हमसे दूर हटता हुआ मालूम होता है। लेकिन हमे यह याद रखना चाहिये कि रात ठीक अरुणोदयके पूर्व सवसे ज्यादा अधेरी होती है। यदि हम सही प्रयत्न करे, तो हम अपने आदर्शकी दिशामें काफी दूर तक वढ सकेंगे और यह प्रगति ही वास्तविक प्रगति होगी।

मनुष्यके स्वभावकी मर्यादायें. जव गाधीजी हमें आदर्शमे चिपटे रहनेकी सलाह देते है, तव क्या वे मनुष्यके स्वभावकी मर्यादाओका पूरा खयाल करते है? या वे मनुष्यके स्वभावके विषयमे अपनी कल्पित और झूठी आशाओको

---

* मनुष्यके हाथकी पहुच अुसकी मुट्ठीकी पकडमे कही ज्यादा वडी होनी ही चाहिये। अन्यथा स्वर्गका क्या अुपयोग है?

ही पकडे रहते हैं। अिस सवाल पर अुनका मन्तव्य अुनके ही शब्दोमे अिस प्रकार हे

> "यह वात सच है कि वहुत वार लोगोने मेरे साथ दगावाजी की हे। वहुतोने मुझे धोखा दिया है और कितने ही कच्चे सावित हुअे हैं। लेकिन अुनके ससर्ग पर मुझे पछतावा नही हे। क्योकि जिस तरह मै सहयोग करना जानता था, अुसी तरह असहयोग करना भी जानता था। अिस दुनियामे रहने और वरतनेका सवसे ज्यादा अमली और गौरवपूर्ण तरीका यही है कि लोग जो मुहसे कहे अुस पर विश्वास करे — जव तक कि अुसके खिलाफ पक्के कारण आपके पास न हो।" *

व्यक्ति और प्रणालीमें भेद • मनुष्यके स्वभावमें गाधीजीको सच्चा विश्वास था। अत्यत कसौटीकी घडियोमे भी अुनका यह विश्वास कभी विचलित नही हुआ। मनुष्यकी वुनियादी अच्छाअीमे अुनकी पूरी निष्ठा थी और अिसलिअे वे किसी भी मनुष्यको अुद्धारके परे नही मानते थे। अुनका कहना था कि अन्याय करनेवाला अकसर किसी दूषित प्रणालीका पुर्जा या परिस्थितियोका शिकार-मात्र होता है। अिसलिअे हमें मनुष्य और प्रणालीमे भेद करना चाहिये। अन्यायीको शत्रु मानना अुचित नही हे। अुसे न सिर्फ समझा-वुझाकर वल्कि जरूरत हो तो अहिंसक असहयोगके द्वारा सही रास्ते पर लाया जा सकता है। अन्यायीके हृदयमे अपना दोष देखने और अुसे पश्चात्तापके आसुओ द्वारा धो डालनेकी वुद्धि जगानेके अिस प्रयत्नमे यह जरूर सभव है कि हमें खुद काफी कष्ट सहना पडे। लेकिन यदि हम कष्ट सहनेके लिअे तैयार हो, तो निश्चय है कि अहिंसक असहयोग व्यर्थ नही जायेगा। अिसलिअे जरूरत दूषित प्रणालीका नाश करनेकी है, व्यक्तिका नाश करनेकी नही। अैसा किया जाय तो विपक्षी हमारा शत्रु नही वनता और अिस वातकी काफी गुजाअिश रहती है कि हम न केवल अुसका हृदय जीत ले, वल्कि वह सामान्य लक्ष्यकी प्राप्तिके लिअे हमारे साथ काम करनेके लिअे भी राजी हो जाय।

मनुष्यके स्वभावमें श्रद्धा गाधीजीने श्री जयप्रकाश नारायणको, जिन्होने गाधीजीके सामने भारतीय आजादीकी अपनी तसवीर विचारार्थ पेश की थी, जो जवाव दिया था अुसमे मनुष्यकी वुनियादी अच्छाअी और अहिंसक साधनोकी अमोघ क्षमतामे अुनकी अमिट श्रद्धा वहुत अच्छी तरह प्रगट हुअी हे। गाधीजीने लिखा था

---

* हिन्दी नवजीवन, १-१-'२५

"शायद श्री जयप्रकाशको यह विश्वास नही है कि राजा लोग स्वेच्छासे अपनी निरकुशताका त्याग कर देगे। मुझे यह विश्वास है। अेक तो अिसलिअे कि वे भी हमारी ही तरह भले आदमी है, और दूसरे अिसलिअे कि मेरा शुद्ध अहिंसाकी अमोघ शक्तिमे सम्पूर्ण विश्वास है।" *

मनुष्यके स्वभावमे हमारी श्रद्धा अुत्पन्न हो अुसके पहले हमारी श्रद्धा अपने-आपमे और अपने ध्येयमे होनी चाहिये। गाधीजीको अपने-आपमे और अपने ध्येयमे पूरी श्रद्धा थी, अिसमे किसे सदेह हो सकता है? परवर्ती घटनाओने सिद्ध कर दिया है कि अुनकी यह श्रद्धा कितनी सही थी। हमने अपनी आखोके सामने ही यह देखा कि राजाओने स्वेच्छापूर्वक अपनी सत्ता जनताके चुने हुअे प्रतिनिधियोको सौप दी। अेक विदेशी प्रवासीने अुनसे अपनी भेटके दरमियान जब अुनसे पूछा कि वे क्या अैसा मानते है कि अुनके अहिसक आन्दोलनके फलस्वरूप अग्रेज भारतको शान्तिपूर्वक छोडकर चले जायेगे, तो अुन्होने दृढतापूर्वक अुत्तर दिया कि हा, मै अैसा मानता हू। प्रश्नकर्ताने फिर पूछा, "आपके अिस विश्वासका आधार क्या है?" गाधीजीने जवाब दिया, "अीश्वर और अुसके न्यायमे मेरी निष्ठा ही मेरे अिस विश्वासका आधार है।" × गाधीजीने अपने जीवन-कालमे ही हथियारको छुअे बिना भारतकी आजादी प्राप्त कर ली। अग्रेज शासक भारतीयोके हाथमे शासन-सत्ता शान्तिपूर्वक सौपकर भारतसे विदा हो गये। ये तो केवल दो ही अुदाहरण है। लेकिन गाधीजीका जीवन अैसे असख्य अुदाहरणोसे भरा पडा है, जिनमें हिसावी वृत्तिके दुनियादार आदमीको अुनका व्यवहार मूर्खताकी हद तक दुस्साहसपूर्ण मालूम होगा। लेकिन सत्य यह हे कि क्वचित् ही कोअी प्रसग अैसा हो जिसमे गाधीजीको अपने प्रयत्नमे सफलता न मिली हो। जो भी आदमी भारतके हालके अितिहासके पृष्ठ अुलटेगा अुसे अिस कथनकी सचाअीके चाहे जितने प्रमाण मिल जायेगे।

गाधीजी अहिसामें मानते थे, लेकिन वे अिस तथ्यको स्वीकार करके चलते थे कि मनुष्य अपूर्ण है। यदि कोअी कमजोर आदमी हमारे साथ कदम मिलाकर न चल सकता हो और पीछे रह जाता हो, तो यह जरूरी हो जाता है कि अुसकी कमजोरीका खयाल किया जाय। लेकिन सिद्धान्तो पर कोअी समझौता कैसे हो सकता है? सिद्धान्तो पर तो चट्टानकी तरह दृढ ही रहना होगा। अिसके सिवा, बुराअीके साथ भी कोअी समझौता नही हो सकता। लेकिन मनुष्यकी कमजोरियोका खयाल करके किंचित् विवेक अवश्य

---

* हरिजनसेवक, २०-४-'४०

× हरिजन, १३-२-'३७

रखना चाहिये। सिद्धान्तोके वारेमे किमी तरहकी शिथिलताकी सलाह नही दी जा सकती और न अुसे प्रोत्साहन ही दिया जा सकता हे, किन्तु साथ ही हमे यह भी देखना होगा कि किसी भी छोटी वातको सिद्धान्तका दर्जा न दे दिया जाय। समझौतेके लिअे गाधीजी जिन शर्तोका होना आवश्यक मानते थे, अुन पर निम्नलिखित अुद्धरणसे काफी प्रकाश पडता है

"सच तो यह है कि जीवन अैसे समझोतोसे ही वना हुआ होता है। चूकि अहिसा अत्यत विशुद्ध और नि स्वार्थ प्रेम ही है, अिसलिअे अुसमे अकसर अैसे समझौते आवश्यक भी होते है। अलवत्ता, अुसकी कुछ शर्ते है जिनका पालन अवश्य होना चाहिये। हम जो कुछ भी कर रहे हो अुसमे कोअी स्वार्थ, भय या असत्य नही होना चाहिये और अुसमे हमारा लक्ष्य अहिसाकी ओर अविकाधिक वढनेका ही होना चाहिये। यह समझौता स्वाभाविक यानी स्वेच्छा-प्रेरित होना चाहिये, वाहरसे लादा हुआ नही।" *

गाधीजीका राजनीतिक आदर्शवाद हम गाधीजीकी स्वराज्यकी कल्पनाका विश्लेषण करे अुसके पहले अुनके राजनीतिक आदर्शवादका मुख्य स्रोत समझ लेना अुपयोगी होगा। गाधीजीके राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखलेने भारत-सेवक-समाजके सविधानकी प्रस्तावनामे, जो कि अुन्होने १९०५ मे लिखी थी, सार्वजनिक जीवनमे आध्यात्मिक मूल्योको दाखिल करनेकी आवश्यकता प्रगट की थी। अुन्होने अिस वात पर जोर दिया था कि देशकी सेवा अुसी निष्ठासे की जानी चाहिये जिस निष्ठासे धर्मकी सेवा की जाती है। गोखलेकी यह परम्परा अुनके शिष्यने जारी रखी। गाधीजी राजनीतिमे क्यो पडे — अिस प्रश्नका अुत्तर गाधीजीके अपने शब्दोमे अिस प्रकार है

"अैसे सर्वव्यापी सत्यनारायणका साक्षात्कार करनेके लिअे मनुष्यके मनमे छोटेसे छोटे प्राणीके प्रति अपने ही जैसा प्रेम होना चाहिये। और जो मनुष्य अिसकी आकाक्षा रखता है वह जीवनके किसी क्षेत्रसे वाहर नही रह सकता। अिमी कारणसे मेरे सत्यप्रेमने मुझे राजनीतिक क्षेत्रमे घसीट लिया है, और मैं विना किसी सकोचके किन्तु पूरी नम्रताके साथ कह सकता हू कि जो लोग यह कहते हैं कि धर्मका राजनीतिके साथ कोअी सवध नही है वे नही जानते कि धर्मका क्या अर्थ है।" ×

---

* हरिजन, १७–१०–'३६

× आत्मकथा (अग्रेजी), पृ० ६१५, १९४८।

धर्म और राजनीति : धर्म और राजनीतिको अेक-दूसरेसे अलग नही किया जा सकता। अुनमे अटूट सम्बन्ध है। धर्मके बिना राजनीति निर्जीव हो जायगी। धर्मके अभावमे राजनीति खोखली और निरर्थक होगी

> "मुझे अिस नाशवान अैहिक राज्यकी कोअी अभिलाषा नही है। मै तो अीश्वरीय राज्यको पानेका प्रयत्न कर रहा हू। वह है मोक्ष। मेरे लिअे तो मुक्तिका मार्ग है अपने देशकी और अुसके द्वारा मनुष्य-जातिकी सेवा करनेके लिअे सतत परिश्रम करना। मै ससारके भूत-मात्रसे अपना तादात्म्य कर लेना चाहता हू। मै गीताकी भाषामे — 'सम शत्रौ च मित्रे च' हो जाना चाहता हू। अिस प्रकार मेरी देशभक्ति और कुछ नही अपनी चिर मुक्ति और शातिके देशकी मजिलका अेक विश्राम-स्थान है। अिससे यह मालूम हो जाता है कि मेरे नजदीक धर्मशून्य राजनीति कोअी चीज नही। राजनीति धर्मकी अनुचरी है। धर्महीन राजनीतिको अेक फासी ही समझिये। वह आत्माका नाश कर देती है।*

अेक विदेशी अीसाअी नेताने, जो दिसम्बर १९३८ मे गाधीजीसे चर्चा करनेके लिअे यहा आया था, अुनसे पूछा था कि भारतके लिअे आपने जो काम किया है अुसमे आपका मुख्य प्रेरक हेतु क्या था? वह राजनीतिक था या सामाजिक या धार्मिक? गाधीजीने जवाब दिया — "विशुद्ध धार्मिक।" यही प्रश्न अुनसे स्व० श्री माटेग्यूने किया था, जब वे अेक राजनीतिक प्रतिनिधि-मडलके साथ अुनसे मिले थे। अुन्होने आश्चर्य व्यक्त करते हुअे पूछा, "आप तो समाज-सुधारक है, आप राजनीतिकी अिस भीड-भाडमे कैसे आ पहुचे?" गाधीजीने जवाब दिया कि अुनका राजनीतिमे आ पडना अुनके समाज-सुधार कार्यका ही विस्तार है। अुन्होने कहा कि जब तक मै सारी मानव-जातिके साथ अेकात्मता सिद्ध न करू तब तक मै धार्मिक जीवन नही बिता सकता और मानव-जातिके साथ अेकात्मता स्थापित करनेके लिअे यह जरूरी है कि मै राजनीतिमे भाग लू। आज मनुष्यकी सारी प्रवृत्तिया मिलकर अविभाज्य हो गअी है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक कार्योको अेक-दूसरेसे बिलकुल अलग नही किया जा सकता। मै मानव-सेवासे भिन्न किसी धर्मको नही जानता। मानव-सेवा ही दूसरी सारी प्रवृत्तियोको नैतिक आधार प्रदान करती है। मानव-सेवाका लक्ष्य न रहने पर ये सारी प्रवृत्तिया निराधार हो जायेगी और जीवन अर्थहीन शोरगुलका रूप ले लेगा।×

---

* हिन्दी नवजीवन, ६–४–'२४

× हरिजन, २४–१२–'३८

धर्मका अर्थ: यहा धर्म शब्दका अुपयोग शाश्वत मूल्योंके अर्थमें किया गया है, विविध धर्मोंकी रूढ मान्यताओंके अर्थमे नही। धार्मिक मामलोंमें गाधीजीकी दृष्टिकी अुदारता और मनकी परमत-सहिष्णुताकी बात सुप्रसिद्ध है। वे औश्वरको सत्यके रूपमे ही पहिचानते थे। धर्मका अर्थ है मनुष्यके द्वारा अतिमानुषी नियामिका शक्ति या औश्वरका स्वीकार। औश्वरसे गाधीजीका क्या तात्पर्य था?

"अगर मानव-वाणीके लिअे औश्वरका सपूर्ण वर्णन करना सभव हो, तो मैं अिस निश्चय पर पहुचा हू कि औश्वर सत्य है — सत्य शब्द ही अुसका सर्वोत्तम वाचक है। परतु दो वर्ष पूर्व मैं अेक कदम और आगे बढा, मैंने कहा कि न केवल औश्वर सत्यरूप है, वल्कि सत्य ही औश्वर है। औश्वर सत्य है और सत्य ही औश्वर है, अिन दोनो वचनोंके सूक्ष्म भेदको आप समझ लेगे। अिस नतीजे पर मैं सत्यकी पचास वर्षकी दीर्घ, अनवरत और कठिन खोजके बाद पहुचा हू। अिसके बाद मुझे पता चला कि सत्य तक पहुचनेका निकटतम मार्ग प्रेम है। परतु मैंने यह भी पाया कि कमसे कम अग्रेजी भाषामे 'लव' (प्रेम) शब्दके अनेक अर्थ हैं और विकारके अर्थमे मानव-प्रेम तो अेक मलिन चीज है जो मनुष्यका पतन करती है। मैंने यह भी देखा कि अहिंसाके अर्थमें प्रेमके पुजारियोंकी सख्या दुनियामे अिनीगिनी ही है। परतु सत्यके बारेमें दो अर्थ नही हैं और नास्तिकों तकने सत्यकी आवश्यकता या शक्ति स्वीकार की है। परन्तु सत्यको ढूढ निकालनेकी अपनी लगनमे नास्तिकोंने औश्वरके अस्तित्वसे भी अिनकार करनेमे सकोच नही किया है और अपने दृष्टिकोणसे अुन्होंने ठीक ही किया है। अिस तरह सोचते हुअे मेरी समझमें आया कि औश्वर सत्यरूप है यह कहनेके बजाय मुझे यह कहना चाहिये कि सत्य ही औश्वर है।"*

औश्वरकी अपनी कल्पना अुन्होंने अुपर्युक्त शब्दोंमे समझायी है। अुनकी धार्मिक भावनाकी मौलिकता और प्रगल्भता अिस अुद्धरणके प्रत्येक शब्दसे टपकती है।

स्वराज्य

अुनकी कल्पनाका स्वराज्य: गाधीजी ब्रिटिश साम्राज्यके अेक राजभक्त नागरिकसे अेक राजद्रोही — और अैसा राजद्रोही जो अिस बातका प्रचार करता था कि ब्रिटिश शासन ही भारतके राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, और सास्कृतिक नाशके लिअे अुत्तरदायी है — कैसे बन गये, अिस बातकी कहानी

* सत्य ही औश्वर है, पृ० १३, १९५९।

अिस देशका हालका अितिहास जाननेवाले जानते ही है। जिस स्वराज्यको लाने और जिसका निर्माण करनेके लिअे अुन्होने अपना सारा जीवन लगाया वह नकारात्मक नही था। स्वराज्यकी अुनकी कल्पना महज़ यह नही थी कि सत्ता विदेशियोके हाथसे भारतीयोके हाथमें आ जाय। यह तो अुनके कल्पनाके स्वराज्यकी मात्र पहली मजिल थी। सब लोग जानते है कि १५ अगस्त, १९४७ को जब ब्रिटिश सम्राटके आखिरी प्रतिनिधिने शासनकी बागडोर भारतकी राष्ट्रीय सरकारको सौपी अुस समय सारा राष्ट्र तो आजादीका अुत्सव मना रहा था और खुशीसे नाच रहा था, पर वर्धाका सत दु खी मनसे किन्तु अत्यत वीरतापूर्वक अपनी सारी शक्ति देशभरमे फैली हुअी साम्प्रदायिक द्वेषाग्निको बुझानेमें लगा रहा था।

स्वराज्यका अर्थ : स्वराज्य समाजकी अुस स्थितिका नाम है, जिसमे जनता अपना शासन स्वय करना सीख लेती है। अिस स्वराज्यका अनुभव हरअेक व्यक्तिको होना चाहिये

> "स्वराज्यका असली मतलब आत्म-सयम है। आत्म-सयम वही रख सकता है, जो सदाचारके नियमोका पालन करता है, किसीको धोखा नही देता, सत्यका त्याग नही करता और अपने माता-पिता, पत्नी, बच्चो, नौकरो और पडोसियोके प्रति अपना फर्ज अदा करता है। अैसा आदमी भले कही भी रहे, स्वराज्यका सुख भोगता है। जो राज्य बडी सख्यामे अिस तरहके भले नागरिकोके होनेका गर्व कर सकता हे, वह स्वराज्यका अुपभोग करता है।" *

गाधीजीके स्वराज्यकी नींवका पत्थर — व्यक्ति गाधीजीके स्वराज्य-रूपी भवनकी नीवका पत्थर व्यक्ति है। अुसे चाहिये कि वह अपनेको अच्छा नागरिक बननेकी तालीम दे और अुसके लिअे आवश्यक योग्यताओका अपनेमें विकास करे, तभी वह स्वराज्यका लाभ अुठा सकता है। समाज व्यक्तियोका समूह है। समाज शासनके लिअे और कानूनका पालन करवानेके लिअे राज्यकी स्थापना करता है। जिस राज्यमे अच्छे नागरिक बडी सख्यामें मौजूद हो वही स्वराज्य भोगनेका दावा कर सकता है। स्वराज्य तभी कायम रखा जा सकता है जब कि राज्यमें अैसे देशभक्त नागरिकोकी बहुसख्या मौजूद हो, जो अपने हितकी तथा और दूसरी सारी चीजोकी तुलनामे देशके हितको ही सर्वोपरि महत्त्व प्रदान करते हो। × अैसी स्थिति न हो तो राजनीतिक स्वतत्रताके होते हुअे भी अुन लोगोको स्वतत्र नही कहा जा सकता।

---

* गाधीजी, अे पैराफ्रेज़ ऑफ रस्किन्स 'अन्टु दिस लास्ट' के 'कक्लूजन' नामक अध्यायसे, पृ० ६५।

× यग अिडिया, २८-७-'२१

राजनीतिक स्वतत्रताका महत्त्व कम है, अैसी बात नही है। गाधीजी अिस बातको खूब समझते थे कि राजनीतिक आजादी तो होनी ही चाहिये। किसी अेक देशका दूसरे देश पर राज्य करना गलत है और विदेशी शासन अेक असह्य बुराअी है। अिसलिअे वे भारतके लिअे राजनीतिक आजादी अवश्य चाहते थे। लेकिन वे यह भी समझते थे कि अग्रेजोके भारत छोड देने मात्रसे जादूकी तरह यहा सुखकी वर्षा नही होने लगेगी। यूरोपकी हालतने अुन्हे सावधान कर दिया था। अुन्होने समझ लिया था कि केवल राजनीतिक आजादी मिल जानेसे अैसी परिस्थितिया पैदा नही हो जाती जिनमे जनता अपना शासन आप करने लगे। राजनीतिक आजादी मिलनेके बाद भी वह चद लोगोके द्वारा पीसी जाती रहती हैं। अिसलिअे अुन्होने लिखा था

> "केवल राजनीतिक सत्ताके अेक हाथसे निकल कर दूसरे हाथमें चले जानेसे मेरी महत्त्वाकाक्षाको सतोष न होगा, हालाकि मै भारतके राष्ट्रीय जीवनके लिअे सत्ताका अिस प्रकार हस्तान्तरित होना परम आवश्यक मानता हू। यूरोपके लोग निस्सदेह राजनीतिक सत्ता तो रखते हैं, पर स्वराज्य नही। अेशिया और अफ्रीकाके लोगोको वे अपने आशिक लाभके लिअे लूटते है और अुनके शासक-वर्ग अुन्हे प्रजा-सत्ताके पवित्र नाम पर लूटते है। तो यदि जडको देखे तो रोग वही दिखाअी देता है जो कि भारतवर्षको है। अिसलिअे अिलाज भी वही काम दे सकेगा।" *

अिससे प्रगट हो जाता है कि सरकार जनताकी ही हो, अिस बातको वे काफी नही मानते थे, वे चाहते थे कि वह जनताकी तो होनी ही चाहिये, लेकिन जनताके लिअे और जनताके द्वारा चलायी जानेवाली भी होनी चाहिये।

स्वराज्यमें विशिष्ट वर्ग और सामान्य जनता स्वराज्यमे सामान्य जनताके हितोको चद लोगो या वर्गोंके हितो पर तरजीह मिलना चाहिये। स्वराज्य पर निहित स्वार्थवालोका अेकाधिकार हो या वे लोग ही अुसका सारा लाभ अुठाये, अैसा नही होना चाहिये। स्वराज्यकी योजनामे सामान्य जनताका हित ही सर्वोपरि होना चाहिये। "अैसा प्रत्येक हित, जो बेजबान करोडोके हितके विरुद्ध हो, या तो बदला जाना चाहिये या यदि वह बदला न जा सकता हो तो अुसमे कमी की जानी चाहिये।"× अिसका यह अर्थ

---

* हिन्दी नवजीवन, ३–९–'२५

× यग अिडिया, १७–९–'३१

नही कि शेष वर्गोको — मध्यम वर्ग, पूजीपतियो, जमीदारो आदिको — मिटा दिया जाय। " अुद्देश्य अितना ही है कि अिन सब वर्गोको गरीबोके हितको मुख्य मानकर अुसकी सेवा करनी चाहिये।"*

सरकार जनताके द्वारा चलायी जाय अब हम अिस सवाल पर आते है कि 'सरकार जनताके द्वारा चलायी जाय' — अिस बातका सही आशय क्या है। गाधीजीका अुत्तर अिस प्रकार है

> "स्वराज्यसे मेरा अभिप्राय है लोक-सम्मतिके अनुसार होनेवाला भारतवर्षका शासन। लोक-सम्मतिका निश्चय देशके बालिगोकी बडीसे बडी तादादके मतके जरिये हो, वे चाहे स्त्री हो या पुरुष, अिसी देशके हो या अिस देशमे आकर बस गये हो। वे लोग अैसे हो जिन्होने अपने शारीरिक श्रमके द्वारा राज्यकी सेवा की हो और जिन्होने मतदाताओकी सूचीमे अपना नाम लिखवाया हो। मैं यह सिद्ध करनेकी आशा रखता हू कि सच्चा स्वराज्य थोडे लोगोके द्वारा सत्ता छीन लेनेसे नही, बल्कि जब सत्ताका दुरुपयोग होता हो तब सब लोगोके द्वारा अुसके प्रतिकार करनेकी क्षमताको प्राप्त करके हासिल किया जा सकता है। दूसरे शब्दोमे, स्वराज्य जनतामे अिस बातका ज्ञान पैदा कराके प्राप्त किया जा सकता है कि सत्ता पर कब्जा करने और अुसका नियमन करनेकी क्षमता अुनमे है।" ×

नागरिकोकी सजगता जहा नागरिक अपनी आजादीकी रक्षाके विषयमें सजग होंगे, वहा लोगोकी सारी आवश्यकताये पूरी करनेका काम राज्य नही करेगा और न वह जनतासे सत्ताको हथियानेकी अनधिकार चेष्टा ही करेगा। सत्ता पर स्वामित्व जनताका ही है और होना चाहिये। स्वराज्यका अर्थ यह है कि जनता सरकारके नियत्रणसे — सरकार विदेशी हो या स्वदेशी — मुक्त होनेके लिअे लगातार प्रयत्न करती रहेगी। जिस स्वराज्यमें लोग अपने जीवनके छोटे छोटे कामोके लिअे भी सरकारका मुह ताका करे वह स्वराज्य किसी कामका नही होगा। ÷

कमसे कम शासन करनेवाली सरकार ही अुत्तम सरकार है जहा राजनीतिक सत्ता जाग्रत, शिक्षित और अनुशासनकी तालीम पायी हुअी अैसी जनताके हाथमे होती है जिसने सत्ताका नियमन और नियत्रण सीख लिया है, वहा फिर अिस बातका डर नही रह जाता कि राज्य निरकुश बन जायगा

---

* यग अिडिया, १६–४–'३१

× हिन्दी नवजीवन, २९–१–'२५

÷ यग अिडिया, ६–८–'२५

या वह अपनी जडे अितनी मजबूत कर लेगा कि वर्गहीन समाजकी अुस स्थितिकी ओर, जिसमे राज्यका विलय हो जाता हे, जनताकी प्रगतिमें वह बाधा अुपस्थित कर सके। निम्नलिखित शब्द बताते है कि गाधीजी अुस जाग्रत लोकतन्त्रके हिमायती थे, जिसमे सामान्य मनुष्यको अुसकी पूरी प्रतिष्ठा प्राप्त होगी

"मेरी दृष्टिमे राजनीतिक सत्ता कोअी साध्य नही हे, परन्तु जीवनके प्रत्येक विभागमे लोगोके लिअे अपनी हालत सुधार सकनेका अेक साधन हे। राजनीतिक सत्ताका अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधियो द्वारा राष्ट्रीय जीवनका नियमन करनेकी शक्ति। अगर राष्ट्रीय जीवन अितना पूर्ण हो जाता हे कि वह स्वय आत्म-नियमन कर ले, तो किसी प्रतिनिधिकी आवश्यकता नही रह जाती। अुस समय ज्ञानपूर्ण अराजकताकी स्थिति हो जाती है। अैसी स्थितिमे हरअेक अपना राजा होता है। वह अिस ढगसे अपने पर शासन करता है कि अपने पडोसियोके लिअे कभी बाधा नही बनता। अिसलिअे आदर्श व्यवस्थामे कोअी राजनीतिक सत्ता नही होती, क्योकि कोअी राज्य नही होता। परन्तु जीवनमे आदर्शकी पूरी सिद्धि कभी नही होती। अिसीलिअे थोरोने कहा है कि जो सबसे कम शासन करे वही अुत्तम सरकार हे।" *

"अिसका मतलब यह है कि जब राजनीतिक सत्ता जनताके हाथमे होती हे, तब जनताकी आजादीमें राज्यका हस्तक्षेप कमसे कम हो जाता है। दूसरे शब्दोमे, जो राष्ट्र अपना कामकाज राज्यके ज्यादा हस्तक्षेपके बिना ही अच्छी तरह और सफलतापूर्वक चला लेता हे, वही सही अर्थमे लोकतान्त्रिक है। जहा यह शर्त पूरी नही होती हो, वहा शासनका स्वरूप नाममे लोकतान्त्रिक भले हो, वस्तुत वह लोकतान्त्रिक नही होता।" ×

सच्चा लोकतन्त्र गाधीजीकी कल्पनाका सच्चा लोकतन्त्र अनगिनत ग्राम-पचायतोका बना हुआ गणराज्य होगा। शासनकी अिकाअीके रूपमे गाधीजी गावका आग्रह क्यो करते है? अिस प्रश्नका अुत्तर अुनके अपने ही शब्दोमे अिस प्रकार हे

"आजादी नीचेसे शुरू होनी चाहिये। हरअेक गावमे जमहूरी सल्तनत या पचायत राज होगा। अुसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी। अिसका मतलब यह है कि हरअेक गावको अपने पाव पर

---

* सर्वोदय, पृ० ८२, १९५८।

× हरिजन, ११-१-'३६

खडा होना होगा — अपनी जरूरते खुद पूरी कर लेनी होगी, ताकि वह अपना सारा कारोवार खुद चला सके। यहा तक कि वह सारी दुनियाके खिलाफ अपनी हिफाजत खुद कर सके। अुसे तालीम देकर अिस हद तक तैयार करना होगा कि वह वाहरी हमलेके मुकावलेमे अपनी रक्षा करते हुअे मर-मिटनेके लायक वन जाय। अिस तरह आखिर हमारी वुनियाद व्यक्ति पर होगी। अिसका यह मतलव नही कि पडोसियो पर या दुनिया पर भरोसा न रखा जाय, या अुनकी राजी-खुशीसे दी हुअी मदद न ली जाय। खयाल यह है कि सव आजाद होगे और सव अेक-दूसरे पर अपना असर डाल सकेगे। जिस समाजका हरअेक आदमी यह जानता है कि अुसे क्या चाहिये और अिससे भी वढकर जिसमें यह माना जाता है कि वरावरीकी मेहनत करके भी दूसरोको जो चीज नही मिलती है वह खुद भी किसीको नही लेनी चाहिये, वह समाज जरूर ही वहुत अूचे दर्जेकी सभ्यतावाला होना चाहिये।"

स्वार्थत्यागकी आवश्यकता "अैसा समाज अनगिनत गावोका वना होगा। अुसका फैलाव अेकके अूपर अेकके ढगका नही, वल्कि लहरोकी तरह अेकके वाद अेककी शकलमे होगा। जीवन मीनारकी शकलमे नही होगा, जहा अूपरकी तग चोटीको नीचेके चौडे पाये पर खडा रहना पडता है। वहा तो जीवन समुद्रकी लहरोकी तरह अेकके वाद अेक घेरेकी शकलमे होगा, जिसका केन्द्र व्यक्ति होगा। व्यक्ति गावके लिअे और गाव ग्राम-समूहके लिअे मर-मिटनेको हमेशा तैयार रहेगा। अिस तरह अतमें सारा समाज अैसे व्यक्तियोका वन जायगा, जो अहकारमे आकर कभी किसी पर हमला नही करेगे, वल्कि सदा विनीत रहेगे और अुस समुद्रके गौरवके हिस्सेदार वनेगे, जिसके वे अविभाज्य अग हैं।" *

आदर्श गाव "आदर्श भारतीय गावकी रचना अिस तरह की जायगी कि वहा सपूर्ण स्वच्छता रखी जा सके। अुसके घरोमे पर्याप्त हवा और प्रकाशकी व्यवस्था होगी और अुनके निर्माणमे अैसी चीजोका अुपयोग होगा जो अुस गावके आसपासके पाच मीलके क्षेत्रमें मिल जाये। अिन घरोमे आगन होगे जहा घर-मालिक घरके अुपयोगके लिअे आवश्यक प्रमाणमे साग-सब्जी पैदा कर सकेगा और वहा वह अपने गाय-वैल आदिको भी रखेगा। गावकी गलिया और रास्ते धूल और कचरेसे मुक्त होगे। अुसमें अुसकी जरूरतके अनुसार काफी कुअे होगे

* हरिजनसेवक, २८–७–'४६

और ये कुअे सबके लिअे खुले होंगे। अुसमे वहा वसनेवाले सब लोगोके पूजास्थान होंगे, सब लोगोका अेक सामान्य सभास्थान होगा, गावके पशुओके लिअे गोचर-भूमि होगी, सहकारी डेरी होगी और प्राथमिक तथा अुच्च पाठशालाये होगी। अिन पाठशालाओमे दी जानेवाली शिक्षाका केन्द्रबिन्दु औद्योगिक शिक्षण होगा। गावमे ग्रामवासियोके आपसी झगडोका निपटारा करनेके लिअे ग्राम-पचायत होगी। गाव अपना अनाज, साग-भाजी, फल-फूल और अपनी खादी खुद पैदा रेगा।"*

पचायतराजमें समानता अैसे पचायतराजमे देशके वडेसे वडे और छोटेसे छोटे आदमीके बीचमे भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक — यानी हर तरहकी समानता होगी। शरीर-श्रमकी कीमत की जायगी और अुसे प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। नागरिक अपनी जीविका प्रामाणिक परिश्रमके द्वारा कमायेगे। अफीम और शराब जैसे नशीले द्रव्यो पर पूरी रोक रहेगी। स्वदेशी जीवनका अेक अनिवार्य नियम बन जायगा। स्त्रिया अपनी पराधीनताकी स्थितिसे मुक्त होगी और अुन्हे समाजमे सम्मानका स्थान प्राप्त होगा। और नागरिक अहिसाके द्वारा सत्यकी रक्षा करनेके लिअे तथा अिस प्रयत्नमे आवश्यकता होने पर अपने प्राणोकी बाजी लगानेके लिअे तैयार रहेगे। ये वे आधार-स्तम्भ है जिन पर कि गावोके गणराज्यका भवन खडा होगा।

क्या अैसा गणराज्य सेना रखेगा? क्या सेना रखना नैतिक आजादीके साथ सुसगत माना जा सकता है? नैतिक आजादीकी गाधीजीकी कल्पनामे शस्त्रास्त्रोसे सुसज्जित सेनाओके लिअे कोअी स्थान नही है। अुनकी नैतिक आजादीकी व्याख्या यह है

> "रामराज्यकी मेरी कल्पनामे ब्रिटिश फौजी हुकूमतकी जगह राष्ट्रीय फौजी हुकूमतको बैठा देनेकी कोअी गुजाअिश नही। जिस मुल्कमे फौजी हुकूमत होती है, फिर वह फौज मुल्ककी अपनी ही क्यो न हो, वह मुल्क नैतिक दृष्टिसे कभी आजाद नही हो सकता और अिसलिअे अुसके सबसे कमजोर कहे जानेवाले बाशिन्दे कभी पूरी तरहसे नैतिक अुन्नति नही कर सकते।"×

भावी भारतकी सेना यह याद रखना चाहिये कि गाधीजी देशको बलपूर्वक अधिकृत करनेके काममे लायी जानेवाली सेनाके खिलाफ है, फिर वह सेना देशी ही क्यो न हो। लेकिन वे स्वयसेवकोकी अैसी सेना मजूर करनेके लिअे तैयार है, जिसका अुपयोग देशमे जान-मालकी सुरक्षा बनाये

---

* टी० जी० तेन्दुलकर, महात्मा, खड ४, पृ० १४४।

× हरिजनसेवक, ५–५–'४६

रखनेके लिअे किया जाय। नीचे दिये जा रहे अुद्धरणसे यह बात स्पष्ट हो जायगी

> "जल-सेनाके विषयमे मै नही कह सकता, लेकिन स्थल-सेनाके विषयमे मै कह सकता हू कि भावी भारतकी स्थल-सेना किरायेके अैसे सैनिकोकी नही होगी, जिनका अुपयोग भारतको गुलामीमे रखनेके लिअे या दूसरे राष्ट्रोसे अुनकी आजादी छीननेके लिअे किया जाता है। बल्कि वह बहुत हद तक कम कर दी जायगी, अधिकाशत स्वय-सेवकोसे बनी हुअी होगी और अुसका अुपयोग देशमे सुरक्षाकी व्यवस्था बनाये रखनेके लिअे ही होगा।" *

सन् १९४६ में केबिनेट मिशन भारत आया, अुसके ठीक पहले गाधीजीने देशको चेतावनी दी थी कि यदि स्वतन्त्रताकी प्राप्तिके बाद भारतने सैनिक दृष्टिसे शक्तिशाली बननेकी कोशिश की, तो आजकी दुनियामे वह बहुत हुआ तो पाचवे दर्जेका सैनिक राष्ट्र बन सकेगा और वह दुनियाको कोअी सदेश देने योग्य भी नही रह जायगा। लेकिन यदि वह अपनी अहिसाकी ही नीति पर कायम रहे और अुसे अधिकाधिक परिशुद्ध करता जाये, तो वह अपनी कीमती आजादीका अुपयोग दुनियाको अुस बोझसे मुक्त करनेमे कर सकेगा जिससे आज वह दबी जा रही है और दूसरे देशोके सामने अेक अुज्ज्वल अुदाहरण भी पेश कर सकेगा। ×

गांधीवादी आदर्श और समाजवादी तथा साम्यवादी आदर्शमें फर्क

समाजवाद अीशोपनिषद्‌में अन्तर्हित है गाधीवादी आदर्श समाजवादी तथा साम्यवादी आदर्शोसे किन बातोमे भिन्न है? दोनोके बीचमे रहे हुअे फर्कको समझनेके लिअे हमे पहले यह जानना चाहिये कि समाजवादके सम्बन्धमे गाधीजीके विचार क्या है। गाधीजीका दावा था कि पश्चिमसे समाजवाद भारतमे आया, अुसके बहुत पहलेसे ही वे समाजवादी रहे है। समाजवादियोके सिद्धान्तको वे दक्षिण अफ्रीकामे रहते हुअे ही अपना चुके थे। लेकिन अुनका समाजवाद किसी पुस्तकसे नही लिया गया था, वह अुनके अनुभव और अवलोकनकी अुपज था और अिस तरह अुन्हे स्वाभाविक तौर पर प्राप्त हुआ था। वह अहिंसामे अुनके अविचल विश्वाससे पैदा हुआ था। पश्चिमी समाजवादियोसे अपना भेद स्पष्ट करते हुअे गाधीजी लिखते है

---

* यग अिडिया, ९-३-'२२

× हरिजन, ५-५-४६

"समाजवादका जन्म अुस वक्त नहीं हुआ था जब यह पता लगा कि पूंजीपति पूंजीका दुरुपयोग करते हैं। जैसा कि मैंने कहा है, समाजवाद ही नहीं, साम्यवाद भी ओशोपनिषद्के पहले मन्त्रमें स्पष्ट है। सच बात तो यह है कि जब कुछ सुधारकोंका विचार-परिवर्तनकी पद्धतिमें विश्वास नहीं रहा, तब जिसे वैज्ञानिक समाजवाद कहते हैं अुसका जन्म हुआ। मैं अुसी समस्याको हल करनेमें लगा हुआ हूं, जो वैज्ञानिक समाजवादियोंके सामने है। लेकिन यह सही है कि मेरी दृष्टि सदासे अेकमात्र शुद्ध अहिंसाकी रही है।" *

अुद्देश्यकी अेकता साम्यवादियोंकी तरह गांधीजीका भी अुद्देश्य अैसे वर्गविहीन समाजकी स्थापनाका ही है, जिसमें राजशक्ति क्रमशः क्षीण होकर प्रायः निःशेष हो गयी होगी। लेकिन अिस अुद्देश्य तक पहुंचनेके अुनके रास्तोंमें बुनियादी फर्क है। अिसलिअे यात्राके आरंभमें ही वे अेक-दूसरेसे अलग हो जाते हैं। पश्चिमी समाजवाद और साम्यवादके खिलाफ गांधीजीके विरोधको हम समझ लें।

साधन: वे कहते हैं "हिंसाके द्वारा कोअी स्थायी सुधार किया जा सकता है, अिस बातको मैं अस्वीकार करता हूं। समाजवादियों और अुसी श्रेणीके दूसरे लोगोंसे मेरा विरोध अिसी बातमें है।" ×

"रूसका समाजवाद, यानी जनता पर जबरदस्ती लादा जानेवाला साम्यवाद, भारतको रुचेगा नहीं, भारतकी प्रकृतिके साथ अुसका मेल नहीं बैठ सकता। मैं अहिंसक साम्यवादमें विश्वास करता हूं। यदि साम्यवाद बिना किसी हिंसाके आये तो हम अुसका स्वागत करेंगे।" +

गांधीजी समाजवादियोंके आत्मत्याग और अुनकी बलिदानकी भावनाका बहुत आदर करते थे, लेकिन अुनकी और अपनी कार्य-पद्धतिमें रहे हुअे तीव्र विभेदको अुन्होंने कभी छिपाया नहीं। समाजवादी हिंसामें और हिंसाके सारे फलितार्थोंमें खुलकर विश्वास करते हैं, जब कि गांधीजी पूरी तरह अहिंसामें मानते हैं। – वे कहते थे, "भारतको स्वराज्य अवश्य मिलना चाहिये, लेकिन यह स्वराज्य अुसे शुद्ध साधनोंके द्वारा प्राप्त करना चाहिये। क्योंकि सच्चा स्वराज्य हिंसाके द्वारा प्राप्त किया ही नहीं जा सकता।" † भारत हिंसाके

* हरिजन, २०–२–'३७

× हरिजन, १–६–'४७

\+ हरिजन, १३–२–'३७

– हरिजन, ४–८–'४६

† गांधीजी, अे पैराफ्रेज़ ऑफ रस्किन्स 'अन्टु दिस लास्ट' के 'कन्क्लूज़न' नामक अध्यायमें।

द्वारा अपनी आजादी प्राप्त कर सकता है, अिस बातका अुन्हे यकीन दिलाया जाता तो भी वे अुस आजादीको लेनेसे अिनकार कर देते। कारण, वह सच्ची आजादी होती ही नही।* हिंसा और लडाअीसे भारतको अंग्रेजोके शासनकी जगह कोअी दूसरा शासन मिल सकता है, पर जनताकी दृष्टिसे जिसे स्व-शासनका नाम दिया जा सके अैसा स्वशासन कदापि नही मिल सकता।† अुनका दृढ विश्वास था कि हिंसाकी बुनियाद पर किसी स्थायी वस्तुका निर्माण नही हो सकता।‡ शरीरकी तरह शारीरिक शक्ति भी क्षणस्थायी ही है।

जब स्वराज्य हिंसाके द्वारा प्राप्त किया जाता है, तब सत्ता अुन अिने-गिने लोगोके हाथमे चली जाती है जिन्होने अुस क्रांतिका नेतृत्व किया हो। हिंसाके अुपयोगका यह अेक अनिवार्य परिणाम है। "जो तलवार अुठायेगा अुसका विनाश भी तलवारके द्वारा ही होगा।" — अीसाका यह वाक्य अत्यंत अर्थपूर्ण है। अेक अिटलीका ही अुदाहरण लीजिये। अिटलीके स्वातंत्र्य-युद्धके पश्चात् वहा क्या हुआ?

> "अिटलीमे अिटालियन राज करते है अिसलिअे अिटलीकी प्रजा सुखी है, अैसा अगर आप मानते हो, तो मै आपसे कहूगा कि आप अंधेरेमे भटकते है। मैजिनीने साफ साफ बताया है कि अिटली आजाद नही हुआ है। विक्टर अिमेन्युअलने अिटलीका अेक अर्थ किया, मैजिनीने दूसरा। अिमेन्युअल, कावूर और गैरीबाल्डीके विचारसे अिटलीका अर्थ था अिमेन्युअल या अिटलीका राजा और अुसके हुजूरी। मैजिनीके विचारसे अिटलीका अर्थ था अिटलीके लोग — अुसके किसान। अिमेन्युअल वगैरा तो अुनके (प्रजाके) नौकर थे। मैजिनीका अिटली अब भी गुलाम है। दो राजाओंके बीच शतरजकी बाजी लगी थी। अिटलीकी प्रजा तो सिर्फ प्यादा थी और है। अिटलीके मजदूर अब भी दुखी है। अिटलीके मजदूरोकी दाद-फरियाद नही सुनी जाती, अिसलिअे वे लोग खून करते है, विरोध करते है, सिर फोडते है और वहा बलवा होनेका डर आज भी बना हुआ है। आस्ट्रियाके जानेसे अिटलीको क्या लाभ हुआ? जिन सुधारोके लिअे जंग मचा वे सुधार हुअे नही, प्रजाकी हालत सुधरी नही।
>
> "हिन्दुस्तानकी अैसी दशा करनेका तो आपका अिरादा नही ही होगा। मै मानता हू कि आपका विचार हिन्दुस्तानके करोडो लोगोको सुखी करनेका होगा, यह नही होगा कि आप या मै राजसत्ता ले

---

* हरिजन, १३–२–'३७

† यंग अिंडिया, २१–५–'२५

‡ यंग अिंडिया, १५–११–'२८

लू। अगर अैसा है तो हमें अेक ही विचार करना चाहिये। वह यह कि प्रजा स्वतंत्र कैसे हो?"*

साम्यवादियोंका सिद्धान्त: साम्यवादी दलील करते हैं कि वे लोग व्यवहारवादी हैं, काल्पनिक आदर्शवादी विचारोंका अुनके लिअे कोअी अुपयोग नही है। वे समाजवादी क्रांतिके द्वारा मनुष्यके वर्तमान स्वभावके बदलनेकी अिच्छा और आशा रखते हैं। मनुष्य अपनी विवेक-बुद्धिके बजाय अपनी आदतोंसे अधिक परिचालित होता है। और अिसलिअे अुसकी वर्तमान आद-तोंको बदलनेके लिअे शक्तिका अुपयोग करना जरूरी है। समय पाकर लोगोंको नये मूल्योंका पालन करनेकी, अुनके अनुसार चलनेकी आदत पड जायगी। पूंजीवादी समाजमें लोग दूसरोंके शोषण और अपने स्वार्थोंकी सिद्धिकी वृत्ति रखते हैं, अुसके बजाय अुस समय वे समाजके लाभके लिअे काम करनेकी वृत्ति अपनायेंगे। अिस स्थितिके निर्माणकी दिशामें पहला कदम यह है कि समाजका सर्वहारा वर्ग अर्थात् मजदूर वर्ग हिंसाके द्वारा राज्य पर अधिकार कर ले। साम्यवादियोंकी मान्यताके अनुसार पूंजीवादी राज्यकी जगह मजदूर वर्गके राज्यकी स्थापना हिंसक विद्रोहके बिना नही हो सकती। मजदूर वर्गके राज्यकी स्थापना पहली मंजिल है, अुसके बाद रास्ता आसान हो जाता है। फिर, अुसका अुपयोग समाजको शोषणकी बुराअीसे मुक्त करनेके लिअे होना चाहिये। पूंजीवादी शोषण जब तक बिलकुल खतम न हो जाय, तब तक हिंसाका अुपयोग करते रह सकते हैं। मजदूर वर्गका राज्य सदा कायम रखनेकी बात नही है, अुसकी कल्पना पहली मंजिलके तौर पर की गयी है। आखिरी मंजिल राज्यके विलयकी होगी। अैसी आशा की जाती है कि शोषणकी बुराअीके निर्मूलन और लोगोंके मनमें नये मूल्योंकी प्रतिष्ठापनाके परिणाम-स्वरूप राज्यके विलयकी वह आखिरी मंजिल आ जायगी।

तानाशाही — अत्याचारका साधन गांधीजी साम्यवादियोंके अिस सिद्धांतका खंडन करते हैं। वे अुनकी अिस मान्यताको अस्वीकार करते हैं कि हिंसा हमें राजनीतिक अराजकताकी दिशामें ले जा सकती है। अुन्हें तानाशाहीमें, वह मजदूर वर्गकी हो या किसी और वर्गकी, बिलकुल भी विश्वास नही है। अैसा राज्य तानाशाहके हाथमें अन्यायका ही साधन बन रहेगा। अिसलिअे गांधीजी तानाशाहको अथवा राज्यको अैसे अपरिमित अधिकार देनेके पक्षमें नही हैं। दूसरे शब्दोंमें, वे किसी भी तरहकी सर्वसत्ता-धारी शासन-व्यवस्थाकी वेदी पर जनताका बलिदान नही करना चाहते। वे यह तो मानते हैं कि मनुष्य ज्यादातर अपनी पडी हुअी आदतोंसे परिचालित

* हिन्द स्वराज्य, प्र० १५, १९५९।

होता है, किन्तु साथ ही वे यह भी महसूस करते है कि मनुष्य अपनी वुद्धि और सकल्प-शक्तिका अैसा विकास कर सकता हे कि शोपणकी वुराअीको अहिसाके द्वारा ही वहुत दूर तक कम करना सभव हो जाय। यह प्रक्रिया शायद धीमी सिद्ध हो, किन्तु अतिम सफलता निश्चित है—अुतनी ही निश्चित जितनीकी कहानीके खरगोशकी। और अन्तमे गाधीजीका स्वराज्य देशवासियोंके किसी अेक या अेकाधिक वर्गोके लिअे नही है, वह सवके लिअे हे। शर्त अितनी ही है कि सव वर्गोको सामान्य जनताके हितोको सर्वोपरि स्वीकार करना होगा।

अव हम साम्यवादियोकी विविध मान्यताओके विपयमे गाधीजीके विचार अुन्हीके शब्दोमे सुने

साम्यवादी सिद्धांत पर गांधीजीके विचार

(अ) साधनोंकी शुद्धिका महत्त्व :

१ "समाजवाद अेक सुन्दर शब्द है और जहा तक मुझे मालूम है, समाजवादमें समाजके सव सदस्य वरावर होते है—न कोअी नीचा होता है, न कोअी अूचा। किसी व्यक्तिके शरीरमें सिर सवसे अूपर होनेके कारण अूचा नही होता और न पैरके तलवे जमीनको छूनेके कारण नीचे होते है। जैसे व्यक्तिके शरीरके सव अग वरावर होते है, वैसे ही समाजरूपी शरीरके सारे अग भी वरावर होते है। यही समाजवाद है।

"यह समाजवाद स्फटिककी तरह शुद्ध हे। अिसलिअे अुसे सिद्ध करनेके साधन भी शुद्ध ही होने चाहिये। अशुद्ध साधनोसे प्राप्त होने-वाला साध्य भी अशुद्ध ही होता है। अिसलिअे राजाका सिर काट डालनेमे राजा और प्रजा वरावर नही हो जायेगे। और न मालिकका सिर काटनेसे मालिक और मजदूर वरावर हो जायेगे। हम असत्यसे सत्यको प्राप्त नही कर सकते। सत्यमय आचरण द्वारा ही सत्यको प्राप्त किया जा सकता है। क्या अहिसा और सत्य दो चीजे है? हरगिज नही। अहिसा सत्यमें और सत्य अहिसामे छिपा हुआ है। अिसलिअे मैंने कहा है कि वे अेक ही सिक्केके दो पहलू है। वे अेक-दूसरेसे अभिन्न है। सिक्केको किसी भी तरफसे पढ लीजिये। केवल पढनेमे ही फर्क है—अेक तरफ अहिसा है, दूसरी तरफ सत्य। दोनोका मूल्य अेक ही है। सम्पूर्ण शुद्धताके विना यह दिव्य स्थिति अप्राप्य है। मन या शरीरकी अशुद्धि रखी और आपमे असत्य और हिसा आअी।

"अिसलिअे सत्य-परायण, अहिंसक और शुद्ध-हृदय समाजवादी ही भारत और ससारमे ममाजवादी समाज स्थापित कर मकेंगे। जहा तक मै जानता हू, ससारमे कोअी भी देश अैसा नही है जो शुद्ध समाजवादी हो। अुपरोक्त सावनोके विना अैसे समाजवादका अस्तित्वमें आना असभव है।"*

२ "अपने अुद्देश्यकी हम अत्यत स्पष्ट व्याख्या कर ले और अुसे अच्छी तरह समझ ले, फिर भी यदि हम अुसे प्राप्त करनेके साधनोको जानते न हो या जानते हुअे भी अुनका अुपयोग न करते हो, तो हम अुसकी ओर नही वढ मकते। अिसलिअे मैने अपना प्रयत्न मुख्यत सावनो पर व अुनके क्रमिक अुपयोग पर ही केन्द्रित किया है। मै जानता हू कि यदि हम अपने मावनोकी ठीक परवाह करे, तो अुद्देश्यकी प्राप्ति मुनिश्चित है। मै यह भी महसूस करता हू कि अुद्देश्यकी दिशामे हमारी प्रगति ठीक अुसी अनुपातमे होगी जितने कि हमारे साधन शुद्ध होगे। हम जानते है कि राजा, जमीदार और वे सभी जो अपने अस्तित्वके लिअे जनताके शोषण पर निर्भर करते है हमारा अविश्वास करना या हमसे डरना छोड देंगे, यदि हम अुन्हे अपने सावनोकी पवित्रताका विश्वास दिला दे। हम किसीके साथ जोर-जवरदस्ती नही करना चाहते। हम तो अुनका हृदय-परिवर्तन करना चाहते हैं। यह कार्य-पद्धति शायद लम्बी मालूम हो, और सभव है वहुत ज्यादा लम्बी मालूम हो, लेकिन मेरा निश्चित विश्वास है कि वही सवसे छोटी है।"†

३ "हम कार्य-पद्धति या साधनोकी शुद्धता पर जोर देते है। माधनोको मै अुद्देश्यके जितना ही वल्कि अुससे भी ज्यादा महत्त्व देता हू। कारण, साधनो पर तो हमारा कुछ कावू होता है, किन्तु यदि साधनो परसे हमारा कावू अुठ जाय, तो अुद्देश्य पर विलकुल ही नही होता।"‡

४ "अव छिपकर गुप्त रूपसे काम करनेका सवाल ले। मेरा हमेशा यह दृढ मत रहा है — और आज भी वह अुतना ही दृढ है — कि गुप्त रूपसे काम करनेकी पद्धतियोका सपूर्ण वहिष्कार होना चाहिये। अिस सिद्धान्तमे मै कोअी अपवाद नही कर सकता। गुप्तताके कारण हमे वहुत कठिनाअी अुठानी पडी है और यदि दृढताके साथ

* हरिजन, १३–७–'४७

† डी० जी० तेन्दुलकर, महात्मा, ख० ३, पृ० ३७६।

‡ वही, पृ० ३८४।

अुसका विरोध करके हमने अुसे बद नही किया, तो हमारा आन्दोलन नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा। अैसी विशेष परिस्थितियोकी कल्पना की जा सकती है, जिनमे गुप्त कार्य-पद्धतिया लाभप्रद मालूम हो और अुनकी जरूरत जान पडे। लेकिन मै जनताके हितके लिअे, जिसे हम निडर होना सिखाना चाहते है, अुस लाभका त्याग कर दूगा। मै अुन्हे अैसा सोचनेका अवसर देकर कि विशेष परिस्थितियोमे वे गुप्त कार्य-पद्धतियोका आश्रय ले सकते है अुनके मनमे भ्रम पैदा नही करूगा। गुप्तता सविनय प्रतिरोधकी भावनाके विकासमे बाधक है।" *

५ "मै छिपकर किये जानेवाले किसी कामकी सराहना नही करता। मै जानता हू कि देशके करोडो स्त्री-पुरुष छिपकर काम नही कर सकते। कुछ मुट्ठीभर लोग यह सोच सकते है कि पोशीदा हलचलोके जरिये वे करोडोके लिअे स्वराज्य ला सकेगे। लेकिन क्या वह बच्चोको चम्मचसे दूध पिलाने जैसी बात न होगी? आम जनता तो खुली चुनौती और खुले कामोका रास्ता ही अपना सकती है। असली स्वराज्यकी झाकी तो स्त्रियो, पुरुषो और बच्चो सभीको होनी चाहिये। अैसे मकसदके लिअे मेहनत करना ही सच्ची क्राति होगी। हिन्दुस्तान दुनियाकी सभी शोषित जातियोके लिअे अेक नमूना बन गया है, क्योकि हिन्दुस्तानकी लडाअी खुली है और बिना हथियारोके लडी जा रही है। अिस लडाअीमे आजादीको हडप कर बैठे हुओको चोट पहुचाये बिना सभीसे कुरबानी चाही जाती है। अगर यह लडाअी खुली और निहत्थी न होती, तो करोडो हिन्दुस्तानियोमे आजकी जागृति न आअी होती। जब जब अिस सीधे रास्तेको छोडा गया, तब तब थोडी देरके लिअे विकासशील क्रातिमे रुकावट पडी है।" †

६ "मुझे स्वीकार करना चाहिये कि बोलशेविज्म शब्दका अर्थ मै अभी तक पूरा पूरा नही समझा हू। मै अितना ही जानता हू कि अुसका अुद्देश्य निजी सम्पत्तिकी सस्थाको मिटाना है। यह तो अपरिग्रहके नैतिक आदर्शको अर्थके क्षेत्रमे प्रयुक्त करना हुआ, और यदि लोग अिस आदर्शको स्वेच्छासे स्वीकार कर ले या अुन्हे शाति-पूर्वक समझाया जाय और अुसके फलस्वरूप वे अुसे स्वीकार कर ले, तो अिससे अच्छा कुछ हो ही नही सकता। लेकिन बोलशेविज्मके बारेमे मुझे जो कुछ जाननेको मिला है अुससे अैसा प्रतीत होता है कि वह न केवल हिंसाके प्रयोगका बहिष्कार नही करता, बल्कि निजी

* डी० जी० तेन्दुलकर, महात्मा, ख० ३, पृ० ३७७।

† हरिजनसेवक, ३-३-'४६

सम्पत्तिके अपहरणके लिअे और अुसे राज्यके स्वामित्वके अधीन बनाये रखनेके लिअे हिंसाके प्रयोगकी खुली छूट देता है। और यदि अैसा है तो मुझे यह कहनेमे कोअी सकोच नही कि बोलशेविक शासन अपने मौजूदा रूपमे ज्यादा दिन तक नही टिक सकता। कारण, मेरा दृढ विश्वास है कि हिंसाकी नीव पर किसी भी स्थायी रचनाका निर्माण नही हो सकता।"*

(आ) तानाशाही और राज्य-नियंत्रित समाजवादकी बुराअिया.

७ "मै अुदार अथवा किसी तरहकी तानाशाहीको मजूर नही कर सकता। अुसमे धनियोका लोप नही होगा और न गरीबोकी हिफाजत होगी। निश्चय ही कुछ धनी मारे जायेगे और गरीब मोहताज असहाय हो जायेगे। अेक वर्गके रूपमे धनिक रह जायेगे और 'अुदार' विशेषणके बावजूद गरीबोका वर्ग भी बना रहेगा। असली दवा अहिंसा-त्मक लोकतत्र है जिसे दूसरे रूपमे सबका सच्चा शिक्षण कह सकते है। धनियोको गरीबोकी सेवाके और गरीबोको स्वावलबनके सिद्धान्तकी शिक्षा दी जानी चाहिये।"†

८ "मेरे समाजवादका अर्थ है 'सर्वोदय'। मै गगे, बहरे और अधोको मिटाकर अुठना नही चाहता। अुनके समाजवादमे अिन लोगोके लिअे कोअी जगह नही है। भौतिक अुन्नति ही अुनका अेकमात्र मकसद है। मसलन्, अमेरिकाका मकसद है कि अुसके हर शहरीके पास अेक मोटर हो। मेरा यह मकसद नही। मै अपने व्यक्तित्वके पूर्ण विकासके लिअे आजादी चाहता हू। अगर मै चाहू तो आसमानमे टिमटिमाते तारो तक पहुचनेकी निसैनी बनानेकी आजादी मुझे मिलनी चाहिये। अिसका मतलब यह नही कि मै अैसी कोअी बात करूगा ही। दूसरी तरहके समाजवादमे व्यक्तिगत आजादी नही है। अुसमे आपका कुछ नही होता, आपका अपना शरीर भी आपका नही होता।"‡

(अि) आदतके बजाय विवेक-बुद्धिके अनुसार जीवन जीना.

९ "यह स्वीकार करते हुअे भी कि मनुष्य वास्तवमे आदतोके बल पर जीवित रहता है, मेरा विचार है कि अुसका अपनी सकल्प-शक्तिको आचरणमे अुतारकर जीना अधिक अच्छा है। मै यह भी विश्वास रखता हू कि मनुष्यमे अपनी सकल्प-शक्तिको अिस हद तक

* यग अिडिया, १५–११–'२८

† हरिजनसेवक, ८–६–'४०

‡ हरिजनसेवक, ४–८–'४६

विकसित करनेकी क्षमता है, जो शोषणको घटाकर कमसे कम कर दे। मै राज्यकी सत्ताकी वृद्धिको वडेसे वडे भयकी दृष्टिसे देखता हू। क्योकि जाहिरा तौर पर तो वह शोषणको कमसे कम करके लाभ पहुचाती है, परन्तु व्यक्तित्वको नष्ट करके, जो सव प्रकारकी अुन्नतिकी जड है, वह मानव-जातिको वडीमे वडी हानि पहुचाती है।"*

१० "अिस वाद तक पहुचनेके लिअे हम अेक-दूसरेकी तरफ ताकते न वैठे। जव तक मारे लोग समाजवादी न वन जाय, तव तक हम कोअी हलचल न करे, अपने जीवनमे कोअी फेरफार न करके हम भाषण देते रहे, पार्टिया वनाते रहे और वाज पक्षीकी तरह जहा शिकार मिल जाय वहा अुस पर टूट पडे — यह समाजवाद हरगिज नही हे। समाजवाद जैसी शानदार चीज झडप मारनेसे हमसे दूर ही जानेवाली है।

"समाजवादकी शुरुआत पहले समाजवादीसे होती हे। अगर अेक भी अैसा समाजवादी हो, तो अुस पर सिफर वढाये जा सकते हैं। पहले सिफरसे अुसकी कीमत दसगुनी वढती जायगी। लेकिन अगर पहला सिफर ही हो, दूसरे शव्दोमे अगर कोअी आरभ ही न करे, तो अुसके आगे कितने ही सिफर क्यो न वढाये जाय अुनकी कीमत सिफर ही रहेगी। सिफरोको लिखनेमें मेहनत और कागजकी वरवादी ही होगी।"‡

११ "यह प्रश्न हो सकता है कि अिस प्रकार मनुष्य-स्वभावमे परिवर्तन होनेका अुल्लेख अितिहासमे कही देखा गया हे? व्यक्तियोमें तो अैसा हुआ ही है। लेकिन वडे पैमाने पर समाजमे परिवर्तन हुआ है, यह शायद सिद्ध न किया जा सके। अिसका अर्थ अितना ही हे कि व्यापक अहिंसाका प्रयोग आज तक नही किया गया। हम लोगोके हृदयमें अिस झूठी मान्यताने घर कर लिया है कि अहिंसा व्यक्तिगत रूपसे ही विकसित की जा सकती है और वह व्यक्ति तक ही मर्यादित है। दरअसल वात अैसी नही है। अहिंसा सामाजिक धर्म है। सामाजिक धर्मके तौर पर अुसे विकसित किया जा सकता हे, यह मनवानेका मेरा प्रयत्न और प्रयोग चल रहा है।"†

(अी) गाधीजीका मार्ग — शिक्षा और सत्याग्रह

१२ "स्वराज्यकी तीर्थयात्रा वडी कठिन और वडी कष्टप्रद चढाअी है। अुसके मानी है देहातियोकी सेवा करनेके ही अुद्देश्यसे

---

* दि मॉडर्न रिव्यू, अक्तूवर १९३५।

‡ हरिजन, १३–७–'४७

† हरिजन, २५–८–'४०

देहातमे प्रवेश करना — दूसरे शब्दोमे अिसका अर्थ है राष्ट्रीय शिक्षा — जनताकी शिक्षा। अिसका अर्थ है जनताके अन्दर राष्ट्रीय चैतन्य और जागृति अुत्पन्न करना। वह कोअी जादूके आमकी तरह अचानक नही टपक पडेगा। वह तो वटवृक्षकी तरह प्राय बे-मालूम — अज्ञात रूपमे बढेगा। खूनी क्रांति कभी चमत्कार नही दिखा सकती।" *

१३ "लेकिन यह याद रखना चाहिये कि अिस तरहके सुधार तुरन्त नही किये जा सकते। अगर ये सुधार अहिंसात्मक तरीकोसे करने है, तो जमीदारो और गैर-जमीदारो दोनोको सुरक्षित बनाना लाजिमी हो जाता है। जमीदारोको यह विश्वास दिलाना होगा कि अुनके साथ कभी जोर-जबरदस्ती नही की जायगी, और गैर-जमीदारोको यह सिखाना और समझाना होगा कि अुनसे अुनकी मरजीके खिलाफ जबरन् कोअी काम नही ले सकता, और कष्ट-सहन या अहिंसाकी कलाको सीखकर वे अपनी स्वतत्रता प्राप्त कर सकते है। अगर अिस लक्ष्यको हमे प्राप्त करना है, तो अूपर मैंने जिस शिक्षाका जिक्र किया है अुसका आरम्भ अभीसे हो जाना चाहिये। अिसके लिअे पहली जरूरत अैसा वातावरण तैयार करनेकी है, जिसमे पारस्परिक आदर और सद्भावका सुमेल हो। अुस अवस्थामें वर्गों और आम जनताके बीच किसी प्रकारका अहिंसात्मक सघर्ष हो ही नही सकता।" ‡

१४ "अहिंसक कार्यकर्ताका अुद्देश्य हमेशा हृदय-परिवर्तन करना होना चाहिये। लेकिन अुसे अनन्त काल तक प्रतीक्षा करते रहनेकी आवश्यकता नही है। अिसलिअे जब अुसे अैसा महसूस हो कि प्रतीक्षाकी सीमा आ गअी है, तब वह खतरा लेता है और सक्रिय सत्याग्रहकी योजना बनाता है, जिसका रूप सविनय आज्ञाभगका या अैसी ही किसी दूसरी चीजका हो सकता है। अुसका धीरज कभी भी अिस हद तक खतम नही होता कि वह अपने विश्वासका त्याग कर दे।" †

१५ "कोअी आदमी सक्रिय रूपसे अहिंसक हो और फिर भी सामाजिक अन्यायके खिलाफ — भले वह कही भी घटित हुआ हो — खडा न हो, अैसा नही हो सकता, वह अुसका विरोध अवश्य करेगा। दुर्भाग्यवश, जहा तक मैं जानता हू, पश्चिमी समाजवादी समाजवादी सिद्धान्तोको मूर्त रूप देनेके लिअे हिंसाकी आवश्यकतामे विश्वास करते है

* हिन्दी नवजीवन, २१–५–’२५

‡ हरिजनसेवक, २०–४–’४०

† यग अिडिया, ६–२–’३०

म सदासे यह मानता आया हू कि नीचेसे नीचे और कमजोरसे कमजोरके प्रति हम जोर-जबरदस्तीसे सामाजिक न्यायका पालन नही कर सकते। मैं यह भी मानता आया हू कि पतितसे पतित लोगोको भी मुनासिब तालीम दी जाये तो अहिसक साधनो द्वारा सब प्रकारके अत्याचारोका प्रतिकार किया जा सकता है। अहिसक असहयोग ही अुसका मुख्य साधन है। कभी कभी असहयोग भी अुतना ही कर्तव्यरूप हो जाता है जितना कि सहयोग। अपनी विफलता या गुलामीमे खुद सहायक होनेके लिअे कोअी बधा हुआ नही है। जो स्वतत्रता दूसरोके प्रयत्नो द्वारा — फिर वे कितने ही अुदार क्यो न हो — मिलती है, वह अुन प्रयत्नोके न रहने पर कायम नही रखी जा सकती। दूसरें शब्दोमे, अैसी स्वतत्रता सच्ची स्वतत्रता नही है। लेकिन जब पतितसे पतित भी अहिसक असहयोग द्वारा अपनी स्वतत्रता प्राप्त करनेकी कला सीख लेते है, तो वे अुसके प्रकाशका अनुभव किये बिना नही रह सकते।" *

१६ "यह मैं बिना किसी भयके और दृढतापूर्वक कहता हू कि हरअेक योग्य अुद्देश्य सत्याग्रहके द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। वह अुच्चतम और अमोघ अुपाय है और सबसे बडा बल है। समाजवादको हम किसी अन्य साधनसे नही पा सकते। सत्याग्रह समाजको राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक सारी बुराअियोसे मुक्त कर सकता है।" ‡

समाजवादके नये युगका आरभ करनेके लिअे गाधीजी दुहरा हल सुझाते है (१) जनताकी शिक्षा और (२) सत्याग्रह। शिक्षा अेक लम्बी दीर्घकालीन प्रक्रिया है, जब कि सत्याग्रह शिकायतोके निराकरणका शीघ्र-फलदायी और अचूक अुपाय है।

सत्याग्रहका सच्चा स्वरूप · सत्याग्रहके सच्चे स्वरूपका वर्णन करते हुअे वर्षो पूर्व श्री गोपाल कृष्ण गोखलेने कहा था कि "वह मूलत रक्षाका साधन है और नैतिक तथा आध्यात्मिक हथियारोसे लडता है। सत्याग्रही अन्यायके खिलाफ लडता है और अिस प्रसगमे अुसे जो भी कष्ट सहना पडे खुशीसे सहता है। वह पशुबलके मुकाबलेमे आत्मबलको रखता है, वह मनुष्यमे रहे पशुत्वके खिलाफ अुसके देवत्वको खडा करता है, अत्याचारके खिलाफ कष्ट-सहन, शक्तिके खिलाफ अपनी अन्तरात्मा, अन्यायके खिलाफ अपनी श्रद्धा और असत्यके खिलाफ सत्यको भिडाता है।" सत्याग्रहमे सत्यकी

* हरिजन, २०–४–'४०

‡ हरिजन, २०–७–'४०

स्थापनाके लिअे आवश्यक अहिंसक प्रतिरोधके सब संभव अुपायोंका अन्तर्भाव होता है। असहयोग सविनय अवज्ञा या सविनय प्रतिरोध — वैयक्तिक या सामुदायिक ये सब सत्याग्रहकी शाखायें हैं। अहिंसाके अुद्यानमें पनपनेवाले ये सब पौधे सत्याग्रहकी ही संतान हैं। यहा अिनके लक्षणों और प्रयोगोंकी चर्चाके लिअे स्थान नहीं है। लेकिन अितना कह देना आवश्यक है कि ये सब निर्दोष हैं। अिनमें से कुछ दूसरोंकी तुलनामें अधिक शक्तिशाली हैं, लेकिन अुनके प्रयोगमें विवेक और चतुराअीकी अपेक्षा अवश्य है। आवश्यकता होने पर अिन सबका प्रयोग अेकसाथ भी किया जा सकता है। यह तो स्पष्ट ही है कि सत्याग्रहकी कल्पना कमजोरोंके हथियारके रूपमें नहीं की गयी है। सत्याग्रहीके कोशमें हारके लिअे कोअी स्थान नहीं है।

व्यावहारिक राजनीतिके क्षेत्रमें मतभेद · व्यावहारिक राजनीतिमें भारतीय समाजवादियों और साम्यवादियोंकी नीतियोंके खिलाफ गांधीजीका विरोध वास्तविकताओंकी सुदृढ़ और सही नींव पर आधारित था। सन् १९३४ में कांग्रेसके अंदर समाजवादी पक्षके अुदयका अुन्होंने स्वागत तो किया था, किन्तु अुनके कार्यक्रममें अुन्होंने अपनी असहमति प्रगट की थी। अुनकी असहमतिके कारण अिस प्रकार थे (१) अुसमें भारतीय परिस्थितियोंकी अवगणना की गयी थी। (२) कार्यक्रममें बताये गये अनेक विधान यह मानकर किये गये थे कि विशिष्ट वर्गों और सामान्य जनतामें तथा मजदूरों और पूंजीपतियोंमें कोअी जरूरी विरोध है और वे पारस्परिक लाभके लिअे कभी मिलकर काम नहीं कर सकते। (३) मजदूरोंके अधिकारों पर अुचितसे ज्यादा जोर दिया गया था, जब कि अुनके कर्तव्योंके बारेमें कोअी निर्देश नहीं किया गया था। (४) अेक पक्षके रूपमें समाजवादी ज्यादा जल्दी कर रहे थे। (५) समाजवादी परिणामों पर ज्यादा जोर देते थे, जब कि गांधीजी साधनों पर जोर देते थे।

ये सब कारण भारतीय साम्यवादियोंके बारेमें और भी ज्यादा सही थे। साम्यवादी 'अुचित और अनुचित अथवा सत्य और असत्यमें' कोअी फर्क नहीं करते थे। दूसरी महत्त्वकी बात यह थी कि भारतके बजाय अुनकी भक्ति अुस विदेश या अुस विदेशी पार्टीके प्रति थी जिससे वे अपनी विचार-धारा ग्रहण करते थे। अुनकी यह बात गांधीजीकी स्वाभिमानकी कल्पनासे बिलकुल बेमेल थी और वे अिसे अत्यंत अपमानजनक मानते थे। गांधीजीका मत था कि जो देश स्वतंत्र होते हुअे भी विदेशोंके दानका मोहताज हो अुसे जीनेका हक नहीं है। यही बात विदेशी विचारधाराओंके लिअे भी लागू है। वे अुन्हें अुसी हद तक ग्राह्य मानते थे जिस हद तक वे भारतीय परिस्थितियोंके अनुकूल बनाअी जा सकें और हजम की जा सकें।

शरीर-श्रम

हमारे जीवनका बुनियादी नियम : गाधीजीके कल्पनाके पचायत राजमें हरअेक नागरिकसे यह आशा की जायगी कि वह शरीर-श्रमके द्वारा अीमान-दारीसे अपनी जीविका कमाये। रस्किनकी 'अन्टु दिस लास्ट' पुस्तक पढनेके वाद गाधीजीने शरीर-श्रमके सिद्धान्तका आदर करना शुरू कर दिया था। और टाल्स्टायकी रचनाओसे परिचित होने पर अुसने अुनके लिअे अेक बुनियादी कानूनका रूप ले लिया। प्रत्येक पुरुष और स्त्रीको अपने हाथोसे परिश्रम करके और काम करके ही अपनी जीविका कमाना चाहिये, अिस सिद्धान्तका प्रतिपादन पहली वार टी० अेम० वोन्दरेव्ह नामक अेक रूसी लेखकने किया था। टाल्स्टायने अुसे अपनाया और अुसे व्यापक प्रसिद्धि दी। अिस सिद्धान्तके पीछे विचार यह है कि "प्रत्येक स्वस्थ व्यक्तिको अुतना शारीरिक परिश्रम अवश्य करना चाहिये, जितना भोजनकी प्राप्तिके लिअे आवश्यक है और अपनी वौद्धिक क्षमताओका अुपयोग अुसे अपनी जीविकाके अुपार्जन अथवा धन-सग्रहके लिअे नही, वल्कि सिर्फ मनुष्य-समाजकी सेवाके लिअे ही करना चाहिये।"* यह हमारे जीवनका वुनियादी नियम है।

रस्किनकी पुस्तक 'अन्टु दिस लास्ट' की शिक्षायें : रोटीके लिअे किये जानेवाले अिस शरीर-श्रमके कअी रूप हो सकते है। अिस विषयमे गाधीजीका मार्गदर्शन 'अन्टु दिस लास्ट' की शिक्षाओने किया था और अुन शिक्षाओको गाधीजीने अिस प्रकार समझा था

"(अ) सवकी भलाअीमे हमारी भलाअी निहित है।

(व) वकील और नाअी दोनोके कामकी कीमत अेकसी होनी चाहिये, क्योकि आजीविकाका अधिकार सवको अेक समान है।

(स) सादा मेहनत-मजदूरीका, किसानका जीवन ही सच्चा जीवन है।"×

आदर्श अुद्योग — खेती : सच कहा जाय तो रोटीके लिअे किये जानेवाले शरीर-श्रमका सही रूप केवल खेती ही है। परतु चूकि हरअेक आदमीका खेती करना सभव नही है, अिसलिअे खेतीके वदले वह कात सकता है, वुन सकता है, वढअीका काम कर सकता है या लुहारका काम कर सकता है। लेकिन आदर्श अुद्योग तो खेती ही है। अिसके सिवा, हरअेकको अपना भगी भी खुद ही होना चाहिये, यानी अपना मैला स्वय साफ करना चाहिये। दूसरे शब्दोमें, मानवीय

---

* हरिजन, १४–११–'४८

× आत्मकथा, भाग चार, प्र० १८, १९५७।

जीवनकी अनिवार्य आवश्यकताओंकी पूर्ति जिन चीजोंसे होती है, अुनका निर्माण या अनिवार्य अुद्योगोंमें किया जानेवाला परिश्रम रोटीका श्रम माना जा सकता है।

जरूरी शर्तें · शरीर-श्रममें अपने-आपमें कोअी खूबी नहीं है। कामको कष्ट मानकर लाचारीसे अरुचिपूर्वक भी किया जा सकता है। यह तो गुलामीकी ही हालत होगी। अिसलिअे रोटीके लिअे किये जानेवाले अिस शरीर-श्रमकी पहली शर्त यह है कि वह स्वेच्छापूर्वक किया जाना चाहिये। अधिकांश लोगोंको काममें आनन्द नहीं आता और महज कामके लिअे काम वे नहीं करते। अगर अपनी रोटी कमानेके लिअे काम करनेकी अुन्हें जरूरत न हो, तो अुन्हें काम करनेकी प्रेरणा ही नहीं होती। गांधीजीकी तरह हमें परिस्थितियोंकी लाचारीके कारण नहीं, बल्कि स्वेच्छापूर्वक श्रमिक बनना चाहिये।

गांधीजी कहते हैं कि "लाचारीसे मालिककी आज्ञा मानना गुलामीकी स्थिति है, जब कि स्वेच्छापूर्वक अपने पिताकी आज्ञाके पालनमें पुत्रत्वकी शोभा है। अिसी तरह शरीर-श्रमके नियमके लाचारीपूर्ण पालनसे गरीबी बीमारी और असंतोष पैदा होते हैं। वह गुलामीकी ही स्थिति है। किन्तु अुसका पालन स्वेच्छापूर्वक किया जाय तो वह संतोष और स्वास्थ्यको जन्म देता है।" *

रोटीके लिअे श्रमकी दूसरी विशेषता यह है कि वह बुद्धिपूर्वक किया हुआ होना चाहिये। बुद्धि और परिश्रममें कोअी विच्छेद नहीं है। अिस सिद्धान्तकी अवज्ञाके कारण ही भारतीय गांवोंकी भयंकर अुपेक्षा हुअी है।

> "श्रमके साथ जो 'बुद्धिपूर्वक किया हुआ' विशेषण लगाया है, वह यह बतलानेके लिअे लगाया है कि समाज-सेवामें श्रम तभी खप सकता है जब अुसके पीछे सेवाका कोअी निश्चित हेतु हो, नहीं तो यह कहा जा सकता है कि हरअेक मजदूर समाजकी सेवा करता है। अेक प्रकारसे तो वह समाजकी सेवा करता ही है, पर जिस सेवाकी यहां बात हो रही है वह बहुत अूंचे प्रकारकी सेवा है। जो मनुष्य सबके हितके लिअे सेवा करता है वह समाजकी सेवा करता है और जितनेसे अुसका पेट भर जाय अुतनी मजदूरी पानेका अुसे हक है। अिसलिअे अिस प्रकारका 'ब्रेड-लेबर' समाज-सेवासे भिन्न नहीं है।" †

यह तो स्पष्ट ही है कि शरीर-श्रमके अिस सिद्धान्तका समाज-सेवासे कोअी विरोध नहीं है। "सोच-समझकर किया हुआ रोटीका परिश्रम किसी भी समय समाज-सेवाका अुच्चतम रूप है।" ‡ अुससे देशकी संपत्ति बढ़ती है।

* हरिजन, २९–६–'३५

† हरिजनसेवक, १४–६–'३५

‡ हरिजन, १–६–'३५

रोटी-श्रमकी तीसरी विशेषता यह है कि वह सबके कल्याणकी भावनासे किया जाता है। जो भी श्रम किया जाता है वह फलासक्तिके बिना सेवा और त्यागकी भावनासे ही किया जाता है। अिस सिद्धान्तके पालनसे समाजकी रचनामे अेक नि शब्द क्रान्ति ही हो जाती है। मौजूदा जीवन-सघर्षकी जगह पारस्परिक सेवाका सघर्ष ले लेता है। जगलके कानूनकी जगह सेवाका कानून चलने लगता है। अिसमे सन्देह नही कि जो लोग त्यागकी भावनासे काम करते है वे अपने अुस श्रमसे ही अपनी रोटी भी कमाते है। लेकिन अुनका मुख्य लक्ष्य अपनी जीविका कमाना नही होता, वह अुनके श्रमका अेक प्रासगिक फल-मात्र होता हे। "त्यागमय जीवन कलाकी पराकाष्ठा है और वह सच्चे आनन्दसे परिपूर्ण होता है।"* सदाचरणकी भाति सेवा भी अपना पुरस्कार आप ही है।

भारतीय समाजमें श्रमके प्रति अवज्ञाका भाव : दु खकी बात है कि हाथकी मजदूरी करनेवाले लोगोको हिन्दू समाजमे नीचा दर्जा दिया गया है और अुच्चतर जातिया अुन्हे अपना समकक्ष नही मानती। हमारे देशमे आज भी यह स्थिति है कि पैसेवाले और तथाकथित अुच्च वर्गोके लोग शरीर-श्रमको नीचा समझते है, यहा तक कि अुसके प्रति घृणाका भाव रखते है। अिसलिअे गाधीजी श्रमके गौरव पर जोर देना जरूरी मानते थे। "अीमानदारीके साथ अपनी रोजी कमानेकी अिच्छा रखनेवालेके लिअे कोअी भी काम नीच नही है। सवाल यही है कि आदमी खुद अीश्वरके दिये हाथ-पैर हिलानेको तैयार है या नही?"‡ "शरीर-श्रमके साथ अकारण ही जो लज्जाका भाव जुड गया है अुसे यदि दूर किया जा सके, तो औसत बुद्धिवाले सारे युवा पुरुषो और स्त्रियोके लिअे हमारे पास काफीसे ज्यादा काम है।"† गाधीजीकी अहिंसा अिस बातको असह्य मानती थी कि किसी स्वस्थ आदमीको, जिसने अपनी रोटीके लिअे अीमानदारीसे श्रम न किया हो, मुफ्त खिलाया जाये।

बौद्धिक और शारीरिक परिश्रममें कोअी विरोध-भाव नहीं : हमारे देशमे अेक आम खयाल है कि बौद्धिक और शारीरिक परिश्रम अेक-दूसरेके विरोधी है। लेकिन बौद्धिक विकासके अर्थके बारेमे यदि हमारी समझ साफ हो, तो हमे दिखना चाहिये कि अिन दोनोमे अैसा कोअी विरोध नही है। "बौद्धिक विकासको प्राय विश्वसे सम्बन्धित अमुक तथ्योकी जानकारी मान लिया जाता हे।"×

* फ्रॉम यरवडा मन्दिर, प्र० १४ व १५।
‡ हरिजनसेवक, १९–१२–'३६
† हरिजन १–३–'३५
× हरिजन, २८–११–'४८

लेकिन अैसी जानकारीको सही अर्थमे ज्ञान नही कहा जा सकता। बौद्धिक प्रगतिका परिणाम विवेक-शक्तिका विकास होना चाहिये।

"यह मानना कि किताबोमे ही, मेज-कुर्सी पर बैठनेमे ही ज्ञान मिलता है, बुद्धिका विकास होता है, घोर अज्ञान है, भारी वहम है। अिसमे से हमें तो निकल ही जाना चाहिये। जीवनमे वाचनके लिअे स्थान जरूर है, मगर वह अपनी जगह पर ही शोभा देता है। शरीर-श्रमको हानि पहुचाकर अुसे बढाया जाय, तो अुसके खिलाफ विद्रोह करना फर्ज हो जाता है। बुद्धिशक्तिको सच्चा वेग देनेके लिअे भी शरीर-श्रमकी यानी किसी भी अुपयोगी शारीरिक धधेमे शरीरको लगानेकी जरूरत है।" *

नीचे दिये जा रहे अुद्धरणमे भी यही बात कही गयी है कि शरीर-श्रम बुद्धि द्वारा अुत्पन्न वस्तुका मूल्य या गुणस्तर बढाता है

"दिमागी काम भी अपना महत्त्व रखता है और जीवनमे अुसकी खास जगह है। लेकिन मै तो शरीर-श्रमकी जरूरत पर जोर देता हू। मेरा यह दावा है कि अुस फर्जसे किसी भी अिन्सानको छुटकारा नही मिलना चाहिये। अिससे अिन्सानके दिमागी कामकी अुन्नति ही होगी।" ×

बौद्धिक श्रम और शरीर-श्रम, दोनो अपने-अपने क्षेत्रोमे अेकसाथ रह सकते है। अुनमे से कोअी भी दूसरेका स्थान नही ले सकता

"मै बौद्धिक श्रमके मूल्यकी अवगणना नही करता। लेकिन बौद्धिक श्रम कितनी ही मात्रामे क्यो न किया जाय, अुससे शरीर-श्रमकी थोडी भी पूर्ति नही होती, जो कि हममे से हरअेक सबकी भलाअीके लिअे करनेको पैदा हुआ है। बौद्धिक श्रम शरीर-श्रमसे निश्चित रूपमे श्रेष्ठ हो सकता है, अकसर होता है, लेकिन वह शरीर-श्रमका स्थान कभी नही लेता और न कभी ले सकता है, जैसे बौद्धिक भोजन हम जो अन्न खाते है अुसकी अपेक्षा ज्यादा अुत्तम है, परन्तु वह अन्नका स्थान कभी नही ले सकता। सचमुच, पृथ्वीकी अुपजके अभावमे बुद्धिकी अुपज होना असभव है।" ‡

बौद्धिक परिश्रम आत्माके लिअे है और वह अपना पुरस्कार स्वय ही है। अत आदर्श राज्यमे डॉक्टर, वकील और अिसी तरहके दूसरे बौद्धिक अुद्योग करनेवालोसे यह आशा की जाती है कि वे समाजके कल्याणके लिअे ही काम करेंगे, स्वार्थके लिअे नही।

---

* हरिजनसेवक, २८–११–'४८

× हरिजनसेवक, २३–२–'४७

‡ यग अिडिया, १५–१०–'२५

श्रम और सस्कृतिको अेक-दूसरेसे अलग नही किया जा सकता। श्रम न हो तो सस्कृतिका फूल मुरझा जाता है। पुस्तकोके निरुद्देश्य अध्ययन मात्रसे बुद्धिका विकास सिद्ध नही किया जा सकता। लेकिन अुद्देश्यपूर्वक किया गया थोडा-सा अध्ययन भी फलदायी होता है।

शारीरिक श्रमसे बुद्धिके विकास पर कोअी बुरा प्रभाव नही पडता और न अुससे नीरस अेकविधता (monotony) ही अुत्पन्न होती है। अूपर यह बताया जा चुका है कि शरीर-श्रम बुद्धिसे अुत्पन्न वस्तुओकी गुण-वृद्धि करता है। और जहा तक अेकविधताका सवाल है शरीर-श्रमके पक्षमे कमसे कम अितना तो कहा ही जा सकता है कि वह मुश्किलसे कटनेवाले अुन घटोसे ज्यादा अूबानेवाला नही होता जब हम बिलकुल खाली बैठे होते है। कोअी भी काम, वह कितना भी मामूली क्यो न हो, यदि अुसे सर्जनके आनन्दसे वियुक्त न कर दिया जाय, तो नीरस हो ही नही सकता। जहा शरीर-श्रम महज कुछ पैसे कमानेके लिअे किया जा रहा हो वहा जरूर यह सम्भव है कि वह नीरस मालूम हो। लेकिन यदि वह लाचारीसे नही बल्कि बुद्धिपूर्वक किया जाय, तो वह नीरस नही होता। अगर काम करनेवालेको अपने कामकी वैज्ञानिक जानकारी हो — यह मालूम हो कि वह क्यो किया जाता है और कैसे किया जाता है और अिस तरह अुसकी जिज्ञासाको पोषण मिलता है, तो अपना काम अुसे अवश्य रुचिकर मालूम होगा। कोअी भी श्रम क्यो न हो, यदि वह बुद्धिपूर्वक, अुत्साहपूर्वक और भगवद्‌बुद्धिसे या किसी आदर्शके लिअे किया जाय, तो अुसमे सर्जनका आनन्द अवश्य मिलता है और करनेवाला अुसमे ताजगी महसूस करता है।

शरीर-श्रमके दूरगामी परिणाम शरीर-श्रमके परिणाम बहुत दूरगामी होते है। अिस सिद्धान्तका सार्वत्रिक आचरण होने लगे तो दुनियामे समानताकी स्थापना हो जाये, भुखमरी सदाके लिअे नष्ट हो जाये और हम कितने ही पापोसे मुक्त हो जाय। अनुचित अुदारतासे अुत्पन्न होनेवाला आलस्य, निठल्लापन, दम्भ और अपराध आदि भूतकालकी वस्तु बन जाये। अनुचित अुदारता देशकी भौतिक या आध्यात्मिक सम्पत्तिमे किसी प्रकारकी वृद्धि नही करती। अुससे दाताको पुण्य-कार्य कर सकनेका झूठा सन्तोष मिलता है। श्रम सब लोगोको अेकता और समानताके सूत्रमे बाधनेवाला अेक अतिशय शक्तिशाली साधन है। यदि समाजका हरअेक व्यक्ति रोटीके लिअे श्रमके कर्तव्यका पालन करने लगे, तो अूच-नीचके भेद मिट जाये तथा पूजी और श्रम या अमीरो और गरीबोके बीचका सघर्ष शान्त हो जाय। "अमीर तब भी रहेगे, लेकिन अुस स्थितिमे वे अपनेको अपनी सम्पत्तिका ट्रस्टी मानेगे और अुसका अुपयोग मुख्यत सार्वजनिक हितके लिअे करेगे।" *

* फ्रॉम यरवडा मन्दिर, प्र० ९।

आर्थिक समानता

आर्थिक समानताका आशय आर्थिक समानताका लक्ष्य है पूरे दिनके प्रामाणिक परिश्रमके लिअे मजदूरीकी समानता — भले वह परिश्रम वकीलका हो, डॉक्टरका हो, शिक्षकका हो या भगीका हो। समानताकी अिस स्थितिको पहुचनेके लिअे वहुत वढी-चढी तालीमकी जरूरत है।* अिसलिअे गाधीजीकी कल्पनाकी आर्थिक समानताका यह अर्थ नही है कि हरअेकके पास अेक-जितना पैसा या अुपभोग्य वस्तुओकी अेक-जितनी मात्रा होगी। अनुभव वताता हे कि व्यक्ति-व्यक्तिकी आवश्यकताओमे भेद अवश्य होता हे। पशुओकी आवश्यकताओमे होनेवाले भेदकी तरह मनुष्योकी आवश्यकताओमे रहनेवाले अिस भेदको सही-सही आकना सभव नही। अमीरो और गरीवोके भेदको कम करना जरूर सभव हे। अिन दोनो वर्गोमे आज जो असमानता पायी जाती हे, वह हमारे लिअे कलक-रूप है। यह जरूरी है कि जिन चद अमीरोके हाथमे आज देशकी अधिकाश सपत्ति केन्द्रीभूत है अुनकी सपत्तिका स्तर कुछ नीचे लाया जाय और शेप करोडो वेजवान गरीवोका स्तर कुछ अूपर अुठाया जाय। अिसके सिवा, अैसी व्यवस्था होना चाहिये कि हरअेक व्यक्तिको सतुलित आहार प्राप्त हो, रहनेके लिअे स्वास्थ्यप्रद घर मिले, शरीर ढकनेके लिअे काफी कपडा मिले और अपने वच्चोको पढाने और डॉक्टरी राहत पानेकी सुविधाये मिले। सक्षेपमे, समान वितरणका सच्चा आशय यह है कि हरअेक आदमीके पास अपनी स्वाभाविक और अनिवार्य आवश्यकताये पूरी करनेके साधन अवश्य होने चाहिये। अिसलिअे आर्थिक समानताका सच्चा अर्थ है हरअेकको अुसकी आवश्यकताके अनुसार। सव लोगोकी अनिवार्य आवश्यकताये पूरी हो जाये, अुसके वाद अिन आवश्यकताओसे अूपर हरअेक चीज निषिद्ध मानी जानी चाहिये, अैसी वात नही है। मजदूरो और किसानोमे जो ज्यादा वुद्धिमान होगा वह और लोगोकी अपेक्षा ज्यादा पैसा कमायेगा। गाधीजी अैसी जड समानताका निर्माण नही करना चाहते थे, जिसमे किसी भी व्यक्तिके लिअे अपनी योग्यताका पूरा पूरा अुपयोग सम्भव नही रह जाता या नही रहने दिया जाता, क्योकि अैसा समाज अपने अन्तिम विनाशका वीज अपने ही भीतर लेकर चलता है।

> "कअी लोग अैसा सोचते है कि अूच-नीचके दरजे मिटा दिये जाय, तो अराजकता और स्वेच्छाचारिताका रास्ता खुल जायगा। यह धारणा सही नही हे। होना तो यह चाहिये कि अिन सारे भेदभावोके मिट जानेसे सपूर्ण अनुशासनकी स्थिति पैदा हो। यह अनुशासन सपूर्ण अिसलिअे होगा कि अुस हालतमे सव लोग जिस

---

* हरिजन, १०–८–'४७

समाजके वे सदस्य है अुसके नियमोका पालन अिच्छापूर्वक स्वय ही करेगे।"*

गाधीजी चाहते थे कि अमीर अपनी सपत्ति अपने पास यह मानकर रखे कि वह गरीबोकी धरोहर है अथवा वे गरीबोके लिअे अुसका त्याग ही कर दे। आर्थिक समानताकी स्थिति अमीरोसे अुनकी सपत्तिका बलपूर्वक अपहरण करके नही लायी जा सकती। हिंसाके द्वारा असमानताओके अुच्छेदके प्रयत्न कही भी सफल नही हुअे है — रूसमे भी नही। हिंसक कार्यसे समाजको कोअी लाभ नही हो सकता, क्योकि अुसका नतीजा तो यही होगा कि समाज अेक अैसे आदमीकी योग्यताओसे वचित हो जायेगा, जो जानता है कि सम्पत्तिका अुत्पादन या अुसकी वृद्धि किस तरह की जाती है।

अहिंसक पद्धतिकी श्रेष्ठता अहिंसक पद्धति हिंसक पद्धतिसे कही श्रेष्ठ है। द्वेषके खिलाफ प्रेमकी शक्तियोका सयोजन करके अहिंसाके द्वारा आर्थिक समानताकी स्थापना की जा सकती है। "अुसकी दिशामे पहला कदम यह है कि जिस व्यक्तिने अिस आदर्शको स्वीकार कर लिया हो, वह अपने वैयक्तिक जीवनमे आवश्यक सुधार कर डाले।"† सारे समाजका परिवर्तन होने तक रुकना जरूरी नही है। कोअी भी व्यक्ति अपनेसे अेकदम अिस शुभ कार्यका आरम्भ कर सकता है। सामुदायिक प्रयत्न किया जाय, अहिंसाकी शक्तियोका सयोजन और अुपयोग किया जाय और लोग बुद्धिपूर्वक अैसे किसी भी कार्यमे सहयोग करनेसे अिनकार कर दें जिससे कि अुनकी गुलामीकी जजीरे मजबूत होती है, तो आर्थिक समानताकी यह अभीष्ट स्थिति अवश्य लायी जा सकती है।

संरक्षकता

"वास्तवमे समान वितरणके अिस सिद्धान्तकी जडमे धनवानोके अनावश्यक धनकी सरक्षताका या ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त होना चाहिये, क्योकि अिस सिद्धान्तके अनुसार वे अपने पडोसियोसे अेक रुपया भी अधिक नही रख सकते। यह कैसे किया जाय? अहिंसा द्वारा? या धनवानोसे अुनकी सपत्ति छीन कर? अैसा करनेके लिअे हमे स्वभावत हिंसाका आसरा लेना पडेगा। अिस हिंसक कार्रवाअीसे समाजका लाभ नही हो सकता। समाज अुलटा घाटेमे रहेगा, क्योकि अिससे समाज अेक अैसे आदमीके गुणोसे वचित रहेगा जो दौलत जमा करना जानता है। अिसलिअे अहिंसक मार्ग प्रत्यक्ष रूपमे श्रेष्ठ है। धनवानके पास

---

* यग अिंडिया, ३-५-'२८

† हरिजन, २५-८-'४०

अुसका धन रहेगा, परतु अुसका अुतना ही भाग वह अपने काममे लेगा जितना वह अपनी निजी आवश्यकताओंके लिअे अुचित रूपमे जरूरी ममझता है, और बाकीको समाजके अुपयोगके लिअे धरोहर समझेगा। अिस तर्कमे यह मान लिया गया है कि सरक्षक प्रामाणिक होगा।" *

यदि हमारे पूरा प्रयत्न करनेके बाद भी धनवान लोग गरीबोके हितमे अपने धनके सरक्षक होना स्वीकार न करे तो क्या किया जाय? अैसी स्थितिमे गाधीजी सही और अचूक अिलाजके तौर पर सविनय आज्ञाभग और अहिंसक असहयोगकी सलाह देते हैं। कारण, धनवान लोग समाजके गरीब वर्गके सहयोगके बिना धनका सग्रह कर ही नहीं सकते।

प्रकृतिका बुनियादी नियम यह प्रकृतिका अेक बुनियादी और निरपवाद नियम हे कि प्रकृति अुतना ही पैदा करती हे जितना हमे अपनी आवश्यकताओकी पूर्तिके लिअे रोज-ब-रोज चाहिये। यदि हरअेक आदमी अपने लिअे सिर्फ अुतना ही ले जितनेकी अुमे जरूरत है, तो दुनियामे भुखमरीसे कोअी नहीं मर सकता। यदि कोअी जितना अुसे चाहिये अुससे अधिक लेता हे, तो वह गोया चोरीका अपराध करता हे। जिस चीजकी हमे जरूरत न हो अुसे अपने पास रखना अिस नियमका अुल्लघन हे। अपरिग्रहके अिस आदर्शका पूरा पालन तो तब होगा जब मनुष्य भी पक्षियोकी तरह आगामी कलका विचार करना और सग्रह करना बिलकुल छोड दे। यदि वह पहले निष्ठापूर्वक-दैवी राज्यको पानेका प्रयत्न करे, तो अुसे और सब अपने-आप मिल जाय।

अपरिग्रह -- अेक मन स्थिति अपरिग्रह आखिर तो अेक मन स्थिति हे। कोअी भी मनुष्य पूरा अपरिग्रही नही हो सकता। शरीर भी अेक परिग्रह ही है और वह तो हमारे साथ रहनेवाला है। मनुष्य हमेशा अपूर्ण ही रहनेवाला हे, यद्यपि वह अपनेको पूर्ण बनानेकी कोशिश भी हमेशा करता रहेगा और अुसे करना ही चाहिये।

सरक्षकताके सिद्धान्तकी अुत्पत्ति सरक्षकता "अुन लोगोको दी गयी अेक रियायत हे जो पैसा कमाते तो हैं किन्तु जो मानव-जातिके लाभके लिअे अपनी कमाअीका अुपयोग स्वेच्छापूर्वक करनेके लिअे तैयार नही है।" † यह सिद्धान्त सामान्य बुद्धिकी अुपज है और गाधीजीका निश्चित विश्वास है कि वह अैसी परिस्थितिका अेक व्यावहारिक हल पेश करता हे। जो धनवान हैं और धनसग्रहकी अपनी अिच्छाका जो त्याग नही कर सकते, अुन्हे गाधीजीकी सलाह

---

* हरिजन, २५-८-'४०

† मॉडर्न रिव्यू, अक्तूबर १९३५।

है कि वे अपने धनका अुपयोग सेवाके लिअे करे। अिस सिद्धान्तका प्रतिपादन अुन्होंने पहली वार अुन समाजवादियोको अुत्तर देते हुअे किया था, जो कहते थे कि जमीदारो और राजाओसे अुनकी सत्ता और सपत्ति छीन ली जानी चाहिये।*

सरक्षकनाका अर्थ —सरक्षकता क्या है? यदि किसी आदमीके पास जितना अुसे चाहिये अुससे ज्यादा धन या सम्पत्ति हो, तो अुसे अपनी अतिरिक्त धन-सम्पत्तिका सरक्षक वन जाना चाहिये। अुसने यह धन विरासतमे पाया हो या व्यापार अथवा अुद्योगके द्वारा (वेशक, अीमानदारीसे) कमाया हो, अुसे यह समझ लेना चाहिये कि यह सारा धन अुसका नही है "अुसे केवल सभ्यजनोचित जीविकाका ही अधिकार है—अैसी जीविकाका जो दूसरे करोडो आदमियोको अुपलब्ध है, अुनसे ज्यादा अूची जीविकाका नही।"‡ अुसका वाकी धन समाजका है और अुसका अुपयोग समाजके कल्याण लिअे ही होना चाहिये।†

धनवान लोग अपने धनकी रक्षा या तो शस्त्रवलसे कर सकते हैं अथवा अहिंसाके द्वारा।

> "अिस अहिंसाकी दीक्षा लेने और देनेका सवसे अुत्तम मत्र है 'तेन त्यक्तेन भुजीथा' (अपनी दौलतका त्याग करके तू अुसे भोग)। अिसको जरा विस्तारसे समझाकर कहू तो यह कहूगा कि करोडो खुशीसे कमा, लेकिन समझ ले कि तेरा धन सिर्फ तेरा नही, सारी दुनियाका है। अिसलिअे जितनी तेरी सच्ची जरूरतें हो अुतनी पूरी करनेके वाद जो वचे अुसका अुपयोग समाजके लिअे कर।"×

व्यापारिक समृद्धि और सपूर्ण अीमानदारी अेक-दूसरेसे असंगत नहीं है अैसा सवाल किया जा सकता है कि क्या शुद्ध साधनोसे करोडो रुपये कमाना सम्भव है। गाधीजी अैसा नही मानते थे कि व्यापारिक समृद्धिके साथ सम्पूर्ण अीमानदारी असगत है। वे अैसे व्यापारियोको जानते थे जो अपने व्यवहारमे अीमानदारीका पूरा पूरा पालन करते थे। "'करोडो रुपये कमाने' की वात यह मानकर कही गयी है कि लोगोको कानूनन् सम्पत्ति रखनेका अधिकार है और यह कि न तो वह अशुद्ध है और न वह हमारे आस-पास फैली हुअी विषमताका दर्पोद्धत प्रदर्शन है।"+ अिस सिलसिलेमे अुन्होने

---

* हरिजन, ३–६–'३९

‡ वही

† वही

× हरिजनसेवक, १–२–४२

+ हरिजन, २२–२–'४२

अैसे आदमीका अुदाहरण दिया जिसके पास खानका पट्टा है। अुसे अचानक अपनी अिस जमीनमे कोअी अनमोल हीरा मिल जाता है। और वह अेकाअेक करोडपति बन जाता है। अैसे आदमीके बारेमे यह नही कहा जा सकता कि अुसने अशुद्ध साधनोका अुपयोग किया है। अिस हवालेका स्पष्टीकरण अुनके ही शब्दोमे अिस प्रकार है

> "नि सदेह करोडो कमानेकी बात मैने अैसे लोगोके लिअे ही कही थी। मै नि सकोच अिस कथनका समर्थन करता हू कि आम तौर पर धनवान लोग और अुसी तरह दूसरे भी अधिकाश लोग कमाते समय कमाअीके साधनोकी शुद्धताका कोअी खास ध्यान नही रखते। अहिसक पद्धतिका प्रयोग करते समय हमारे मनमें यह विश्वास रहना चाहिये कि हरअेक मनुष्य, फिर वह कितना ही पतित क्यो न हो, सुधर सकता है, अगर अुसके साथ चतुरतापूर्वक मनुष्यताका व्यवहार किया जाय? हमे मनुष्यके सद्‌भावोको जगाना चाहिये और अुनके सुपरिणामकी आशा रखनी चाहिये।" *

निर्णय कौन कर सकता है? अिस बातका निर्णय कौन करेगा कि अमुक धन ओमानदारीसे कमाया गया है या बेअीमानीसे, पवित्र है या अपवित्र। "अिस प्रश्नका निर्णय या तो भगवान ही कर सकता है या अमीरो या गरीबो — दोनोके द्वारा नियुक्त कोअी अधिकारी व्यक्ति। हर कोअी व्यक्ति अैसा नही कर सकता।" ‡ यदि हम कहते हो कि सब धन-सम्पत्ति चोरी है, तो हमे स्वय ही सारी धन-सम्पत्तिका त्याग कर देना चाहिये। हमे अपनेसे पूछना चाहिये कि क्या हम अैसा करनेके लिअे तैयार है। यदि हम खुद अिसके लिअे तैयार न हो, तो हमे दूसरोके बारेमे कोअी मतामत नही बनाना चाहिये। हमें अपनेमे अनासक्तिकी भावनाका विकास करना चाहिये और दुनियामे अिस तरह रहना चाहिये कि दुनियाका असर हमारे मन पर न हो।

त्याग बनाम अपहरण क्या कोअी अिस बातका निश्चय कर सकता है कि जिन धनवानोको अपनी सम्पत्तिका सरक्षक बननेके लिअे राजी किया जा सके, अुनकी सम्पत्तिका कितना हिस्सा अुनका है और कितना अुनका नही है? यदि वह धनवान व्यक्ति अपने लिअे अुस सम्पत्तिका २५ % रखनेको राजी हो और ७५ % दान कर देनेके लिअे तैयार हो, तो हमे अुसका प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिये, क्योकि हमे जानना चाहिये कि

---

* हरिजन, २२–२–'४२

‡ हरिजन, १–८–'३६

"स्वेच्छासे दिया हुआ ७५ % तलवारके भयसे दिये हुअे १०० % से कही ज्यादा अच्छा है।" *

अैसी दलील की जा सकती है कि जो व्यक्ति आज अपनी सम्पत्ति जोर-जवरदस्तीके कारण सौपता है वह कल अिस स्थितिको, अुसकी अिच्छा हो या न हो, स्वीकार कर लेगा। लेकिन यह अेक दूरवर्ती सभावना है जिस पर गभीरतापूर्वक विचार नही किया जा सकता। अितना निश्चित है कि यदि आज हिंसाका आश्रय लिया जाय, तो अुसे ज्यादा वडी प्रतिहिंसाका मुकावला करना पडेगा। "अहिंसाके नियम पर चलनेसे हमे अेकके वाद अेक कितने ही समझौते करने पडेंगे, यहा तक कि हमारा जीवन अिन समझौतोकी अेक शृखला जैसा हो जायेगा। लेकिन समझौतोकी शृखला सघर्षोकी अपार शृखलासे कही अच्छी है।" ‡

सरक्षकोका कमीशन: अहिंसक राज्यमे ट्रस्टियोका कमीशन भी विनियमित रहेगा। सरक्षकको अपनी सपत्तिकी आयसे जो कमीशन मिलेगा वह अुस आयका कोअी निश्चित हिस्सा नही होगा। अिसका कारण वताते हुअे गाधीजी कहते है

> "मै अुन्हे अैसा नही कहूगा कि वे अितना ही कमीशन ले, मे तो अुनसे जितना अुचित हो अुतना लेनेकी सिफारिश करूगा। अुदाहरणके लिअे, जिसके पास १०० रु० हो अुससे मै ५० रु० लेनेको कहूगा और वाकी ५० रु० मजदूरोको दे दूगा। लेकिन जिसके पास १,००,००,००० रु० होगे अुससे मै कहूगा कि वह केवल १ % ही ले। अिस तरह आप देख सकते है कि मै जो कमीशन तय करूगा वह आयका कोअी निश्चित हिस्सा नही होगा, क्योकि वैसा किया जाय तो अुसमे भयकर अन्यायकी सृष्टि होगी।" †

कानूनी स्वामित्व: वदली हुअी स्थितिमे कानूनी स्वामित्व सरक्षकका ही होगा, राज्यका नही। अिसलिअे अपना अुत्तराधिकारी चुननेका अधिकार अुस मूल मालिकको ही दिया जाना चाहिये जो पहला सरक्षक वनेगा। लेकिन चूकि सरक्षकका सामान्य समाजके सिवा कोअी दूसरा अुत्तराधिकारी नही होता, अिसलिअे अपना अुत्तराधिकारी चुननेका सरक्षकका अधिकार निर्वन्ध नही होगा। वह कानूनी स्वीकृतिके अधीन रहेगा यानी सरक्षकके चुनाव पर जव राज्य अपनी स्वीकृतिकी मुहर लगा देगा तभी वह अन्तिम

---

* हरिजन, १-६-'३५

‡ वही

† यग अिडिया, २६-११-'३१

माना जायेगा। "अैसी व्यवस्थामे राज्य और व्यक्ति, दोनो पर अकुश लगता है।"*

सरक्षकताके सिद्धान्तकी रूपरेखा सन् १९४४ मे आगाखा महलमे गाधीजीकी रिहाअीके कुछ समय बाद श्री किशोरलाल मशरूवाला और श्री नरहरि परीखने सरक्षकताके सिद्धान्तोकी अेक सक्षिप्त रूपरेखा तैयार की थी। गाधीजीने अुसे देखा और सुधारा था, गाधीजीके सुधारोके बाद अुनका यह मसविदा अिस प्रकार था

"१ सरक्षकता (ट्रस्टीशिप) अैसा साधन प्रदान करती है, जिससे समाजकी मौजूदा पूजीवादी व्यवस्था समतावादी व्यवस्थामे बदल जाती है। अिसमे पूजीवादकी तो गुजाअिश नही है, मगर यह वर्तमान पूजीपति वर्गको अपना सुधार करनेका मौका देती है। अिसका आधार यह श्रद्धा है कि मानव-स्वभाव अैसा नही है, जिसका कभी अुद्धार नही हो सके।

२ वह सपत्तिके व्यक्तिगत स्वामित्वका कोअी अधिकार स्वीकार नही करती, हा, अुसमे समाज स्वय अपनी भलाअीके लिअे किसी हद तक अिसकी अिजाजत दे सकता है।

३ अुसमे धनके स्वामित्व और अुपयोगके कानूनी नियमनकी मनाही नहीं है।

४ अिस प्रकार राज्य द्वारा नियत्रित सरक्षकतामे कोअी व्यक्ति अपनी स्वार्थसिद्धिके लिअे या समाजके हितके विरुद्ध सपत्ति पर अधिकार रखने या अुसका अुपयोग करनेके लिअे स्वतत्र नहीं होगा।

५ जिस तरह अुचित न्यूनतम जीवन-वेतन स्थिर करनेकी बात कही गअी है, ठीक अुसी तरह यह भी तय कर दिया जाना चाहिये कि वास्तवमे किसी भी व्यक्तिकी ज्यादासे ज्यादा कितनी आमदनी हो। न्यूनतम और अधिकतम आमदनियोंके बीचका फर्क अुचित, न्यायपूर्ण और समय समय पर अिस प्रकार बदलता रहनेवाला होना चाहिये कि अुसका झुकाव अिस फर्कको मिटानेकी तरफ हो।

६ गाधीवादी अर्थ-व्यवस्थामे अुत्पादनका स्वरूप समाजकी जरूरतसे निश्चित होगा, न कि व्यक्तिकी सनक या लालचसे।"‡

सरक्षकताके सिद्धान्तोका यह वक्तव्य व्यावहारिक भी है और साथ ही लचीला भी है। वह मौजूदा सम्पत्तिशाली वर्गको कसौटी पर चढाता है

---

* हरिजन, १६–२–'४७

‡ हरिजनसेवक, २५–१०–'५२

और अुसे अपनी बुद्धि और कौशलका समाजके हितमें अुपयोग करनेका मौका देता है। सम्पत्तिकी मालिकीका नियमन किस तरह किया जाय, अिस प्रश्न पर बादमें अुद्योगोंके सबटनके ढाचे पर चर्चा करते समय विचार किया जायगा।

कितने लोग अैसे है जो सच्चे सरक्षक बन सकेंगे, यह सवाल अप्रस्तुत है। सभव है कि अिस सिद्धान्तको आचरणमे अुतारना कठिन हो। लेकिन यदि सिद्धान्त सही है तो अिस सवालका विशेष महत्त्व नही है कि अुसका आचरण ज्यादा आदमी कर सकेगे या कोअी अेक ही। जिसे अहिंसामें विश्वास हो अुसे तो अुसका आचरण करना ही चाहिये, फिर वह अपने प्रयत्नमें सफल हो चाहे असफल।

सरक्षकताकी यह कल्पना मौजूदा जीवन-रचनाकी जगह — जिसमें प्राय प्रत्येक आदमी अपने पडोसीकी परवाह न करते हुअे सिर्फ अपने ही लिअे जीता है — नयी न्याययुक्त रचनाका विकास करनेकी निश्चित फल देनेवाली पद्धति पेश करती है। अगर समाजको शान्तिपूर्ण ढगसे सच्ची प्रगति करनी है, तो धनवानोको यह समझना ही चाहिये कि अुनकी सम्पत्ति अुन्हे गरीबोंकी तुलनामें कोअी अूचा दर्जा नही देती — गरीब और अमीर दोनो ही भगवानकी सतान हैं और समान हैं।

यदि धनवान लोग सरक्षक होना स्वीकार नहीं करें - यदि वे स्वेच्छा-पूर्वक सरक्षक होना स्वीकार नही करते, तो निश्चित है कि परिस्थितिया अुन्हे वैसा करनेके लिअे लाचार कर देंगी। हा, वे आपत्तिको ही आमत्रित करना चाहते हो तो बात दूसरी है। अहिंसक राज्यमें लोकमतका प्रभाव बहुत जबरदस्त होता है। हिंसा जो काम नही कर सकती, अहिंसक राज्यमे लोकमत अुसे आसानीसे कर सकता है। सच पूछो तो, मजदूर और किसान ही जो कुछ वे पैदा करते है अुसके मालिक हैं। अगर बुद्धिपूर्ण सगठनके फलस्वरूप मिलनेवाली अपनी शक्तिको वे पहिचान ले, तो शोषक वर्गके अत्याचार अेकदम समाप्त हो सकते हैं। अगर लोग अत्याचारपूर्ण व्यवस्थाकी बुराअियोंसे असहयोग करे, तो पोषणके अभावमें वह अपने-आप मर जाय। यही अेक तरीका है जिसके द्वारा वर्ग-सघर्ष टाला जा सकता है।

अुद्योगवाद

अभी तक हमने गाधीजीकी कल्पनाके अहिंसक राज्यकी रूपरेखा खीची। अिस स्वराज्यका निर्माण शून्यमें नही किया जा सकता। हम आज यत्रोंके अुपयोग पर आधारित अुद्योगीकरणके युगमें रह रहे हैं। अब हम देखें कि अुद्योगवादके प्रति गाधीजीकी प्रतिक्रिया क्या थी।

विचारोंका क्रमिक विकास अुद्योगवाद और यंत्रोंके अुपयोगके विषयमें गांधीजीके विचारोंमें जैसा क्रमिक परिवर्तन हुआ, वैसा किसी और चीजके बारेमें नहीं हुआ। अुनके विचारोंके अिस क्रमिक विकासकी प्रक्रियाको देखनेके लिअे हम अुसके विवेचनका आरम्भ तबसे करेंगे जब कि यंत्रोंसे गांधीजीकी पहचान पहले-पहल हुअी।

यंत्र — आधुनिक सभ्यताका प्रतीक गांधीजीकी सारी शिक्षा बीज-रूपमें अुनकी अेक छोटीसी पुस्तकमें है, जिसे अुन्होंने सन् १९०९ में गुजरातीमें प्रकाशित कराया था। बादमें 'हिन्द स्वराज्य' या 'अिन्डियन होम रूल' के नामसे अुसका अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ था। अिस पुस्तकमें 'आधुनिक सभ्यता' की सख्त टीका की गयी है और अुसका मुख्य प्रतीक अुन्होंने यंत्रको माना है।

गांधीजीके आर्थिक विचारोंकी भूमिका गांधीजीके आर्थिक विचारोंका अध्ययन करते हुअे यह याद रखना चाहिये कि वे नये भारतके निर्माणके लिअे सक्रिय रूपसे प्रयत्नशील थे। अिसलिअे अिस सम्बन्धमें अुन्होंने जो कुछ कहा है वह भारतीय परिस्थितियोंके अपने अध्ययनके आधार पर कहा है। यह बात जब हम बादमें अुद्योगवादकी जगह गांधीजी द्वारा सुझायी गयी आर्थिक व्यवस्था और अुनके चरखेके संदेश पर विचार करेंगे तब स्पष्ट होगी। भारतीय परिस्थितियोंका विश्लेषण करके अुनके सुधारके लिअे वे जो अिलाज सुझाते हैं वह तो वे विश्वासपूर्वक सुझाते हैं, किन्तु वे अिस संबंधमें पश्चिमको सलाह देते हुअे संकोच करते हैं और जब वे शिष्टतावश अैसा करते हैं तब अुन्हें यह खयाल रहता है कि वे अपरिचित जमीन पर पांव रख रहे हैं।

ग्राम-अर्थ-व्यवस्थाके नाशके कारण अपनी 'हिन्द स्वराज्य' पुस्तकमें यंत्रों पर अपने विचार प्रकट करते हुअे तत्संबंधी अध्यायमें अुन्होंने रमेशचन्द्र दत्तकी पुस्तक 'अिकानामिक हिस्ट्री ऑफ अिन्डिया' का अुल्लेख बहुत भावनापूर्वक किया है। अिस पुस्तकके अध्ययनसे अुन्हें पता चला कि हाथ-अुद्योगों पर आधारित भारतकी ग्राम-अर्थ-व्यवस्थाका नाश मैंचेस्टरके मिल-अुद्योगने किया है और वही भारतके लोगोंकी गरीबीका कारण है। अिसलिअे वे यंत्रोंको आधुनिक सभ्यताका पर्याय मानने लगे। आधुनिक सभ्यता बुरी है, अिसलिअे नहीं कि वह आधुनिक है, वह बुरी है क्योंकि वह लोगोंकी गरीबी और दुर्गतिके लिअे जिम्मेदार है। अुन्होंने भारतीय जीवन पर रेलों और यंत्रों द्वारा अुत्पन्न वस्तुओंके प्रभाव पर विचार किया और वे अिस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ये अनिष्ट हैं। 'हिन्द स्वराज्य' में यंत्र शब्दका अुपयोग जिस अर्थमें हुआ है वह यंत्रके शाब्दिक अर्थसे कहीं ज्यादा है। यंत्र आधुनिक सभ्यताका प्रतीक है और अुसमें शक्तिसे चालित

मिलोके साथ आनेवाली अुद्योग-व्यवस्थाका अर्थ समाया हुआ है। यत्रो और औद्योगिक व्यवस्थाके वीचका भेद अुन्हे स्पष्ट नही हुआ था। जाहिर है कि अुस समय मशीनोका अुनका अनुभव सीमित था। अुस समय वे 'लूम' (करघा) और 'व्हील' (चरखा) का भेद भी नही जानते थे और 'हिन्द स्वराज्य' मे अुन्होने व्हीलके लिअे लूम शव्दका प्रयोग किया है।* 'हिन्द स्वराज्य' पुस्तकमे अुन्होने अुसका वर्णन किया है, लेकिन अुस समय तक अुन्होने न तो करघा देखा था, न चरखा। सन् १९१५ मे जव वे भारत लौटे और सावरमती आश्रममे अुन्होने अपने प्रयोग शुरू किये अुसके वाद ही खादीके विचारको मूर्त स्वरूप मिला।

राष्ट्रीय जीवनकी पुनर्रचना असहयोग आन्दोलनके प्रारभिक कालमे आर्थिक सवालो पर अुन्होने काफी ध्यान दिया। अुन्होने अुस आर्थिक व्यवस्थाका विरोध किया जो यत्रोके प्रचलन और विस्तारके लिअे जिम्मेदार थी। अपने तत्कालीन खादी-सम्वन्धी लेखोमे अुन्होने अुत्पादन और वितरणकी अुत्तम पद्धतियो द्वारा राष्ट्रीय जीवनकी नयी रचनाकी हिमायत की थी। अुनका कहना था कि मिलोकी सख्या वढाना ठीक नही है, क्योकि अुससे सम्पत्ति चन्द लोगोके हाथोमे केन्द्रित होती है। सन् १९२१ तक वे अपनी सन् १९०८ वाली स्थितिसे हटे नही थे।

सन् २० के वाद विचारोमें परिवर्तन सन् २० से ३० के प्रारभिक वर्षोमे यत्रोके सम्वन्धमे गाधीजीके विचारोमे क्रमश परिवर्तन होना शुरू हुआ। यत्र आधुनिक सभ्यताकी वुराअीके प्रतीक है — अपने अिस प्रारभिक विचारसे वे हट गये। अुन्होने अव अपना आरोप अुद्योगवाद — यानी मुनाफा कमानेके अुद्देश्यसे किये जानेवाले केन्द्रीकृत थोक-अुत्पादनकी प्रणाली — तक मर्यादित कर दिया। मानवीय सवालोको समझनेकी अपनी अतर्दृष्टि-सम्पन्न क्षमताके द्वारा अुन्होने देख लिया कि यत्रो और अुद्योगवादमे तथा अेक प्रकारके यत्रो और दूसरे प्रकारके यत्रोमे फर्क है। अुन्होने यह भी महसूस किया कि मनुष्यका शरीर और चरखा स्वय सुन्दर यत्रोके ही नमूने हैं। यानी यत्र अपने-आपमे वुरा नही है। अुसका अुचित अुपयोग भी हो सकता है और अनुचित भी, अुसका अुपयोग मनुष्यके शोपणके लिअे भी हो सकता है और कल्याणके लिअे भी। अिसलिअे यद्यपि मनुष्य-समाजमे यत्रके लिअे स्थान है, लेकिन अिस वातकी सावधानी रखी जानी चाहिये कि अुसे मनुष्यकी आवश्यकताओकी पूर्ति करना है, अुसकी सेवा करना है। अुसका मालिक नही वन जाना है। कुछ यत्र अैसे भी हैं जिनका अुपयोग मनुष्यके कल्याणके लिअे, अुसकी मशक्कत कम करनेके लिअे, अुसका वोझ कम करनेके लिअे किया जा

* यग अिडिया, २०-९-'२८

सकता है। यह बात गाधीजीको १९२५ और २७ के दरमियान ज्यादा स्पष्ट हुअी। सन् १९०८ मे वे यत्रको अुद्योगवादका प्रतीक मानते थे, लेकिन अब अैसा नही रहा। यदि यत्रका ठीक नियत्रण किया जाय, तो वह अेक अैसा साधन भी हो सकता हे जिसके शुभ परिणाम आये। यत्रोके अमर्याद विस्तारसे लोग बेकार होगे और गरीबी बढेगी, लेकिन सादे औजार और अैसे यत्र, जो कारीगरोका बोझ कम करते हो और मशक्कत बचाते हो, स्वागतके योग्य है। अुनके खादीके आर्थिक कार्यक्रमका अुद्देश्य जीवनकी योजनामे यत्रको अुसका अुपयुक्त स्थान दिलाना ही था। यत्रोके प्रति अुनकी दृष्टिमे यह जो परिवर्तन आया अुसका असर अुनके बडे पैमाने पर माल तैयार करनेवाले यत्रोसे सबधित विचारो पर भी पडनेवाला था ही।

यत्रोका अैसा आयोजन, जिससे धन और सत्ता चन्द लोगोके हाथोमे केन्द्रित हो जाय और अुन्हे बाकी करोडो लोगोकी पीठ पर चढनेमे मदद मिले, नैतिक और सामाजिक दृष्टिसे गलत हे। यत्रोके अिस मोहके पीछे जो प्रेरणा है वह परोपकारकी नही, लोभकी हे। मिल-अुद्योगको देशको हानि पहुचाकर समृद्ध नही होने दिया जा सकता। भारतका जो अेक गृह-अुद्योग लाखो-करोडोको दो-कौर अन्न जुटा देता था, अुसके क्रूर विनाशसे अुन्हे बहुत दुःख हुआ और अुन्होने अुसका सख्त विरोध किया। अुन्होने कहा, "व्यक्ति और अुसका कल्याण ही सबसे महत्त्वकी वस्तु है। अुसकी मेहनतको बचाना ही हमारा अुद्देश्य होना चाहिये। और लोभ नही बल्कि मनुष्यकी भलाअी ही हमारा प्रेरक हेतु होना चाहिये।"*

१९२६ से १९३१ का समय १९२६ से १९३१ के कालमे अुनकी अुद्योगवादकी टीका और सख्त होती गयी। अिन दिनोके अपने अेक लेखमें अुन्होने कहा हे कि भयका कारण यत्र नही पर वह औद्योगिक व्यवस्था है, जिसमे मनुष्य यत्रोका गुलाम हो जाता है। अिस व्यवस्थामे अिस बातका निर्णय मनुष्यकी आवश्यकताये नही करती कि किस चीजका और कितना अुत्पादन करना है, बल्कि यत्र अिस बातका निर्णय करते है कि कितना माल तैयार करना है। अुसमे यही अेक अुद्देश्य होता है कि मालिकको लाभ हो। अुद्योगवाद देशकी शोषण कर सकनेकी क्षमता पर, विदेशी बाजारोकी अुपलब्धि पर और प्रतियोगिताके अभाव पर निर्भर करता हे। अुद्योगवादवाली व्यवस्था स्वार्थ-भावनाको बढाती है और अपने पडोसियोका लिहाज करनेकी वृत्तिको कम करती है।

यत्रोके विरोधमे सशोधन गाधीजीके सन् १९२४ के लेखोमे यत्रोके प्रति अुनके रुखमे अेक दूसरा परिवर्तन भी लक्षित होता है। जिन कामोमें

---

* यग अिडिया, १३–११–'२४

भारी यन्त्रोंका अुपयोग अनिवार्य हो अुनमें अुनके अुपयोगके लिअे अब वे तैयार थे, बशर्ते कि वे समाजके नियन्त्रणमें चलाये जायें और कामकी परिस्थितिया आदर्श और आकर्षक हों। अुद्योगवादकी जगह गांधीजीकी सुझायी हुअी व्यवस्थाकी चर्चा करते हुअे हम अिस सवाल पर ज्यादा विचार करेंगे।

अेक भ्रम: बहुतसे लोगोंका खयाल है कि गांधीजी बिजलीके अुपयोगके खिलाफ थे और वैज्ञानिक आविष्कारोंके विरोधी थे। यह खयाल गलत है। यदि अुद्योगवादके दोष दूर किये जा सकें और यन्त्रोंका अुपयोग आम जनताकी भलाअीके लिअे किया जाय, तो वे अुन्हें अपनी योजनामें स्थान देनेके लिअे तैयार थे। अेक बार जब अुनसे पूछा गया कि क्या वे बिजलीको नापसन्द करते हैं तो अुन्होंने जवाब दिया

> "कौन कहता है? अगर हम बिजलीको गांव-गांव और गांवके भी हरअेक घरमें पहुंचा सकें, तो मुझे अिसमें कोअी आपत्ति नहीं कि गांवोंके लोग अपने औजार बिजलीसे चलायें। लेकिन अुस हालतमें बिजलीघरकी मालिकी राज्यकी अथवा ग्रामवासियोंकी होनी चाहिये, जैसे कि गांवके चरागाह पर अुनकी मालिकी होती है। लेकिन जहां न बिजली है और न यन्त्र है वहां बेकार लोग क्या करें? वहां तुम अुन्हें काम देनेकी कोअी व्यवस्था करोगे या यह चाहोगे कि कामके अभावमें वे अपने हाथ ही काट डालें?"*

अेक दूसरे अवसर पर अुन्होंने कहा था

> "चूंकि हम भाप और बिजलीका अुपयोग जान गये हैं, अिसलिअे हमको अुन्हें समुचित अवसर पर, जब हम अुद्योगवादसे बचना सीख जायेंगे, अिस्तेमाल करनेके योग्य होना चाहिये। अिसलिअे हमारी चेष्टा यह होनी चाहिये कि अुद्योगवाद किसी न किसी प्रकार नष्ट हो जाय।"‡

वैज्ञानिक आविष्कारोंके बारेमें गांधीजीका रुख. वैज्ञानिक शोधों और आविष्कारोंके बारेमें गांधीजीके मनोभावसे मनुष्यके कल्याणकी अुनकी गहरी भावना और अिन साधनोंके दुरुपयोगके विषयमें अुनकी चिंता प्रगट होती है। वे कहते हैं "मैं अैसे हरअेक आविष्कारका स्वागत करूंगा जिससे सबका लाभ सिद्ध होता है। लेकिन आविष्कार-आविष्कारमें फर्क है। मैं हजारों आदमियोंको अेक साथ ही मारनेका सामर्थ्य रखनेवाली जहरीली गैसोंका स्वागत तो नहीं कर सकता।"†

---

* हरिजन, २२–६–'३५

‡ हिन्दी नवजीवन, ७–१०–'२६

† हरिजन, २२–६–'३५

"मै यह भी कहूगा कि वैज्ञानिक शोधोका अुपयोग वैयक्तिक लाभके साधनोके रूपमे होना बद होना चाहिये। अैसा हो तो मजदूरोको हदसे ज्यादा काम नही करना पडेगा और यत्र मनुष्यकी प्रगतिमे बाधक न होकर सहायक होगे।" *

अुद्योगवादका विकल्प अुद्योगवाद अस्वीकार किया जाय तो अुसकी जगह हमे कोअी दूसरी व्यवस्था तो लेनी ही पडेगी। यह व्यवस्था क्या होगी? अिस विषय पर लिखनेवाले यूरोपीय लेखक कहते है कि पश्चिमी ढगका अुद्योगीकरण ही सब देशोको अपनाना होगा, अुनकी अिच्छा हो या न हो। अुसके सिवा कोअी दूसरा मार्ग नही है। लेकिन ये लेखक अपना निष्कर्ष यूरोपीय अुदाहरणोके आधार पर निकालते है, जो भारतीय परिस्थितियोसे पूरा मेल नही खाते। वे "पश्चिमी परिस्थितियोके आधार पर अैसा परिणाम निकालते है कि वहाके लिअे जो बात सही है वही बात भारतके लिअे भी सही होनी चाहिये। वे भूल जाते है कि भारतमे परिस्थितिया अनेक महत्त्वपूर्ण मामलोमे वहासे बिलकुल भिन्न है।"‡ याद रखना चाहिये कि अर्थशास्त्रके नियम परिस्थितियोके भेदसे बदलते रहते है। अिसलिअे अुनकी सलाह अेक सीमासे आगे हमारा मार्गदर्शन नही करती। जो बात यूरोपके लिअे सच है, यह जरूरी नही कि वह भारतके लिअे भी सच हो।

"हम यह भी जानते है कि हर राष्ट्र अपनी-अपनी विशेषताये, अपना-अपना व्यक्तित्व रखता है। भारतवर्ष भी अपनी विशेपता रखता है, और यदि हमें अुसके अनेक रोगोकी दवा खोजनी हो, तो हमे अुसकी प्रकृतिकी तमाम विलक्षणताओको ध्यानमे रखकर दवा तजवीज करनी होगी।" †

अिसलिअे भारतका यूरोप जैसा अुद्योगीकरण करना अेक असम्भव प्रयत्न करना है।

पश्चिमकी और भारतकी परिस्थितियोमें भेद "भारतको पश्चिमी ढग पर औद्योगिक क्यो बनना चाहिये? पाश्चात्य सभ्यता शहराती है। अिग्लैड या अिटली जैसे छोटे छोटे देश अपनी जीवन-धाराको शहराती बना सकते है। अमेरिका जैसे विशाल देशके लिअे भी, जिसकी आबादी बहुत कुछ छिछली या बिखरी हुअी है, यही अेक अुपाय है।

---

* हरिजन, १३–११–'२४

‡ यग अिडिया, २–७–'३१

† हिन्दी नवजीवन, ६–८–'२५

लेकिन यह सोचने जैसी बात है कि अेक घनी आबादीवाले विशाल देशको, जिसकी प्राचीन परम्परा ही देहाती है और जो अब तक बराबर अुपयोगी बनी हुअी है, न तो पाश्चात्य आदर्शकी नकल करना है, और न करनी चाहिये। यह आवश्यक नही है कि जो बात परिस्थिति विशेषवाले देशके लिअे अच्छी है, वही अेक बिलकुल जुदी परिस्थितिवाले देशके लिअे भी अनुकूल हो। वही आहार किसीको पोषक सिद्ध होता है और किसीको मारक। किसी देशकी प्राकृतिक रचना अुसकी संस्कृतिके निर्माणमे महत्त्वका हाथ रखती है। ध्रुव प्रदेशमे रहनेवाले किसी मनुष्यके लिअे 'फरकोट' भले ही अेक आवश्यक वस्तु हो, विषुवत् रेखाके बीचोबीच (अुष्णतम प्रदेशमें) रहनेवालेका अुसीसे दम घुटने लगेगा।" *

"भारतको अपने अर्थशास्त्र, अपनी अर्थनीति और अुद्योगो आदिके विषयमे अपनी कार्य-प्रणालीका स्वतंत्र विकास करना है।"×

पश्चिमकी और भारतकी बीमारीकी समानता • यूरोप और भारतकी परिस्थितियोका अन्तर जानते हुअे गांधीजी स्वीकार करते है कि वे पश्चिमको अुसकी समस्याओ पर कोअी सलाह नही दे सकते। लेकिन चूकि अुनसे अपनी राय देनेको कहा जाता है अिसलिअे वे यूरोपकी स्थितिका विश्लेषण करने और अुसके सुधारका अुपाय सुझानेका साहस करते है। वे कहते है, "मै यूरोपकी बीमारी और अुसका अिलाज अुस अर्थमें तो नही जानता जिस अर्थमे कि मै भारतकी बीमारी और अुसका अिलाज जाननेका दावा करता हू। लेकिन मै महसूस करता हू कि अगरचे यूरोपमें लोगोको राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त है, बुनियादी तौर पर यूरोप भी अुसी बीमारीसे पीडित है जिससे कि भारत।" ‡

अूपरकी पंक्तियोंमें जिस बीमारीकी बात कही गयी है, वह बीमारी है जनतंत्रकी ओटमे शासक वर्गके द्वारा आम जनताका शोषण। अगर अिस बीमारीको दूर करना हो, तो अस्पष्ट शब्दोमें अितना कहने मात्रसे हमारा काम नही चलेगा कि जनताको अुसकी गिरी हुअी हालतसे अूपर अुठाना है और अुसे शोषणसे मुक्त करना है। हमे अिसका अुत्तर गहराअीसे सोचकर ढूढ निकालना चाहिये। "वह अुत्तर क्या यह नही है कि वे † वही दरजा

* हिन्दी नवजीवन, २५–७–'२९

× स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गांधी, पृ० ८४४।

‡ यंग अिंडिया, ३–९–'२५

† यानी जनता।

प्राप्त करना चाहते है जो आज पूजीका हे? यदि अैसा हो तब तो वह केवल हिंसाके द्वारा ही पाया जा सकता है।"*

हिंसक क्रांतिके दोष मजदूर वर्ग द्वारा हिंसाके रास्ते पूजीका दरजा पानेके प्रयत्नका अेक अुदाहरण रूसकी क्रातिमे मिलता है। अुसका क्या परिणाम आया है? गाधीजी कहते है

"जहा अुद्योगीकरणको परम लक्ष्य माना गया है और अुसकी पूजा हुअी है, अुस रूस पर मै नजर डालता हू तो वहाके जीवनसे मै खुश नही हो पाता। अपनी बात बाअिबलके शब्दोमे कहू तो 'आदमीको सारी दुनियाकी सम्पत्ति मिल जाय, पर अपनी अन्तरात्माको वह खो दे तो अुसे क्या लाभ हुआ?' ओर आजकी भाषामे कहू तो अपना व्यक्तित्व खोकर आदमी किसी यत्रका पुर्जा जैसा बन जाय तो यह स्थिति मनुष्यके गौरवका खर्व करनेवाली हे। मै चाहता हू कि हरअेक व्यक्ति अपने ढगसे अपना पूरा विकास करे और अिस तरह पूर्ण विकसित अिकाअीके रूपमे समाजमे अपना स्थान ग्रहण करे। गावोको स्वयपूर्ण बन जाना चाहिये। यदि हमे अहिसाके रास्ते चलना हो, तो मै अिसके सिवा कोअी दूसरा हल नही देखता।"×

पूजीवादके दोष कैसे टाले जायें? यदि लोग पूजीवादके दोष टालना चाहते है तो

"वे श्रमजीवियोकी कमाअी वस्तुका अधिक न्यायोचित बटवारा करानेकी कोशिश करेगे। बस, यह हमे अविलब सतोष और सादगी पर ले जाता है, जिन्हे कि हम नये दृष्टिबिन्दुके अनुसार अपनी खुशीसे स्वीकार करेगे। तब जीवनका लक्ष्य भौतिक सामग्रियोकी वृद्धि न रहेगा, बल्कि सुख और आरामको कायम रखते हुअे अुनकी सीमाबद्धता होगा। हम अुस वस्तुको प्राप्त करनेका खयाल छोड देगे जिसे कि हम प्राप्त कर सकते है, बल्कि हम अुस वस्तुको लेनेसे अिनकार करेगे जो कि सब लोगोको न मिलती हो। मुझे अैसा प्रतीत होता है कि यदि आर्थिक दृष्टिसे यूरोपकी जनतासे अैसी प्रार्थना की जाय, तो अुसको सफल होना चाहिये, और यदि अैसे प्रयोगमे कुछ अच्छी सफलता हुअी हो, तो अुससे बहुत भारी और अज्ञात आध्यात्मिक परिणाम अुत्पन्न होगे। मै अिस बातको नही मानता कि आध्यात्मिक तत्त्व अपने ही क्षेत्रमे काम करता है। बल्कि अिसके प्रतिकूल वह

---

* यग अिंडिया, ३-९-'२५

× हरिजन, २८-१-'३९

जीवनके मामूली कार्योंके द्वारा ही अभिव्यक्त होता है। अिस तरह वह आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रो पर भी अपना प्रभाव डालता है।" *

अगर यूरोपके लोग गाधीजीने अूपर जो विचार प्रगट किया है अुसे अपनानेके लिअे राजी किये जा सके, तो अुद्देश्यकी सिद्धिके लिअे हिंसा विलकुल अनावश्यक हो जायेगी और वे अहिंसाके जाहिर फलितार्थोंका पालन करते हुअे अपना अुचित स्थान आसानीसे प्राप्त कर लेगे।

विपुलताका अर्थ 'विपुलता'से गाधीजीका आशय यह है कि हरअेकको खाने, पीने और पहननेके लिअे जितना चाहिये अुतना भरपूर मिलना चाहिये। और अिसी तरह अुसे अपने मन और वुद्धिके शिक्षण तथा विकासके लिअे आवश्यक सुविधाये भी मिलना चाहिये। × अलवत्ता, वे यह नही चाहते थे कि किसीके पास जितनेका वह अच्छी तरह अुपयोग कर हकता है अुससे अधिक कुछ रहे और न वे गरीवी, अभाव, कष्ट और अस्वच्छता ही चाहते थे। +

ग्राम-जीवनकी पुनर्रचना अुद्योगवादकी जगह गाधीजी जिस अर्थ-व्यवस्थाकी हिमायत करते है अुसका यह अर्थ नही हे कि अुन्हे "पुरानी सादगीकी ओर लौट जाना हे।" "लेकिन वह अैसी पुनर्रचना होगी जिसमे ग्राम-जीवनकी मुख्यता होगी और पशुवल तथा भौतिक वल आध्यात्मिक वलकी अधीनतामे रहेगे।" ‡

प्रवाहका अुलटी दिशामें परिवर्तन. क्या वे भारतका अुद्योगीकरण करना चाहेगे — अिस प्रश्नका जवाव देते हुअे गाधीजीने कहा था

> "अुद्योगीकरणके अपने अर्थमे मै अवश्य ही भारतका अुद्योगीकरण करना चाहूगा। हमे गावोको पुनर्जीवित करना हे। हमारे गाव हमारे शहरोकी तमाम आवश्यकताओका अुत्पादन और पूर्ति करते थे। जवसे हमारे शहर विदेशी मालका वाजार वन गये और अिस सस्ते तथा घटिया विदेशी मालमे अुन्होने गावोको पूर कर अुनका शोषण शुरू किया तभीसे भारत गरीव हो गया।" †

अिसलिअे गाधीजी पुन अुसी स्वाभाविक अर्थ-व्यवस्थाकी ओर लौटना और आज गावोका धन शहरोमे वहता चला आ रहा है, अुसका प्रवाह

---

* हिन्दी नवजीवन, ३–९–'२५
× हरिजन, १२–२–'३८
+ वही
‡ यग अिंडिया, ६–८–'२५
† हरिजन, २७–२–'३७

फिर गावोकी दिशामें मोडना चाहते थे। वे गावोमे अुद्योगोकी स्थापना जरूर करना चाहते थे, लेकिन अुद्योगीकरणके प्रचलित अर्थमे नही। यानी वे नयी नयी मिले खडी करके अुनकी सख्या नही वढाते।

स्वाभाविक अर्थ-व्यवस्था स्वाभाविक अर्थ-व्यवस्थामें वडे पैमाने पर अुत्पादन करनेवाले यत्रोद्योगो और गावोके हाथ-अुद्योगोका सुमेल होगा। हाथ-अुद्योगोसे अिन यत्रोद्योगोका मेल तभी हो सकता है, जब अुनकी योजना गावोके लाभकी दृष्टिमे की जाय। अैसे वडे अुद्योग, जो देशकी अर्थ-व्यवस्थाके लिअे चावीकी तरह है और जिनकी देशको जरूरत है, केन्द्रित किये जा सकते है, लेकिन अैसी कोअी भी चीज जिसका अुत्पादन थोडेसे गावोमें हो सकता है शहरोमे केन्द्रित अुत्पादनके लिअे नही चुनी जानी चाहिये। गाधीजी जिन चीजोका अुत्पादन गावोमे आसानीसे हो सकता हो अुनका अुत्पादन वडे पैमाने पर काम करनेवाले यत्रोद्योगके जरिये करनेके खिलाफ थे। *

भारी अुद्योगो पर राज्यकी मालिकी वे चावीरूप अुद्योगो पर राज्यकी मालिकी चाहते थे। अिन अुद्योगोकी सूची तो अुन्होने नही वनायी, लेकिन अुनका कहना था कि मोटे तौर पर जहा लोगोको ज्यादा सख्यामे मिलकर काम करना पडता हो, वहा मालिकी राज्यकी होनी चाहिये। अैसी वस्तुओके अुदाहरणके रूपमे, जिनके अुत्पादनके लिअे भारी यत्रोकी आवश्यकता होगी, अुन्होने सीनेकी मशीनो, छापाखानो और शल्य-चिकित्साके औजारो ‡ के नाम सुझाये थे। साथ ही अुन्होने यह भी कहा था कि श्रम सादा हो या कौशल्य-साध्य, अिस श्रमके अुत्पादन पर मालिकी राज्यके मारफत श्रमिकोकी ही होगी। †

भारी अुद्योग स्वभावत केन्द्रित होगे और अुन पर राष्ट्रकी मालिकी होगी। लेकिन ये सव अुद्योग गावोमे चलनेवाली विशाल राष्ट्रीय प्रवृत्तिका अेक अगमात्र होगे। × समाजवादियोकी तरह अुनका मत था कि वडे पैमाने पर चलनेवाले कारखानो पर या तो राष्ट्रकी मालिकी होनी चाहिये या राज्यका नियत्रण होना चाहिये। लेकिन वे चाहते थे कि अैसे कारखानोमे मजदूरोको अत्यत आकर्षक और आदर्श परिस्थितियोमे काम करनेकी सुविधा मिलनी चाहिये और अुन्हे मुनाफेके लिअे नही वल्कि मानव-जातिकी सेवाकी वृत्तिसे काम करना चाहिये। काम करनेमे प्रेरक हेतु लोभ नही होगा, प्रेम

---

* हरिजन, २८–१–’३९

‡ हरिजन, २२–६–’३५

† हरिजन, १–९–’४६

× कन्स्ट्रक्टिव्ह प्रोग्राम (१९४१), पृ० ८।

होगा।* चावीरूप अुद्योगोंको राज्य चाहे अपने हाथोंमें न भी ले तो भी अुनके सचालन, प्रबध और विकासमे अुनकी आवाज मुख्य अवश्य रहेगी।× गाधीजीकी कल्पनाका राज्य अहिंसा पर आधारित होगा अिसलिअे वे पैसेवालोंसे अुनकी सम्पत्ति छीनेंगे तो नही, किन्तु वे यह जरूर चाहेंगे कि अुक्त कारखानोंको राज्यकी मालिकीके कारखाने बनानेकी प्रक्रियामें वे लोग स्वेच्छासे अपना सहयोग दे। वे मानते थे कि जिस तरह गरीब समाजके अग है, अुसी तरह धनी भी समाजके अग हैं — किसीको भी अछूत नही माना जा सकता।+

अुद्योगोंके दोनों विभागोंमें सुमेल अुद्योगोंके दोनों विभागोंमें सुमेलकी स्थापना राज्यके हाथोंमे सत्ताके केन्द्रीकरण द्वारा नही, बल्कि 'सरक्षकता' के सिद्धान्तके अर्थका विस्तार करके ही की जा सकती है। गाधीजीकी रायमे वैयक्तिक स्वामित्वकी हिंसाकी तुलनामें राज्यकी हिंसा अधिक हानिकारक होती है। लेकिन यदि वह अनिवार्य हो, तो वे राज्यकी कमसे कम मालिकीका समर्थन करनेके लिअे तैयार थे।–

वैयक्तिक स्वामित्व बनाम राज्यका नियत्रण यद्यपि सच कहा जाय तो वैयक्तिक स्वामित्व अहिंसासे मेल नही खाता, फिर भी गाधीजी अुसके साथ अिस आशामे समझौता करनेके लिअे तैयार थे कि अुसमें से कुछ अच्छा फल निकलेगा। राज्यकी मालिकी वैयक्तिक मालिकीसे ज्यादा अच्छी जरूर है, लेकिन अुसमे हिंसा है और अिसलिअे अुसके खिलाफ आपत्ति की जा सकती है। राज्य सघटित और केन्द्रीकृत हिंसाका प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्तिको आत्मा होती है, किन्तु राज्य तो अेक जड यत्र है। अुसे कभी हिंसा छोडनेके लिअे राजी नही किया जा सकता, क्योंकि अुसका जन्म ही हिंसासे हुआ है। अिसलिअे गाधीजी सरक्षकताके सिद्धान्तको तरजीह देते थे।‡ वे रूसमें राज्य द्वारा नियत्रित अुद्योगोंका — यानी अैसी अर्थ-व्यवस्थाका जिसमें अुत्पादन और वितरण दोनोंका ही नियमन राज्य करता है — जो नया प्रयोग चल रहा है अुसे शकाकी दृष्टिसे देखते थे। चूकि यह व्यवस्था बल पर आधारित है अिसलिअे वे कहते थे कि वह अुन्हें न जाने कहा और कितनी दूर ले जायेगी।†

---

* यग अिडिया, १३–११–'२४

× स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज़ ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ८४४।

+ हरिजन, १–९–'४६

– मॉडर्न रिव्यू, अक्तूबर १९३५।

‡ वही

† हरिजन, २–११–'३४

लेकिन यह जरूरी नही कि राज्य हिंसा पर ही आधारित हो। "सिद्धान्तमे चाहे जैसा ही हो लेकिन व्यवहारका तकाजा तो अधिकाशत अहिंसा पर आधारित राज्यका ही होता है।"*

अुद्योगीकरण थोक अुत्पादनका ही पर्याय है अुद्योगीकरण थोक अुत्पादनका ही पर्याय है। "थोक अुत्पादन कमसे कम लोगो द्वारा अत्यत जटिल यत्रोकी मददसे किये जानेवाले अुत्पादनका सूचक पारिभाषिक शब्द है।"‡ "अुद्योगीकरण बडे पैमाने पर किया जाय तो अुससे ग्रामवासियोका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शोषण अवश्य होगा। कारण, अुससे प्रतियोगिता और अुत्पन्न मालको बाजारोमें खपानेकी समस्याये अुत्पन्न होगी।"†

अुद्योगवादकी बुराअिया अुद्योगवादकी बुराअिया सक्षेपमें अिस प्रकार है (१) पूजी और सत्ता चद लोगोके हाथमें अिकट्ठी हो जाती है। (२) पराश्रयिताकी वृद्धि पैसेवाले और मध्यम वर्गके लोग मजदूरो पर, शहर गावो पर और औद्योगिक देश कृपिप्रधान देशो पर जीना शुरू कर देते है। (३) पूजी और श्रममे सघर्प। (४) अमीरो और गरीबोके बीचकी खाअी बढती जाती है और असमानताये अधिकाधिक अुग्र होती जाती है। (५) व्यापारकी और अुसके द्वारा मुनाफा कमानेकी वृत्ति बढती जाती है। फलत अेक ओर भौतिक समृद्धिकी अनियत्रित आकाक्षा और दूसरी ओर युद्धका खतरा पैदा होता है।

पश्चिमके अनुभवसे सबक पश्चिमका अनुभव हमे सिखाता है कि अुद्योगवाद या पूजीवादकी ये सारी बुराअिया हमें टालनेकी कोशिश करना चाहिये। बडे पैमाने पर अुद्योगीकरणसे विशेषाधिकारो और अेकाधिकारोकी अुत्पत्ति होती है। यह बात गाधीजीको पसद नही थी। जो भी वस्तु सबके लिअे समान रूपसे अुपलब्ध न की जा सके — सामान्य जनताको जिसमे हिस्सा न मिले, अुसे वे निषिद्ध मानते थे।

> "अिसलिअे हमे अपना सारा प्रयत्न गावको स्वयपूर्ण बनाने पर केन्द्रित करना है। वह वस्तुओका निर्माण अुपयोगकी दृष्टिसे करेगा, बिक्रीके लिअे नही। गावोमे चलनेवाले अुद्योगोकी यह विशेपता कायम रखी जाय, तो फिर गावोको यह छूट दी जा सकती है कि वे अुन आधुनिक यत्रो और औजारोका अुपयोग करे, जिन्हे वे खरीद

---

* हरिजन, १६–२–'४७

‡ हरिजन, २–११–'३४

† हरिजन, २९–८–'३६

सकते हो। वस, अुनका अुपयोग दूसरोका शोषण करनेके लिअे नही होना चाहिये।"*

"क्षणभरके लिअे मान लीजिये कि यत्रोसे मानव-जातिकी सारी जरूरते पूरी हो सकती है, फिर भी अुनके कारण विशेष प्रदेशोमे अुत्पादन केन्द्रित हो जायेगा। और फिर आपको वितरणका नियमन करनेके लिअे द्राविडी प्राणायाम करना पडेगा। अिसके विपरीत, यदि अुत्पादन और वितरण दोनो अुन्ही क्षेत्रोमे हो जहा अुन चीजोकी जरूरत है, तो नियमन अपने-आप हो जाता है, अुसमे धोखेवाजीको कम मौका मिलता है और सट्टेको तो विलकुल नही मिलता।"×

यदि हमे अहिसाके मार्गका अनुसरण करना है, तो समस्याके हलका केवल यही अेक अुपाय है कि गावोको स्वयपूर्ण वनाया जाय।+ "स्मरणातीत कालसे जिस स्वतत्रताका अुपभोग गाव करते आये है अुसकी रक्षा वे तव तक नही कर सकते, जव तक कि वे जीवनकी मुख्य आवश्यकताओके अुत्पादनका नियत्रण खुद न करते हो।"– "साथ-ही-साथ अुतने ही वडे पैमाने पर वितरणकी व्यवस्था न हो तो अुत्पादनका अेक ही परिणाम आ सकता है — दुनिया पर आपत्तिका पहाड टूट पडेगा।"‡

वितरण अुत्पादनके साथ साथ होना चाहिये वितरणमे समानता तभी आ सकती है जव कि अुत्पादन स्थानिक हो। यानी जव वितरण अुत्पादनके साथ साथ हो रहा हो। वितरण तव तक समान नही हो सकता, जव तक अपने मालको वेचनेके लिअे अुत्पादक दुनियाके दूर दूरके वाजारोकी खोज करनेकी अिच्छा रखता है। अिसका यह अर्थ नही कि पश्चिमी देशोने विज्ञान और सघटन (organisation) के क्षेत्रोमे जो प्रगति की है अुसकी कोअी कीमत नही है। लेकिन अुनका अुपयोग लोगोके लाभ और कल्याणकी दृष्टिसे होना चाहिये।†

"जव अुत्पादन और खपत दोनो स्थानीय वन जाते है, तव अनिश्चित मात्रामे और किसी भी मूल्य पर अुत्पादनकी गति वढाना वन्द हो जाता है। तव हमारी वर्तमान आर्थिक व्यवस्थासे अुपस्थित

* हरिजन, २९–८–'३६
× हरिजन, २–११–'३४
\+ हरिजन, २८–१–'३९
– यग अिंडिया, २–७–'३१
‡ हरिजन, २–११–'३४
† वही

होनेवाली तमाम बेशुमार कठिनाअियां और समस्यायें खत्म हो जायगी।"*

"लोगोंकी वास्तविक आवश्यकतायें पूरी हो जायेंगी, तो अुस वस्तुका अुत्पादन बन्द कर दिया जायगा। लोगोंकी आवश्यकताओंकी परवाह किये बिना और अुनके गरीब होनेका खतरा अुठाकर भी ज्यादा धन कमानेकी गरजसे अुत्पादनको तब भी जारी नहीं रखा जायगा। अैसा नहीं होगा कि चंद लोगोंकी तिजोरियोंमें धनका अस्वाभाविक संग्रह होता रहे और बाकी लोग विपुलतामें भी अभावका अनुभव करते रहें, जैसा कि अुदाहरणके लिअे अमेरिकामें आज हो रहा है।"+

अिसलिअे सिद्धान्त यह है कि

"हरअेक गांव अपनी आवश्यकताओंका अुत्पादन आप करे और अुनका अुपयोग भी खुद ही करे। साथ ही, शहरोंकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे अपने अंशदानके तौर पर थोड़ा-सा अतिरिक्त अुत्पादन भी वह करे।"×

शहरोंका अपना अुचित कार्य शहरोंके आक्रमणसे गांवोंकी रक्षा की जायगी। "अेक समय शहर गांवों पर निर्भर थे। अब स्थिति अुलटी है। दोनोंमें कोअी परस्परावलम्बन नहीं है।"– गांधीजीकी योजनाके अनुसार "शहरोंको अैसी कोअी भी चीज पैदा नहीं करने दी जायगी, जो अुतनी ही आसानीसे गांवोंके द्वारा पैदा की जा सकती है। शहरोंका अपना अुचित कार्य गांवोंकी पैदा की हुअी वस्तुओंके वितरण-केन्द्रकी तरह गांवोंकी मदद करनेका है।‡

प्रत्येक गांव यथासंभव स्वावलम्बी और स्वयंपूर्ण होगा। जिन वस्तुओंको वह खुद पैदा नहीं करता अुन्हें वह आसपासके दूसरे गांवोंसे लेगा और अिस पारस्परिक आदान-प्रदानके द्वारा वे अेक-दूसरेसे जुड़े रहेंगे।†

ज्यादा रोजगार और अूंचे जीवन-स्तरमें विरोध अैसा प्रश्न किया जा सकता है कि असे गांव जनसंख्याके काफी बड़े हिस्सेको काम तो दे सकेंगे,

---

* हरिजन, २–११–'३४

+ वही

× कन्स्ट्रक्टिव्ह प्रोग्राम (१९४१), पृ० ८।

– हरिजन, २८–१–'३९

‡ वही

† स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज़ ऑफ महात्मा गांधी, पृ० ३३६।

लेकिन क्या वे अूचे और अुपयुक्त जीवन-स्तरका निर्माण कर सकेंगे? वेकारीको शीघ्रतापूर्वक दूर करनेमे और लोगोका जीवन-स्तर अूपर अुठानेमें विरोध है। हम ये दोनो चीजें करना चाहते हैं। अगर देशमे जितने कारखाने चल रहे हैं वे सव तोड दिये जायें, तो अिसमें शक नही कि हरअेक आदमीको काम दिया जा सकेगा। अिस तरह हम देशमे अैसी परिस्थिति सहज ही पैदा कर सकते है जिसमें वेकारी नही होगी और हरअेक आदमीको काम होगा, लेकिन वैसा होते हुअे भी जीवन-स्तर वहुत नीचा होगा। हम चाहते यह है कि सवको काम भी रहे और जीवन-स्तर भी अूचा रहे। मार्च १९५५ मे, अलाहावादमें दिये गये अपने अेक भाषणमे प० जवाहरलाल नेहरूने अिस विरोवकी ओर अिशारा किया था

"आजकी हालतमे, हमारे देशमे और दूसरे देशोमे, जिनकी परिस्थितिया हमारी जैसी है, ज्यादा रोजगार पैदा करने और लोगोका जीवन-स्तर अूपर अुठानेमे थोडा विरोध है। और आपको याद रखना चाहिये कि ज्यादा रोजगार और अूचे जीवन-स्तरमें हमेशा विरोध होता है। अगर आप रोजगार पर ज्यादा भार रखते है, तो सभवत अुसका परिणाम यह होता है कि जीवन-स्तर घटता है। और अगर आप जीवन-स्तर अूपर अुठाने पर ज्यादा जोर देते हैं तो वेकारी वढती है। हमें अिन दोनोका सतुलन करना पडता है। दोनो दिशाओमें से किसी अेकमें भी ज्यादा दूर तक वढना ठीक नही होता। ज्यादा वेकारी पैदा करके आप कुछ लोगोका जीवन-स्तर अूपर अुठाये, तो सामाजिक दृष्टिसे यह ठीक नही होगा। दूसरी ओर यदि आप वेकारी अिस तरह दूर करे कि लोगोका जीवन-स्तर जैसा है वैसा ही रहे, अूपर अुठे ही नही, तो भी आप अपने अुद्देश्यमें चूकते है, अपने लक्ष्यकी ओर वढते नही हैं। आप गरीव वने रहते हैं। अिसलिअे सवाल अिन दोनो प्रयत्नोमें सही सतुलन वनाये रखनेका है जो वहुत कठिन है और अुसका यह हल है कि सम्पत्तिका हमारा अुत्पादन वढना चाहिये। अगर आप ज्यादा सम्पत्ति नही पैदा करते, तो वितरणकी आपकी सारी योजनाये विफल हो जाती हैं। क्योकि वितरण करनेके लिअे जितनी चाहिये अुतनी सपत्ति ही हमारे पास नही होती। अिसलिअे सवाल यह है कि ज्यादा अुत्पादन और ज्यादा रोजगारका मेल कैसे साधा जाय।"

अिन दो चीजोमे से किसी अेक पर भी यदि अुचितसे अधिक जोर दिया जाय, तो हमारा विकास असतुलित हो जाता है और हम समानताके लक्ष्यसे दूर हट जाते हैं। अूपर अुद्योगवाद या पूजीवादकी जिन वुराअियोकी

चर्चा हुअी है, अुन्हे दूर करनेमे भी अुससे कोअी सहायता नही मिलती। गाधीजी अिस विरोधसे परिचित थे। नीचे दिये जा रहे अुद्धरणसे यह बात स्पष्ट हो जाती है

"मुल्कके कच्चे मालका अिस्तेमाल करनेवाली और ज्यादा ताकतवर अिन्सानोकी परवाह न करनेवाली कोअी भी योजना न तो मुल्कमे समतोल कायम रख सकती है और न सब अिन्सानोको वरावरीका दरजा दे सकती है।" *

अिसलिअे गाधीजी अैसी योजनाकी हिमायत करते है जिसमे गावको ही अर्थ-रचनाका केन्द्र माना जाय

"सच्ची योजना तो यह होगी कि हिन्दुस्तानकी समूची अिन्सानी ताकतका अच्छेसे अच्छा फायदा अुठाया जाय, और कच्चा माल विदेशोको भेजकर वदलेमें अनाप-शनाप दामोमे तैयार माल खरीदनेके वजाय अुसे हिन्दुस्तानके लाखो गावोमे ही वाटा जाय।" ‡

स्वदेशी

स्वदेशीके सिद्धान्तका आरभ भारत या कोअी भी दूसरा देश दूसरेके लिअे अपनी शक्ति और साधनोका अुपयोग तभी कर सकता है जव कि वह अपना पालन स्वय करने लगे — अपनी आवश्यकताओकी सारी वस्तुयें अपनी ही सीमाके भीतर पैदा करने लगे। अैसा होने पर अुसे अुस अुन्मत्त और विनाशक प्रतियोगितामे पडनेकी जरूरत नही होगी, जो ईर्ष्या-द्वेष, अपने ही वन्धुओके सहार आदिकी वुराअियोको जन्म देती है। ग्राम-केन्द्रित अर्थ-रचनाके मूलमें अेक महान सिद्धान्त निहित है, जिसे गाधीजी स्वदेशी कहते है।

स्वदेशीकी तीन शाखायें "स्वदेशी हमारे भीतरकी वह भावना है जो हम पर अपने पाससे पासके क्षेत्रकी वस्तुओका अुपयोग करने और वहाके लोगोकी सेवा करनेका प्रतिवन्ध लगाती है और अधिक दूरकी वस्तुओ और लोगोको छोडनेकी प्रेरणा देती है।" † अिस स्वदेशीकी तीन शाखाये है धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक। यहा हमारा सम्वन्ध आर्थिक क्षेत्रमे स्वदेशीका प्रयोग करनेसे है। आर्थिक क्षेत्रमे स्वदेशीका अर्थ यह है कि हम केवल अपने समीपसे समीपके

---

* हरिजनसेवक, २३–३–'४७

‡ वही

† स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज़ ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ३३६।

पडोसियो द्वारा तैयार की हुअी चीजोका ही अुपयोग करे और अुन अुद्योगोको कार्यक्षम वनाकर तया जहा वे अपूर्ण हो वहा अुन्हे पूर्ण वनाकर अुन अुद्योगोकी सेवा करे। *

स्वदेशी क्या है "स्वदेशी वह भावना है जो अिन्सानको, दूसरे सव लोगोको छोडकर, सिर्फ अपने विलकुल पासके पडोसीकी सेवा करनेकी प्रेरणा देती है। अिसकी शर्त यही है कि जिस पडोसीकी अिस तरह सेवा की जाये, वह वदलेमें अपने पडोसीकी सेवा करे। अिस मानीमें स्वदेशीकी भावना किसीको भी अपने दायरेसे अलग नही रखती। वह अिन्सानकी सेवा करनेकी ताकतकी वैज्ञानिक मर्यादाभर मानती है।"‡

मनुष्यका पहला कर्तव्य "मनुष्यका पहला कर्तव्य अपने पडोसीके प्रति है। अिसका यह अर्थ नही कि विदेशीके प्रति द्वेष या स्वदेश-वन्धुके प्रति पक्षपातका भाव रखा जाय। सेवाकी हमारी क्षमताकी स्पष्ट मर्यादाये है। अपने पडोसीकी सेवा भी हम कठिनाअीसे ही कर पाते है। यदि हममे से हरअेक व्यक्ति अपने पडोसीके प्रति अपने कर्तव्यका ठीक ठीक पालन करे, तो दुनियामें अैसा कोअी आदमी नही वचेगा जिसे सहायताकी जरूरत होने पर भी सेवा और सहायता न मिले। अिसलिअे कहा जा सकता है कि जो अपने पडोसीकी सेवा करता है वह सारी दुनियाकी सेवा करता है। सच तो यह है कि स्वदेशी-व्रतमें अपने और परायेका भेद कर सकनेकी गुंजाअिश ही नही है। अपने पडोसीकी सेवा करना सारी दुनियाकी सेवा करना है।" †

"मै अपने नजदीकी पडोसीको हानि पहुचाकर दूरवर्ती पडोसीकी सेवा न करूगा। अिसमे दडकी वात जरा भी नही है। वह सकुचित भी किसी मानीमे नही है, क्योकि मुझे अपनी वृद्धिके लिअे जिन जिन चीजोकी जरूरत होती है वे सव मै दुनियाके हर हिस्सेसे खरीदता हू। मै किसीसे भी अैसी कोअी चीज लेनेसे अिनकार करूगा — फिर वह कितनी ही अच्छी या खूवसूरत हो — जो मेरी या अुन लोगोकी, जिनका स्थान कुदरतने अिस तरह निर्माण किया है कि मुझे सवसे पहले अुनकी खवर रखनी चाहिये, वृद्धिमे वाधा डालती हो। मै अुपयोगी और स्वास्थ्यदायी साहित्य दुनियाके हर हिस्सेमे खरीदता हू। मै नश्तर लगानेके औजार अिग्लैंडसे, पिन और पेंसिल आस्ट्रियासे

---

* स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज़ ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ३३६।

‡ हरिजनसेवक, २३–३–'४७

† स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ३७७ और ३८५।

और घडिया स्विटज़रलैंडसे मगाता हू। पर मैं अुम्दासे अुम्दा कपासका अेक अिंच कपडा भी अिंग्लैंडसे या जापानसे या दुनियाके और किसी हिस्सेसे न लूगा — क्योंकि अुससे भारतके लाखो वासियोको हानि पहुच रही है।" *

स्वदेशी सकुचित धर्म नहीं है क्या अपनी मातृभूमिकी सेवा स्वदेश-प्रेमसे प्रेरित अेक सकुचित और वर्जनशील धर्म है? जैसा निम्नलिखित अुद्धरणसे स्पष्ट है, गाधीजी अैसा नही मानते थे। वे कहते है

"मै केवल भारतकी सेवा करता दीखता हू, फिर भी मै किसी दूसरे देशको हानि नही पहुचाता। मेरी देशभक्ति वर्जनशील है और ग्रहणशील भी है। वह वर्जनशील अिस अर्थमे है कि मै अत्यत नम्रतापूर्वक अपना ध्यान अपनी जन्मभूमि पर ही देता हू और ग्रहणशील अिस अर्थमे है कि मेरी सेवामे स्पर्धा या विरोधकी भावना बिलकुल नही है। 'अपनी सम्पत्तिका अुपयोग अिस तरह करो कि अुससे तुम्हारे पडोसीको कोअी कष्ट न हो' — यह केवल कानूनका सिद्धान्त नही परन्तु अेक महान जीवन-सिद्धान्त भी है। वह अहिंसा या प्रेमके समुचित पालनकी कुजी है।" ‡

गाधीजीका स्वदेश-प्रेम अैसा सकुचित स्वदेश-प्रेम नही था कि वे दूसरे लोगोंके दुःखको महसूस न करते। वे भारतके सुखका निर्माण किसी दूसरे देशके सुखका बलिदान देकर नही करना चाहते थे और न यह चाहते थे कि दूसरे देशोंके नाशकी नीव पर अुसकी समृद्धि खडी की जाय। वे भारतको अिसलिअे फलता-फूलता और आगे बढता देखना चाहते थे कि अुससे सारी दुनिया लाभ अुठा सके। अगर भारत समर्थ और शक्तिशाली हुआ, तो वह "दुनियाको अपनी कला-कौशलकी वस्तुये और स्वास्थ्यप्रद मसाले जरूर भेजेगा, किन्तु अफीम और नशीले पेय भेजनेसे अिनकार कर देगा — भले अिस व्यापारसे अुसे प्रचुर भौतिक लाभ होता हो।" †

"स्वदेशी-व्रतका पालन करनेवाला हमेशा अपने आसपास निरीक्षण करेगा और जहा जहा पडोसियोकी सेवा की जा सके, यानी जहा जहा अुनके हाथका तैयार किया हुआ जरूरतका माल होगा, वहा दूसरा छोडकर अुसे लेगा। फिर भले ही स्वदेशी चीज पहले-पहल महगी और कम दरजेकी हो। व्रतधारी अुसको सुधारनेकी कोशिश करेगा।

---

* हिन्दी नवजीवन, १२-३-'२५

‡ स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ३३६।

† यग अिडिया, १२-३-'२५

स्वदेशी खराब है अिसलिअे कायर बनकर परदेशीका अिस्तेमाल करने नही लग जायेगा।"*

हम स्वदेशीको अमुक गिनी-गिनायी वस्तुओ तक ही मर्यादित रखे और अस्थायी अुपायके रूपमें अैसी वस्तुओके अुपयोगकी छूट लेते रहे जो देशमे अुपलब्ध न हो, तो भी यह कहा जा सकेगा कि हम अपने लक्ष्यकी तरफ बढ रहे है।×

स्वदेशीमें नि स्वार्थ सेवाका भाव है:

"परन्तु अन्य अच्छी चीजोकी भाति स्वदेशीका बिना सोचे-विचारे पालन किया जाय तो अुससे नुकसान हो सकता है। अिस खतरेसे बचना चाहिये। विदेशी मालको सिर्फ विदेशी होनेके कारण अस्वीकार करना और अपने देशमे अैसी चीजे तैयार करनेमें राष्ट्रका समय और धन बरबाद करना, जिनके लिअे वहा अनुकूलता नही है, बहुत बडी मूर्खता और स्वदेशीकी भावनाका भग है। स्वदेशीका सच्चा अुपासक कभी विदेशियोके प्रति अपने दिलमें दुर्भाव नही रखेगा। वह ससारमे किसीके प्रति भी वैरभाव नही रखेगा। स्वदेशी-धर्म घृणाका धर्म नही है। वह नि स्वार्थ सेवाका सिद्धान्त है, जिसकी जड शुद्धतम अहिंसा अर्थात् प्रेममे है।"—

गाधीजीने विदेशी वस्तुओके निषेधकी हिमायत महज अिसलिअे कि वे विदेशी है, कभी नहीं की। अुनका आर्थिक सिद्धान्त यह था कि अुन सब विदेशी वस्तुओका सम्पूर्ण बहिष्कार किया जाय, जिनके आयातसे तत्सबधी स्वदेशी हितोको नुकसान पहुचनेकी सभावना हो। मतलब यह कि वे अैसी किसी वस्तुका आयात कदापि नही करना चाहते थे, जो देशमे ही पर्याप्त मात्रामें अुपलब्ध हो सकती हो। अुदाहरणके लिअे, वे आस्ट्रेलियाका गेहू, भले वह ज्यादा अच्छी किस्मका क्यो न हो, मगवाना गलत मानते। लेकिन यदि अुन्हे अिसका निश्चय करा दिया जाता कि अैसा करनेकी अनिवार्य आवश्यकता है, तो स्काटलैंडसे जअीका आटा मगानेका विरोध वे न करते। महज अीर्पा-द्वेषके कारण किसी भी विदेशी वस्तुके बहिष्कारको वे कदापि सहन नहीं करते।‡

---

* मगल-प्रभात, प्र० १३—अ।

× स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ३३६।

— मगल-प्रभात, प्र० १३—अ।

‡ यग अिडिया, १५—११—'२८

स्वदेशीका अर्थ गांधीजीने स्वदेशी वस्तुकी परिभाषा अिस तरह की है जो वस्तु करोड़ों भारतीयोंके हितका संवर्धन करती हो, भले अुसमें लगी हुअी पूंजी और कौशल विदेशी हो, वह स्वदेशी ही है। अलबत्ता, यह पूंजी और कौशल भारतीय नियंत्रणके अधीन होना चाहिये।*

भारतीय नियंत्रणका अर्थ भारतीय नियंत्रणसे गांधीजीका क्या अभिप्राय था? अेक समय अैसा था जब कि भारतमें चलाया जानेवाला कोअी भी अुद्योग भारतीय अुद्योग माना जाता था, भले अुसकी पूंजी, व्यवस्था और नियंत्रण विदेशी हो और वह जनताके हितके लिअे हानिकर भी हो। सचमुच तो ये अुद्योग विदेशी ही थे, यद्यपि चूंकि वे भारतमें चलाये जाते थे अिसलिअे अुनके नामके साथ 'अिंडिया लिमिटेड' जुड़ा होता था। विदेशी अुद्योगोंको भारतमें भरनेकी अिस प्रक्रियाका परिणाम यह होता था कि नवजात भारतीय अुद्योग पनप ही नहीं सकते थे। विदेशी अुद्योगोंकी प्रतियोगिता अुन्हें क्षीण करती थी और असमयमें ही मार डालती थी। अिसलिअे गांधीजीको अैसे अुद्योगोंके प्रति अपना रुख स्पष्ट करना पड़ा। वे कहते थे

> "किसी भी अुद्योगको हिन्दुस्तानी तभी कहा जा सकता है जब कि यह सिद्ध हो जाय कि वह जन-समुदायके लिअे हितकारी है और अुसमें काम करनेवाले कुशल कारीगर व मजदूर दोनों ही हिन्दुस्तानी हैं। अुसकी पूंजी और यंत्र भी हिन्दुस्तानी होने चाहिये, और अुस अुद्योगमें जो मजदूर काम करते हों अुन्हें अुससे पेट भरने लायक रोजी मिलनी चाहिये, अुनके रहनेके लिअे साफ-सुथरे और सुभीतेवाले मकान होने चाहिये और मजदूरोंके बच्चोंके लिअे भी मिल-मालिकोंको पर्याप्त सुविधा कर देनी चाहिये। यह हिन्दुस्तानी अुद्योगकी आदर्श व्याख्या है।"–

अुनके मतानुसार अिस परिभाषाकी कसौटी पर सिर्फ अखिल भारत चरखा-संघ और अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघ ये दो संस्थायें ही खरी अुतर सकती थीं। लेकिन हरअेक सच्चे स्वदेशी अुद्योगको अिस परिभाषासे पूरा पूरा मेल साधनेका अुद्देश्य तो रखना ही चाहिये।

सच्ची स्वदेशी कम्पनी स्वदेशी कम्पनीकी अिस कल्पनाको और अधिक स्पष्ट करते हुअे अुन्होंने कहा था

> "मैं कहूंगा कि केवल वे ही प्रतिष्ठान स्वदेशी माने जा सकते हैं जिनका नियंत्रण, निर्देशन और व्यवस्था भारतीय हाथोंमें हो।

---

* हरिजन, २५–२–'३९

– हरिजनसेवक, ३०–१०–'३७

मै स्वदेशी पूजीका कोअी विरोध नही करूगा और विदेशी हुनरके अुपयोगका — यानी विदेशी विशेषज्ञोंके अुपयोगका भी विरोध नही करूगा, यदि हमें अुनकी आवश्यकता हे और भारतमें वे मिलते नही है। लेकिन शर्त यह है कि यह पूजी और यह कौशल नि शेष रूपसे भारतीयोके नियत्रण, निर्देशन और व्यवस्थापनमें होना चाहिये और अुनका अुपयोग भारतके हितमें होना चाहिये। विदेशी पूजी और कौशलका अुपयोग अेक चीज है, विदेशी औद्योगिक प्रतिष्ठानोको यहा बढने और फलनेका मौका देना बिलकुल दूसरी चीज है।" *

केवल 'अिडिया लिमिटेड' की छाप धारण कर लेनेसे ये प्रतिष्ठान स्वदेशी कहलानेके हकदार नही हो सकते थे। अैसे विदेशी प्रतिष्ठानोकी स्थापनाके बजाय वे यह ज्यादा पसद करते थे कि अिन अुद्योगोकी स्थापना कुछ वर्षोके लिअे रोक दी जाय, ताकि अुस अवधिमें राष्ट्रीय पूजी और व्यापारिक साहसका आवश्यक विकास हो और अुनके आधार पर भविष्यमें अैसे अुद्योग भारतीयोके ही नियत्रण, निर्देशन और व्यवस्थापनमें खडे किये जा सकें।

सच्चे स्वदेशी अुद्योगोको सरक्षण देनेकी नीतिके समर्थक : गाधीजी जीवनके किसी भी क्षेत्रमे कानूनी हस्तक्षेपको बुरा मानते थे। किन्तु स्वदेशी अुद्योगोको सरक्षण देनेकी नीतिके वे प्रबल समर्थक थे। वे अिस बातकी जोरदार हिमायत करते थे कि स्वदेशी अुद्योगोका रक्षण और पोषण करनेके लिअे विदेशी वस्तुओ पर कडा आयात-कर लगाना चाहिये। ‡

गाधीजी सरक्षण-नीतिके अैसे प्रबल समर्थक थे, अिसका कारण यह था कि सरकारकी नीतिकी रचना लकाशायरके कपडा-निर्माताओके हितमे हुआ करती थी, अुसमें भारतीय किसानोकी तकलीफका कोअी खयाल नही किया जाता था। अिसलिअे वे कहते थे

"खुला व्यापार अिग्लैडके लिअे लाभकर होगा। अुसे अपग देशोमे अपना माल फैलाना हे और अपनी जरूरतोको अत्यत सस्ते भावमें दूसरे देशोसे माल लाकर पूरा करना हे। लेकिन हिन्दुस्तानकी जनताको अिस खुले व्यापारने ही तबाह किया है, क्योकि अिसके द्वारा अुसके देहातके गृह-अुद्योग बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट हो गये है। फिर, जब तक राज्य-रक्षण नही मिलता तब तक कोअी भी नवीन व्यापार दूसरे देशके व्यापारके साथ प्रतिस्पर्धा नही कर सकता।" †

---

* हरिजन, २६–३–'३८

‡ स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज़ ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ३३६।

† हिन्दी नवजीवन, १८–५–'२४

पुन "विना किसी अत्युक्तिके यह कहा जा सकता है और अिसका कोअी प्रतिवाद नही कर सकता कि अिंग्लैडने अपनी समृद्धिका भवन भारतके व्यापार और अुद्योगोके नाशकी नीव पर खडा किया है। लकाशायरकी वढतीके लिअे भारतके गृह-अुद्योगोको नष्ट हो जाना पडा है।" *

"अिंग्लैडकी अर्थ-रचना जर्मनीकी अर्थ-रचनासे भिन्न हे। जर्मनी अपनी वीटकी शक्करके वल पर मालदार वना है, जव कि अिंग्लैड विदेशी वाजारोका शोपण करके मालदार वना हे। अेक अपेक्षाकृत छोटे देशके लिअे जो वात सभव हो सकी वह अैसे देशके लिअे सभव नही है, जो १९०० मील लम्वा और १४०० मील चौडा हे। किसी राष्ट्रकी अर्थ-रचना अुसकी जलवायु, अुसकी भूमि और अुसके निवासियोके स्वभाव आदिके द्वारा नियत्रित होती हे। अिन सव वातोमे भारतकी परिस्थितिया अिंग्लैडकी परिस्थितियोसे भिन्न है। अैसी कअी वस्तुअे, जो अिंग्लैडके लिअे पोपक आहार जैसी है, भारतके लिअे जहर सिद्ध होगी। अेक अैसे देशके लिअे जो अनेक अुद्योगोका निर्माण करके औद्योगिक वन गया है, जिसके निवासी ज्यादातर शहरोमे रहते है, जिसकी प्रजाको दूसरे राष्ट्रोका शोपण करके अपनी जीविका चलानेमे कोअी सकोच नही होता और अिसलिअे जो अपने अस्वाभाविक व्यापार-वाणिज्यकी रक्षा करनेके लिअे दुनियाकी सवसे वडी जलसेनाका वोझ अुठाता है — अैसे देशके लिअे 'मुक्त व्यापार' सही अर्थनीति हो सकती हे।" ×

(यद्यपि गाधीजी अुसे नीति-सम्मत नही मानते थे।)

मुक्त व्यापार भारतके लिअे अभिशाप और अुसकी गुलामी कायम रखनेवाला सिद्ध हुआ।

सरक्षण भेदभावसे भिन्न हे अत भारतीय अुद्योगोको दिये गये सरक्षणके विपयमे यह कहना कि अिस तरह भारतीय और यूरोपीय हितोके वीचमे भारतीय हितोके पक्षमे भेदभाव वरता गया, अनुचित हे। भारतीय अुद्योगोको सरक्षण देनेसे अिनकार करनेका अर्थ भारतीय गुलामीको कायम रखना होता। "किसी महाकाय राक्षस और वौनेके वीच अधिकारोकी समानताका भला क्या अर्थ हो सकता है? अिन दो असमान जीवोके वीच समानताकी वात सोचनेके पहले वौनेको मदद देकर राक्षसकी अूचाअी तक पहुचाना होगा।" ‡ दोनोके वीच समानता स्थापित करनेकी यह प्रक्रिया भारतके लाखो-करोडो लोगोके हितमें जरूरी और अनिवार्य थी।

---

* यग अिंडिया, २६–३–'३१

× यग अिंडिया ८–१२–'२१

‡ यग अिंडिया, २६–३–'३१

अिस प्रक्रियाको प्रजातीय भेदभाव कहकर वर्णित करना गलत है। प्रजातीय भेदभावका यह दोषारोपण सिद्ध नही किया जा सकता, क्योकि जो भारतीय अपने विदेशी आश्रयदाताओका सहारा पाकर सत्ता और अधिकारके स्थान अधिकृत किये बैठे है अुनसे भी यह अपेक्षा रखी जाती है कि वे जनताके हितोकी दृष्टिसे जो परिवर्तन करना वाछनीय होगा वैसा परिवर्तन स्वीकार कर लेगे। सन् १९३१ मे, गोलमेज परिषदमें भारतके ब्रिटिश व्यापारियोने भावी भारतीय सविधानमे आर्थिक सरक्षणोका दावा पेश किया था और यह माग रखी थी कि अुनके खिलाफ किसी किस्मका प्रजातीय भेदभाव न बरता जाय। गाधीजीने अुनकी दूसरी मागको सहर्ष तत्काल स्वीकार कर लिया और यह प्रस्ताव किया कि अैसी कोअी भी निर्योग्यता (disqualification) जो भारत राष्ट्रके भारतमे जन्मे हुअे नागरिको पर न लगायी जाती हो, महज प्रजाति, रग या धर्मके कारण अैसे दूसरे आदमियो पर नही लादी जायगी, जो कानूनी तौर पर भारतमें प्रवेश करते हो या वहा रहते हो। यह नुसखा अैसी व्यवस्था कर देगा जिससे अग्रेज या यूरोपीय, अमरीकी, जापानी आदि किसी भी दूसरे विदेशीके खिलाफ कोअी भेदभाव न हो।*

अिग्लैडके साथ भारतके १०० सालसे भी ज्यादा लबे सबधोके कारण गाधीजी स्वतत्र भारतमे अुसके व्यापारके साथ दूसरे देशोकी तुलनामे रियायती व्यवहार करनेके लिअे राजी थे, बशर्ते कि अुससे भारतके हितोकी हानि न हो।× वे दूसरे विदेशी कपडेकी तुलनामे लकाशायरके कपडेको तरजीह देनेके लिअे तैयार थे, अलबत्ता यह कपडा अैसा हो जिसकी भारतको जरूरत हो और जो भारतमे बन न सकता हो।‡ वे अैसे स्वतत्र भारतकी कल्पना करते थे जो शोषणसे, भीतर और बाहर, सर्वथा मुक्त हो और कहते थे कि यदि ब्रिटेन अिस भारतका मित्र या साझी हो, तो वह अुसकी विदेशो द्वारा पूरी की जानेवाली जरूरतोका मुख्य पूर्तिकर्ता होगा।†

अयोग्यताका सरक्षण नहीं · विदेशोसे आयात माल पर प्रतिबधक कर लगानेका आशय यह नही था कि अयोग्यताका सरक्षण किया जाय। गाधीजी कहते थे कि जब हमे स्वराज्य मिल जायगा, तब हमे योग्यता और कौशलकी आजकी अपेक्षा ज्यादा जरूरत होगी। –

---

* स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ८४४।

× यग अिडिया, २६–३–'३१

‡ यग अिडिया, १५–१०–'३१

† यग अिडिया, २६–३–'३१

– यग अिडिया, १६–७–'३१

वहिष्कार वनाम स्वदेशी वहिष्कार और स्वदेशी अेक ही चीज नही है। "स्वदेशी अेक सार्वकालिक सिद्धान्त है। स्वदेशीकी अुपेक्षाके परिणाम-स्वरूप मनुष्य-जातिने अपरिमित दु ख भोगा है। स्वदेशीका अर्थ है कि अपनी आवश्यकताकी वस्तुओका अुत्पादन अपने ही देशमे किया जाय और अुन्हीका वितरण और अुपभोग किया जाय।"* वह अेक रचनात्मक कार्यक्रम है। किन्तु वहिष्कार अेक अस्थायी युक्ति है, जिसका आशय विरोधीको आर्थिक हानि पहुचाकर अपनी माग स्वीकार करानेके लिअे किया जाता है। "अिसलिअे वहिष्कार अयोग्य प्रकारका अेक अैसा प्रभाव है जिसका अुपयोग अपना अुद्देश्य हासिल करनेके लिअे किया जाता है। अप्रत्यक्ष रूपसे और तव जव कि वह लम्बे समय तक लगातार जारी रखा जाय अुसका यह परिणाम आ सकता है कि अुस वस्तुका देशमें ज्यादा अुत्पादन होने लगे।"‡ वहिष्कारमे सारे विदेशी मालका वहिष्कार नही होता, सिर्फ अपने विरोधीके मालका वहिष्कार होता है।

> "वहिष्कार तभी प्रभावकारी हो सकता है जव प्राय सव लोग अुसका अमल करे। लेकिन स्वदेशीके नियमका पालन कोअी अेक आदमी भी करे तो अुससे देशको अुतना लाभ होता है। वहिष्कारकी सफलताके लिअे जनताके क्रोध और घृणा आदिके भावोको अुकसाना पडता है। अिसके विना वहिष्कारमे सफलता नही मिलती। अिसलिअे वहिष्कारके अवाछित परिणाम भी आ सकते है और यह भी सभव है कि दोनो पक्षोमें स्थायी मनोमालिन्य पैदा हो जाय।"†

जिस घटनाको टालनेकी कोशिश की जा रही हो, अुसके घट चुकनेके वाद वहिष्कार वेकार हो जाता है। अभीष्ट परिणाम लानेके लिअे अुसका प्रयोग अेकाअेक और तत्काल करना पडता है। अुसका क्षेत्र अितना वडा होता है कि वहुत जल्दीमे जो सघटन अुसके लिअे खडा किया जाता है, वह सघटन अुतने वडे विशाल क्षेत्र पर कावू नही पा सकता। अिसके सिवा, विरोधी अपना माल हमारे देशमे किसी दूसरे देशके जरिये दाखिल कर दे — यह कठिनाअी तो वनी ही रहती है।

अिसलिअे अिन दोनोकी तुलना करके गाधीजी निम्नलिखित विचार पर पहुचे थे

> "मै स्वदेशीमे मानता हू, क्योकि वह अेक विकासशील प्रक्रिया है और समयके साथ अधिकाधिक वलवान वनती जाती है। कोअी भी

* यग अिडिया, १४–१–'२०

‡ वही

† वही

संस्था या संघटन अुसे अपना सकता है और अुसका आचरण कर सकता है। शासकोंके न्याय या अन्यायसे अुसका कोअी संबंध नहीं है। वह अपना पुरस्कार स्वयं ही है। अिसलिअे अुसमें प्रयत्नके अपव्ययका या विफलताका कोअी सवाल नहीं है। गीताके शब्दोंमें अिस धर्मका स्वल्प आचरण भी महान भयसे हमारी रक्षा करता है। अिसलिअे स्वदेशी और बहिष्कार अेक नहीं हैं, अुनमें जमीन-आसमानका अन्तर है।" *

स्वदेशीकी कामचलाअू परिभाषा स्वदेशीकी बिलकुल सम्पूर्ण और सर्वग्राही परिभाषा देना संभव नहीं है। वह भावना-रूप है, अैसी भावना जो रोज बढ़ती जाती है और अनेक रूपोंमें अपना प्रकाशन करती है। लेकिन राजनीतिक कार्य-क्रमके अंगके रूपमें गांधीजीको अुसकी अेक कामचलाअू परिभाषा बनानी थी। अिस परिभाषाके अनुसार स्वदेशी शब्द अुन अुपयोगी वस्तुओंका वाचक है, जो भारतमें छोटे अुद्योगों द्वारा बनायी गयी हों। ये छोटे अुद्योग अकसर कमजोर होते हैं और वे अपने पांवों पर खड़े हो सकें अिसके लिअे लोगोंको अुनके विषयमें शिक्षित करनेकी जरूरत होती है। अिसके सिवा, अिन अुद्योगोंको अपनी वस्तुओंकी कीमत ठहराने, मजदूरोंकी मजदूरी निश्चित करने और सेवा-सहायता आदिके द्वारा अुनका कल्याण साधनेमें किसी विधिपूर्वक गठित सार्व-जनिक संस्थाका मार्गदर्शन स्वीकार करना चाहिये। यह परिभाषा बड़े और संघटित अुद्योगों द्वारा बनायी वस्तुओंका वर्जन करती है। अिन अुद्योगोंको किसी केन्द्रीय सार्वजनिक संस्थाकी सहायताकी आवश्यकता नहीं होती और अुनमें सरकारी सहायता प्राप्त करनेकी सामर्थ्य होती है। वे अपने पांवों पर खड़े हो सकते हैं और अुन्हें अपनी वस्तुओंके लिअे बाजार ढूंढनेमें कोअी कठिनाअी नहीं होती।

स्वदेशी-कार्यको छोटे पैमाने पर चलनेवाले, असंघटित सामान्य अुद्योगों और खासकर गृह-अुद्योगोंके प्रचार-प्रोत्साहन आदि तक ही सीमित रखा जाय, अिसका यह अर्थ नहीं है कि बड़े अुद्योगोंको नष्ट कर दिया जाय। और न अुसका यह अर्थ है कि अैसे अुद्योगोंसे देशको जो लाभ होता है, अुसकी अुपेक्षा की जाय। मतलब अितना ही है कि किसी भी सार्वजनिक संस्थाको अुन अुद्योगोंका विज्ञापन बननेकी जरूरत नहीं है, जिनके पास विज्ञापनके अपने प्रचुर साधन हैं और जो अपनी देखभाल खुद कर सकते हैं। स्वदेशीकी भावना देशमें पर्याप्त मात्रामें पैदा हो चुकी है और अुनकी मदद करती ही है। अुसके लिअे किसी सार्वजनिक संस्थाको प्रयत्न करनेकी जरूरत नहीं है। बड़े और संघटित अुद्योगोंके मालका प्रचार और विज्ञापन करनेका अेक ही नतीजा होगा। अुससे अुनके मालका महत्त्व बढ़ जायगा। अुनकी

---

* यंग अिंडिया, १४–१–'२०

वस्तुओकी कीमते वढने लगेगी और अिन फल-फूल रहे किन्तु प्रतियोगी प्रतिष्ठानोमे अस्वास्थ्यकर होड पैदा होगी। किसी सफलतापूर्वक चलनेवाले प्रतिष्ठानकी मददके लिअे सेवासस्था खडी करना प्रयत्नका अपव्यय ही कहा जायगा। वडे अुद्योग-धधोका विज्ञापन करनेवाले अेजेट वनकर हम देशको कोअी लाभ नही पहुचा सकते।

सामान्य अुद्योगो पर ही अपना प्रयत्न केन्द्रित करे हमारा प्रयत्न अुपयोगी तभी होगा जव हम अुसे छोटे पैमाने पर चलनेवाले अैसे मामान्य अुद्योगो पर केन्द्रित करे, जो अपना अस्तित्व वनाये रखनेके लिअे मघर्ष कर रहे है और जिन्हे जनताके सहयोगकी जरूरत हे। खादीके सिवा भी अैसे कअी अुद्योग है। अगर स्वदेशीका प्रचार करनेवाला कोअी मच्चा सघटन हो, तो अुसका कर्तव्य होगा कि वह तमाम हाथ-अुद्योगोका पता लगाये, अुनकी स्थितिकी सही जानकारी हासिल करे और अुन अुद्योगोमे लगे हुअे कारीगरोके जीवनमे दिलचस्पी लेकर अुन्हे सुधारनेकी कोशिश करे। गाधीजी हर-अेक हाथ-अुद्योगका सजीवन और विकास करनेकी वात नही करते थे। वे हरअेक हाथ-अुद्योगकी जाच करते थे और यह देखते थे कि गावोकी अर्थ-रचनामे अुसका स्थान क्या है। और यदि अुन्हे यह निश्चय हो जाता था कि अुसमे अपनी कोअी विशेषता है और अुसे प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये तो फिर वे वैसा करते थे।

प्रारभिक स्वदेशी प्रदर्शनिया काग्रेसके वार्षिक अधिवेशनके साथ स्वदेशी प्रदर्शनीका होना आरभ हुआ तबसे सन् १९३६ तक अुसमे कोअी परिवर्तन नही हुआ। अिन प्रदर्शनियोका आयोजन विशाल पैमाने पर होता था और अुनका अुद्देश्य स्वदेशी वस्तुओको प्रोत्साहन देना तथा प्रदर्शनियोकी आयसे अधिवेशनोके खर्चकी पूर्ति करना था। सन् १९३६ मे यह दृष्टि वदल गयी। २८ मार्च, १९३६ को लखनअू काग्रेसमे गाधीजीने जिस प्रदर्शनीका अुद्घाटन किया अुसमे वस्तुओका प्रदर्शन दर्शकोको चमत्कृत करनेकी दृष्टिसे नही किया गया था, अुसका अुद्देश्य दर्शकोको भारतीय ग्रामवासियोके जीवन और धन्धोकी झाकी दिखाना था। अिस नयी प्रदर्शनीका अुद्देश्य लोगोको अिस सत्यका दर्शन कराना था कि जिन्हे भरपेट भोजन भी नही मिलता वे हमारे गावोमे वसनेवाले देशवन्धु भी अैसी वस्तुओका अुत्पादन कर सकते है, जिनका अुपयोग शहरवासी भलीभाति कर सकते है और अिस तरह गाववालोका तथा अपना दोनोका भला कर सकते है।* जिसका शैक्षणिक महत्त्व न हो, अैसी कोअी वस्तु अिस प्रदर्शनीमे नही रखी गयी थी।

---

* हरिजन, ४-४-'३६

ग्रामीण प्रदर्शनियोका आरम्भ प्रदर्शनियोके विषयमे काग्रेसकी दृष्टिमे परिवर्तन तो हुआ था, फिर भी यह याद रहे कि यह प्रदर्शनी हुअी थी शहरमे ही। गाधीजीने कहा था कि प्रदर्शनीका आयोजन गाववालोके लिअे नही वल्कि शहरवालोको ध्यानमे रखकर किया गया है। अुसका अुद्देश्य शहरवालोको यह देखने और समझनेका मौका देना है कि गाववाले किस तरह रहते है और वे क्या कर सकते है।*

अिसके वाद अेक दो महीनेमें ही गाधीजी अपने अिस विचारकी दिशामे और आगे वढ गये। अुनकी कल्पनाकी दूसरी प्रदर्शनी मगनवाडी (वर्धा, मध्यप्रदेश) में हुअी। अुसका अुद्घाटन करते हुअे गाधीजीने अपने भाषणमे कहा

> "अिस प्रदर्शनीके आयोजनका अुद्देश्य वर्धा-निवासियोको अिस वातकी तालीम देना है कि अपने आसपासके गावोके प्रति अुनका कर्तव्य क्या है और ग्रामवासियोको अिस वातकी तालीम देना है कि अपनी अुन्नतिके लिअे वे क्या कर सकते है। यह प्रदर्शनी अुन्हे अपने गाव कैसे साफ रखना, क्या खाना, अपने अुद्योग-धन्धोमे सुधार कैसे करना और अपनी मौजूदा आयमे थोडीसी वृद्धि कैसे करना आदि सिखाती है। प्रदर्शनी शहरवालोको वताती है कि वे गाववालोका विविध तरीकोसे किस तरह शोषण कर रहे है और गाववालोका वनाया हुआ माल खरीदकर किस तरह वे अुनकी मदद कर सकते है।"+

अिसी सिलसिलेमें गाधीजीने यह आशा प्रगट की थी कि भविष्यमे ये प्रदर्शनिया वडे शहरोके वजाय कसवोमें करनेकी कोशिश की जाय। अुन्होने दर्शकोसे अनुरोध किया कि वे खुद ग्राम-परायण वनें और वाहर ग्राम-परायणताका सदेश लेकर जायें।

ग्रामीण प्रदर्शनिया लगभग छह माहके वाद गाधीजी अिस दिशामें अेक कदम और आगे वढ गये। अुन्होने सुझाया कि काग्रेसका अधिवेशन और प्रदर्शनी, दोनो ही गावोमे हो। अुस वर्ष काग्रेसके अधिवेशनके लिअे महाराष्ट्रके पश्चिम खानदेश जिलेका फैजपुर गाव चुना गया था। गाधीजीने अव अपना सारा ध्यान ग्रामीण जनता पर ही केन्द्रित कर दिया और अपना सदेश मुख्यत अुन्हीको लक्ष्यमे रखकर दिया। अिस अधिवेशनमे हुअी प्रदर्शनीका अुद्घाटन करते हुअे अुन्होने कहा था

---

* हरिजन, ४–४–'३६

+ हरिजन, १६–५–'३६

"यह असली ग्राम-प्रदर्शनी है, जो गाववालोके परिश्रमसे तैयार की गअी है। यह शुद्ध शिक्षणात्मक प्रयत्न है। ग्रामवासियोको यह दिखाना ही अिसका अेकमात्र अुद्देश्य है कि अगर वे अपने हाथ और पैरो तथा अपने आसपासकी साधन-सामग्रीका ठीक ठीक अुपयोग करे, तो वे किस प्रकार अपनी आमदनीको दुगुना कर सकते है। सक्षेपमे कहा जाय तो हमे अुनको यह सिखाना है कि धूलसे कचन किस तरह बन सकता है, और अुन्हे यह सिखाना ही अिस प्रदर्शनीका अुद्देश्य है।"*

प्रदर्शनीमें आये हुअे लोगोसे अुन्होने कहा

"हमारे राष्ट्रपतिके लिअे जिस प्रकारके जुलूसका आयोजन किया गया था, अुसकी वह अनोखी सादगी आपने जरूर देखी होगी — खास करके वह सुन्दर सजा हुआ रथ जिसमे छह जोडी बैल जुते हुअे थे। आपको यहा क्या मिलनेवाला है अिस बातके लिअे आपको तैयार करनेकी गरजसे ही अिस प्रकारका यह सब आयोजन किया गया था। शहरकी जैसी कोअी खूबी या आराम यहा आपको नही मिलेगा, यहा तो आपको अैसी ही चीजे मिलेगी जिन्हे कि गावके गरीब आदमी मुहैया कर सके है। अिस तरह यह जगह हम सबके लिअे अेक तीर्थस्थान बन गअी है — यह हमारी काशी है, यह हमारा मक्का है, जहा हम स्वतत्रता-देवीके चरणो पर प्रार्थना-कुसुमाजलि चढाने और राष्ट्रकी सेवाके लिअे अपनेको अुत्सर्ग करने आये है। आप लोग यहा गरीब किसानो पर हुकूमत जतलाने नही आये है, बल्कि यह सीखनेके लिअे आप यहा आये है कि अुनके रोजमर्राके मशक्कतके कामोमे भाग लेकर — जैसे, भगीका काम करके, अपने कपडे वगैरा खुद धोकर और अपना आटा खुद पीसकर आप अुनका भार किस तरह हलका कर सकते है। हम यहा सेवा लेनेके लिअे नही, किन्तु सेवा देनेके लिअे आये है।"†

काग्रेसके अगले अधिवेशनमे, जो फरवरी १९३८ में गुजरातके हरिपुरा नामक स्थान पर हुआ था, गाधीजीने अपना यह विचार पुन दुहराया कि अधिवेशनके साथ होनेवाली प्रदर्शनीका लक्ष्य लोगोको शिक्षा देना है। अुन्होने चरखेका महत्त्व बताते हुअे अुसे समस्त हाथ-अुद्योगोका केन्द्र बताया और दर्शकोसे अनुरोध किया कि वे नये हाथ-अुद्योगोकी खोज करे और गावोको स्वयपूर्ण बनाये। अगली प्रदर्शनी काग्रेसके वार्षिक अधिवेशनके साथ मार्च

---

* हरिजनसेवक, २–१–'३७

† वही

१९३९ में त्रिपुरीमें हुआी थी। गाधीजी अुस समय राजकोटमें, देशी राज्योकी प्रजाकी नागरिक स्वतत्रताओकी रक्षाके प्रयत्नमें, अुपवास कर रहे थे। अिसलिअे अिस प्रदर्शनीमें वे अुपस्थित नही हो सके थे। सन् १९३९ में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो गया। वाअिसरॉयने जनताके प्रतिनिधियोसे सलाह-मशविरा किये विना ही युद्धमें भारतके शरीक होनेकी घोषणा कर दी और अिसके विरोधमें काग्रेस मत्रि-मडलोने अपने पदोका त्याग कर दिया। मार्च १९४० में काग्रेसका वार्षिक अधिवेशन युद्धकी वढती हुआी घटाओकी छायामें विहारमे रामगढ नामक स्थान पर हुआ। प्रदर्शनीका अुद्घाटन करते हुअे गाधीजीने अपने भाषणमें अपने अिस विश्वासको दुहराया कि आधुनिक शहरी सभ्यताकी अपेक्षा विकेन्द्रीकरण पर आधारित हाथ-अुद्योगोंवाली सभ्यता कही ज्यादा श्रेष्ठ है। राष्ट्रके जीवनमें अिस समय अेक नये अध्यायका आरम्भ हो चुका था। गाधीजी स्वतत्रता-सग्रामकी तैयारियोमें लग गये और चूकि काग्रेस विखर गयी थी अिसलिअे फिर कोअी प्रदर्शनिया नही हुअी।

खादी

स्वदेशीकी मूर्ति : खादीको स्वदेशीकी मूर्ति कहा गया है। आजसे सौ ही साल पहले चरखा हमारा राष्ट्रीय अुद्योग था। भारत कपास पैदा करनेवाला देश है अत यहा चरखा अीस्ट अिन्डिया कम्पनीके आनेके पहलेसे ही था। अीस्ट अिन्डिया कम्पनीके अेजेटोने योजनापूर्वक और अत्यत अमानुषिक ढगसे चरखेका नाश किया। यह कहना सही नही है कि हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअीका नाश आधुनिक यत्रो और आर्थिक दवावके कारण हुआ। अिस विशाल अुद्योगका नाश — पूरा या लगभग पूरा — अीस्ट अिन्डिया कम्पनीने अत्यन्त अनैतिक और असाधारण अुपायो द्वारा किया।* यदि अुनके नाशके लिअे योजनापूर्वक निष्ठुर अुपायोका अुपयोग न किया गया होता, तो कताअीकी यह राष्ट्रीय कला और अुद्योग कताअीके नये औजारोंके द्वारा — वे कितने ही वढिया क्यो न होते — कभी नष्ट नही हो सकता था।† चरखेके मिटते ही जनताकी रही-सही स्वतत्रता भी चली गयी।‡

नाशकी कहानी खादीके अुत्पादनमें कताअीके पहलेकी और वादकी सारी क्रियायें — कपास पैदा करना, चुनना, साफ करना, वुनकना, पूनिया वनाना, कातना, ताना-वाना करना, वुनना, रगना आदि — आ जाती है।

---

* यग अिडिया, १८-८-'२०

† यग अिडिया, ८-१२-'२१

‡ हरिजन, १३-४-'४०

अिस प्राचीन अुद्योगके नाशके फलस्वरूप हमारे देशमे गुलामी तथा गरीबी आयी और भारतीय वस्त्रोमे प्रगट होनेवाली अुस अनुपम कला-कारीगरीका लोप हो गया, जिसे देखकर सारी दुनिया चकित होती थी और हमसे द्वेष करती थी।*

जबसे अिस केन्द्रीय ग्रामोद्योग और अिससे सम्बद्ध दूसरे हाथ-अुद्योगोका नाश हुआ है, तभीसे हमारे गावोमें से बुद्धि और हसी-खुशीकी चमक चली गयी और हमारे गाव निर्जीव और दीप्तिशून्य हो गये है। अुनकी लगभग वही दशा हो गयी है जो अुनके ककाल-मात्र रह गये ढोरोकी है।+ गावोका वातावरण आलस्य तथा आशा और विश्वासके अभावसे भर गया है।

चरखा भारतके सात लाख गावोको स्वयपूर्ण बनाता था। चरखेके नाशके साथ तेल-घानी जैसे दूसरे ग्रामोद्योग भी नष्ट हो गये। अिन अुद्योगोकी जगह नये अुद्योग शुरू नही हुअे। परिणाम यह हुआ कि गाव अपने विविध अुद्योग-धन्धो, अपनी सर्जक प्रतिभा और अिन धन्धोके द्वारा अुन्हे जो थोडा-बहुत पैसा मिल जाता था अुसे खो बैठे।×

खादीका जन्म खादी और चरखेके महत्त्वकी ओर गाधीजीका ध्यान पहली बार १९०८ मे गया जब अुन्हे अिस बातका भी पता नही था कि चरखा कैसा होता है। जब वे चरखे और करघेका अन्तर भी नही जानते थे। अुस समय अुन्हे भारतके गावोकी दशाकी अत्यन्त धुधली-सी कल्पना थी, फिर भी अुन्हे यह निश्चय हो गया था कि अुनकी गरीबीका मुख्य कारण चरखेका नाश है और अुन्होने अपने मनमे यह ठान लिया था कि भारत लौटने पर वे अुसका पुनरुद्धार करेगे।–

खादीका अुद्देश्य चरखेके आन्दोलनका अुद्देश्य भारतकी लाखो झोपडियोमे कताअीकी –– जिसे यहासे अन्यायपूर्ण, अवैध और अत्याचारपूर्ण अुपायोके द्वारा निकाला गया था –– फिरसे स्थापना करना है।† चरखा सामान्य जनताकी आशाका प्रतीक था। अगर ग्रामवासियोको अपनी अुपयुक्त स्थिति प्राप्त करना है, तो अुसका सबसे सीधा और स्वाभाविक अुपाय यही है कि चरखेको अुसके सारे फलितार्थोके साथ फिरसे जीवित किया जाय।‡

---

* यग अिडिया, १६–२–'२१

+ कन्स्ट्रक्टिव्ह प्रोग्राम (१९४१), पृ० ७।

× हरिजन, १३–४–'४०

– हरिजन, १९–१२–'४८

† यग अिडिया, २१–११–'२९

‡ हरिजन, १३–४–'४०

प्रति मनुष्य प्रति वर्ष १३ गज कपडेके हिसावसे भारतकी जनताके लिअे जितना कपडा चाहिये, सन् १९२० में भारत अुनका आधेसे भी कम पैदा करता था। भारत अपनी जरूरतका सारा कपास खुद पैदा करता था। वह अपने कपासकी लाखो गाठे जापान और लकाशायरको निर्यात कर देता था और अुसका अधिकाश तैयार कपडेके रूपमें अुसके पास वापिस आ जाता था, यद्यपि अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिअे जरूरी सारा कपडा और सूत हाथ-बुनाअी और हाथ-कताअीके जरिये वह खुद पैदा कर सकता था।*

पूरक अुद्योग और दुर्भिक्षसे रक्षाका साधन भारतकी किसान-जनताका अधिकाश सालमें चार-छह माह ही काम करता है, वाकी समय अुसे वेकारीमे विताना पडता है। अिसलिअे वह लगभग भुखमरीकी हालतमें जीती है। यह अुसकी सामान्य स्थिति है। फिर, किसानोकी अिस वेकारीमें, जो अुन्हे परिस्थितिवश जवरदस्ती भोगनी पडती है, वार वार होनेवाले दुर्भिक्ष और ज्यादा वृद्धि करते हैं। अपनी स्वल्प-सी आयके साधनोकी पूर्तिके लिअे अैसा कौनसा कार्य है जिसे किसान लोग अपने घर वैठे आसानीसे कर सकते है।† प्रत्येक कृपिप्रधान देशको अैसे अेक पूरक अुद्योगकी आवश्यकता होती है, जिसके द्वारा वहाके किसान अपने खाली समयका सदुपयोग कर सकें। भारतमे अैसा अुद्योग हमेशा कताअीका रहा है, क्योंकि अुससे किसानोको थोडा-वहुत आर्थिक लाभ भी होता है।

अेकमात्र सार्वत्रिक अुद्योग "लाखो लोगोंके लिअे अेकमात्र सार्वत्रिक अुद्योग कताअी ही है और कोअी नही। अिसका यह अर्थ नही कि दूसरे अुद्योगोका कोअी महत्त्व नही है या वे निकम्मे हैं। सच तो यह है कि व्यक्तिगत दृष्टिकोणसे कोअी भी दूसरा अुद्योग कताअीकी तुलनामे ज्यादा आयवर्धक होगा। अुदाहरणके लिअे, घडिया वनाना अेक अत्यत आयवर्धक और मोहक अुद्योग होगा। मगर अुसमें कितने आदमी लग सकते हैं? क्या वह लाखो ग्रामीणोके लिअे किसी कामका है? भूखसे मर रहे लोगोके सामने हम अनेक प्रकारका कच्चा अन्न रख दें और अुनसे अपनी अिच्छानुसार चुनाव कर लेनेकी आशा करे, तो अिसका क्या परिणाम होगा? पहले तो अुनकी समझमें नही आयगा कि क्या किया जाय और वादमे सभवत वे जो अुन्हें सबसे आकर्षक मालूम होता होगा अुस पर टूट पडेंगे और नुकसान अुठायेंगे। जो और किसी अुद्योगको अपना सकते हों और

* यग अिडिया, १८–८–'२०

† यग अिडिया, ३–११–'२१

अपनाना चाहते हो वे शौकसे अुसे अपना ले। मगर राष्ट्रके माधन अेक हाथ-कताअीके अुद्योग पर ही केन्द्रित होने चाहिये, क्योंकि अिसे सब तुरत अपना सकते है और अधिकाश लोग अन्य किसी अुद्योगको नही अपना मकते।"*

"लाखो लोगोके लिअे जिसकी कल्पना की जा सकती है अैसा सबसे ज्यादा अुपयुक्त और व्यावहारिक अुद्योग कताअी ही है।"+

लोग आर्थिक, बौद्धिक और नैतिक दृष्टिसे ज्यादा-ज्यादा गरीब होते जा रहे थे। अुनकी काम करने, विचार करने, यहा तक कि जीनेकी भी अिच्छा तेजीसे क्षीण होती जा रही थी। खादीने अुन्हे काम दिया, अुसके औजार दिये और अपनी बनायी वस्तुओंके लिअे — यानी कपडेके लिअे तैयार बाजार भी दिया। जहा कल तक सघन निराशा छायी हुअी थी वहा अुसने अुन्हे आशाका प्रकाश दिया।×

हाथ-कताअी अुनके लिअे नहीं है जो कोअी दूसरा अधिक आर्थिक लाभवाला धन्धा करते हो गाधीजीने अैसा कभी नहीं कहा कि जो ज्यादा आर्थिक लाभवाला धन्धा करते हों वे अपना वह धन्धा छोड दे और हाथ-कताअीका धधा शुरू कर दे। अुन्होने बार बार यही कहा कि केवल अुन लोगोसे ही कताअी करनेका आग्रह किया जाय, जिनके पास कोअी दूसरा आर्थिक लाभवाला धधा न हो और वे भी कताअीका काम अपने खाली समयमे ही करे। "कताअीका सारा विचार अिस मान्यता पर आधारित है कि अिस देशमे अैसे लाखो स्त्री-पुरुष मौजूद है, जो धन्धेके अभावमे सालमें कमसे कम चार माह बेकार रहते हैं।"–

ज्यो ही अिन लाखो स्त्री-पुरुषोको कताअीसे कोअी ज्यादा अच्छा यानी आर्थिक दृष्टिसे ज्यादा लाभकारी धन्धा मिल जाय अुन्हे कताअीका काम छोड देनेकी पूरी आजादी है। लोगोके पास कताअीसे ज्यादा अच्छा धधा हो तो अिससे, गाधीजी कहते थे, सबमे ज्यादा खुशी मुझे होगी।† जब तक सोलह वर्षसे अूपरके प्रत्येक तदुरुस्त स्त्री-पुरुषके लिअे भारतके प्रत्येक गावमे अुनके खेत या झोपडीमे, या कारखानेमे ही, काम और काफी मजदूरी दिलानेका बेहतर तरीका न निकाल लिया जाय, तब तक लाखो ग्रामीणोकी

* यग अिंडिया, ३०–९–'२६

+ यग अिंडिया, १२–४–'२८

× हरिजन, २०–६–'३६

– यग अिंडिया, २२–१०–'२५

† यग अिंडिया, २१–११–'२९

दृष्टिसे खादी ही अेकमात्र सच्ची आर्थिक योजना है। या फिर गावोके स्थान पर अितने शहर बन जाने चाहिये कि देहातियोको वे जरूरी सुख-सुविधाये प्राप्त हो जाय, जो अेक सुनियमित जीवनके लिअे जरूरी है। मैने अपनी बात अितनी पूरी तरह यही दिखानेके लिअे पेश की है कि जितने लम्बे समयकी कल्पना की जा सकती हो अुतने लम्बे समय तक अिस समस्याका हल खादी ही रहेगी।*

हाथ-करघेके बजाय चरखेको ज्यादा महत्त्व देनेका कारण यह सवाल पूछा जा सकता है कि चरखे पर अितना जोर क्यो है? अुसकी तुलनामें हाथ-करघेको अुतना महत्त्व क्यो नही दिया जाता? गाधीजी हाथ-करघेके खिलाफ नही थे। अेक स्थान पर वे अिस विषय पर लिखते हुअे कहते है कि वह निस्सन्देह अेक विशाल और फलता-फूलता अुद्योग है।+ लेकिन

> "हाथ-बुनाअी अेक लम्बी प्रक्रिया है, जिसमे सतत परिश्रमकी जरूरत होती है, और अुसमे कअी प्रक्रियाये अैसी करनी पडती है, जिनमे अेकसे अधिक व्यक्तियोके अेक ही समय काम करनेकी आवश्यकता होती है। यह किसानकी कुटियामे सभव नही है। अिसलिअे अतीत कालसे हाथ-बुनाअी अेक अलग धधा और आजीविकाका स्वतत्र साधन रहा है। किसानको कोअी अैसा सहायक धधा चाहिये, जिसे वह जब मरजी हो करने लगे और जब चाहे छोड सके। करोडोके लिअे वह धधा हाथ-कताअी है। बेशक, फालतू समयका अुपयोग करनेके लिअे दूसरे भी अैसे धधे है। परन्तु जो करोडो नर-नारियोके काम आ सके अैसा हाथ-कताअीके सिवा दूसरा कोअी धधा नही मिलेगा।"×
>
> **हाथ-बुनाअी अेक स्वतत्र धन्धा है** "प्रथम तो हाथ-बुनाअी सहायक अुद्योगके रूपमे व्यावहारिक नही है, क्योकि अिसका सिखाना आसान नही है। वह भारतवर्षमे कभी सार्वत्रिक नही हुआ, अुसमे काम करनेके लिअे कअी आदमी चाहिये और वह चाहे जब नही किया जा सकता। वह आम तौर पर अेक स्वतत्र धधा ही रहा है और रह सकता है और ज्यादातर लोगोके लिअे मोची-काम या लुहार-कामकी तरह अेक पूरा धधा है, जिसे करते हुअे वे कुछ और नही कर सकते।"—

---

* हरिजन, २०–६–'३६

\+ यग अिडिया, ११–११–'२६

× यग अिडिया, १४–५–'२५

— यग अिडिया, ११–११–'२६

हाथ-करघा अुद्योगकी मुश्किल अिसके सिवा हाथ-करघेके बुनकरका मिलके सूत पर आधार रखना और यह सोचना कि अपने करघेके लिअे अुसे जितना सूत चाहिये वह अुमे बराबर मिलता रहेगा गलत है। अपने प्रारंभिक वर्षोंके अनुभवसे गांधीजीने यह समझ लिया था कि मिलोंका अुद्देश्य अपना सूत यथासंभव खुद बुनना है, हाथकरघा-बुनकरोंके साथ अुनका सहयोग स्वेच्छा-प्रेरित नहीं बल्कि अनिवार्य और अस्थायी है। *

"मिल-मालिक अितने परोपकारी जीव नहीं हैं कि हाथ-करघेका जुलाहा जब अुनके साथ सफल स्पर्धा करने लगेगा तब भी वे अुसे सूत देते रहेंगे।" +

"मौका मिलने पर मिल-मालिक तो खुद ही अपने सूतको बुनने लगेंगे। अुनका धंधा पैसा कमानेके लिअे है, परोपकारके लिअे नहीं। अिसलिअे जिससे ज्यादा पैसे मिलें, वही काम वे करेंगे।" ×

"यह बात अधिक लोग नहीं जानते कि मिलका सूत बुननेवाले जुलाहोंकी बहुत बड़ी संख्या साहूकारोंके पंजेमें है और जब तक मिलके सूतका भरोसा वे करते रहेंगे, अुनकी वही हालत रहेगी। ग्राम्य अर्थ-शास्त्रके अनुसार जुलाहेको मिलोंसे न लेकर अपने साथी किसानसे ही सूत लेना चाहिये।" –

"मिलके सूतका अिस्तेमाल ही हाथ-करघेकी कारीगरीका खास दुश्मन है। हाथ-कते सूतसे ही वह अुबर सकती है। अगर चरखा मिट जाता है तो करघा भी जरूर मिट जायगा।" †

हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअी परस्पर पूरक हैं हाथ-बुनकरोंका सच्चा सहारा तो हाथ-कताअी करनेवाले हैं और हाथ-कताअीवालोंका सच्चा सहारा हाथ-बुनकर हैं। हाथ-बुनकर अपनी सूतकी जरूरतके लिअे हाथ-कताअी-वालोंका ही आधार ले सकते हैं और हाथ-कताअीवाले अपने सूतकी बुनाअीके लिअे हाथ-बुनकरोंका। वे अेक-दूसरेके पूरक हैं। ‡ हाथ-कताअीका बुंटा सूत बुननेवाला बुनकर अन्तमें मिल-सूतके बुनकरसे ज्यादा अच्छी हालतमें रहेगा, क्योंकि हाथ-कताअीके सूतके बुनकरको साल भर हमेशा काम मिलता रहेगा। §

---

* आत्मकथा, भाग पांच, प्र ३९, १९५७।

\+ हरिजनसेवक, १–९–'४६

× हरिजनसेवक, ३१–३–'४६

– हिन्दी नवजीवन, ११–११–'२६

† हरिजनसेवक, १–९–'४६

‡ हरिजनसेवक, ३१–३–'४६

§ हरिजन, २५–८–'४६

"अगर बुनकर लोग हाथ-कताओीका सूत नही बुनते है, तो अपने धन्धेकी हत्या कर डालनेका दोष अुन पर ही होगा।"* अगर चरखा असफल हुआ, तो हाथ-करघा मरे बिना नही रहेगा।+

मिल-अुद्योगका स्थान "सूत-मिलके साथ साथ चरखे न चल सकनेके लिअे कोओी कारण नही है। जिस तरह घरका रसोओीघर भी चलता है और होटल भी चलता है, अुसी तरह ये दोनो साथ साथ चल सकते है।"×

"अगर मिले आजकी तरह जनताको लूटनेके लिअे नही, बल्कि अुनकी सेवा करनेके लिअे चलायी जाय, तो वे घर घरके चरखो और करघोके काममे मदद करेगी और अुनकी जगह नही ले लेगी, जो आज वे ले लेती है।"∸

कपडेकी जिन किस्मोका अुत्पादन खादी-सस्थाये आसानीसे कर सकती है, अुनका अुत्पादन मिलोको नही करना चाहिये और अिस तरह अुन्हे अपनी शक्ति अुन किस्मोका अुत्पादन करनेके लिअे सुरक्षित रखनी चाहिये जिन्हे खादी-सस्थाये आसानीसे नही बना सकती।

"हमारी मिले अितना सूत तैयार नही करती जितना हमें चाहिये और यदि वे अुतना सूत तैयार करने लगें, तो वे अपनी कीमते तब तक कम नहीं रखेगी जब तक कि अुन्हे अिसके लिअे विवश न किया जाय। अुनका अुद्देश्य स्पष्टत पैसा कमाना है और अिसलिअे वे राष्ट्रकी आवश्यकताओंका खयाल करके अपनी कीमतोका नियमन करेगी, अैसी आशा रखना व्यर्थ है।"†

बग-भगके दिनोमें बगालमें स्वदेशीका जो आन्दोलन चला था, मिल-मालिकोकी बेओीमानी और लोभके कारण अुसकी गतिमे भारी रुकावट पैदा हुओी थी। अुन्होने अपने कपडेकी कीमते बढा दी थी और स्वदेशीके नामसे विदेशी कपडा भी बेचा था। अिस नकली खादीके सम्बन्धमे जो तथ्य सामने आये थे वे बताते थे कि मिले लोगोके व्यापक हितोके खिलाफ अपने सकुचित लाभके लिअे स्वदेशीकी भावनाका दुरुपयोग करनेमे आगा-पीछा नही करेंगी।‡ मिल-मालिक यह नही देखते कि अुनकी मुनाफा-

---

* हरिजन, ३१–३–'४६

\+ यग अिडिया, ११–११–'२६

× यग अिडिया, २१–७–'२०

∸ हिन्दी नवजीवन, १२–४–'२८

† हरिजन, २०–६–'३६

‡ यग अिडिया, १०–५–'२८

खोरीकी नीतिसे स्वदेशीके आदर्शको और देशको, दोनोको, नुकसान पहुचता है।* अुन्हे अपनी कीमतोका किसी अुचित नीतिके अनुसार नियमन करना चाहिये और अपना मुनाफा भरसक कम कर लेना चाहिये। अतिरिक्त आयका अुपयोग मजदूरोकी हालत सुधारनेमें होना चाहिये।+

खादी मिलोके लोभ पर नियत्रण रखती है "खादी-अुत्पत्ति और खादी-प्रचारसे दो तरहके प्रभाव अेक ही साथ पडते है। पहले तो अिससे मिल-मालिकोके लोभ पर अकुश रहता है और दूसरे यह बात अनोखी जान पडने पर भी अुससे स्वदेशी मिलोको विदेशी मिलोके साथ प्रतियोगिता करनेमें बहुत ही प्रभावकारी प्रोत्साहन मिलता है। अेकमात्र विशुद्ध खादीके प्रचारको रोक दीजिये, मिलके कपडोसे खिलवाड शुरू कीजिये और आप खादीको मार डालेगे और साथ ही साथ अतमें जाकर स्वदेशी मिलोको भी मार डालेगे, क्योकि विदेशी कपडेकी प्रतियोगितामें वे अकेले अपने पैरो पर नही ठहर सकती। अगर खादी-भावना न हो तो विदेशी वस्त्रके साथ देशी मिलोकी प्रतियोगितामें खलल डालनेवाली जो अेक बात है, यानी स्वस्थ सार्वजनिक भावना, वह बिलकुल ही न रहेगी।"×

खादीके पक्षमें दावे गाधीजी चरखेके लिअे यह दावा करते थे कि वह हमारी गरीबीके सवालको अत्यन्त सरल, स्वाभाविक तथा व्यवस्थित पद्धतिसे हल करनेकी शक्ति रखता है और महत्त्वकी बात यह है कि अुसमें हमे लगभग कुछ भी खर्च नही करना पडता।– कताअीके अिन लाभोको गिनाते हुअे अुन्होने कहा था †

१ जिन लोगोको फुरसत है और जिन्हे थोडेसे पैसोकी भी जरूरत है, अुन्हे अिसमे आसानीसे रोजगार मिल जाता है।

२ अिसका हजारोको ज्ञान है।

३ यह आसानीसे सीखी जा सकती है।

४ अिसमें लगभग कुछ भी पूजी लगानेकी जरूरत नही होती।

५ चरखा आसानीसे और सस्ते दामोमे तैयार किया जा सकता है।

---

* यग अिडिया, २३–२–'२२

\+ यग अिडिया, १५–३–'२८

× हिन्दी नवजीवन, १०–५–'२८

– यग अिडिया, ८–१२–'२१

† यग अिडिया, २१–८–'२४

६ लोगोको अिससे अरुचि नही है।

७ अिससे अकालके समय तात्कालिक राहत मिल जाती है।

८ विदेशी कपडा खरीदनेसे भारतका जो धन बाहर चला जाता है अुसे यही रोक सकती है।

९ अिससे करोडो रुपयोकी जो बचत होती है वह अपने-आप सुपात्र गरीबोमे बट जाती है।

१० अिसकी छोटी-से-छोटी सफलतासे ही लोगोको बहुत-कुछ तात्कालिक लाभ होता है।

११ लोगोमे सहयोग पैदा करनेका यह अत्यत प्रबल साधन है।

खादी आन्दोलनकी मजिले . खादीका आन्दोलन अभी तक अनेक मजिलोमे गुजर चुका है। अेक पुरानी नष्ट हो गयी कलाके विरल अवशेषकी स्थितिसे धीरे धीरे बढकर वह भारतके स्वतत्रता-सग्रामका चिह्न बन गयी। अपने मूल रूपमे खादी खेतीका पूरक अुद्योग थी। अुसका अुद्देश्य महज यह नही था कि शहरी लोगोको अैसी सुन्दर खादी मुहैया कर दी जाय, जो मिलोके कपडेकी बराबरी करे या दूसरे अुद्योगोकी तरह चद कारीगरोको काम-धन्धा दे, अुसका असली अुद्देश्य किसानोको अपनी फुरसतके समयका अर्थोत्पादक अुपयोग करनेकी सुविधा कर देना था।* जिस तरह गावके लोग अपना खाना खुद पका लेते है अुसी तरह अपने अुपयोगके लिअे अुन्हे अपनी खादीका अुत्पादन भी खुद कर लेना चाहिये। अपने अुपयोगके बाद बच रही खादीको यदि वे चाहें तो बेच सकते हैं।+

सन् १९२० के बाद कुछ वर्षोमे गाधीजीके आर्थिक विचार ठोस और व्यावहारिक बन गये। अुन्होने अपना ध्यान धनके अुत्पादन और वितरणके सवाल पर लगाया और सत्ता तथा पूजीका केन्द्रीकरण रोकने और धनका समान बटवारा सिद्ध करनेकी दृष्टिसे चरखेका प्रचार करनेका प्रयत्न किया। सन् १९२५ मे अुन्होने सारे भारतको खादीमय कर देनेके अुद्देश्यसे अखिल भारत चरखा-सघकी स्थापना की।

अुनके खादी-सबधी विचारोमे पुन परिवर्तन हुआ और सन् १९३५ में खादीके व्यापारिक पहलूके बजाय अुसके स्वावलम्बनके पहलू पर अधिक जोर दिया जाने लगा। अखिल भारत चरखा-सघका असली काम शैक्षणिक हो गया। अिस नयी योजनामें खादी-मडलोका काम खादीकी बिक्री करनेके बजाय खादी-अुत्पादनकी विविध प्रक्रियाओका शिक्षण देना अधिक हो गया।×

* हरिजन, ६-७-'३५

+ वही

× वही

खादीकार्यसे सबंधित सारी संस्थाओमे स्वावलम्वी खादीको पहला स्थान दिया गया। *

जब जोर स्वावलबी खादी पर दिया जाने लगा, तब व्यापारिक अुत्पादन शहरी लोगोकी वास्तविक आवश्यकताओ तक सीमित हो गया। + स्वावलबी खादी और विक्रीवाली खादीका अुत्पादन दोनो साथ साथ चलते रहे। विक्रीवाली खादीका अुत्पादन स्वावलम्बी खादीके अुत्पादनका गौण परिणाम हो गया। ×

प्रारभिक वर्षोमे गरीबोको राहत पहुचाने पर जोर था। प्रसगत वह अमीरो और गरीबोको जोडनेवाली सजीव कडी बन गयी और अुसे राजनीतिक महत्त्व प्राप्त हो गया। अभी तक सूत कातने और बुननेका काम सामान्य जनता करती थी। नयी योजनामे भी सामान्य जनता ही करती रही, किन्तु अुसका अुद्देश्य बदल गया, अब वह मुख्यत अपने ही अुपयोगके लिअे कातने-बुनने लगी। गाधीजीने खादीके विकासमे जो दोष देखे अुनके कारण अिस परिवर्तनकी आवश्यकता हुअी। गावोके जो लोग सूत कातते और बुनते थे, वे अुसका अुपयोग खुद नही करते थे। वे खादीके अुपयोगकी कीमतको न तो समझते थे और न अुसकी कद्र करते थे। अिसलिअे अखिल भारत चरखा-सघने अपने सारे साधन गाववालोको खादीधारी बनानेके प्रयत्नमे लगा दिये। –

खादीका अुद्देश्य आरभसे ही मौजूदा अस्वाभाविक रचनाको अुलटनेका था, यद्यपि अुसमे शहरी लोगोको बरबाद करनेका विचार कदापि नही था। मौजूदा रचनाको अुलटनेका अर्थ था गावो और शहरोके स्वाभाविक सम्बन्धको पुन स्थापित करना। † खादीका यह अुद्देश्य लगभग वैसा ही था जैसा कि अस्पृश्यता-निवारणका। तथाकथित अुच्च वर्गोने वर्षो तक निचले वर्गोकी अुपेक्षा की थी। खादीने अुच्च वर्गवालोको निचले वर्गोके हितमे प्रायश्चित्त करनेका न्यौता देकर अिस दुहरी बुराअीको निर्मूल करनेका काम किया। ‡

खादीके फलितार्थ "खादीमे जो चीजे समायी हुअी है, अुन सबके साथ खादीको अपनाना चाहिये। खादीका अेक मतलब यह है कि

* हरिजन, २६–१०–'३५

+ हरिजन, ६–७–'३५

× हरिजन, २६–१०–'३५

– हरिजन, २१–७–'४६

† वही

‡ हरिजन, ६–७–'३५

हममें से हरअेकको सम्पूर्ण स्वदेशीकी भावना वढानी और टिकानी चाहिये, यानी हमे अिस वातका दृढ सकल्प करना चाहिये कि हम अपने जीवनकी सभी जरूरतोको हिन्दुस्तानकी वनी चीजोसे और अुनमे भी हमारे गावमें रहनेवाली आम जनताकी मेहनत और अक्लसे वनी चीजोके जरिये पूरा करेंगे। अिस वारेमें आजकल हमारा जो रवैया है, अुसे विलकुल वदल डालनेकी यह वात हे। मतलव यह कि आज हिन्दुस्तानके सात लाख गावोको चूसकर और वरवाद करके हिन्दुस्तानके जो दस-पाच शहर मालामाल हो रहे है, अुनके वदले हमारे सात लाख गाव स्वावलम्वी और स्वयपूर्ण वनें और अपनी राजी-खुशीमे हिन्दुस्तानके शहरो और वाहरकी दुनियाके लिअे अिस तरह अुपयोगी वनें कि दोनो पक्षोको फायदा पहुचे।" *

खादी देशमें रहनेवाले सव लोगोकी आर्थिक आजादी और समानताका आरम्भ वतलाती है। वह "भारतीय मानव-समुदायकी अेकता और समानताकी प्रतीक है और अिसलिअे पडित नेहरूके शव्दोमे अुसे 'भारतीय आजादीकी पोशाक' कहा जा सकता है।" †

अेडम स्मिथने अपने प्रसिद्ध ग्रथ 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' में आर्थिक प्रक्रियाका नियत्रण करनेवाले सिद्धान्तोका निरूपण किया है। अुसमे अुसने अुन वातोका भी वर्णन किया है जो अिन आर्थिक सिद्धान्तोके व्यापारमे वाधा अुपस्थित करती हैं। वह अिन वातोमें 'मानवीय अुपादान' को मुख्य मानता है। दूसरी ओर खादीका मारा अर्यशास्त्र अिस 'मानवीय अुपादान' पर ही आश्रित है। खादीके अर्यशास्त्रके अनुसार वाधा अुपस्थित करनेवाली वात मनुष्यका स्वार्थ है, जिसे अेडम स्मिथ शुद्ध आर्थिक हेतु वताता है। अिस तरह खादीके अर्यशास्त्रकी दृष्टि अेडम स्मियकी अथवा प्रचलित अर्य-शास्त्रकी दृष्टिसे ठीक अुलटी है। अिसलिअे मिलके कपडेके अुत्पादनमें जो आर्थिक नियम लागू होते है वे खादीके अुत्पादनमे लागू नही होते। व्यापारिक दृष्टिमे किये जानेवाले अुत्पादनमें मालकी गुणवत्ताको कम करना, अुसमे घटिया किस्मके मालका मिश्रण करना और लोगोकी कुरुचिको अुभाडने और तृप्त करनेवाले मालका निर्माण करना आदि अुपायोका खुला प्रयोग होता हे। खादीमें मालकी खपतके लिअे अिन अुपायोंके अवलम्वनका अुपयोग अेकदम वर्जित है। अिसी तरह अुसमें कारीगरोको कमसे कम मजदूरी देने और ज्यादासे ज्यादा मुनाफा कमानेके नियमका भी कोअी स्थान नही है। खादीमें विक्रीसे होनेवाली मारी आय मूल अुत्पादकोको पहुचा दी जाती है,

---

* रचनात्मक कार्यक्रम, १९५९।

† वही

बीचवाले लोगोको अुनका मेहनताना भर मिलता है, अुससे अधिक कुछ नही। *
"खादी व्यापारिक युद्धकी नही, व्यापारिक शातिकी निशानी है।" +

सबसे बडी सहकारी मडली कताअीके अुद्योगकी सफलताके लिअे सहकारकी अनिवार्य आवश्यकता है। हाथ-कताअीका प्रचार करके गाधीजी अपने शब्दोमें दुनियाकी सबसे बडी सहकारी मडलीकी स्थापना कर रहे थे। अुनका यह दावा बहुत बडा जरूर था, किन्तु वह गलत नही था। वह गलत नही था क्योकि हाथ-कताअी अपना माना हुआ मकसद तब तक पूरा नही कर सकती, जब तक कि अुसमे लगे हुअे लाखो लोग सचमुच सहयोगसे काम न करे। अिस अुद्योगमे सहयोग आरम्भसे ही जरूरी है। हाथ-कताअी आदमीको आत्म-निर्भर बनाती है, पर साथ ही वह अुसे अिस बातको समझनेकी सुविधा और प्रेरणा भी देती है कि अिस अुद्योगमे हर कदम पर परस्परावलम्बनकी और मालके अुत्पादन तथा वितरणकी प्रक्रियामे अत्यत विशाल पैमाने पर लाखो लोगोके सहयोगकी आवश्यकता है। ×

सामान्य खादी-केन्द्रका चित्र *सामान्य खादी-केन्द्र कैसा होना चाहिये,* अिसका वर्णन गाधीजीने अिस तरह किया है

> "खादी-केन्द्रको शब्दके प्रत्येक अर्थमे स्वच्छ होना चाहिये, तभी वह अुपयोगी हो सकता है। अुसके और अिस विशाल सघटनके दूसरे घटकोमे जो सम्बन्ध है वह सर्वथा आध्यात्मिक और नैतिक है। अिसलिअे प्रत्येक खादी-केन्द्र अेक सहकारी मडली है। ओटनेवाले, धुननेवाले, कातनेवाले, बुननेवाले और खरीदनेवाले अिस मडलीके सदस्य है और वे सब सेवा तथा पारस्परिक सद्‌भावनाके बन्धनोसे अेक-दूसरेके साथ बधे हुअे है।" †
>
> **खादी-सघटन अेक सेवा-सस्था है** "खादी स्वराज्य-प्राप्तिका सरल साधन है, तो भी हमे अपनी खादी सस्थाओको सिर्फ आर्थिक प्रवृत्तिके रूपमे ही चलाना है। अैसी सस्थाओमे लोकशाहीका तत्त्व अेक अमुक अशमे ही दाखिल किया जा सकता है। लोकशाहीमे सघर्ष और प्रतिस्पर्धाके लिअे भी स्थान होता है, किन्तु आर्थिक सस्थामे यह बात कहा चल सकती है? व्यापारके क्षेत्रमे क्या हम अलग अलग दलो या परस्पर-विरोधी पक्षोकी कल्पना कर सकते है? अगर अैसा हो तो सारा व्यापार ही अस्तव्यस्त हो जाय। फिर खादीकी सस्थायें

---

* हरिजन, २१–९–'३४

\+ यग अिडिया, ८–१२–'२१

× यग अिडिया, १०–६–'२६

† वही

तो महज आर्थिक सस्थाये नही है, अिससे बढकर वे पारमार्थिक सस्थाये भी है। अुनका अुद्देश्य किसी भी प्रकारके स्वार्थ-सावनका नही किन्तु लोकहित-साधनका है। हमारी खादी मस्थाओका ध्येय तो जनताके प्रेय-साधनका नही, किन्तु अुसके 'श्रेय-साधन' का हे। अिसलिअे रोज रोज बदलते हुअे लोकमतसे स्वतत्र रहकर भी अुसे कितनी ही बार अपना काम चलाना पडेगा। अिन सस्थाओको व्यक्तियोकी महत्त्वाकाक्षा पोसनेका साधन तो बनना ही नही चाहिये।"*

खादी और राजनीतिक सघटन : "खादी और राजनीतिक सघटन दो अलग अलग वस्तुये है और बिलकुल अलग अलग रखी जानी चाहिये। अिस बातमे गलतफहमीके लिअे कोअी स्थान नही हे। खादीका अुद्देश्य मानव-सेवा है, लेकिन जहा तक भारतका सम्बन्ध हे अुसका राजनीतिक असर भी जरूर होगा और बहुत ज्यादा होगा।"+

खादीकी अेक आनुषगिक विशेषता यह थी कि वह जन-सम्पर्कका साधन थी। अिसलिअे यदि खादीके द्वारा लोगोका आलस्य दूर किया जा सके, तो यह आशा रखी जा सकती थी कि वे अुनकी बात ध्यानसे सुनेगे, जो अुनके पास अुनकी जीविकाका साधन लेकर पहुचते है। खादीके प्रचारका कार्यक्रम कार्यान्वित करते हुअे तो यही ठीक था कि अुद्देश्य शुद्ध मानव-सेवाका ही हो यानी आर्थिक हो और अुसमे किसी तरहका राजनीतिक हेतु न हो। खादीके द्वारा लोगोको, जिस सस्थाका अुन्होने खुद ही निर्माण किया हो, आवश्यकता होने पर, अुसके खिलाफ सविनय भगकी कला सिखाअी जा सकती थी। यह कला सीखनेके बाद ही वे अुस चीजको सफलतापूर्वक अमान्य कर सकते थे, जिसका वे अहिसक रीतिसे नाश करना चाहते हो।×

अहिसाका प्रतीक : चरखा हमे सारी जनताकी भलाअी करनेवाला राज्य दिलायेगा। वह गावोको राष्ट्रकी अर्थ-रचनामे अुनका अुपयुक्त स्थान देता है और अूच-नीचका भेदभाव मिटाता है। सन् १९१९ मे भारतकी स्वतत्रताके प्रेमियोको अहिसा और चरखेका सदेश मिला और अुन्हे यह बताया गया कि अहिसा ही स्वराज्यका अेकमात्र साधन हे और चरखा अहिसाका प्रतीक है। अहिसाका चरखेके सिवा कोअी दूसरा साधन नही है। चरखेके सार्वत्रिक प्रचारके बिना अहिसाकी मूर्त अभिव्यक्ति सभव नही है।—

---

* हरिजनसेवक, २६-१०-'३४

\+ मॉडर्न रिव्यू, अक्तूबर १९३५।

× वही

— हरिजन, १३-४-'४०

अहिंसा पर आधारित समाज अैसे समुदायोंका ही बना हुआ हो सकता है, जो गावोंमे रहते हो और जो स्वेच्छापूर्ण सहयोगके द्वारा मनुष्यको शोभा देनेवाला शान्तिपूर्ण जीवन विताते हो। *

स्वातत्र्योत्तर युगमें खादीका स्थान • स्वातत्र्योत्तर युगमे खादीका कोअी स्थान है या नही, यह अेक अुपयुक्त सवाल है। अिस सवालका गाधीजीने निम्नलिखित जवाव दिया था

"खादी अहिंसाके आधार पर खडी अेक जीवन-पद्धतिको प्रगट करती थी और करती हे। सही हो या गलत, मेरी यह राय हे कि खादी और अहिसाके करीव करीव लोप हो जानेसे यह सावित होता हे कि अिन तमाम वर्षोंमे हमने खादीके मुख्य गूढार्थको अच्छी तरह नही समझा था। अिसलिअे कअी दिशाओमे हम भाअी भाअीकी लडाअी और अराजकताका दुखद दृश्य देख रहे हैं। मुझे कोअी शका नही कि कातना और खादीका वुनना पहलेसे कही अधिक महत्त्वपूर्ण है, यदि हमे अैसी आजादी लेनी है जिसे भारतकी ग्रामीण जनता अतस्फूर्तिसे महसूस कर ले। यही अिस धरती पर अीश्वरका राज्य या रामराज्य कहा जायगा। खादीके द्वारा हम मनुष्य पर शक्ति द्वारा सचालित यत्रोका आधिपत्य स्थापित करनेके वजाय यत्रो पर मानवकी प्रभुता स्थापित करनेकी कोशिश कर रहे है। खादीके द्वारा हम श्रम पर पूजीकी धृष्ट विजयके स्थान पर पूजीको श्रमके अधीन वनानेका प्रयत्न कर रहे हैं। अिसलिअे यदि भारतमे पिछले तीस सालमे की गअी कोशिश प्रतिगामी कदम नही था, तो हाथ-कताअी और अुसके साथ लगी हुअी सव वातोको पहलेसे कही ज्यादा जोरसे और ज्यादा वुद्धिके साथ आगे वढाना चाहिये।" ×

खादी ग्रामोद्योगोका मध्यविन्दु है. "खादी केन्द्रीय सूर्य हे और दूसरे ग्रामोद्योग ग्रहोकी तरह अुसके चारो ओर घूमते हे। अुनका स्वतत्र अस्तित्व नही हे। अिसी तरह खादी भी दूसरे अुद्योगोके विना नही जी सकती। वे पूरी तरह परस्परावलम्वी हैं। सच तो यह हे कि हमे गावोवाला भारत या शहरोवाला भारत — अिन दोमे से अेकका चुनाव कर लेना है। गाव तवसे हैं जवसे भारत देश हे, शहरोको विदेशी आधिपत्यने पैदा किया है। आज तो शहरोका वोलवाला हे और वे गावोको अिस तरह चूस रहे है कि गाव जर्जर होकर नष्ट होते जा रहे है। मेरी खादी-मनोवृत्ति मुझे वताती है कि जव यह आधिपत्य

---

* हरिजन, १३-१-'४०

× हरिजन, २१-१२-'४७

नही रहेगा, तब शहरोको गावोकी मातहती करनी होगी। गावोका शोषण स्वय अेक सगठित हिंसा है। अगर हम चाहते है कि स्वराज्यका निर्माण अहिंसाके आधार पर ही हो, तो हमे गावोको अुनका अुचित स्थान देना पडेगा। यह हम कभी नहीं कर सकेंगे, यदि हम देशी या विदेशी शहरी कारखानोमें तैयार हुअी चीजोके बजाय ग्रामोद्योगकी वस्तुओका अुपयोग करके ग्रामोद्योगोका पुनरुद्धार नही करेंगे।"*

अब यह बात स्पष्ट हो जायगी कि गाधीजी खादी और अहिंसाको अभिन्न क्यो मानते थे। खादी मुख्य ग्रामोद्योग है। खादीका नाश हो जाय तो अुसके साथ गावोका और अहिंसाका नाश अनिवार्य हो जायगा। यह बात आकडोसे सिद्ध नही की जा सकती। अिसका प्रमाण तो हमारी आखोके सामने मौजूद है।×

अन्य ग्रामोद्योग

रचनात्मक कार्योकी आवश्यकता : सन् १९३३ के अतिम और १९३४ के प्रारभिक दिनोमें गाधीजीका चलाया हुआ सविनय अवज्ञा आन्दोलन अपने सर्वोच्च बिन्दुको पार कर चुका था और देशभरमें काग्रेस-जन यह सोच रहे थे कि अब क्या होगा। अैसा मालूम होता था कि जेलसे बाहर जो लोग रह गये थे वे सब किंकर्तव्य-विमूढ हो गये थे। यो तो गाधीजी रचनात्मक कार्य पर हमेशा जोर देते ही थे, किन्तु अिस समय अुन्हे अुसकी आवश्यकताका जैसा भान हुआ वैसा पहले कभी नही हुआ था। बेशक रचनात्मक कार्य, सन् १९२० मे काग्रेसका जो कार्यक्रम तैयार हुआ था, अुसका अभिन्न अग बन गये थे। लेकिन चूकि अुनमें बाहरी तडक-भडकका अभाव था, अिसलिअे वे अुपेक्षाके शिकार हो गये थे। लेकिन सविनय अवज्ञा आन्दोलनको सफल बनाना हो, तो राष्ट्रका काम रचनात्मक कार्य किये बिना नही चल सकता था। अगर प्रत्येक नागरिक स्वराज्यकी अिमारतके निर्माणमें रचनात्मक प्रवृत्तिके द्वारा अपना-अपना हिस्सा देना सीख ले और अुसका महत्त्व समझने लगे, तो क्षितिज पर फिलहाल प्रकाशका कोअी चिह्न न होते हुअे भी निराश होनेका कोअी कारण नही रहेगा। अिसलिअे सन् १९३४ में गाधीजीने अखिल भारत ग्रामोद्योग-सघकी स्थापना की। अखिल भारत ग्रामोद्योग-सघका अुद्देश्य भारतके मरते हुअे ग्रामोद्योगोको पुन जीवित करना था।

ग्रामोद्योग खादीके पूरक : ग्रामोद्योगोका दर्जा खादीसे अलग है। अुनमें स्वेच्छापूर्वक किये जानेवाले कामके लिअे ज्यादा स्थान नही है। अुनमें से

---

* हरिजन, २०-१-'४०

× वही

प्रत्येकमे काम करनेवालोकी अेक सीमित सख्या ही समा सकती है। अुनका महत्त्व खादीके लक्ष्यमे सहायक पूरक अुद्योग होनेमे है। वे खादीके बिना नही ठहर सकते और अुनके अभावमे खादी अपनी शान खो देगी। गावकी अर्थ-रचना हाथ-पिसाअी, हाथ-कुटाअी, साबुन-साजी, कागज, दियासलाअी, चमडेका काम, तेलघानी आदि आवश्यक ग्रामोद्योगोके बिना सम्पूर्ण नही हो सकती। यदि माग हो तो अिसमे शक नही कि हमारे गाव हमारी अधिकाश जरूरतोकी पूर्ति कर सकते है।*

अुद्योग और खेती

सच्चा सामाजिक अर्थशास्त्र सच्चा सामाजिक अर्थशास्त्र हमे यह सिखाता है कि मालिक और मजदूर अेक ही अखड शरीरके दो हिस्से है। अुनमे से कोअी भी अेक दूसरेसे बडा या छोटा नही है। अुनके हित अेक-दूसरेके विरोधी नही बल्कि समान और अन्योन्याश्रित है।×

मालिकोंके कर्तव्य मालिकसे क्या अपेक्षा है? पहली अपेक्षा तो यह है कि वह अपने सब कार्योमे पूरी अीमानदारीका पालन करे। व्यापार पूरी अीमानदारीके साथ चलाना कठिन तो है, पर असभव नही है। हा, यह बात सही है अीमानदारीके द्वारा बहुत ज्यादा पैसा कमाना सभव नही है।+

व्यापारमे बेअीमानी क्षम्य नही मानी जानी चाहिये। विशुद्ध अीमान-दारीका सिद्धान्त जैसा जीवनके दूसरे क्षेत्रोको लागू है वैसा ही अिस क्षेत्रके लिअे भी वह आवश्यक है और व्यापारीको चाहिये कि अुसे कितना ही नुकसान क्यो न हो रहा हो वह अपने सिद्धान्तकी हत्या न करे।—

अिस बातमे दो मत नही हो सकते कि दूसरे व्यापारियोकी तरह मिल-मालिकोको भी अपने मजदूरो और दूसरे कर्मचारियोके कल्याणमे माता-पिता जैसी दिलचस्पी लेना चाहिये। अुनके सम्बन्ध मात्र मालिको और सेवकोके नही होने चाहिये।†

कअी मालिक अैसा समझते है कि अपने कामगारोके प्रति अुनका कर्तव्य अुनकी भौतिक आवश्यकताये पूरी कर देना है, अुससे अधिक कुछ नही। अिसी तरहके विचार रखनेवाले किसी चाय-बागानोके मालिकने अेक बार गाधीजीको बिन-मागी सलाह देते हुअे यह लिखा था कि वे असहयोग

* कन्स्ट्रक्टिव्ह प्रोग्राम (१९४१), पृ० ११।

× यग अिडिया, ३–५–'२८

+ हरिजन, २८–७–'४६

– हरिजन, १३–३–'३७

† यग अिडिया, ३–५–'२८

आदोलन स्थगित कर दे और मजदूरोकी दशा सुधारनेके लिअे कानूनका आश्रय ले। अुसके बारेमे गाधीजीने यह लिखा था

"लेखक जिस स्वभावका प्रतिनिधित्व करता है अुसके नमूने मैने नेटालमे और यहा चम्पारनमे, दोनो जगह, देखे है। अुसका हेतु शुभ है लेकिन अुसे नही मालूम कि वह अेक सहृदय या दयालु पशुपालमात्र है, अुससे अधिक कुछ नही। अेक बार यह स्वीकार कर लिया जाय कि मनुष्योके साथ पशुओ जैसा व्यवहार किया जा सकता है, तो कितने ही यरोपीय व्यवस्थापकोको पशुओके साथ किया जानेवाला निर्दयताका व्यवहार रोकनेका ध्येय रखनेवाली सस्थाओकी ओरसे योग्यताका प्रमाणपत्र दिया जा सकता है। मै अपने अनुभवसे जानता हू कि नि शुल्क दवा, नि शुल्क डॉक्टरी सेवा, नि शुल्क आवास आदि सब अैसी युक्तिया मात्र है, जिनका अुद्देश्य 'कुली' को हमेशा गुलाम बनाये रखना है। मेरी रायमे अगर अुसे अपने कामका पूरा पारिश्रमिक दिया जाय और घर तथा दवा आदिका मूल्य अुससे वसूल किया जाय, तो वह आजकी अपेक्षा कही ज्यादा स्वतत्र होगा।"*

गाधीजीकी रायमें डॉक्टरी सहायता आदिकी सुविधाये मुफ्त नही दी जानी चाहिये। अलबत्ता, अैसी व्यवस्था जरूर होनी चाहिये कि सुविधाये अुन्हे तत्काल और सस्ते दामोमें मिल सके। मुफ्त दी जानेवाली सहायता जिन्हे यह सहायता दी जाती है अुनके स्वाभिमानको नष्ट कर देती है। अिसके सिवा, अैसी सहायता कभी तो भावना-शून्य मनसे दी जाती है और कभी लेनेवाले अुसका दुरुपयोग करते है। तो यह जरूरी हे कि अिन दोनो बुराअियोका निराकरण हो और लोगोको अुनसे बचाया जाय।×

मजदूरोके अधिकार और कर्तव्य मजदूरोके अधिकार और कर्तव्य क्या है? यह समझनेमें कोअी कठिनाअी नही होना चाहिये कि अुन्हे अुतनी अूचीसे अूची मजदूरी पानेका अधिकार है जितनी कि अुद्योग अपनी शक्तिके अनुसार दे सकता हो। और अुनका कर्तव्य यह हे कि वे अपनी मजदूरीके अेवजमे अपनी पूरी योग्यताके अनुसार काम करे।+

मजदूर जो चीज चाहते है और जो अुन्हे मिलनी चाहिये वह मात्र रोटिया नही है। असलमे वे समान दरजेके स्वमानी नागरिकोकी हैसियतसे सभ्योचित जीवन चाहते है, मनुष्यकी हैसियतसे न्याय चाहते है, अरक्षाके भयसे त्राण चाहते है। अिसके सिवा अुन्हे स्वच्छ और आरोग्यकी दृष्टिमे

---

* यग अिडिया, २९-६-'२१

× यग अिडिया, ३-५-'२८

\+ स्पीचेज़ अेड राइटिग्स ऑफ महात्मा गाधी, पृ० १०४५।

अुपयोगी आदतें सीखनेकी, मितव्ययिता और अुद्योगपरायणता आदि गुणोंका विकास करनेकी तथा शिक्षाप्राप्तिकी आवश्यकता है।* अुन्हें संस्कारवान बनना चाहिये और अपने आचरणमें आदर्श पवित्रता और औमानदारी प्रगट करना चाहिये। और अिसके लिअे अुनमें अखंड अुद्योग, आत्मत्याग और धैर्यके साथ तथा बुद्धिपूर्वक श्रम करनेकी शक्ति होनी चाहिये।

कामकी परिस्थितियां गांधीजीने मजदूरोंके हिताहित पर प्रभाव डालनेवाले दूसरे कअी सवालों — जैसे मजदूरोंके चुनावमें भ्रष्टाचारकी बुराअी, कामके घंटे, अुनकी सुरक्षितता, स्वास्थ्य, आवासकी व्यवस्था आदि — पर भी विचार किया है, अुनके सम्बन्धमें लेख लिखे हैं। अुन्होंने 'सरदारों' के जरिये मजदूरोंके चुनावकी प्रथाकी निंदा की। अुन्होंने कहा कि मजदूरोंका चुनाव सरदारोंके यानी अैसे दलालोंके जरिये हो जिनका अुद्देश्य मजदूरोंको किसी भी तरह भर देना होता है, तो मजदूरोंको अिकरार (कान्ट्रेक्ट) की स्वतंत्रता नहीं रहती। दलाल नौकरीकी अिच्छा रखनेवाले आदमीके सामने कारखानेकी नौकरीकी बहुत बढ़िया तसवीर पेश करता है और अिस तरह अुसे अपना गांव छोड़नेके लिअे लुभाता है, लेकिन अंतमें जब नौकरी स्वीकार करनेके बाद अुस आदमीको वस्तुस्थितिका पता चलता है तो वह बहुत निराशा अनुभव करता है। जब तक आसपास वहीं अैसे गरीब लोग हों जो बेकार हैं और काम चाहते हैं, तब तक बाहरसे मजदूर लाना गलत है।×

अुन्होंने कामके घंटे — जो अुस समय बहुत ज्यादा थे — कम करनेके लिअे भी कहा। दुनियाका अनुभव बताता है कि कामके घंटे ज्यादा होनेसे काम ज्यादा नहीं होता बल्कि कम ही होता है।+ जिन्हें ज्यादा घंटे काम करना पड़ता है अुन्हें बौद्धिक और नैतिक विकासके लिअे कोअी समय नहीं मिलता। अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं कि अुनकी दशा पशुकी जैसी हो जाती है।— अिस अत्यन्त जरूरी सुधारको स्वेच्छापूर्वक कर डालनेके लिअे केवल थोड़ेसे साहस और आरम्भ-शक्तिकी ही जरूरत है। मालिक लोग अुसे अुदारतापूर्वक खुद न करेंगे तो वह आगे-पीछे होनेवाला है ही। लेकिन अगर वह दबावके परिणामस्वरूप होगा तो अुसमें शोभा नहीं होगी। मजदूरोंके कामके घंटे कम होने चाहिये, यह अेक जगद्-व्यापी आन्दोलन है जिसे कोअी रोक नहीं सकता।† सन् २० के अपने अेक भाषणमें गांधीजीने अहमदाबादके मिल-

---

* हरिजन, २९-९-'४६

× यंग अिंडिया, २-९-'२६

+ यंग अिंडिया, २२-१०-'२५

— यंग अिंडिया, २८-४-'२०

† यंग अिंडिया, २२-१०-'२५

मालिकोसे कामके घटे १२ से १० करनेके लिअे और मजदूरोसे १० घटेमे ही १२ घटे जितना काम कर देनेका आग्रह किया था।*

अेक दूसरी बुराअी जिसके कारण अमुक वर्गके मजदूरोको बहुत कष्ट भोगना पडता है हदसे ज्यादा मेहनतवाला काम करनेकी है। रिक्शा खीचनेका काम करनेवालोंके बारेमे यह बात खास तौर पर सही है। अुन्हे मर्यादाके बाहर अितनी सख्त मेहनत करनी पडती है कि वे चार छह सालमे ही हृदय अथवा फेफडेके रोगके शिकार हो जाते हैं और मर जाते है। यह बात अुन्होने अेक पार्वतीय नगरमें रिक्शा खीचनेवाले मजदूरोकी दशाका अध्ययन करनेके बाद कही थी। अुन्होने कहा था, मुझे आश्चर्य होता है कि रिक्शाका अुपयोग करनेवाले अितने निष्ठुर कैसे हो जाते है कि अुन्हे यही दिखाअी नही देता कि रिक्शा-चालकोको हदसे ज्यादा कठोर परिश्रम करना पडता है।×

बालको द्वारा मजदूरी : अुन्होने अिस बातकी हिमायत की कि कारखानोमे मजदूरोके तौर पर लिये जानेवाले बालकोकी अुम्र बढा दी जाय।+

> "छोटे छोटे बालक स्कूलोसे अुठा लिये जाये और अुन्हे पैसा कमानेके लिअे मजदूरीके काममें लगा दिया जाये—यह वस्तु राष्ट्रीय पतनकी निशानी है। कोअी भी राष्ट्र अपने बालकोका अैसा दुरुपयोग नही कर सकता। यदि वह अैसा करे तो अपने राष्ट्र-पदके अयोग्य ठहरेगा। कमसे कम सोलह वर्षकी अुम्र तक तो बालकोको स्कूलोमे रहनेका अवसर मिलना ही चाहिये।"–

सुरक्षितता. अपने अेक लेखमें अुन्होने अिंग्लैंडकी सरकार कारखानोमे काम करनेवाले मजदूरोकी सुरक्षितताका जैसा ध्यान रखती है अुसकी प्रशसा की थी। न केवल गदे अथवा हानिकर धधोमे लगे हुअे मजदूरोकी सुरक्षाकी बल्कि जनताकी सुरक्षाकी योग्य व्यवस्थाके लिअे भी जो अुपाय किये जाने चाहिये अुन्हे ढूढ निकालनेमे खूब सावधानी रखी गअी है। भारतमे हरिजनोके साथ किये जानेवाले व्यवहारके साथ अिस बातकी तुलना करते हुअे अुन्होने अिस लेखमे कहा था कि भारतकी आबहवामें मैले और गदे कामोमें लगे हुअे तथाकथित अछूतोकी सुरक्षाके लिअे और अैसा काम करनेवालोकी छूतसे जनताकी सुरक्षाके लिअे अिंग्लैंडमें जितना ध्यान दिया जाता है अुससे भी ज्यादा ध्यान देनेकी जरूरत है। अैसे ध्यानके अभावमे ये मजदूर धूल और

* यग अिडिया, २८–४–'२०

× हरिजन, १६–६–'४६

\+ यग अिडिया, २५–७–'२९

– यग अिडिया, २८–४–'२० और ५–५–'२०

गदगीके जीवित वाहन वन जायेगे।* मेहतरोकी सुविधा और सुरक्षाके लिअे अुन्होने अैसे नियम बनानेको कहा कि अुन्हे अमुक प्रकारके अैसे वर्तन और झाडू आदि दिये जाये जिससे अुन्हे गदगीका हाथसे स्पर्श करनेकी जरूरत न रहे। अिसके सिवा अुन्हे अैसी सादी पोशाक भी दी जानी चाहिये जिसे वे कामके समय पहिने। चालू पद्धतिका नतीजा यह होता है कि काम कमसे कम होता है, अस्वच्छता ज्यादासे ज्यादा होती है और साथ ही रिश्वत चलती है, भ्रष्टाचार फैलता है और सम्बद्ध लोग अशिष्टता सीखते है। अिसलिअे निरीक्षको या अधिदर्शकोको (अिस्पेक्टरो या ओवरसियरोको) स्वच्छताके अिस मानवोपयोगी कामको दूसरोंसे किसी भी तरह करा लेनेके बजाय खुद करनेकी तालीम मिलना चाहिये।×

निर्धारित अल्पतम श्रेणीके घरोकी व्यवस्था औद्योगिक प्रतिष्ठान ३० से लगाकर ४०% तकका मुनाफा घोषित करते है, लेकिन अपने सबसे कम वेतन पानेवाले कर्मचारियोके लिअे वे घरकी कोअी सुविधा नही देते। कअी जगह तो ये लोग, जो मालिकोको अुनका मुनाफा कमाकर देते है, बिलकुल अधेरी और गदी कोठरियोमे रहते है। कअी म्युनिसिपैलिटिया भी अपने कम वेतन पानेवाले कर्मचारियोकी आवास-सम्बन्धी जरूरतोके बारेमे अेकदम अुपेक्षाका व्यवहार करती है। अिस सम्बन्धमे अुन्होने अिस बातका आग्रह किया कि अविवाहित, विवाहित और बाल-बच्चेवाले लोगोके लिअे अमुक अल्पतम श्रेणीके घरोकी व्यवस्था होनी ही चाहिये। मालिकोको कर्मचारियोकी यह प्राथमिक जरूरत अवश्य ही पूरी करनी चाहिये।+

वेतन: वेतनके सवाल पर लिखे गये गाधीजीके लेखोमें बहुत थोडे ही अैसे है जिनमे अहमदाबादके कपडा-अुद्योग जैसे किसी बडे अुद्योगमे प्रचलित वेतन-दरोके बारेमे विचार किया गया हो। अिस विषयसे सम्बद्ध बाकीके लेखोमे हाथ-कताअी तथा अन्य गृह-अुद्योगोमे अल्पतम वेतन या वेतनोके मानीकरणकी चर्चा है।

अहमदाबादके कपडा-अुद्योगमे वेतनोके झगडे पर अपना निर्णय देते हुअे निर्णायकने यह सिद्धान्त पेश किया था कि जहा मजदूरको अितना वेतन नही मिलता जिससे वह समुचित जीवन-मानका निर्वाह कर सके, वहा अुसे अपने मालिकसे वेतनको अुस हद तक बढानेके लिअे कहनेका अधिकार है।– गाधीजीने निर्णायकके अिस साहसपूर्ण निर्णयका स्वागत किया था। मजदूरी

---

* हरिजन, १–४–'३३

× हरिजन, ६–१०–'४६

\+ हरिजन, ११–७–'३६

– यग अिडिया, १२–१२–'२९

करके अपना पेट पालनेवाले अिन लाखों-करोड़ोंके साथ न्याय करनेके लिअे हमें अुन्हें अैसा वेतन देना ही चाहिये जिससे अुनका निर्वाह हो जाये। हमें अुनकी असहायताका लाभ नहीं अुठाना चाहिये।* सच तो यह है कि यदि कोअी अुद्योग यह अल्पतम जीवन-वेतन न दे सकता हो, तो अुसे अपनी दुकान अुठा लेनी चाहिये।×

यह अल्पतम वेतन अितना अवश्य होना चाहिये कि (१) मजदूरोंको अैसा सतुलित, पर्याप्त और पोषक आहार मिल जाय,+ जिससे आदमी रोज आठ घंटा अच्छी तरह काम कर सकने जितना सशक्त बना रहे, (२) अुसे पर्याप्त कपड़ा मिलता रहे, और (३) ज्यादा अच्छा घर और दूसरी सामान्य सुविधायें मिलती रहें।–

हाथ-कताअीवालोंके लिअे अल्पतम मजदूरी तय करनेका विरोध कुछ लोगोंने अिस आधार पर किया था कि कतवैये खुद कम मजदूरीके पक्षमें अपना मत देंगे और किसी भी हालतमें कतवैयेकी मजदूरी किसानकी मजदूरीसे अधिक नहीं होना चाहिये।† अिनमें से पहली दलील तो वही है जो सब शोषक और अत्याचारी दिया करते हैं। दूसरी दलीलके जवाबमें गांधीजीका यह कहना था कि किसानकी मजदूरी जैसी कोअी चीज नहीं है और किसानकी हालतको दूसरोंकी हालत कैसी होना चाहिये अिसका मानदण्ड (स्टैन्डर्ड) नहीं माना जा सकता। किसानको तो अपनी जमीनसे अितना भी नहीं मिलता कि वह भरपेट खा सके या अपनी जमीनका पूरा लगान भी चुका सके।‡ अखिल भारत चरखा-संघ और अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघ जैसी जन-हितकारी संस्थायें सस्ता खरीदने और महंगा बेचनेकी व्यापारिक नीतिका अनुसरण नहीं कर सकतीं। कारण, अुनका अुद्देश्य ग्रामोद्योगकी वस्तुओंका सस्ता अुत्पादन नहीं बल्कि बेरोजगारीसे पीड़ित गांववालोंको जीवन-वेतन दे सकनेवाला काम देना है।§ अिसलिअे मानदण्ड तो अुसी वेतनको माना जा सकता है जिसमें किसानको अपनी रोजी-रोटी मिल जाये। अिससे कुछ भी कम देनेकी कोशिश गुनाह-जैसी ही है।⊕

---

* हरिजन, १३–७–'३५

× हरिजन, ३१–८–'३५

\+ हरिजन, १६–१–'३७

– यंग अिंडिया, १२–१२–'२९

† हरिजन, १४–९–'३५

‡ वही

§ हरिजन, १३–७–'३५

⊕ हरिजन, १४–९–'३५

गांधीजीके सामने सबसे कठिन सवाल हाथ-कताअी और दूसरे ग्रामोद्योगोंके लिअे अल्पतम राष्ट्रीय वेतन निर्धारित करनेका था। और अुन्होंने अन्तमें यह निर्णय किआ कि आठ घंटे डटकर काम करनेका मेहनताना आठ आना होना चाहिये। आठ घंटेके कामका अर्थ अच्छी योग्यतावाले कारीगरके द्वारा अुतने समयमें तैयार किया गया माल माना गया।*

अिसके सिवा अुन्होंने यह भी तय किया कि बिहारके कतवैयेको गुजरातके कतवैयेसे कम मजदूरी देनेका कोअी कारण नहीं है। अिसमें सन्देह नहीं कि जीवन-मानमें अन्तर होनेके कारण अलग-अलग प्रान्तोंमें चीजोंके दामोंमें अन्तर है। लेकिन अखिल भारत चरखा-संघ परिस्थितियोंको अुनके मौजूदा रूपमें स्वीकार करनेके लिअे बाध्य नहीं है। यदि वे अन्यायमूलक हैं, तो संघको चाहिये कि वह अुन्हें बदले।×

यह याद रहे कि सन् ३० और ४० के दरमियान गांवके कारीगरके लिअे आठ आने रोजकी मजदूरी नगण्य नहीं थी। अुस समय कारखानोंमें काम करनेवाले मजदूरोंको जो अल्पतम वेतन मिलता था अुससे यह अधिक ही थी, कम नहीं। अिस निश्चयके अनुसार अखिल भारत चरखा-संघने तीन-चार सालके अंदर कताअीकी मजदूरी क्रमशः बढ़ाकर आठ आना प्रतिदिन करनेकी कोशिश की। लेकिन संघ अपने अिस प्रयत्नमें सफल नहीं हुआ। गांधीजीने अिस विषय पर लिखते हुअे निम्नलिखित विचार प्रगट किये थे

> "सामान्यतः गांवोंमें कहीं भी ग्रामीण मजदूरों अथवा कारीगरोंको आठ घंटेके कामके लिअे आठ आने नहीं मिलते। कतवैयेको तब तक आठ आने प्रतिदिन देना संभव नहीं होगा, जब तक कि दूसरे वर्गोंके मजदूरोंको अितना ही नहीं मिलने लगता। और जब तक परिस्थितियां बिलकुल बदल नहीं जातीं, तब तक खरीदनेवाले वर्गोंके पास अितना पैसा ही नहीं है कि वे सब किस्मके मजदूरोंको आठ आना रोज दे सकें। सेना पर होनेवाला अत्यंत भारी और अनुत्पादक खर्च देशको अेकदम तबाह कर रहा है। अिसके सिवा बड़े अधिकारियोंको दिये जानेवाले और देशके बाहर खर्च होनेवाले बड़े वेतनों और अुसी अनुपातमें बढ़ी पेंशनों पर होनेवाला व्यय भी अेक कारण है। अिस बढ़ती हुअी गरीबीके कअी दूसरे आन्तरिक कारण भी हैं।"–

ये सब कारण अपने-आपमें महत्त्वपूर्ण तो हैं, लेकिन आठ आना प्रतिदिनकी मजदूरीका लक्ष्य क्यों असफल हो गया अिस बातको वे पूरी तरह

* हरिजन, १३–७–'३५

× हरिजन, ६–७–'३५

– हरिजन, २६–८–'३९

नही समझाते। पहले लिखे गये अेक लेखमे अुन्होने अेक दूसरी महत्त्वपूर्ण वातका अुल्लेख किया था, जो कि अिस लक्ष्यकी असफलताका मुख्य कारण थी। यह बात थी — खादीके शास्त्रका अज्ञान। गावोमे जो चरखा चल रहा था वह अुत्पादनका सक्षम (efficient) साधन नही था और अिसलिअे वह कातनेवालोको सतोषप्रद कमाअी नही दे सकता था। यह स्थिति आज भी कायम है। यही कारण है कि अखिल भारत खादी बोर्डको गम्भीर विचारके बाद अिस निर्णय पर आना पडा कि चरखेकी कार्यक्षमता बढाना चाहिये। अुसने चरखेका अेक सुधरा हुआ रूप चलाया हे जिसकी आजकल देशभरमे फैले हुअे दो सौ पचाससे भी ज्यादा केन्द्रोमे जाच हो रही हे। यदि यह प्रयोग सफल हो जाता है, तो हाथ-कताअी भविष्यमे टिकेगी और बढेगी तथा गाववालोके लिअे अभी भी आशा और आश्वासन देती रह सकेगी।

हरअेक मजदूरको निश्चित अल्पमत मजदूरी देनेके बाद मजदूरोकी कुशलताके अनुसार अुनकी मजदूरीमे फर्क होना चाहिये या नही होना चाहिये? हम पहले ही देख चुके है कि गाधीजी कुशल कारीगरको ज्यादा मजदूरी देनेके खिलाफ नही थे। लेकिन वे अैसे विचारहीन फर्कोको जरूर मिटा देना चाहते थे जिनका मूल मात्र अैतिहासिक कारणोमे है और जिनका मौजूदा परिस्थितियोमे कोअी औचित्य नही रह गया है। कताअीके अेक घटेके परिश्रमका मूल्य बुनाअीके अेक घटेके परिश्रमके मूल्यसे कम क्यो होना चाहिये? सादी बुनाअीके बनिस्बत अुतने ही समयकी कताअीकी मजदूरी कम होनेका कोअी कारण नही है। सादी बुनाअी अेक यात्रिक प्रक्रिया है जब कि सादीसे सादी कताअीमे हाथकी चतुराअीकी जरूरत होती है। फिर भी कतवैयेको प्रतिघटा अेक पाअी मिलती है जब कि बुनकरको छह पाअी मिलती है। धुनकरको भी कतवैयेसे ज्यादा मिलता है — लगभग अुतना ही जितना बुनकरको। अिस परिस्थितिके अैतिहासिक कारण है। लेकिन कारण अैतिहासिक हो अिसलिअे वे न्याय्य नही हो जाते। अिसलिअे चरखा-सघ पर यह कर्तव्य आ पडा कि वह अपने सभी मजदूरो, कारीगरो आदिकी मजदूरी समान कर दे। अिसका अर्थ यह हुआ कि यदि बुनकर स्वेच्छापूर्वक समान वेतन लेना स्वीकार न करे, तो अुनसे अपना वेतनमान कम करनेका अनुरोध किया जाय। यदि हरअेक प्रकारके अुत्पादक परिश्रमकी मजदूरी समान ही होना चाहिये, यह सिद्धान्त सही हे तो अिस आदर्शके जितना सभव हो अुतने पास पहुचनेकी कोशिश होनी ही चाहिये।*

कानूनकी मर्यादायें: मजदूरोकी स्थिति सुधारनेके विविध अुपायोमें कानून भी अेक है, लेकिन कानूनकी अपनी मर्यादायें है। जनमतमे आगे बढकर

---

* हरिजन, ६–७–'३५

जो कानून वनाया जाता हे वह अक्सर निकम्मा सावित होता हे। जव तक मालिक मजदूरोको अपने परिवारका सदस्य मानना नही सीख लेते या जव तक मजदूरोको अपने अधिकार समझने और अुन्हे हासिल करनेके अुपाय जाननेकी तालीम नही दी जाती, तव तक मजदूरोके लिअे अपनी स्थिति सुधारना सभव नही होगा।*

मजदूरोमें जागृतिकी आवश्यकता. आज पूजी श्रमका नियत्रण करती है, क्योकि पूजीवालोको अेकताकी कला आती हे।+ मजदूरोको अपनी स्थिति सुधारनेके लिअे कोशिश करना सीखना चाहिये। अुन्हे जिस सत्यको समझ लेना है कि मूल्यवान धातुओकी तरह श्रम भी पूजी ही हे। यह खयाल गलत है कि धातुके टुकडे या अुत्पन्न मालकी अमुक मात्रा ही पूजी हे। धातुके सिक्केकी तरह श्रम भी धन है। यदि पूजीमे शक्ति हे तो श्रममे भी शक्ति हे। दोनोमे से प्रत्येकका अुपयोग निर्माणके लिअे भी किया जा सकता हे और नाशके लिअे भी। दोनो अेक-दूसरे पर निर्भर है। ज्यो ही मजदूरको अपनी शक्तिका भान हो जायेगा, त्यो ही वह पूजीपतिका गुलाम होनेके वजाय अुसका सहकारी और सहभागी वन जायगा। अपनी शक्तिका यह भान अुसे अहिसाके जरिये ही हो सकता हे। मजदूरोके वडे समुदायको अैसी तालीम देना वेशक अेक धीमी प्रक्रिया है। लेकिन चूकि अुसकी सफलता निश्चित है अिसलिअे वही सवसे जल्दीवाली भी है।×

क्या मजदूर-वर्ग असहाय है?. मजदूरोका यह खयाल कि मालिकोके सामने वे विलकुल असहाय है अेक अैसा भ्रम है जिसका कोअी आधार नही है।– अगर मजदूरोको यह मालूम हो जाय कि विचारपूर्ण सघटन और तालीमके जरिये वे अपने लिअे क्या कर सकते है, तो अुन्हे समझमे आ जायगा कि जिस तरह मैनेजर और शेयर-होल्डर आदि कारखानेके मालिक है अुसी तरह वे भी अुसके मालिक है।† मजदूरोने अपनी वुद्धिका विकास नही किया, सोचना-समझना नही सीखा, अिसलिअे वे मालिकोसे डरकर गुलामीका जीवन जीते है या फिर चिढकर पूजीपतियोकी सम्पत्तिको — मशीनरीको और मालको — नुकसान पहुचाते है, यहा तक कि अुन्हे मार डालनेमे विश्वास करने लगते है। लेकिन हिंसाका रास्ता अुन्हे नही वचा सकता। मजदूरोमे जव आपसमे सहयोग करनेकी वुद्धि आ जायगी, तव वे पूजीको सम्मानपूर्ण

---

* यग अिडिया, २९–६–'२१

\+ हरिजन, ७–९–'४७

× यग अिडिया, २६–३–'३१ और हरिजन, २५–६–'३८

– हरिजन, ३–७–'३७

† हरिजन, १३–६–'३६

सहायताके आधार पर अपना सहयोग प्रदान करेंगे। ज्यो ही मजदूर शिक्षित और सघटित होगे और अपनी शक्तिको समझ लेगे, त्यो ही पूजी — अुसका प्रमाण कुछ भी क्यो न हो — अुन्हे दवानेमे असमर्थ हो जायगी। सघटित और शिक्षित मजदूर मालिकोको अपनी मागे माननेके लिअे बाध्य कर सकते है।

मजदूर अपना अुचित दर्जा कैसे पा सकते है?: मजदूर अपना अुचित दर्जा कैसे पा सकते है? निस्सन्देह अिस दिशामे पहली आवश्यकता अपने सघ वनाकर आपसकी अेकता साधनेकी है। लेकिन अनुभव बतलाता है कि यदि अिसके साथ साथ कुछ दूसरी शर्तें पूरी न की जाये, तो सघ वन्धनका कारण वन सकता है। ये शर्ते अिस प्रकार है

(अ) हरअेक आदमीको अैसा समझना चाहिये कि वह अपने साथी-मजदूरोके कल्याणका ट्रस्टी है। अुसे अपना स्वार्थ नही देखना चाहिये। परिस्थितिया कितनी भी गभीर और अुकसानेवाली क्यो न हो अुसे हमेशा अहिंसक रहना चाहिये।

(ब) अगर अुसे सच्चे अर्थमे मनुष्य वनना है और अपना मनुष्योचित गौरव प्राप्त करना है, तो अुसे शराव, जुआ और अिसी तरहके दूसरे दुर्व्यसन छोड देना चाहिये। शरावका व्यसन हमारी आत्माको कलुषित कर देता है। अुसे सयमका जीवन जीना चाहिये और विवाहकी पवित्रताकी रक्षा करना चाहिये। अैसी कम मजदूरी पर, जिससे नीतिके प्राथमिक नियमोका पालन करना भी असभव हो जाय, काम करना स्वीकार करनेके वजाय यह बेहतर होगा कि वह भूखो मरना पसद करे।*

मजदूरोको अपने सघोका अुपयोग जितना वाहरसे होनेवाले आक्रमणोसे अपनी रक्षा करनेके लिअे करना चाहिये, अुतना ही अपने आतरिक सुधारके लिअे भी करना चाहिये। अपने घर, अपना शरीर, मन और आत्माको स्वच्छ और पवित्र रखनेके लिअे जिस हद तक ज्यादा वेतन और कामके कम घटे सहायक हो सकते है अुस हद तक अुन्हे ज्यादा वेतन मिलना चाहिये और कामके घटे कम होने चाहिये। लेकिन यदि ज्यादा वेतन पाने और कामके घटे कम करवानेमे यह अुद्देश्य न हो, तव तो अिस तरहकी कोशिश पापपूर्ण होगी।×

अपने अधिकारो और प्राप्य सुविधाओके लिअे आग्रह करना विलकुल अुचित हे, लेकिन अुसके साथ ही यह भी अुतना ही जरूरी है कि हम हरअेक अधिकारके साथ जुडे हुअे कर्तव्यको समझें। दुनियामे अैसा कोअी अधिकार नही हे जिसके साथ कोअी कर्तव्य सलग्न न हो। पर्याप्त मजदूरी, मजदूरोके साथ मालिकोंके सद्व्यवहार, स्वच्छ तथा स्वास्थ्यप्रद आवास आदि पर जोर देना

* डी० जी० तेन्दुलकर, महात्मा, खड २, पृ० ३९३।

× यग अिडिया, ५–८–'२०

ठीक हे, लेकिन यह भी समझ लेना चाहिये कि मजदूर मालिकोंके कामको अपना काम माने और अुसे पूरा ध्यान देकर अीमानदारीके साथ करे। *

अहिंसक लडाअीकी तालीम : दुर्भाग्यवश हमारे किसानो और मजदूरोमे से अधिकाशको अहिंसक लडाअीकी तालीम नही मिली हे। अुन्हे लगातार अुत्तेजनाकी स्थितिमे रखा जाता हे और दूसरोके वहकावेमे आकर अुन्होने अैसी आशाये पालना शुरू कर दिया है जो अहिंसक लडाअी होने पर ही पूरी हो सकती है। समुचित तालीमके द्वारा किसानो और मजदूरो, दोनोको ही प्रभावपूर्ण अहिंसक लडाअीके लिअे तैयार किया जा सकता हे। अुन्हे अितना ही समझानेकी जरूरत हे कि यदि वे सही ढगसे सघटित हो जाय, तो अपनी श्रम-शक्तिके रूपमे अुनके पास पूजीपतियोकी अपेक्षा कही ज्यादा धन और साधन-सम्पत्ति है। वात यह हे कि पैसेके वाजार पर पृजीपतियोका नियत्रण हे। किन्तु श्रमके वाजार पर मजदूरोका कोअी नियत्रण नही हे। अगर मजदूर-वर्गके चुने हुअे नेताओने मजदूरोकी समुचित सेवा की होती, तो अुन्हे अभी तक अहिंसाकी तालीमसे प्राप्त होनेवाली अनिवार्य शक्तिका भान हो गया होता। अिसके वजाय होता यह है कि अकसर मजदूरोको मालिकोसे अपनी मागे वरवस स्वीकार करानेके लिअे हिंसक अुपायोका आश्रय लेना सिखाया जाता है। सामान्यत मजदूरोको आजकल जो तालीम मिलती ह वह अुनका अज्ञान दूर नही करती। अिसका परिणाम यह होता हे कि वे अपने अधिकारोकी प्राप्तिके लिअे हिंसाको ही अन्तिम साधन मानना सीखते हैं। ×

आदर्श मजदूर-सघ गाधीजीने अहमदावादके मजदूरोका सघटन किया था। अुनकी रायमे अहमदावादके कपडा मिल-मजदूरोका सघ अपने प्रकारकी अैसी आदर्श सस्था है, जिसका भारत-भरमें अनुकरण किया जा सकता हे।

> "वह शुद्ध अहिंसाकी वुनियाद पर खडा किया गया ह। अपने अव तकके कार्यकालमे अुसे कभी पीछे हटनेका मौका नही आया। विना किसी तरहका शोरगुल, धावली या दिखावा किये ही अुसकी ताकत वरावर वढती गअी हे। अुसका अपना अस्पताल हे। मिल-मजदूरोके वच्चोके लिअे अुसके अपने मदरसे हैं, वडी अुमरके मजदूरोको पढानेके क्लास है, अुसका अपना छापाखाना और खादी-भडार है, और मजदूरोके रहनेके लिअे अुसने घर भी वनवाये हैं। अहमदावादके करीव करीव सभी मजदूरोके नाम मतदाताओकी सूचीमे दर्ज हैं और चुनावमे वे पुरअसर तरीकेसे हाथ वटाते है। काग्रेसकी स्थानीय प्रदेश कमेटीके

---

* डी० जी० तेन्दुलकर, महात्मा, खड २, पृ० ३९३–९४।

× हरिजन, २९–७–'३९

कहनेसे अहमदावादके मजदूरोंने मतदाताके नाते अपने नाम दर्ज करवाये थे। यह मजदूर-सघ काग्रेसकी दलवन्दीवाली राजनीतिमे कभी शरीक नही हुआ। शहरकी म्युनिसिपैलिटीकी नीति पर सघवालोका असर पडता है। सघ अब तक अनेक हडतालोको अच्छी सफलताके साथ चला चुका है और ये सब हडताले पूरी तरह अहिंसक रही है। यहाके मजदूरो और मालिकोने अपने आपसी झगडे मिटानेके लिये ज्यादातर अपनी राजी-खुशीसे पचकी नीतिको स्वीकार किया है।"*

गाधीजी कहते थे कि यदि मेरी चले तो भारतमे जितनी मजदूर-सस्थाये है, अुनका नियमन अहमदाबादके मजदूर-सघको आदर्श मानकर अुसके अनुसार ही करू। अिस मजदूर-सघके द्वारा वे पूजी और श्रमके बीचमे अुठनेवाले सवालोको अहिंसाके द्वारा हल करनेका प्रयत्न कर रहे थे।×

चम्पारनका किसान-आन्दोलन जो लोग गाधीजीकी किसानोका सघटन करनेकी पद्धति जानना चाहते है अुन्हे चम्पारनके किसान-आन्दोलनका अध्ययन करना चाहिये। भारतमें सत्याग्रहका पहला प्रयोग अिसी आन्दोलनमें किया गया था। "चम्पारनका आन्दोलन आम जनताका आन्दोलन वन गया था और वह शुरूसे लेकर आखिर तक पूरी तरह अहिंसक रहा था। अुसमे कुल मिलाकर कोअी बीस लाखसे भी ज्यादा किसानोका सम्बन्ध था। सौ साल पुरानी अेक खास तकलीफको मिटानेके लिअे यह लडाअी छेडी गयी थी। अिसी शिकायतको दूर करनेके लिअे पहले कअी खूनी बगावतें हो चुकी थी। किसान बिलकुल दवा दिये गये थे। मगर अहिंसक अुपाय वहा छह महीनोके अन्दर पूरी तरह सफल हुआ।"+

दूसरे किसान-आन्दोलन "अिनके सिवा खेडा, वारडोली और वोरसदमें किसानोने जो लडाअिया लडी, अुनके अध्ययनसे भी पाठकोको लाभ होगा। किसान-सगठनकी सफलताका रहस्य अिस बातमे है कि किसानोकी अपनी जो तकलीफे है, जिन्हे वे समझते है और बुरी तरह महसूस करते है, अुन्हे दूर करनेके सिवा दूसरे किसी भी राजनीतिक हेतुसे अुनके सघटनका दुरुपयोग न किया जाय। किसी अेक निश्चित अन्यायको या शिकायतके कारणको दूर करनेके लिअे सगठित होनेकी वात वे झट समझ लेते है। अुनको अहिंसाका अुपदेश करना नही पडता। अपनी तकलीफोके अेक कारगर अिलाजके रूपमें वे अहिंसाको समझकर अुसे आजमा ले और फिर अुनसे कहा जाय कि

---

* रचनात्मक कार्यक्रम (१९५९), पृ० ४६।

× यग अिडिया, १४-१-'३२

\+ रचनात्मक कार्यक्रम (१९५९), पृ० ४३।

अुन्होने जिसे आजमाया है वही अहिंसक पद्धति है, तो वे फौरन ही अहिंसाको पहचान लेते है और अुसके रहस्यको समझ जाते है।"*

मजदूर-सघकी नीतिका आधार-स्तम्भ अहिंसामे विश्वास रखनेवाली प्रत्येक मजदूर-सस्थाको अपनी नीतिके निश्चयमे अपनी सत्य और न्यायकी भावनाका अनुसरण करना चाहिये, सस्ती प्रसिद्धि पानेके आकर्षणका नही। यदि अुसे अिस वातका पूरा विश्वास है कि वह सही रास्ते पर चल रही है तो वह अुसे छोडेगी नही, दूसरे लोग चाहे जो करे या न करे। अुदाहरणके लिअे, वह हडतालोकी योजना राजनीतिक हेतु या प्रयोजनकी सिद्धिके लिअे नही करेगी, अपने सदस्योकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति सुधारनेके लिअे ही करेगी।

हड़तालें

सन् १९१८ की स्मरणीय हडताल गाधीजी सघटित हडतालोके विशेषज्ञ थे। अिस क्षेत्रमे अुन्होने पहला प्रयत्न दक्षिण अफ्रीकामे अत्यत विपरीत परिस्थितियोमे किया था और यह प्रयत्न सफल हुआ था। सन् १९१८ की अहमदावादकी हडतालमे अुन्होने हडतालकी अपनी कार्य-प्रणालीमे और सुधार किया। अपने अनुभवके आधार पर वे कह सकते थे कि हडताले अिस तरह सघटित की जा सकती है कि अुनकी सफलता किसी प्रकार टाली ही न जा सके।×

यह हडताल अिक्कीस दिन तक चली थी। अिस वीचमे गाधीजीने हडतालियोके पथ-प्रदर्शनके लिअे अनेक पत्रिकाये निकाली थी। ये पत्रिकाये मजदूरोकी न्याय्य मागोके लिअे लडी जानेवाली लडाअीकी अहिंसक कार्य-प्रणालीकी सर्वागपूर्ण हाथ-पोथी कही जा सकती है। यह हाथ-पोथी अुन घटनाओका निर्देश करती है जिनके परिणामस्वरूप आगे चलकर मिल-मालिकोने तालावन्दी घोषित कर दी और मजदूरोने यह प्रतिज्ञा ली कि वे तव तक काम पर वापिस नही जायेंगे, जव तक कि अुनकी मागे मजूर नही कर ली जाती। अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेके लिअे हडतालियोको कैसा व्यवहार करना चाहिये, अपनी वेकारीके वक्तका अुपयोग अुन्हे किस तरह करना चाहिये, सवके नेता मजदूरोको अुनकी प्रतिज्ञाके पालनमे क्या सहायता दे सकते है — जिन सव सवालोके वारेमे अिन पत्रिकाओमे विस्तृत सूचनाये है। अुनमे अिस प्रश्नकी चर्चा है कि न्याय क्या है, अुनमे दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहियोकी वीरताकी कहानिया है और अुनमे हडतालियोको यह वताया गया है कि कठिनाअियो

* रचनात्मक कार्यक्रम (१९५९), पृ० ४४।

× हरिजन, २०–४–'४०

और प्रलोभनोसे लडते हुअे वे अपनी निष्ठा और अपने मनोवलकी रक्षा कैसे कर सकते है। अन्तमे अुनमे सत्याग्रहकी अुस अद्‌भुत विजयका वर्णन है, जिसमे दोनो पक्षोकी जीत हुअी।

सफल हडतालकी शर्ते : अुन्होने सफल हडतालकी सात शर्ते वताअी है

१ हडतालका कारण न्यायपूर्ण होना चाहिये और वाजिव शिकायतके विना कोअी हडताल नही होनी चाहिये।*

२ हडतालियोमे व्यावहारिक सहमति होना चाहिये।×

"हडतालियोकी मागे और मागोको स्वीकार करनेके लिअे काममें लिये गये अुपाय, दोनो न्यायपूर्ण और स्पष्ट होने चाहिये। यदि मागके पीछे पूजीपतियोकी स्थितिसे लाभ अुठानेका हेतु हे, तो वह माग अनुचित है।"+ हडतालियोको हडताल छेडनेसे पहले अेक अपरिवर्तनीय न्यूनतम माग निश्चित कर लेना चाहिये और अुसकी घोपणा कर देना चाहिये।– सन् १९१८ की अपनी हडतालमें अहमदावादके मजदूरोने जो प्रतिज्ञा ली थी, अुसकी पहली धारामे ही यह स्पष्ट कर दिया गया था कि वे अपने काम पर तव तक वापिस नही जायेंगे, जव तक अुनके वेतनमें ३५% वृद्धि न हो जाय। ३५% वृद्धिकी माग मजदूरो और अुनके नेताओंने आपसमे काफी चर्चाके वाद अुचित ठहरायी थी।

३ हडतालियो और अुनके नेताओमे पूरी पूरी सहमति होनी चाहिये।†

भारतके मजदूरोके नेता दो प्रकारके हैं — अेक वे जो मजदूरोमें से ही अूपर आये है, दूसरे वाहरवाले जो मजदूरोमे से आये हुअे नेताओको सलाह देते है और अुनका मार्गदर्शन करते है। नेताओकी अिन दोनो श्रेणियो और मजदूरोमे जव तक पूरी पूरी सहमति नहीं होगी तव तक मजदूरोकी लडाअिया विफल ही होती रहेगी।‡

४ हिंसा नही होनी चाहिये।⊕

५ हडतालमें शामिल न होनेवाले या हडतालका द्रोह करनेवाले मजदूरोके साथ कोअी दुर्व्यवहार नही होना चाहिये।@

---

* यग अिंडिया, २२–९–'२१

× यग अिंडिया, १६–२–'२१

+ यग अिंडिया, २८–४–'२०

– यग अिंडिया, २२–९–'२१

† स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, पृ० १०४५।

‡ वही

⊕ यग अिंडिया, १६–२–'२१

@ वही

हडताल मजदूरोकी अपनी प्रेरणासे होनी चाहिये, अुनके लिअे किसी प्रकारके अनुचित अुपायोका आश्रय न लिया जाय। यदि अुसकी योजना लोगो पर किसी तरहका दवाव डाले विना की जाय, तो अुनमे गुडागाही या लूट-मारके लिअे कोअी अवकाश नही होगा। अैसी हडतालमें हडतालियोमे परस्पर पूरा पूरा सहकार होगा। हडताल शातिपूर्ण होनी चाहिये और अुसमें कहीं भी शक्तिका प्रदर्शन नही होना चाहिये।* जिन्हे हडताल-द्रोही माना गया हो अुन पर किसी तरहका दवाव नही डाला जाना चाहिये। साथी-मजदूरो पर अैसा कोअी दवाव डाला जायगा तो अुससे अुलटा हडतालियोका ही नुकसान होगा।×

"परन्तु आप पूछ सकते है कि दगावाजोका क्या किया जाय? दुर्भाग्यसे वेवफा मजदूर तो हमेशा ही रहेगे। परन्तु मैं आपसे अनुरोध करता हू कि आप अुनसे लडाअी न करे, वल्कि अुन्हे समझाये और अुनसे कहे कि अुनकी नीति सकुचित है, जव कि आपकी नीतिमे सारे मजदूरोका हित समाया हुआ है। सभव हे वे आपकी वात न सुने। अुस सूरतमें आपको अुन्हे वरदाश्त करना चाहिये, न कि अुनसे लडना चाहिये।"+ अहमदावादमे सन् १९१८ की हडतालके समय मजदूरोने जो प्रतिज्ञा ली थी, अुनकी अेक शर्त यह थी कि वे किसी प्रकारका कोअी अुपद्रव नही करेगे। मार-पीट, चोरी, मालिककी सम्पत्तिको नुकसान पहुचाना, गाली-गलौज करना आदि दुष्कृत्योसे दूर रहेगे और अुनका व्यवहार शातिपूर्ण होगा। यदि हडताल अुचित हे तो जिस सस्थाके खिलाफ अुसका सघटन किया गया हो अुस सस्थाके हडतालके द्रोहियोको प्रश्रय देने अथवा हडतालियोको दवानेके लिअे दूसरे आक्षेपार्ह अुपायोका अवलवन करने पर सस्थाकी निंदा की जानी चाहिये।–

६ हडतालियोको हडतालके दिनोमे अपने पालन-पोषणके लिअे जनताके चन्दे पर, दान† पर, भीख‡ पर या अपने सघके कोष पर निर्भर नही होना चाहिये।§

अगर हडताली मजदूर जनताके चन्देसे या अपने सघके कोष आदिसे आर्थिक सहायताकी अुम्मीद करते हो, तो वे अपनी हडतालको अनिश्चित

* हरिजन, २–६–'४६

× स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज़ ऑफ महात्मा गाधी, पृ० १०४५।

+ हरिजन, ७–११–'३६

– हरिजन, ३१–३–'४६

† यग अिडिया, २२–९–'२१

‡ आत्मकथा (अग्रेजी), भाग पाच, प्र० २०, १९४८।

§ यग अिडिया, १६–२–'२१

काल तकके लिअे नही लम्बा सकते। और जो हडताल अनिश्चित काल तक न लम्बाअी जा सकती हो असुकी सफलता अनिवार्य नही हो सकती।*

७ हडताल कितनी भी लवी चले हडतालियोको दृढ रहना चाहिये। अिसके लिअे हडतालियोमे या तो अपने बचाकर रखे पैसेसे या किसी अुपयोगी और अुत्पादक अस्थायी धधेमे लगकर अपना निर्वाह् करनेकी शक्ति होनी चाहिये।×

"मिल-मजदूरोके जीवनमे सदा अुतार-चढाव आते ही रहते है। किफायत और मितव्यय वेशक अिसका अेक अुपाय है और अुसकी अवहेलना करना अपराध होगा। परतु अिस प्रकार की गअी बचतसे बहुत मदद नही मिलती, क्योकि हमारे मिल-मजदूरोमे से अधिकाशको मुश्किलसे गुजर चलानेके लिअे भी सतत सग्राम करना पडता है। अिसके अतिरिक्त किसी मजदूरका हडताल या बेकारीके दिनोमें घर पर बेकार बैठे रहनेसे कभी काम नही चलेगा। मजबूरन् बेकार रहनेसे अधिक अुसके साहस और स्वाभिमानको हानि पहुचानेवाली कोअी और वस्तु नही होती। मजदूर-वर्गको तब तक कभी सुरक्षितता अनुभव नही होगी और अुसमे आत्म-विश्वास और बलकी भावनाका तब तक विकास नही होगा, जब तक कि अुसके सदस्योके पास जीविकाके अेकसे अधिक अचूक साधन नही होगे।"+

हडतालियोको अपने समयका अुपयोग किस तरह करना चाहिये: गाधीजीने जितनी भी हडताले चलायी अुन सबमे अुन्होने अेक नियमके पालनका आग्रह अवश्य रखा। नियम यह था कि हडतालियोको अपने निर्वाहके लिअे अपने ही अूपर निर्भर रहना चाहिये और अलग-अलग अथवा सहकारपूर्वक मिल-जुलकर कुछ न कुछ काम जरूर करना चाहिये। हडतालकी सफलताका रहस्य अिसी बातमे है, और अिससे हडतालियोको आवश्यक तालीम भी मिलती है। अुन्हे समझ सकना चाहिये कि यदि अुनमें किसी अेक मालिककी नौकरी करने और अमुक वेतन कमानेकी योग्यता है, तो अुनका श्रम अिस लायक होना ही चाहिये कि अुन्हे वही वेतन अन्यत्र भी मिल सके। अिसलिअे हडताली अपना समय बेकार बिताये और सफल होनेकी अुम्मीद भी रखे, अैसा नही हो सकता।÷

---

* स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, पृ० १०४५।

× यग अिडिया, १६-२-'२१ और २२-९-'२१, आत्मकथा (अग्रेजी), भाग पाच, प्र० २०, १९४८।

+ हरिजन, ३-७-'३७

÷ हरिजन, २-६-'४६ और स्पीचेज अेंड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, पृ० १०४५।

अहमदाबादके कपडा-मिल मजदूर-सघने सन् १९३७ मे गाधीजीकी सूचनासे अेक प्रयोग शुरु किया था। अुसने अपने सदस्योको मिलोमे वे लोग जो काम करते थे अुसके अतिरिक्त अेक पूरक अुद्योगकी तालीम देना शुरु की थी। अुद्देश्य यह था कि तालाबन्दी, हडताल या नौकरी छूटनेकी स्थितिमें अुन्हे भूखो मरनेकी नौबत नही आयगी, अुनके पास हमेशा अिस नये अुद्योगका सहारा रहेगा।* अिस प्रयोगके कअी लाभप्रद परिणाम निकले हैं।

जब हडतालका अिलाज बेकार होता है। "जब हडतालियोकी जगह लेनेके लिअे दूसरे मजदूर काफी हो, तब हडतालका अिलाज बेकार होता है। अुस सूरतमें, अन्यायपूर्ण व्यवहार हो या नाकाफी मजदूरी मिले या अैसा ही और कोअी कारण हो तो त्यागपत्र ही अुसका अुपाय है।"+

बम्बअीमे सन् १९४६ मे जलसेनाके सिपाहियोके विद्रोह और मेहतरोकी हडतालके सिलसिलेमे हम अिस अिलाजकी अुपयुक्तता पर विचार करेंगे।

सफलताके लिअे शर्तोका पालन जरूरी। "अुपरोक्त सारी शर्तें पूरी न होने पर भी सफल हडताले हुअी हैं। पर अिससे तो अितना ही सिद्ध होता है कि मालिक कमजोर थे और अुनका अन्त करण अपराधी था। हम अकसर बुरे अुदाहरणोका अनुकरण करके भयकर भूले करते हैं। सबसे सुरक्षित बात यह है कि हम अैसे अुदाहरणोकी नकल न करे जिनका हमे क्वचित् ही पूर्ण ज्ञान होता है, परतु अैसी शर्तोका अनुकरण करे जिन्हे हम सफलताके लिअे अत्यावश्यक जानते और मानते है।–

सहानुभूतिजन्य हडताले। कभी कभी मजदूर लोग किसी दूसरे अुद्योगके मजदूरोकी हडतालमे, अुनके कष्टके साथ अपनी सहानुभूति प्रगट करनेके लिअे, खुद भी हडताल पर चले जाते है। गाधीजीका मत था कि भारतके मजदूरो और कारीगरोमे राष्ट्रीय चेतनाका विकास अभी अुस हद तक नही हुआ है, जो सहानुभूतिमे की जानेवाली सफल हडतालोके लिअे जरूरी होता है। अिसमे दोष राजनीतिक नेताओका है। अुन्होने अिन वर्गोकी आशाओ और आकाक्षाओका अध्ययन नही किया है और न अुन्हे राजनीतिक स्थितिकी जानकारी करानेका कष्ट अुठाया है। अुन्होने यह माना है कि जो हाअीस्कूलो और कालेजोसे निकले है वे ही राष्ट्रीय कार्यमे भाग लेनेके योग्य है। अिसलिअे मजदूरो और कारीगरोसे अकस्मात यह आशा करना अुचित नही है कि

* हरिजन, ३–७–'३७

+ यग अिडिया, १६–२–'२१

– वही

वे अपने अलावा दूसरोके हितोकी कद्र करेगे और अुनके लिअे त्याग करेगे। अिसलिअे राजनीतिक या किन्ही दूसरे अुद्देश्योके लिअे अुनका दुरुपयोग नही होना चाहिये।* ये शब्द गाधीजीने कोअी ३५ बरस पहले लिखे थे, जब कि राजनीति अवकाश-भोगी वर्गोके मनोविनोदका साधन थी। गाधीजीने देशके राजनीतिक आन्दोलनका रग ही बदल दिया है और मजदूर अपनी गहरी नीदसे जाग गये है। लेकिन अभी भी यह नही कहा जा सकता कि वे विकासकी अुस स्थितिमें पहुच गये है, जहा वे अपने कार्योके सारे फलितार्थ और परिणाम समझने लगे हो।

जल्दीमें सहानुभूतिजन्य हडताले समयसे पहले करानेका फल यह होगा कि हमारे कामको असीम हानि पहुचेगी।× सहानुभूतिजन्य हडताले तब तक नही होनी चाहिये, जब तक यह अन्तिम रूपमे साबित न हो जाय कि सबधित लोगोने दुराग्रही और सहानुभूतिशून्य अधिकारियोमे न्याय प्राप्त करनेके लिअे सब अुचित अुपाय आजमा लिये है।+ अैसी हडतालोका अुद्देश्य आत्मशुद्धि होना चाहिये। सहानुभूतिजन्य हडतालकी विशेषता सहानुभूति रखनेवालो द्वारा अुठायी गयी असुविधा और कष्टमे है।–

> "शातिपूर्ण हडताल अुन्ही लोगो तक सीमित रहनी चाहिये जिन्हे वह कष्ट हो जो दूर कराना हे। अुदाहरणके लिअे, मान लीजिये कि टिम्बकटूके दियासलाअी बनानेवालोको अपनी स्थितिसे तो पूरा सतोष है, परतु वहाके मिल-मजदूरोको भूखो मारनेवाली मजदूरी मिलती हे, अिसलिअे अुनकी हमदर्दीमे वे लोग हडताल करते है, तो दियासलाअी बनानेवालोकी हडताल अेक किस्मकी हिसा होगी। वे टिम्बकटूके मिल-मालिकोका माल खरीदना बन्द करके अत्यत कारगर ढगसे मदद दे सकते है, और अुन्हे देनी चाहिये। तब अुन पर हिसाका आरोप नही लग सकेगा। परतु अैसे अवसरोकी कल्पना की जा सकती हे जब सीधे कष्ट न भोगनेवालोका काम बन्द कर देना कर्तव्य हो जाय। अुदाहरणके लिअे, यदि अुपरोक्त दृष्टातमे दियासलाअीके कारखानेके मालिक टिम्बकटूके मिल-मालिकोसे मिल जाय, तो मिल-मजदूरोसे मिल जाना दियासलाअीके कारखानेके मजदूरोका स्पष्ट कर्तव्य हो जायगा। परतु मैंने यह बात जोड देनेका सुझाव केवल दृष्टातके तौर पर दिया है। आखिर तो हरअेक मामलेको अुसके अपने ही गुण-दोषमे जाचना

* यग अिडिया, २२–९–'२१

× वही

\+ हरिजन, ११–८–'४६

– यग अिडिया, २२–९–'२१

पड़ेगा। हिंसा अेक सूक्ष्म बल है। अुसे सदा ही देख सकना आसान नही होता, भले ही आप अुसे महसूस करते रहे।"*

मजदूरोकी सबसे अच्छी सेवा: मजदूरोकी सबसे अच्छी सेवा यह होगी कि अुन्हे स्वावलम्बन सिखाया जाय, अुन्हे अुनके कर्तव्यो और अधिकारोकी कल्पना करा दी जाय, अुन्हे अैसा तैयार कर दिया जाय कि वे अपनी न्यायपूर्ण शिकायतोको खुद दूर करा सके। अुसके बाद वे धीरे धीरे राजनीतिक, राष्ट्रीय या मानवीय सेवा करनेकी क्षमता खुद प्राप्त कर लेगे।×

राजनीतिक अुद्देश्योके लिअे मजदूरोका दुरुपयोग: "और देशोकी तरह भारतमे भी मजदूर-जगत अुन लोगोकी दया पर निर्भर है, जो सलाहकार और पथप्रदर्शक बन जाते है। ये लोग सदा सिद्धान्तपालक नही होते, और सिद्धान्तपालक होते भी है तो हमेशा बुद्धिमान नही होते। मजदूरोको अपनी हालत पर असतोष है। असतोषके लिअे अुनके पास पूरे कारण है। अुन्हे यह सिखाया जा रहा है, और ठीक सिखाया जा रहा है, कि अपने मालिकोको धनवान बनानेका मुख्य साधन वे ही है। राजनीतिक स्थिति भी भारतके मजदूरोको प्रभावित करने लगी है। और अैसे मजदूर-नेताओका अभाव नही है जो समझते है कि राजनीतिक हेतुओके लिअे हड़ताले कराअी जा सकती है।"+

गाधीजीका मत था कि अैसे अुद्देश्योके लिअे मजदूर-हड़तालोका अुपयोग करना गम्भीर भूल होगी। वे अिस बातसे अिनकार नही करते थे कि अैसी हड़तालोसे राजनीतिक हेतु सिद्ध किये जा सकते है। पर अहिंसक असहयोगकी योजनामे अुनका समावेश नही हो सकता। यह समझनेके लिअे बुद्धि पर बहुत जोर डालनेकी जरूरत नही है कि जब तक मजदूर देशकी राजनीतिक स्थितिको समझ न ले और सबकी भलाअीके लिअे काम करनेको तैयार न हो, तब तक मजदूरोका राजनीतिक अुपयोग करना बहुत ही खतरनाक बात होगी। अिसकी अुनसे अचानक आशा रखना कठिन है। यह आशा अुस वक्त तक नही रखी जा सकती, जब तक वे अपनी खुदकी हालत अितनी अच्छी न बना ले कि सभ्य तरीके पर जीवन व्यतीत कर सके। अिसलिअे सबसे बड़ी सहायता मजदूर यह कर सकते है कि वे अपनी स्थिति सुधार ले, अधिक जानकार हो जाय, अपने अधिकारोका आग्रह रखें और जिस मालके तैयार करनेमे अुनका अितना महत्त्वपूर्ण हाथ होता है अुसके

* यग अिडिया, १८–११–'२६

× यग अिडिया, २२–९–'२१

+ यग अिडिया, १६–२–'२१

अुचित अुपयोगकी भी मालिकोसे माग करे। मजदूर लोग ज्यो ज्यो ज्यादा सघटित होगे और देशके हितका तथा अपने हितका विचार करना सीखेगे, त्यो त्यो जिस मालके निर्माणमे वे अपने परिश्रमके द्वारा अितना ज्यादा हिस्सा लेते है अुसकी कीमतोमे अुचित फेरफार करनेके लिअे आग्रह करेगे और जरूरत हुअी तो अुसके लिअे लडेगे। अैसा समय आना चाहिये — और वह जितनी जल्दी आये अुतना अच्छा — जब कि मालिकोके मुनाफे, मजदूरोके वेतनो और मालकी कीमतोमे अुचित अनुपात रहेगा। अिसलिअे विकासकी ठीक दिशा यह होगी कि मजदूर लोग अपना दर्जा वढाये और आशिक मालिकोका दर्जा प्राप्त करे। अत हडताले मजदूरोकी हालतके सुधारके लिअे ही होनी चाहिये और जब अुनमे देशभक्तिकी वृत्ति पैदा हो जाय, तब अपने तैयार किये हुअे मालकी कीमतोके नियत्रणके लिअे भी हडताल हो सकती है।*

आर्थिक वेहतरीके लिअे होनेवाली हडतालोका कोअी राजनीतिक अुद्देश्य हरगिज नही होना चाहिये। अिस तरहकी मिलावटसे राजनीतिक अुद्देश्य कभी सफल नही होता और आम तौर पर हडताली विपत्तिमे पड जाते है। अैसी हडताले तभी होनी चाहिये जब दूसरे सारे वैध अुपाय आजमा लिये गये हो और अुनमे सफलता न मिली हो।×

अहिसक कार्रवाअीमें राजनीतिक हडतालोका स्थान: राजनीतिक हडतालो पर अुनके ही गुण-दोषोकी दृष्टिसे विचार होना चाहिये। आर्थिक हडतालोके साथ अुन्हे न कभी मिलाना चाहिये और न अुनसे अिनका सम्वन्ध जोडना चाहिये। अहिसक कार्रवाअीमे राजनीतिक हडतालोका अेक निश्चित स्थान होता है। वे गहरे सोच-विचारके वाद ही की जाती है, यो ही नही। अैसी हडताले खुली होनी चाहिये और अुसमे गुडाशाही नही होनी चाहिये। अुनका परिणाम हिसा हरगिज नही होना चाहिये।+ अैसी राजनीतिक हडताल जिसका अुद्देश्य सरकारको ठप कर देना हो अेक अत्यत अुग्र राजनीतिक कदम है और यह कदम अुठानेका अधिकार अुसी सस्थाको कता है जो सारी जनताका प्रतिनिधित्व करती हो। मजदूरोके सघोको, वे कितने ही वलशाली क्यो न हो, यह अधिकार नही हो मकता।†

वम्बअीमें जल-सेनाके सैनिकोका विद्रोह: सन् १९४६ मे वम्बअीमें जल-सेनाके सैनिकोने सरकारको ठप करनेकी कोशिश की थी। अुनका

---

* यग अिडिया, १६-२-'२१ और ११-८-'२१

× हरिजन, ११-८-'४६

+ वही

† वही

अप्रकट अुद्देश्य ब्रिटिश अधिकारी भारतीय कर्मचारियोंके साथ जिस भेदभावकी नीतिका व्यवहार करते थे अुसके खिलाफ अपना असतोष व्यक्त करनेका था, लेकिन अुनकी प्रगट घोषणा यह थी कि वे स्वतत्रताकी लडाअी लड रहे है। गाधीजीने अिस विद्रोहको अेक अविचारपूर्ण हिंसक कार्य कहा था और अुसकी भर्त्सना की थी। वे नही चाहते थे कि काग्रेस जिस भारतका प्रतिनिधित्व करती है अुसके बारेमे लोग यह कहे कि अेक ओर तो वह सारी दुनियासे स्वराज्यकी लडाअी अहिंसाके जरिये जीतनेकी बात करता है और दूसरी ओर अुसने अपने राजनीतिक जीवनके अेक नाजुक मौके पर अपने अिस वचनके खिलाफ कार्य किया। अुन्होने जल-सेनाके भारतीय सदस्योसे अहिंसक प्रतिरोधका रास्ता अपनानेकी सिफारिश की और बताया कि यह रास्ता ज्यादा गौरव-युक्त और वीरतापूर्ण है और यदि अेक सगठित समूहके द्वारा अपनाया जाय, तो पूर्णत प्रभावकारी सिद्ध होता है। यदि विदेशियोकी नौकरी अुनके लिअे या भारतके लिअे अपमानजनक है, तो वे अैसी नौकरी करते ही क्यो है? अुन्होने अुन्हे नौकरी छोडनेकी सलाह दी और बताया कि अहिंसक असहकारके अनुसार अुन्हे अैसा ही करना चाहिये।*

"लाला लाजपतरायकी अध्यक्षतामे हुअी १९२० की काग्रेसके कलकत्ताके विशेष अधिवेशनमे जो प्रस्ताव पास किया गया था, अुसमे अहिंसक कार्रवाअीका पहला सिद्धान्त यह प्रतिपादित किया गया था कि हरअेक अपमानजनक वस्तुसे असहयोग किया जाय। यह याद रखना चाहिये कि शाही भारतीय जलसेना शासितोके लाभके लिअे स्थापित नही की गयी थी। अुसमे लोग आखे खोलकर गये थे। वहा खुला भेदभाव नजर आता है। जो नौकरी साफ तौर पर भारतको गुलाम बनाये रखनेके लिअे सगठित की गयी है, अुसमे जानेवाला अिस भेदभावसे बच नही सकता। वह अिस स्थितिमें सुधारके लिअे प्रयत्न कर सकता है, अुसे करना भी चाहिये। पर यह अेक हद तक ही मुमकिन है और यह विद्रोह द्वारा नही किया जा सकता। सभव है विद्रोह सफल हो जाय, परतु यह सफलता विद्रोहियोको और अुनके सबधियोको ही लाभ पहुचा सकती है, सारे भारतको नही। और यह सबक बुरी विरासत होगी। अनुशासन स्वराज्यमे भी अुतना ही जरूरी होगा जितना आज है। सफल विद्रोहियोके अधीन भारत लडनेवाले दलोमे विभक्त हो जायगा और आपसी लडाअीसे थक जायगा।"× अिसलिअे गाधीजीने अुन्हे यह सलाह दी कि वे बहादुरोकी तरह अपनी नौकरिया छोड दे। अैसा करके वे कमसे कम अपने सम्मान और गौरवकी रक्षा अवश्य कर सकेंगे।

---

* हरिजन, ३-३-'४६

× हरिजन, १०-३-'४६

मेहतरोकी हडताल: मेहतरोको भी अुन्होने अैसी ही सलाह दी थी। "भगी अेक दिनके लिअे भी अपना काम नही छोड सकता।" * "कुछ मामले अैसे है जिनमे हडताले वेजा होती है। मेहतरोकी शिकायते अिस सूचीमे शामिल है। मेहतरोकी हडतालोके विरुद्ध मेरी राय लगभग १८९७ से है जब मै डरवनमे था। अुस समय वहा आम हडतालका विचार किया गया और यह प्रश्न अुठा कि मेहतरोको अुसमे शरीक होना चाहिये या नही। मेरा मत अिस प्रस्तावके विरुद्ध रहा। जैसे मनुष्य हवाके विना नही रह सकता, वैसे ही अुसका घर और आसपासकी जगह साफ न हो तो वह वहुत दिन तक जिन्दा नही रह सकता। कोअी न कोअी सक्रामक रोग अवश्य फूट निकलता है, विशेषत जव नालियोकी आधुनिक व्यवस्था काम नही करती।"×

तो क्या भगी गदगी और कचरेमे सडते हुअे अुसी तनख्वाह पर काम करते रहे जिससे अुनका पेट भी नही भरता? "अैसी स्थितिमे अुचित अुपाय हडताल करना नही है, वल्कि आम जनताको और खास तौर पर नौकर रखनेवाली सस्थाको यह सूचना देना है कि अुन्हे अपना काम छोड देना पडेगा, क्योकि अिस कामके करनेवालोको जिन्दगीमे भूखो मरनेके सिवा कुछ नही मिलता। हडताल करनेमे और नौकरी बिलकुल छोड देनेमे वडा अन्तर है। हडताल कष्ट-निवारणकी आशामे अेक अस्थायी अुपाय होता है। नौकरी छोड देना अेक खास धन्धेको अिसलिअे वन्द कर देना है कि अुसमे राहत मिलनेकी कोअी आशा नही है। काम वन्द कर देनेका ठीक ढग यह है कि अेक तरफ नोटिस काफी दिन पहले दिया जाय और दूसरी तरफ यह सभावना हो कि किसी दूसरे काममे अधिक मजदूरी और गदगी तथा कचरेसे मुक्ति मिलेगी। अिससे समाज अपनी वेहयाअीकी नीदसे जाग अुठेगा और परिणाम यह होगा कि जनताकी विवेक-वुद्धि पर आज जो काअी जमी हुअी है वह साफ हो जायगी। अिस कदमसे अेक ही झटकेमें भगियोके कामको अेक सुन्दर कलाका दर्जा मिल जायगा और अुसे वह प्रतिष्ठा भी मिल जायगी जो वहुत पहले मिल जानी चाहिये थी।"+

लोकोपयोगी सेवाके महकमोमें हडताले. गाधीजीकी यह राय थी कि लोकोपयोगी सेवाके महकमोमे हडताले नही होनी चाहिये, क्योकि अिनमे अव्यवस्था अुत्पन्न होनेसे सारा सार्वजनिक जीवन ही अव्यवस्थित हो जाता है। अलवत्ता, वे अैसा नही कहते थे कि अिन महकमोमें नौकरी करनेवालोको किन्ही भी हालतोमे गुलामोकी तरह सेवा करते रहना चाहिये। वे कहते थे

---

* हरिजन, २१-४-'४६

× वही

\+ हरिजन, २६-३-'४६

कि अैसे मामलोमे अपने कष्टके निवारणके लिअे दूसरे अैसे अुपाय मौजूद है, जिनके खिलाफ कोअी आपत्ति नही अुठायी जा सकती।*

अहिंसक हडताल. हडतालोने आजकल अेक सार्वत्रिक बीमारीका रूप ले लिया है। भारतमे अुनका अेक विशेष अर्थ है। हम अेक अस्वाभाविक अवस्थामे रह रहे है। ज्यो ही ढक्कन खुलेगा और जगह पाकर स्वतत्रताकी ताजी हवा अन्दर आयेगी, त्यों ही हडतालोकी सख्यामे और वृद्धि होगी। हडतालोके अिस फैले हुअे ज्वरका मूल कारण यह है कि यहा और सभी जगह — जीवन अपने आधारसे विचलित हो गया है। यह आधार था — धर्म। अब अिस धर्मका स्थान, जैसा कि अेक अग्रेज लेखकने कहा है, 'नकद नारायण' ने ले लिया है। लेकिन अेक आदमीको दूसरेसे बाध रखनेके लिअे यह आधार बहुत कमजोर है। परतु धार्मिक आधारके रहते हुअे भी हडताले तो होगी, क्योकि यह कल्पना नही की जा सकती कि धर्म सबके लिअे जीवनका आधार बन जायेगा। अिसलिअे अेक ओर शोषणके प्रयत्न होगे और दूसरी ओर हडताले होगी। परन्तु अुस समय ये हडताले शुद्ध अहिंसक ढगकी होगी। अैसी हडतालोसे कभी किसीकी हानि नही होगी।×

हडतालोका दुरुपयोग. हडताल न्यायकी प्राप्तिके लिअे मजदूरोका स्वत सिद्ध अधिकार है।+ हडताल बहुत बढिया अुपाय है, लेकिन अुसका दुरुपयोग कठिन नही है। मजदूरोको मजबूत मजदूर-सघोके रूपमे अपना सघटन करना चाहिये और अिन सघोकी अनुमतिके बिना हडताल कदापि न करना चाहिये। हडताल करनेसे पहले मालिकोके साथ समझौतेकी कोशिश अवश्य करना चाहिये। समझौतेकी चर्चा किये बिना हडतालकी जोखिम अुठाना अुचित नही है।÷ समझौते पर पहुचनेके जितने अुपाय हो सकते है, वे सब समाप्त हो जाय तभी हडताल करना अुचित होगा।† बेशक यदि मालिक लोग पच-फैसला करवानेकी माग नामजूर कर दे, तो मजदूर हडतालका आश्रय ले सकते है।‡

जब हडतालें अपराधरूप होती हैं. ज्यो ही पूजीपति पच-फैसलेका सिद्धान्त स्वीकार कर ले, त्यो ही हडताले अपराधरूप मानी जानी चाहिये।§ झगडोको निपटानेके लिअे निष्पक्ष न्यायालयका प्रस्ताव हमेशा स्वीकार कर लिया जाना

---

* हरिजन, १०-८-'४७

× हरिजन, २२-९-'४६

\+ यग अिडिया, २८-४-'२०

÷ यग अिडिया, ११-२-'२०

† हरिजन, ७-११-'३६

‡ वही

§ यग अिडिया, २८-४-'२०

चाहिये। अुसका अस्वीकार कमजोरीका चिह्न है। दबाव अन्तमे अव्यवस्था ही अुत्पन्न करेगा।* मार्गें पचोंके समक्ष पेश कर दी जानी चाहिये। वे बिलकुल अुचित हो तो भी वे तब तक हडतालका कारण नही मानी जा सकती, जब तक कि पच-फैसलेकी विधि पूरी न हो जाय। अेकाअेक की हुअी हडताल किसीको हुक्म देने-जैसा ही है और वह खतरनाक है।×

अनुचित हड़ताले यह तो जाहिर ही है कि अैसी कोअी हडताल होनी ही नही चाहिये, जो विचार करने पर अुचित न ठहरे। किसी भी अन्याय-पूर्ण हडतालको सफल नही होना चाहिये। अैसी हडतालोके प्रति जनताको तनिक भी सहानुभूति प्रगट नही करना चाहिये।+ जिस हडतालके पीछे अुचित कारण न हो जनताको अुसकी स्पष्ट शब्दोमे निन्दा करना चाहिये। अिसका स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि हडताली अपने काम पर वापिस चले जायेंगे।–

पच-फैसला क्यो? पच-फैसले या अदालती फैसलेका सिद्धान्त स्वीकार कर लिया जाय, तो सामान्यत मजदूरो और मालिकोके झगडेका मामला जनताके सामने आता ही नही है। यदि हडतालके पीछे जनताके विश्वासपात्र निष्पक्ष व्यक्तियोका समर्थन न हो, तो हडतालके गुण-दोषोका निर्णय करनेके लिअे जनताके पास और कोअी साधन नही होता। हडताली खुद अपने मामलेके गुण-दोषका निर्णय नही कर सकते। अिसलिअे या तो मामला अैसे पचको सौंपा जाना चाहिये, जिसे दोनो पक्ष मजूर करे, या फिर अदालती फैसला होना चाहिये।†

पूजी और श्रममे मेल हो, वे अेक-दूसरेके प्रति सम्मानका भाव रखते हो और दर्जेकी समानता स्वीकार करते हो, तो हडतालोका होना नामुमकिन हो जाय।‡ ज्यो ज्यो मजदूर सघटित होते जायगे हडतालें बहुत कम होगी।§ ज्यो ज्यो अिन सघटित मजदूरोका मानसिक विकास होगा और वे अेक समूहके रूपमे काम करना सीखेंगे, त्यो त्यो अुनकी समझमे यह बात ज्यादा ज्यादा आयगी कि हडतालके सिद्धान्तका स्थान पच-फैसलेके सिद्धान्तने ले लिया है।⊕

---

* हरिजन, १२–५–'४६

× हरिजन, ७–२–'४६

+ हरिजन, ११–८–'४६

– हरिजन, ३१–३–'४६

† हरिजन, ११–८–'४६

‡ हरिजन, ३१–३–'४६

§ स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज़ ऑफ महात्मा गाधी, पृ० १०४५।

⊕ वही

"चूंकि मालिको और मजदूरोके वीचमे, वहुत अच्छी तरह चलाये जा रहे कारखानोमे भी, कभी कभी मतभेद पैदा होते ही रहेगे, अिसलिअे अैसे मतभेदोको निपटानेके लिअे पच-फैसलेकी पद्धति क्यो नही होनी चाहिये, ताकि दोनो पक्ष पचोके निर्णय पर अीमानदारीके साथ और तत्परतापूर्वक अमल करे?"*

पचोका निर्णय दोनो पक्षोको अनिवार्य रूपसे मान्य करना चाहिये मालिको और मजदूरोको शान्तिपूर्वक रहना हो तो अुनके वलवानसे वलवान सघटनको भी पच-फैसलेका सिद्धान्त स्वीकार कर लेना चाहिये।× अेक वार पच-फैसलेका सिद्धान्त स्वीकार कर लिया कि फिर दोनो पक्षोको पचोका निर्णय स्वीकार करना ही चाहिये, भले वह अुन्हे पसद आया हो या नही।+

कुछ अनिवार्य शर्ते आज अैसी स्थिति हे कि पूजीपति मजदूरोसे डरते है और मजदूर पूजीपतियोसे नाराज है। गाधीजी अेक तरफ डर और दूसरी तरफ नाराजीके अिस सम्वन्धकी जगह पारस्परिक विश्वास और सम्मानके भावकी स्थापना करना चाहते थे। † पच-फैसलेकी पद्धति झगडा पैदा हो जाय तव अुसे सुलझा सकती है, किन्तु अुसका होना नही रोक सकती। अुस लक्ष्यको पाना हो तो हमे कुछ अनिवार्य शर्तोका पालन करना होगा, जो अिस प्रकार है

"१ मजदूरोका वेतन, वेतनकी जिस दरको न्यूनतम माना गया हो, अुससे कम नही होना चाहिये। अिस न्यूनतम वेतनका निश्चय करनेमे किन किन वातोका विचार किया जायेगा, अिसके वारेमें दोनो पक्षोमे सहमति होनी चाहिये।

"२ अुद्योगकी भलाअीके लिअे यह आवश्यक हे कि मजदूरोको हिस्सेदारोकी वरावरीका समझा जाय। और अिसलिअे यह मान लिया जाना चाहिये कि अुन्हे मिलोके लेन-देन-सम्वन्धी कार्योकी ठीक ठीक जानकारी रखनेका हक है। अगर मजदूरोको मालिकोकी वरावरीका मालिक मान लिया जाता है, तो अुनकी सस्थाको — अुनके सघको मिलोके कामकाजका हिसाव देखनेकी वही सुविधा मिलनी चाहिये जो हिस्सेदारोको मिलती हे। सच तो यह हे कि मजदूरोको मालिकोमें तव तक विश्वास नही हो सकता, जव तक मिलोके कामकी कोअी भी महत्त्वकी वात अुनसे छिपाअी जाती है।

---

* हरिजन, ३१–३–'४६

× यग अिडिया, १९–९–'२९

+ यग अिडिया, ११–२–'२०

† यग अिडिया, २०–८–'२५

"३ तमाम अुपलब्ध मिल-मजदूरोका अैसा रजिस्टर होना चाहिये जो दोनो पक्षोको स्वीकार हो और मजदूर-सघके सिवा और किसीके मारफत मजदूरोको लेनेकी प्रथा वद कर देनी चाहिये। यह अैसी वात है जिसमें कोअी ढिलाअी नही हो सकती। यदि मजदूर-सघकी रचना अेक अुतनी ही वाछनीय सस्थाके तौर पर हुअी है जितनी वाछनीय मिल-मालिकोकी सस्था मानी जाती है, यदि मजदूर-सघको अेक अनिवार्य वुराअीकी तरह महज सहन नही किया जाता है, तो अुसका यही परिणाम होना चाहिये कि अुपलब्ध मजदूरोका दोनो पक्षो द्वारा स्वीकृत रजिस्टर हो और मिल-मालिक मजदूर-सघसे वाहरके किसी आदमीको काम पर न लगायें।

"४ श्रमको वही दर्जा और वही प्रतिष्ठा मिलनी चाहिये जो कि पूजीको मिलती है।*

"अूपरके मुद्दे जरूरी है, लेकिन अुनकी यह सूची पूरी न मानी जाय।"

मजदूरोको चेतावनी गाधीजीने मजदूरोको भी साफ साफ शब्दोमें चेतावनी और नसीहत दी है

"दूसरी तरफ, यदि आपकी सख्या भारी हो, आप लाखो-करोडो हो, तो भी मिल नही चला सकेंगे। आपमें मिल चलानेकी वुद्धि नही है। आपके पास करोडो रुपये हो तो भी आप अुसे नही चला सकते। मुझे कोअी करोड रुपये दे तो भी मै मिलका काम सभालनेसे अिनकार कर दूगा। वे करोड रुपये मैं खादी या हरिजन-कार्यमे खुशीसे लगा दूगा, परन्तु आदर्श मिल नही चला सकता। वीस वर्षके सगठित कार्यके वाद भी आपमें मिल चलानेकी योग्यता नही आअी है और न अगले वीस वर्षके भीतर अुसके आनेकी कोअी सभावना है। अगर आपके खयालमे वह योग्यता आपमें है, तो आपको रास्ता दिखानेके लिअे किसी नेताकी आवश्यकता नही है।

"मै अवश्य चाहता हू कि आप किसी दिन वह योग्यता प्राप्त कर लें। व्यक्तिश यह अवश्य सभव है कि आप अपनेको अैसी तालीम दें जिससे आप मिल चला सकें। अुस सूरतमें वाकीके लोग वैसे ही गुलाम रहेंगे जैसे आप लोग है। मेरे कहनेका अर्थ यह है कि निश्चित अवधिके भीतर आप सामूहिक रूपमें मिल नही चला सकते।×

"अगर हर आदमी हको पर जोर देनेके वजाय अपना फर्ज अदा करे, तो मनुष्य-जातिमें जल्दी ही व्यवस्था और अमनका राज्य

---

* हरिजन, १३–२–'३७

× हरिजन, ७–११–'३६

कायम हो जाय। राजाओके राज्य करनेके दैवी अधिकार जैसी या रैयतके अिज्जतसे अपने मालिकोका हुक्म माननेके नम्र कर्तव्य जैसी कोअी चीज नही है। यह सच है कि राजा और रैयतके पैदाअिशी भेद मिटने ही चाहिये, क्योकि वे समाजके हितको नुकसान पहुचाते है। लेकिन यह भी सच है कि अभी तक कुचले और दवाकर रखे गये लाखो-करोडो लोगोके हकोका ढिठाअीभरा दावा भी समाजके हितको ज्यादा नही तो अुतना ही नुकसान पहुचाता है। अुनके अिस दावेसे दैवी अधिकारो या दूसरे हकोकी दुहाअी देनेवाले राजा-महाराजा या जमीदारो वगैराके वनिस्वत करोडो लोगोको ही ज्यादा नुकसान पहुचेगा। ये मुट्ठीभर जमीदार, राजा-महाराजा, या पूजीपति वहादुरी या वुजदिलीसे मर सकते है, लेकिन अुनके मरनेसे ही सारे समाजका जीवन व्यवस्थित, सुखी और सन्तुष्ट नही वन सकता।"*

अगर पूजीपतियोमे अपने धनका अभिमान करनेकी प्रवृत्तिका होना सभव है, तो मजदूरोमे अुसी प्रकार अपने सख्यागत वलका अभिमान होना सभव है। अभिमानके जिस नशेसे पूजीपति प्रभावित हो सकते है, अुसी नशेसे मजदूर भी प्रभावित और अुन्मत्त हो सकते है।×

"अिसलिअे यह जरूरी है कि हम हको और फर्जोका आपसी सबध समझ ले। जो हक पूरी तरह अदा किये गये फर्जसे नही मिलते, वे प्राप्त करने और रखने लायक नही है। वे दूसरोसे छीने गये हक होगे। अुन्हे जल्दीसे जल्दी छोड देनेमे ही भला है। जो शक्ति कुदरती तौर पर फर्जको अदा करनेसे पैदा होती है, वह सत्याग्रहसे पैदा होनेवाली और किसीसे न जीती जा सकनेवाली अहिंसक शक्ति होती है।"+

जब लोग अहिसाको अपने आचरणके सिद्धान्तके तौर पर स्वीकार कर लेते है, तो वर्ग-सघर्ष असभव हो जाता है। अुस दिशामे अहमदावादमे प्रयोग किया गया था और अुसके अत्यत सतोपप्रद परिणाम निकले।‡ गाधीजीने दक्षिण अफ्रीका, चम्पारन और अहमदावादमे मजदूरोके सघटनका जो काम किया, अुसके पीछे पूजीपतियोके प्रति दुश्मनीकी भावना नही थी। हरअेक

---

* हरिजनसेवक, ६–७–'४७

× यग अिडिया, २६–३–'३१

\+ हरिजनसेवक, ६–७–'४७

‡ यग अिडिया, २६–३–'३१

मामलेमे मजदूरोका प्रतिरोध, जिस हद तक अुसे जरूरी समझा गया अुस हद तक, पूरी तरह सफल रहा।*

मजदूरोको मुमकिन है मिल-मालिकोसे लडना पडे। लेकिन अुन्हे अपनी यह लडाअी प्रेम, सम्मान और अनिच्छाकी अुसी भावनासे लडना चाहिये जो कि वे अपने सगे-सम्बन्धियोसे लडनेमे रखेगे। लडाअीकी अहिसक पद्धति पूजीपतिका नाश नही करना चाहती, क्योकि पूजीको वह श्रमका दुश्मन नही मानती। अहिंसक पद्धति पूजीपतियोका हृदय-परिवर्तन करना चाहती हे। अिसमे शक नही कि पूजीवाद और अुसकी सारी वुराअियोका नाश होना चाहिये। मजदूरोको चाहिये कि वे अिस प्रयत्नमे पूजीपतियोका सहयोग मागे और अिस विश्वासके साथ मागे कि पूजी और श्रमका सहयोग पूरी तरह सभव है।

अुपसंहार

पिछले पृष्ठोमे मैने गाधीजीकी अेक अैसे समाजको दी हुअी शिक्षाओका जिसके जीवनमे विज्ञानके आविष्कारो ओर नये नये यत्रोने क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिये है, साराश देनेका प्रयत्न किया है। जहा तक हो सका है मैने विचारके वाहनके तौर पर गाधीजीके अपने शब्दोका ही अुपयोग किया है। अुनके ये विचार-रत्न यहा-वहा विखरे पडे थे, मैने अुन्हे चुनकर अेक सूत्रमे पिरो दिया है।

गाधीजी राष्ट्रको अेक अत्यन्त मूल्यवान विरासत दे गये है। अुन्होने भारतके लिअे और सारी मानव-जातिके लिअे अुद्धारका मार्ग दिखाया हे। अिस मार्ग पर गाधीजीने खुद लम्बी यात्रा की और कुछ दूरी तक हमें भी वे अपने साथ ले गये। अव वे हमारे वीचमें नही है। हमे अुनका निश्चित और हमेशा मिलनेवाला सहारा अव प्राप्त नही है, हम अुसका अभाव महसूस करते है और अधेरेमें अपना रास्ता टटोलते चलते है। लेकिन अिस अधेरेके वावजूद हमे हिम्मत नही हारना चाहिये। हिम्मत हार जाये तो हम वरवाद हो जायेंगे। साथ ही, हम अधोकी तरह अपना मार्ग टटोलते रहे, यह भी ठीक नही है।

अैसी स्थितिमे आवश्यकता अिस वातकी है कि हम अपने परिश्रमको ज्ञानके अुजालेसे आलोकित करे। प्रश्न खादीका हो, या विजलीके अुपयोगका हो या कोअी दूसरा, हमे हमेशा अपने प्रयत्नको गतिमान और तेजस्वी वनाना चाहिये। गावीजी जो कुछ कह गये है अुसे मात्र दूहराते रहना काफी नही हे।

"जो आदमी हर वातको शास्त्रीय दृष्टिसे देखनेका आदी हे, वह किसी वस्तुको श्रद्धासे शास्त्रीय मानकर सतुष्ट नही होगा। वह

* यग अिडिया, १७-३-'२७

अुसे वुद्धिकी कसौटी पर कसनेका आग्रह रखेगा। श्रद्धा जव वुद्धिमे सवध रखनेवाले मामलोमें दखल देती है तव वह पगु हो जाती हे। अुसका क्षेत्र वहा शुरू होता हे जहा वुद्धिका क्षेत्र खतम होता हे। श्रद्धाके आधार पर किये गये निर्णय अटल होते हैं, जव कि वुद्धिके आधार पर किये गये निर्णय अस्थिर और श्रेष्ठ तर्कके सामने मात खा जानेवाले होते हैं। शास्त्रकी मर्यादा वताना अुसकी कीमत घटाना नही है। हमारा दोनोके विना काम नही चल सकता — दोनो अपनी अपनी जगह अुपयोगी हैं।" *

अिसलिअे शास्त्रीय ज्ञान और श्रद्धा दोनोको अपना मार्गदर्शक मानकर हमे गाधीजी द्वारा जलायी गयी प्रगतिकी मशालको आगे ले जाना चाहिये।

गाधीजी अिस वातसे अनभिज्ञ नही थे कि अुनकी शिक्षाये अुनके अनुयायियोके हाथमें पडकर जड मतवादका रूप ले सकती हैं। अिसलिअे अुन्होने अुन लोगोको आगाह कर दिया था कि वे अुन्हे वुद्धिपूर्वक समझे, शव्दोको न पकडे। अुन्होने कहा था

"अेक दूसरा और ज्यादा गभीर खतरा भी हे। खतरा यह हे कि आपका सघ+ कही सम्प्रदायका रूप न ले ले। जव कभी कोअी कठिनाअी पेश होगी आप लोग 'यग अिडिया' और 'हरिजन'के मेरे लेखोमे अुसका हल ढूढेगे और अुनका प्रमाण-वाक्योकी तरह अुपयोग करेगे। सच तो यह है कि मेरे शरीरके साथ मेरे लेख भी जला दिये जाने चाहिये। जीवित तो वही रहेगा जो मैंने किया है, न कि जो मैंने कहा हे या लिखा है। पिछले कुछ दिनोमे मैंने अकसर यह कहा है कि हमारे सव धर्मग्रन्थ नष्ट हो जाये तो भी अीशोपनिषद्का वह अेक मत्र हिन्दू धर्मका रहस्य घोषित करनेके लिअे काफी होगा। लेकिन यदि कोअी अैसा व्यक्ति ही न हो जो अुसे अपने जीवनमे अुतारकर अुसे सिद्ध कर दिखाये, तो अुस मत्रसे भी कोअी लाभ न होगा। अिसी तरह मैंने जो कुछ कहा हे या लिखा है वह अुसी हद तक अुपयोगी है जिस हद तक अुसने आपको सत्य और अहिंसाके महान सिद्धान्तोको आत्मसात् करनेमे मदद दी हो। यदि आपने अिन सिद्धान्तोको आत्मसात् नही किया हे, तो मेरे लेखोमे आपको कोअी मदद नही मिल सकती। यह वात मै आपसे अेक सत्याग्रहीकी हैसियतसे कह रहा हू और मै अुसमे से अेक भी शव्द छोडनेके लिअे तैयार नही हू। मै अिस वातकी परवाह नही

* हरिजनसेवक, ३१–३–'४६

+ गाधी-सेवा-सघ।

करता कि मेरे मरनेके बाद क्या होगा, लेकिन मैं यह जरूर चाहता हू कि आपका सघ बघे हुअे पानी जैसा नही बल्कि हमेशा बढते रहनेवाले वृक्ष जैसा हो। अिसलिअे आप मुझे भूल जाअिये। सघके नामके साथ मेरे नामका योग अनावश्यक चीज है। आप मेरे नामको मत पकडिये, सिद्धान्तोको पकडिये। आप अपने प्रत्येक कार्यकी जाच अुसी कसौटी पर कीजिये और जो भी समस्याये खडी हो अुनका वीरतापूर्वक मुकाबला करे।" *

गाधीजीकी अिस चेतावनीके होते हुअे भी यदि हम अुनके शब्दोको ही पकडते रहे, तो यह अुन शब्दोके अर्थकी हत्या होगी। अपनी विरासतको भूलना अेक पाप-कृत्य है।

खुशीकी बात है कि आजकी हमारी ज्वलत समस्याओका हल हम अिसी वृत्तिमे ढूढ रहे हैं। अुदाहरणके लिअे, सुधरे हुअे और ज्यादा सक्षम चरखेकी अर्थशास्त्रीय परीक्षा की जा रही है और अुसके सम्बन्धमे राष्ट्रीय पैमाने पर व्यापक प्रयोग किये जा रहे हैं। निकट भविष्यमे हमारी जल-विद्युत योजनाओके पूरा होनेकी सभावना दिख रही है। अुस समय गृह-अुद्योगोमे बिजलीका अुपयोग मात्र बौद्धिक विवेचनका विषय नही रह जायगा। अखिल भारत खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड अिस प्रश्नके सारे पहलुओकी छानबीन कर रहा है। खादी-ग्रामोद्योग पत्रिकाने दिसम्बर १९५४ मे अखिल भारत खादी-ग्रामोद्योग कार्यकर्ताओकी पूनामे नवम्बर १९५४ में हुअी परिषदके कामकाजका विवरण देते हुअे अेक विशेषाक निकाला था। अिस अकमे अिस और अैसे दूसरे प्रश्नो पर बहुत-सी अुपयोगी जानकारी दी गयी है।

राजनीतिक आजादी प्राप्त करनेके बाद अब हम अपने आर्थिक अुद्धारके कार्यमे जुट गये हैं। कुछ लोग आर्थिक आजादीका अर्थ यत्र-विज्ञान सम्बन्धी प्रगति करते है। लेकिन आर्थिक प्रगतिकी कसौटी मानव-कल्याणकी वृद्धि है। हम अपनी आर्थिक नीतियोको जिस हद तक अिस देशकी जनताकी सुख-समृद्धिके रूपमे कार्यान्वित कर सकेंगे, अुसी हद तक हमारी प्रगति वास्तविक होगी। गाधीजीकी शिक्षाओकी तुलना हम दिशासूचक तारेसे कर सकते हैं। अुसकी अुपेक्षा करना गलत होगा। हम अुसकी अुपेक्षा करेंगे तो निश्चित है कि हम नुकसान अुठायेंगे। और हम भूल न जायें अिसलिअे यह याद रखना अच्छा है कि नैतिक आजादीके बिना राजनीतिक और आर्थिक आजादीका कोअी अर्थ नही है।

बम्बअी, २७ जून १९५६ व्ही० बी० खेर

---

* डी० जी० तेन्दुलकर, महात्मा, खण्ड ४, पृ० १८८।

आर्थिक और औद्योगिक जीवन

असकी समस्यायें और हल

भाग – १

१

हिन्द स्वराज्य

[सन् १९०९ मे गाधीजीने अेस० अेस० किल्डोनन नामक जहाज पर अिंग्लैडसे दक्षिण अफ्रीका लौटते हुअे 'हिन्द स्वराज्य'* नामक पुस्तक लिखी थी। अिस पुस्तकमे 'आधुनिक सभ्यता' का जोरदार खडन हे। यह सवादके रूपमे लिखी गअी है और गाधीजीकी अपने सहयोगियोके साथ हुअी चर्चाओका विश्वस्त विवरण हे। यह वीस अध्यायोमे विभाजित हे, जिनमे स्वराज्य, सभ्यता, वकील, डॉक्टर, मशीनरी, शिक्षा, अहिसक प्रतिरोध आदि विपय हैं। भारतमे अपने अेक मित्रको लिखे गये पत्रमे गाधीजीने अिस पुस्तककी विपय-वस्तुका साराश दिया था। वह साराश नीचे दिया जाता हे।]

१ पूर्व और पश्चिमके वीच कोअी अगम्य खाअी नही है।

२ पश्चिमी या यूरोपीय सभ्यता जैमी कोअी चीज नही ह, यह नाम भ्रामक है। अुसे आधुनिक सभ्यता कहना चाहिये और अुसकी विशेपता यह हे कि वह अेकदम भौतिक है।

३ आधुनिक सभ्यताके सपर्कमे आनेसे पहले यूरोपके लोग पूर्वके लोगोसे या कमसे कम हिन्दुस्तानियोसे वहुतसी समानता रखते थे, और आज भी वे यूरोप-निवासी जो आधुनिक सभ्यताके प्रभावमें नही आये हैं, अुन लोगोकी अपेक्षा जो अिस सभ्यताकी अुपज हैं, हिन्दुस्तानियोसे ज्यादा अच्छी तरह मिल सकते हैं।

४ हिन्द पर शासन अग्रेज लोग नही कर रहे हैं, शासन कर रही है आधुनिक सभ्यता — अपनी रेलो, टेलीग्राफ, टेलीफोन और प्राय अुन सव आविष्कारोके जरिये जिन्हे आधुनिक सभ्यताकी विजय माना गया हैं।

५ वम्वअी, कलकत्ता और हिन्दके दूसरे मुख्य शहर अिस आधुनिक सभ्यता-रूपी महामारीके अड्डे हैं।

६ अगर अग्रेजी राज्यको कल आधुनिक तरीको पर आधारित हिन्दुस्तानी राज्यमे वदल दिया जाये, तो भी हिन्दुस्तानका ज्यादा भला नही होगा,

* नवजीवन ट्रस्ट, अहमदावाद–१४, द्वारा प्रकाशित।

अलबत्ता, जो दौलत अिंग्लैंड चली जाती है, अुसका कुछ हिस्सा रोकनेकी योग्यता अिसमे आ जायेगी, लेकिन तब हिन्द यूरोप या अमेरिकाके दूसरी या पाचवी श्रेणीके राष्ट्र-जैसा हो जायेगा।

७ पूर्व और पश्चिम वास्तवमे तब ही मिल सकते है, जब पश्चिम आधुनिक सभ्यताको लगभग पूरी तरह फेक दे या छोड दे। पूर्व आधुनिक सभ्यताको अपना ले तब भी वे मिलते हुअे-से दिखाअी पड सकते है, लेकिन वह मिलाप सशस्त्र समझौते जैसा होगा, जैसा कि अुदाहरणके लिअे जर्मनी और अिंग्लैंडके बीच है। ये दोनो राष्ट्र, दोनोमे से कोअी दूसरेको निगल न जाये अिस आपत्तिसे बचनेके लिअे, मानो मृत्युके निरतर रहनेवाले खतरेके बीच जी रहे है।

८ किसी व्यक्ति या समूहके लिअे सारी दुनियाके सुधारकी शुरुआत करना या अुसकी बात सोचना निरी धृष्टता है। आवागमनके बहुत ज्यादा कृत्रिम तथा तेज साधनोसे अैसा करनेकी कोशिश करना, असभवको सभव बनानेका प्रयत्न करने जैसा होगा।

९ सामान्य तौर पर यह कहा जा सकता है कि भौतिक सुविधाओकी वृद्धि किसी भी तरह नैतिक विकासमे कोअी मदद नही करती।

१० आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान जादू-टोनेका केन्द्रीभूत सार है। तथा-कथित अुच्च कोटिके डॉक्टरी कौशलकी अपेक्षा नीम-हकीमी कही अधिक अच्छी चीज है।

११ अस्पताल वे हथियार है जिन्हे शैतान अपने स्वार्थके लिअे यानी अपने राज्य पर अपनी प्रभुता कायम रखनेके लिअे काममे लेता आ रहा है। वे दुर्व्यसन, पीडा, नैतिक पतन और सच्ची गुलामीको कायम रखते है। अेक समय था जब मै डॉक्टरी तालीम लेना चाहता था। अब मै समझ गया हू कि मेरा वैसा सोचना बिलकुल गलत था। अस्पतालोमे चलनेवाले घृणित व्यापारोमे किसी भी रूपमे कोअी हिस्सा लेना मै पाप समझता हू। अगर यौन-रोगोके लिअे, यहा तक कि क्षय आदि रोगोके लिअे भी, अस्पताल न होते, तो हमारे बीचमे क्षयकी बीमारी और यौन-दुर्व्यसन आजकी अपेक्षा कम होते।

१२ हिन्दकी मुक्ति, जो कुछ अुसने पिछले पचास सालोमे सीखा है, अुसे भूल जानेमे है। रेलवे, टेलीग्राफ, अस्पताल, वकील, डॉक्टर आदिको खतम होना पडेगा और तथाकथित अुच्च वर्गोको सजगतासे, धार्मिक श्रद्धाके साथ तथा विचारपूर्वक किसानका सीधा-सादा जीवन जीना सीखना होगा — यह जानते हुअे कि यही जीवन सच्चा आनन्द देनेवाला है।

१३ हिन्दको मशीनके बने कपडे नही पहनना चाहिये, चाहे वे यूरोपीय मिलोसे आते हो या हिन्दुस्तानी मिलोसे।

१४ अिग्लैंड हिन्दको अैसा करनेमे मदद कर सकता है और तब वह हिन्द पर अपने अधिकारके औचित्यको सिद्ध कर दिखायेगा। अैसा प्रतीत होता है कि आज अिग्लैडमे कअी लोग अैसे है जो अिस प्रकार सोचते है।

१५ समाजकी अैसी व्यवस्था करनेमे, जिमसे लोगोकी भौतिक स्थिति पर रोक लगी रहे, प्राचीन कालके अृषियोकी सच्ची बुद्धिमानी थी। पाच हजार साल पहलेका अनगढ हल आज भी हमारे किसानोका हल हे। हमारी मुक्ति—हमारी समस्याओका हल अिसीमे है। लोग अैसी परिस्थितियोमे लम्बी आयु पाते है, यूरोपने आधुनिक सभ्यताको अपनाकर जो शाति भोगी हे, अुसकी तुलनामे कही अधिक शातिका जीवन जीते है और मै महसूस करता हू कि हरअेक विचारवान मनुष्य—प्रत्येक अिग्लैडवासी तो जरूर ही—यदि वह चाहे तो अिस सत्यको सीख सकता हे और अिसके अनुसार कार्य कर सकता है।

अहिसक प्रतिकारकी सच्ची भावना ही मुझे अुपरोक्त लगभग निश्चित निष्कर्षो तक लायी है। अेक अहिसक सत्याग्रहीके रूपमे, मै अिस बातकी परवाह नही करता कि अैसा महान सुधार अुन लोगोके मध्य हो सकेगा या नही, जो अपना सतोप वर्तमान अुन्मत्त दौडमें पाते है। अगर मैं अिसकी सच्चाओीको महसूस करता हू, तो मैं मानता हू कि मुझे अिसी मार्गका अनुगमन करना चाहिये और अुसमें खुश होना चाहिये, और अिसलिअे मैं अुस समय तक अितजार नही कर सकता जब तक सारे लोग अिस चीजको शुरू न कर दे। हम सब जो अिस प्रकार सोचते हैं अुन्हे यह जरूरी कदम अुठाना हे, और यदि हम सच्चाओी पर हुअे तो मैं मानता हू कि बाकीके लोग हमारा अनुसरण अवश्य करेगे। सिद्धान्त हमारे सामने मौजूद है, हमारे व्यवहारको यथासभव वहा तक पहुचना होगा। भाग-दौडके बीच रहते हुअे सभव हे कि हम अपनेको अुसकी बुराओीसे पूरी तरह मुक्त करनेमें समर्थ न हो सके। हर समय जब मैं रेलमे बैठता हू या मोटर-बसका अुपयोग करता हू, तब अनुभव करता हू कि मैं अपनी विवेक-बुद्धिकी हिंसा कर रहा हू। मै अिस आधारके तार्किक नतीजेसे नही डरता हू। अिग्लैडकी यात्रा अनुचित है और दक्षिण अफ्रीका तथा हिन्दके बीच समुद्री जहाजोके जरिये जाना-आना भी अनुचित हे। आप और मैं अिन चीजोका अुपयोग अपने अिसी जीवनमे छोड सकते है, और शायद छोड देगे। लेकिन मुख्य बात तो यह है कि हम अपने सिद्धान्तको स्पष्टतया समझ ले। आप वहा अनेक तरहके मनुष्योको अनेक अवस्थाओमे देख रहे होगे, अिसलिअे मैं अनुभव करता

हू कि मैंने मानसिक रूपसे (अपने मतानुसार) जो प्रगतिशील कदम अुठाया है वह मुझे आपको बता देना चाहिये। अगर आप मुझसे सहमत है तो आपका कर्तव्य हो जायेगा कि आप क्रातिकारियोंसे और दूसरे सब लोगोंमे कहे कि जो आजादी वे चाहते है—या वैसा मानते है—वह लोगोकी हत्या करने या हिंसा करनेसे नही प्राप्त होती, लेकिन अपना सुधार करनेसे और सच्चे रूपमें हिन्दुस्तानी होने और रहनेसे प्राप्त होती है। तब अंग्रेज शासक सेवक होंगे, वे स्वामी नही रहेगे। वे सरक्षक (ट्रस्टी) होगे, न कि अत्याचारी, और वे हिन्दके सारे निवासियोके साथ पूरी तरहसे शान्तिपूर्वक रहेगे। अिसलिअे हमारा भविष्य अंग्रेज जातिके हाथमे नही है, लेकिन खुद हिन्दुस्तानियोंके हाथमे है, और अगर अुनमे पर्याप्त मात्रामे आतमत्याग तथा आत्म-सयम है, तो वे अिमी क्षण अपनेको आजाद बना सकते हैं। और जब हम भारतमें सादगीकी अुस स्थितिको प्राप्त कर लेगे, जो आज भी हममे काफी मात्रामे है तथा कुछ सालो पूर्व तक तो जो हमारे बीच अपनी परिपूर्णावस्थामे थी, तब श्रेष्ठ भारतीयो और श्रेष्ठ यूरोपियोंके लिअे भारतमे कही भी, किसी भी स्थान पर अेक-दूमरेसे प्रेमपूर्वक मिलना सभव होगा। सादगीके अिम वातावरणमे अेक-दूसरेकी मित्रताका मम्पादन करनेवाले ये भारतीय और यूरोपीय दूमरोके लिअे प्रेरणारूप सिद्ध होगे। जब वेगवान वाहन नही थे तब भी अुपदेशक और प्रचारक देशके अेक कोनेसे दूसरे कोने तक सारे खतरोका मामना करते हुअे पैदल चलते थे—अपने स्वास्थ्यको फिरसे प्राप्त करनेके लिअे नही, यद्यपि अुनकी पदयात्राओसे अुन्हे यह लाभ मिल ही जाता था, बल्कि मानव-जातिके कल्याणके खातिर। तब बनारस और तीर्थयात्राके अन्य स्थान पवित्र नगर थे, जब कि आज वे दूषित है।

महात्मा, जी० डी० तेन्दुलकर, खड १, पृ० १२९

२

स्वराज्यमे भारतकी क्या दशा होगी ?

पाठकोने मेरे पास ढेरो पर्चे भेजे है, जो वेस्टर्न अिंडिया नेशनल लिवरल अेसोसियेशनकी प्रचार-समिति खूब बटवा रही है। पर्चा न० ६ मे यह लिखा है

> "गाधीराज्यकी स्थापना होने पर भारतका क्या स्वरूप होगा ? रेले नही होगी। अस्पताल नही होगे। मशीने नही होगी।
>
> "किसी जल या स्थल सेनाकी जरूरत नही होगी, क्योकि गाधीजी दूसरे राष्ट्रोको वचन दे देगे कि भारत अुनके कामकाजमे हस्तक्षेप नही करेगा और अिसीलिअे वे भारतके कामोमें हस्तक्षेप नही करेगे।
>
> "न कानूनोकी जरूरत होगी, न अदालतोकी, क्योकि प्रत्येक व्यक्ति अपना कानून होगा। हरअेकको अपनी मरजीका काम करनेकी आजादी होगी। बडे आरामका जीवन होगा, क्योकि हर आदमी खद्दरकी लगोटीमे घूमेगा और खुलेमे सोयेगा।"

मै यह नही कह सकता कि अिसमे कोअी अत्युक्ति है। यह कुशलतासे बनाया गया व्यगचित्र हे, जो पाश्चात्य युद्धनीतिमे जायज माना जाता है। केवल अिसके भीतरका गूढ आशय ही झूठा है। मेरा अभिप्राय मै यहा स्पष्ट कर दू। पहली बात तो यह है कि भारतवर्ष 'गाधीराज्य' स्थापित करनेका प्रयत्न नही कर रहा है। वह स्वराज्यकी स्थापनाके लिअे जीतोड परिश्रम कर रहा है। और स्वराज्य-प्राप्तिके खातिर वह खुशीसे और औचित्यके साथ गाधीका बलिदान कर देगा। 'गाधीराज्य' अेक आदर्श स्थिति है और अुस स्थितिमे पाचों नकारात्मक बाते सच्चा चित्र अुपस्थित करेगी। परन्तु कोअी स्वप्नमे भी यह खयाल नही करता, मेरा तो बेशक नही है, कि स्वराज्यमें रेले नही होगी, अस्पताल नही होगे, यत्र नही होगे, जल और स्थल सेना नही होगी, कानून तथा कानूनी अदालते नही होगी। अिसके विपरीत रेले होगी, किन्तु अुनका अुद्देश्य भारतका सैनिक या आर्थिक शोषण नही होगा, बल्कि अुनका अुपयोग भीतरी व्यापार बढाने और तीसरे दरजेके मुसाफिरोके जीवनको काफी आरामदेह बनानेमे किया जायेगा। तीसरे दरजेकी मुसाफिरी करनेवाली जनता जो किराया देती हे, अुसका कुछ बदला अुसे मिलेगा। कोअी यह आशा नही करता कि स्वराज्यमे रोगोका सर्वथा अभाव होगा। अिसलिअे स्वराज्यमें अस्पताल तो अवश्य होगें, परन्तु यह आशा रखी जाती है कि तब अस्पतालोंका

अुद्देश्य भोग-विलासके रोगियोकी अपेक्षा दुर्घटनाओके शिकार होनेवालोकी सेवा करना अधिक होगा। बेशक, चरखेके रूपमे यन्त्र भी होगे। आखिर तो चरखा भी अेक नाजुक यन्त्र ही है। अिसमे मुझे कोअी शका नही कि स्वतत्र भारतमे कअी कारखाने खडे होगे, जिनका अुद्देश्य लोगोको लाभ पहुचाना होगा, न कि आजकलकी तरह जनसाधारणका खून चूसना। जलसेनाका तो मुझे कुछ पता नही है, लेकिन अितना मै अवश्य जानता हू कि भावी भारतकी स्थलसेनाके सैनिक भारतको गुलाम बनाये रखने और दूसरे राष्ट्रोकी आजादी छीननेके लिअे रखे गये भाडेके टट्टू नही होगे। तब स्थलसेना बहुत कुछ घटा दी जायगी, अुसमे अधिकाश स्वयसेवक होगे और अुसका अुपयोग आन्तरिक व्यवस्था रखनेके लिअे पुलिस-शक्तिकी तरह किया जायगा। स्वराज्यमे कानून होगे और कानूनी अदालते भी होगी, परन्तु वे लोगोकी स्वतत्रताके रक्षक होगे, न कि आजकी तरह अेक नौकरशाहीके हथियार होगे, जिसने अेक सपूर्ण राष्ट्रको शक्तिहीन बना दिया है तथा जो अुसे और भी शक्तिहीन बनाने पर तुली हुअी है। अन्तमे, स्वराज्यमे जो चाहे अुसे लगोटी पहनने और खुलेमे सोनेकी स्वतन्त्रता होगी। लेकिन मुझे आशा है कि आजकलकी तरह लाखो आदमियोके लिअे अेक मैला-सा चिथडा पहनकर घूमना जरूरी नही होगा, जो आवश्यक कपडा खरीदनेका साधन न होनेसे आज लगोटीका काम देता है। न स्वराज्यमे लाखो लोगोको मकानोके अभावमे अपने थके हुअे और भूखे शरीरोको खुलेमे आराम देना पडेगा। अिसलिअे 'हिन्द स्वराज्य' मे प्रकट किये गये कुछ विचारोको सन्दर्भसे अलग करके अुन्हे व्यगात्मक रूपमे जनताके सामने अिस तरह रखना, मानो मै हर आदमीके अपनानेके लिअे अुन विचारोका प्रचार कर रहा होअू, अुचित नही है।

यग अिडिया, ९-३-'२२, पृ० १४५

३

स्वराज्यकी व्यावहारिक परिभाषा

स्वतत्रता अेक अैसा शब्द है, जो शताब्दियोंके प्रयोगसे पुनीत हो गया है और अिसलिअे अिसके आसपास बहुतेरे लोगोकी रायोंको अेकत्र कर लेना कोअी बडी बात नही है। परन्तु अुसकी अैसी व्याख्या करनेका साहस कोअी नही करेगा, जो अुन सबको पसन्द हो सके। अिसलिअे मै सुझाता हू कि स्वराज्यकी जगह लेनेवाला दूसरा कोअी अच्छा शब्द प्राप्त नही है और अुसकी अेक ही सार्वत्रिक व्याख्या हो सकती है 'भारतका वह पद जिसकी अभिलाषा किसी दिये हुअे अवसर पर भारतीय लोग करे।'

यदि मुझसे कोअी यह पूछे कि अिस घडी हिन्दुस्तान क्या चाहता है, तो मै कहूगा कि मुझे पता नही। मै सिर्फ अितना कह सकूगा कि मै तो अुससे यही चाहता हू कि वह अिस बातकी अभिलाषा रखे कि हिन्दुओ और मुसलमानोमे सच्चे सम्बन्ध रहे, जनसाधारणको रोटी मिले और छुआछूत दूर हो। अिस घडी तो मै स्वराज्यकी यही व्याख्या करूगा। यह व्याख्या मै अिसलिअे पेश कर रहा हू कि मै अेक व्यावहारिक आदमी होनेका दावा करता हू। मै जानता हू कि हम अिग्लैण्डसे अपनी राजनीतिक स्वतत्रता चाहते है। वह पूर्वोक्त तीन बातोके बिना कभी नही मिल सकती — यदि हमारे पास हथियार होते और हमे अुनका प्रयोग भी करना आता तब भी नही मिल सकती।

हिन्दी नवजीवन, २०–७–'२४, पृ० ३९४

४

राष्ट्रीय मांग

[१५ सितम्बर, १९३१ को लन्दनकी गोलमेज परिषदकी फेडरल स्ट्रक्चर सब-कमेटीके सामने दिया गया गांधीजीका भाषण ।]

आरम्भमे ही मुझे स्वीकार करना चाहिये कि आपके सामने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसकी स्थिति रखते हुअे मैं काफी कठिनाअी महसूस कर रहा हू। मैं कहना चाहूगा कि मैं अिस सब-कमेटीमे और साथ ही जब अुचित समय आयेगा तब गोलमेज परिषदमे शुद्ध सहयोगकी भावनाके साथ शामिल होनेके लिअे और अपनी शक्तिभर सहमतिके मुद्दे खोजनेकी कोशिश करनेके लिअे आया हू। मैं सम्राटकी सरकारको यह आश्वासन भी देना चाहूगा कि मेरी अिच्छा हुकूमतको किसी भी समय झझटमे डालनेकी न तो है, न होगी और यहा अुपस्थित अपने सहयोगियोको भी मैं यही आश्वासन देना चाहूगा कि हमारे दृष्टिकोणोमे चाहे कितना ही अतर हो, मैं अुनके रास्तेमे किसी भी तरह बाधक नही बनूगा। अतअेव यहा मेरी स्थिति पूरी तरह आपकी सद्-भावना और सम्राटकी सरकारकी सद्भावना पर निर्भर है। अगर किसी समय मुझे यह मालूम होगा कि मैं परिषदकी कोअी भी सेवा नही कर सकता, तो मैं खुदको अिससे हटा लेनेमे सकोच नही करूगा। मै अुनसे भी, जो अिस कमेटी और परिषदके प्रबधके लिअे जिम्मेदार है, कह सकता हू कि वे केवल मुझे सकेत भर कर दे और फिर हटनेमे मुझे कोअी झिझक नही होगी।

मुझे अैसा अिसलिअे कहना पड रहा है, क्योकि मैं जानता हू कि सरकार और कांग्रेसके बीच मौलिक मतभेद हैं और यह भी सभव है कि मेरे और मेरे सहयोगियोके बीचमे महत्त्वपूर्ण मतभेद है। अिसके सिवा मुझे अपना काम अेक मर्यादाके भीतर रहते हुअे करना होगा। मैं कांग्रेसका, भारतीय राष्ट्रीय महासभाका, अेक गरीब और विनम्र प्रतिनिधि-मात्र हू, और अिसलिअे यह बता देना अुचित ही है कि कांग्रेस वास्तवमे क्या है और अुसका अुद्देश्य क्या है। तब आप मेरे साथ सहानुभूति रखेगे, क्योकि मैं जानता हू कि मेरे कधो पर जिम्मेदारीका जो बोझ है वह बहुत भारी है।

कांग्रेस क्या है?

अगर मैं गलती नही करता हू, तो भारतमे कांग्रेस सबसे पुराना राजनीतिक सगठन है। अुसकी अवस्था लगभग ५० सालकी है और अिस अरसेमें

वह बिना किसी रुकावटके बराबर अपने वार्षिक अधिवेशन करती रही है। वह सच्चे अर्थोंमे राष्ट्रीय है। वह किसी खास जाति, किसी खास वर्ग, किसी विशेष हितकी प्रतिनिधि नही है। वह सर्व-भारतीय हितो और सब वर्गोकी प्रतिनिधि होनेका दावा करती है। मुझे यह बताते हुअे बहुत आनन्द होता है कि अुसकी अुपज आरम्भमे अेक अग्रेज मस्तिष्कमें हुआी। अेलेन ओक्टोवियस ह्यूमको हम काग्रेसके पिताके रूपमे जानते है। दो महान पारसियो फिरोजशाह मेहताने और दादाभाआी नौरोजीने — जिन्हे सारा भारत 'वृद्ध पितामह' कहनेमे प्रसन्नता अनुभव करता है, अिसका पोषण किया। आरम्भमे ही काग्रेसमे मुसलमान, आीसाआी, अेग्लो-अिडियन गोरे आदि शामिल थे, बल्कि मुझे यो कहना चाहिये कि अिसमे सब धर्म, पथ और सम्प्रदायोका थोडी-बहुत पूर्णताके साथ प्रतिनिधित्व होता रहा। स्वर्गीय बदरुद्दीन तैयबजीने अपने आपको काग्रेसके साथ मिला दिया था। मुसलमान और पारसी भी काग्रेसके सभापति रहे है। अिस समय कमसे कम अेक भारतीय आीसाआी अध्यक्षका नाम मुझे याद आता है ये थे श्री अुमेशचन्द्र बनर्जी। श्री कालीचरण बनर्जीने, जिनसे ज्यादा विशुद्ध चरित्रवाले किसी भारतीयको मै जानता नही, अपनेको काग्रेसके साथ अेक कर दिया था। मै और निस्सन्देह आप भी, अपने बीच श्री के० टी० पालका अभाव अनुभव कर रहे होगे। यद्यपि वे कभी काग्रेसमे विधिवत् शामिल नही हुअे, फिर भी वे पूरे राष्ट्रवादी थे और काग्रेससे सहानुभूति रखते थे।

जैसा कि आप जानते है, स्वर्गीय मौलाना मुहम्मदअली, जिनकी अुपस्थितिका भी आज यहा अभाव है, काग्रेसके सभापति थे, और अिस समय काग्रेसकी कार्यसमितिके १५ सदस्योमे ४ सदस्य मुसलमान है। स्त्रिया भी हमारी काग्रेसकी सभापति रह चुकी है — पहली डॉ० अेनी बेसेट थी और दूसरी श्रीमती सरोजिनी नायडू। श्रीमती नायडू आजकल कार्यसमितिकी सदस्य भी है, और अिस प्रकार जहा हमारे यहा वर्ग या पथका भेदभाव नही है वहा किसी प्रकारका स्त्री-पुरुष-भेद भी नही है।

काग्रेसने अपने आरम्भसे ही अछूत कहलानेवालोके अुद्धार-कार्यको अपने हाथोमे ले रखा है। अेक समय था जब कि काग्रेस अपने प्रत्येक वार्षिक अधिवेशनके समय अपनी सहयोगी सस्थाकी तरह सामाजिक परिषदका भी अधिवेशन किया करती थी, जिसे स्वर्गीय रानडेने अपने अनेक कामोमे अेक काम बना लिया था और जिसे अुन्होने अपनी शक्तिया समर्पित की थी। आप देखेगे कि अुनके नेतृत्वमे सामाजिक परिषदके कार्यक्रममें अछूतोके सुधारके कार्यको अेक खास स्थान दिया गया था। किन्तु सन् १९२० मे काग्रेसने अेक बडा कदम अुठाया और अस्पृश्यता-निवारणके सवालको राजनीतिक मचका अेक आधार-स्तभ बनाकर राजनीतिक कार्यक्रमका अेक महत्त्वपूर्ण अग बना

दिया। जिस प्रकार काग्रेस हिन्दू-मुस्लिम-अेकताको और अिसलिअे सब सम्प्रदायोके पारस्परिक अैक्यको स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे अनिवार्य समझती थी, अुसी प्रकार पूर्ण स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे अस्पृश्यताके निवारणको भी वह अनिवार्य समझने लगी।

सन् १९२० मे काग्रेसने जो स्थिति ग्रहण की थी, वह आज भी बनी हुअी है, और अिस प्रकार काग्रेसने अपने आरम्भसे ही अपनेको सच्चे अर्थोमे राष्ट्रीय सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है।

अगर यहा अुपस्थित महाराजागण मुझे आज्ञा दे तो मै यह बतलाना चाहता हू कि अपने आरम्भमे ही काग्रेसने अुनकी सेवाका कार्य भी अुठा लिया था। मै अिस कमेटीको याद दिलाना चाहता हू कि वह व्यक्ति "भारतके वृद्ध पितामह" ही थे, जिन्होंने काश्मीर और मैसूरके प्रश्नको हाथमे लेकर सफलताको पहुचाया था और मै अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हू कि ये दोनो राजवश श्री दादाभाअी नौरोजीके और काग्रेसके प्रयत्नोके लिअे कम अृणी नही है। अब तक भी राजाओके घरेलू और आन्तरिक मामलोमें हस्तक्षेप न करके काग्रेस अुनकी सेवाका प्रयत्न करती रही है।

मै आशा करता हू कि अिस सक्षिप्त परिचयसे, जिसका दिया जाना मैने आवश्यक समझा, यह सब-कमेटी और जो काग्रेसके दावेमे दिलचस्पी रखते है वे यह जान सकेंगे कि अुसने जो दावा किया है अुसकी वह योग्य अधिकारी है। मै जानता हू कि कभी-कभी वह अपने अिस दावेको कायम रखनेमे असफल भी हुअी है, लेकिन मै यह कहनेका साहस करता हू कि अगर आप काग्रेसका अितिहास देखेंगे, तो आपको मालूम होगा कि असफल होनेकी अपेक्षा वह सफल ही अधिक हुअी है और समयके साथ अुसकी सफलता लगातार बढती गयी है। सबसे अधिक, काग्रेस अपने मूल रूपमे, देशके अेक कोनेसे दूसरे कोने तक ७,००,००० गावोमे बिखरे हुअे करोडो मूक, अर्ध-नग्न और भूखे मानवोकी प्रतिनिधि है, फिर चाहे ये लोग ब्रिटिश भारतके नामसे पुकारे जानेवाले प्रदेशके हो अथवा भारतीय भारत अर्थात् देशी-राज्योके। अिसलिअे अैसा प्रत्येक हित, जो काग्रेसके मतसे रक्षाके योग्य है, अिन लाखो मूक लोगोके हितका साधन होना चाहिये। आप समय समय पर अिन विभिन्न हितोमे प्रत्यक्ष विरोध देखते है। परन्तु यदि वस्तुत कोअी वास्तविक विरोध हो तो मै काग्रेसकी ओरसे बिना किसी सकोचके यह बता देना चाहता हू कि अिन लाखो मूक मानवोके हितकी रक्षाके लिअे काग्रेस प्रत्येक हितका बलिदान कर देगी। अिसलिअे काग्रेस मूलत अेक किसानोका सगठन है या अैसा कहिये कि वह अधिकाधिक वैसी बनती जा रही है। आपको और कदाचित् अिस समितिके भारतीय सदस्योको भी यह जानकर आश्चर्य होगा कि काग्रेसने आज अखिल

भारतीय चरखा-सघ नामक अपने सगठन द्वारा करीब दो हजार गावोकी लगभग ५० हजार स्त्रियोको रोजगारमें लगा रखा है और जिनमे सभवत ५० प्रतिशत मुसलमान स्त्रिया है। अुनमे हजारो अछूत कहलानेवाली जातियोकी भी है। अिस प्रकार हम अिस रचनात्मक कार्यके द्वारा रचनात्मक रीतिसे अिन गावोमे प्रवेश कर चुके है और ७,००,००० गावोमे से प्रत्येक गावमे प्रवेश करनेकी कोशिश की जा रही है। यह काम यद्यपि मनुष्यकी शक्तिके बाहरका है, फिर भी यदि मनुष्यके प्रयत्नसे हो सकता हो, तो आप शीघ्र ही काग्रेसको अिन सब गावोमे फैली हुअी और अुन्हे चरखेका सदेश सुनाती हुअी देखेगे।

काग्रेसकी माग

काग्रेसके प्रातिनिधिक स्वरूपकी अिस विशेषताको समझ लेनेके बाद जब मै आपको काग्रेसका आदेश पढकर सुनाअूगा तब आपको आश्चर्य न होगा। मै आशा करता हू कि यह आपको अरुचिकर नही लगेगा। आप मान सक्ते है कि काग्रेस अेक अैसा दावा कर रही है जो बिलकुल असमर्थनीय है। जैसा भी वह है, मुझे यहा काग्रेसकी ओरसे अुसे यथासभव अत्यन्त विनम्रतापूर्वक लेकिन यथासभव अधिकसे अधिक दृढतासे पेश करना है। मै यहा अुस दावेको अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा तथा शक्तिके साथ प्रतिपादित करनेके लिअे आया हू। अगर आप मुझे जो कुछ मै मानता आ रहा हू अुससे अुलटी बातका विश्वास करा सके और बता सके कि यह दावा अिन लाखो मूक लोगोके हितोके प्रतिकूल है, तो मै अपनी रायमे सशोधन कर लूगा। मेरे मनमे कोअी पूर्वग्रह नही है और आपकी बात सुनने और स्वीकार करनेके लिअे मै तैयार हू। लेकिन फिर भी मुझे अुस सशोधनको स्वीकार करनेके पूर्व अपने प्रधानोकी सहमति लेना पडेगी, जिससे कि मै काग्रेसके प्रतिनिधिके रूपमे अुपयुक्त ढगसे काम कर सकू। अब मै आपके सामने अुस आदेशको पढकर सुनाता हू, जिससे आप अुन मर्यादाओंको स्पष्ट रूपमे समझ सके जिन्हे मुझ पर लादा गया है।

यह आदेश भारतीय राष्ट्रीय काग्रेसके कराची अधिवेशनमें स्वीकृत प्रस्तावमे निहित है। प्रस्ताव अिस प्रकार है

> "भारत-सरकार और काग्रेसकी कार्यसमितिके बीच जो अस्थायी सधि हुअी है, अुस पर विचार करके काग्रेस अुसका समर्थन करती है, और यह स्पष्ट कर देना चाहती है कि काग्रेसका पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करनेका अुद्देश्य ज्यो-का-त्यो बना हुआ है। यदि ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधियोके किसी सम्मेलनमे काग्रेसके प्रतिनिधियोके जानेके मार्गमें

दूसरे प्रकारकी रुकावटे न रह जाये (और काग्रेसके प्रतिनिधि अुस सम्मेलनमे शरीक हो), तो काग्रेसके प्रतिनिधि अपने अुसी अुद्देश्यकी पूर्तिके लिअे प्रयत्न करेगे — खासकर अिसलिअे कि हमारे देशको सेना, विदेशी मामलो, राष्ट्रीय आय-व्यय तथा आर्थिक नीतिके सवधमें अधिकार प्राप्त हो जाये और भारतकी ब्रिटिश सरकारने जो लेन-देन किये है, अुनकी जाच होकर अिस वातका निपटारा हो जाये कि भारत और अिग्लैण्ड अिन दोनोमे से कोअी भी जव चाहे तव अेक-दूसरेसे अलग हो जाये। काग्रेसके प्रतिनिधियोको अिस वातकी स्वतन्त्रता रहेगी कि अिसमे अैसी घट-बढ करे, जो भारतके हितके लिअे प्रत्यक्ष रूपसे आवश्यक सिद्ध हो।"

अिस प्रस्तावके प्रकाशमे, मैंने गोलमेज परिषद द्वारा नियुक्त अनेक सव-कमेटिया जिन अस्थायी निर्णयो पर पहुची है अुनका यथाशक्ति सावधानी-पूर्वक अध्ययन करनेकी कोशिश की है। मैंने प्रधानमत्रीके अुस वक्तव्यका भी सावधानीसे अध्ययन किया है, जिसमे सम्राटकी सरकारकी सुविचारित नीति दी गयी है। सभव है कि मेरा खयाल गलत हो, लेकिन जहा तक मैं समझ पाया हू यह दस्तावेज काग्रेसने जो लक्ष्य रखे है और दावे किये हैं अुन्हे पूरा नही करता। यह सही हे कि मुझे अैसे परिवर्तनोको स्वीकार करनेकी स्वतत्रता हे जो प्रत्यक्ष रूपसे भारतके हितमे हो, लेकिन वे अिस प्रस्तावमे अुल्लिखित वुनियादी सिद्धान्तोसे सगत होने चाहिये। यहा मुझे अुस पवित्र समझौतेकी शर्तोकी याद हो आती है, जो दिल्लीमे भारत-सरकार तथा काग्रेसके वीच हुआ था। अुस समझौतेमे काग्रेसने सघके सिद्धान्तको, केन्द्रमें जिम्मेदार सरकारके सिद्धान्तको और अिस सिद्धान्तको भी स्वीकार कर लिया है कि भारतके हितोकी दृष्टिसे जहा तक आवश्यक हो सरक्षण जरूर होने चाहिये।

समान भागीदारी

कल अेक मुहावरेका अुपयोग किया गया था। मैं अुन प्रतिनिधिको भूल रहा हू, लेकिन मुझे अुनका वह मुहावरा वहुत अर्थपूर्ण मालूम हुआ। अुन्होने कहा था, "हम केवल राजनीतिक सविधान नही चाहते है।" मै नही जानता अुन्होने अिस अुक्तिको वही अर्थ दिया था या नही जो कि मुझे अेकदम सूझा, परन्तु मैने शीघ्र ही अपने-आपसे कहा, अिस मुहावरेने मुझे अेक सुन्दर शब्द-प्रयोग दिया है। यह सही है कि काग्रेस और व्यक्तिश मै तो कभी भी केवल राजनीतिक सविधानमे सन्तुष्ट नही हो सकेगे — अैसे राजनीतिक सविधानसे, जिसे पढनेसे अैसा लगे कि वह भारतको वह सव देता हे जिसकी कि राज-

नीतिक दृष्टिसे वह अिच्छा कर सकता है, लेकिन यथार्थमे कुछ भी नही देता। अगर हम पूर्ण स्वराज्यका आग्रह करते है तो अिसका कारण हमारी अहकार-भावना नही है, अुसका कारण यह नही है कि हम दुनियाको यह दिखाना चाहते है कि हमने ब्रिटिश जनतासे सारा सवध तोड लिया है।

अिस प्रकारकी कोअी बात नही है। अिसके विपरीत आप अिस आदेशमे पायेगे कि काग्रेस ब्रिटेनके साथ अेक भागीदारीका विचार रखती है, काग्रेस ब्रिटिश जनतासे सवध रखनेका विचार करती हे, लेकिन वह सवध अैसा होना चाहिये जो दो पूरी तरह समानोके बीच रह सकता हो। अेक समय था जब मै ब्रिटिश प्रजाजन होने और कहलानेमे गौरव महसूस करता था। कअी बरसोसे मैने खुदको ब्रिटिश प्रजाजन कहना बन्द कर दिया हे मै प्रजाजन कहलानेके बजाय यह ज्यादा पसन्द करूगा कि मुझे बागी कहा जाय। अब तो मेरी आकाक्षा यह हे कि मै साम्राज्यका नही बल्कि सभव हो तो राष्ट्र-मडलका ——भागीदारी पर आधारित राष्ट्र-मडलका —— नागरिक बनू। अगर अीश्वरने चाहा तो वह अेक अटूट भागीदारी होगी, अेक राष्ट्र द्वारा दूसरे पर अूपरसे थोपी हुअी भागीदारी नही होगी। अतअेव आप यहा देखेगे कि काग्रेस चाहती है कि किसी भी पक्षको अिस सवधका अन्त करने और भागीदारीको तोडने या अलग होनेका अधिकार होना चाहिये। अिसलिअे यह भागीदारी अैसी होनी चाहिये कि अुससे दोनोका लाभ हो। क्या मै कहू —— मेरा यह कथन प्रस्तुत प्रश्नकी दृष्टिसे अप्रासगिक हो सकता है, पर मेरे लिअे वह अप्रासगिक नही है —— कि जैसा मैने अन्यत्र कहा है, मै अच्छी तरहसे समझता हू कि आज जिम्मेदार ब्रिटिश राजनीतिज्ञ घरेलू मामलोके सकटको दूर करनेके प्रयत्नमे पूरी तरह डूबे हुअे है। हम अुनसे अिससे कमकी आशा भी नही कर सकते और जब मै लन्दनकी ओर आ रहा था तभी मुझे यह खयाल आया था कि क्या हम लोग जो अभी अिस सब-कमेटीमे अुपस्थित है ब्रिटिश मत्रियोके लिअे बाधक नही होगे, क्या हमारी स्थिति यहा अुनके बीचमे अनुचित हस्तक्षेप करनेवालोकी जैसी न होगी? तो भी मैने अपने-आपसे कहा, यह सभव है कि हमारी स्थिति अनुचित हस्तक्षेप करनेवालोकी जैसी न हो, यह भी सभव है कि ब्रिटिश मत्री खुद गोलमेज परिषदकी कार्रवाअीको अपने घरेलू मामलोके लिअे प्राथमिक महत्त्वकी समझे। हा, भारतको तलवारके जोरसे दबाकर रखा जा सकता हे। लेकिन ग्रेट ब्रिटेनकी समृद्धिके लिअे, ग्रेट ब्रिटेनकी आर्थिक आजादीके लिअे ज्यादा लाभदायक क्या होगा गुलाम परन्तु बागी भारत या अैसा भारत जो ब्रिटेनका सम्मानित भागीदार होगा और जो ब्रिटेनके साथ अुसके दुख बटायेगा और अुनकी विपत्तिके समयमे भी हिस्सा लेगा?

मेरा सपना

हा, और आवश्यकता होने पर, परन्तु अपनी अिच्छासे, जो ब्रिटेनके साथ कधेसे कधा लगाकर लडेगा भी — किसी भी जाति या व्यक्तिके शोपणके लिअे नही, वल्कि सारी दुनियाकी भलाअीके लिअे। यदि मै अपने देशके लिअे आजादीकी माग करता हू, तो आप विश्वास कीजिये कि मै यह आजादी अिसलिअे नही चाहता कि मेरा वडा देश, जिसकी आवादी सम्पूर्ण मानव-जातिका पाचवा हिस्सा है, दुनियाकी किसी भी दूसरी जातिका या किसी भी व्यक्तिका शोपण करे। आप विश्वास कीजिये कि मै अपनी शक्तिभर अपने देशको अैसा अनर्थ नही करने दूगा। यदि मै अपने देशके लिअे आजादी चाहता हू, तो मुझे यह मानना ही चाहिये कि प्रत्येक दूसरी सवल या निर्वल जातिको अुस आजादीका वैसा ही अधिकार है। यदि मै अैसा नही मानता हू और अैसी अिच्छा नही करता हू, तो अुसका यह अर्थ है कि मै अुस आजादीका पात्र नही हू। और अिसीलिअे मैने आपके सुन्दर द्वीपके तट पर पहुचने पर अपने-आपसे कहा कि सयोगवश ब्रिटिश मत्रियोको यह महसूस कराना मेरे लिअे सभव होगा कि भारत अेक मूल्यवान भागीदारके रूपमे — जिसे आप ताकतके जोरसे नही वल्कि प्रेमरूपी रेशमकी डोरीसे अपने साथ वाध कर रखेगे — आपका ज्यादा सच्चा सहायक सिद्ध होगा। अैसा भारत अिग्लैण्डके महज अेक सालके वजटको ही नही, कअी सालोके वजटको सतुलित करनेमे सहायक सिद्ध होगा। ये दो राष्ट्र मिलकर क्या नही कर सकते? आपका राष्ट्र सख्यामे छोटा है, पर वह वहादुर है। अुसका वहादुरीका अितिहास शायद वेमिसाल है। वह गुलामीकी प्रथाके खिलाफ लडा है और अुसने असख्य वार कमजोरोकी रक्षा करनेका दावा किया है। दूसरी ओर हमारा राष्ट्र अत्यन्त प्राचीन और विशाल है। अुसकी जनसख्या करोडो तक पहुचती है। अुसका अतीत अतिशय अुज्ज्वल है। अिस समय वह दो महान सस्कृतियोका — मुस्लिम और हिन्दू सस्कृतिका प्रतिनिधित्व करता है। अुसमे रहनेवाले अीसाअियोकी सख्या भी कुछ कम नही है। अिसके सिवा अनेक गुणोसे सम्पन्न दुनियाकी मारीकी सारी पारसी जाति भी वहा वसी हुअी है। अुसकी सख्या वहुत कम है, लेकिन दानशीलता और व्यापारिक साहसके गुणोमे यह जाति वेजोड है, अग्रगण्य तो निश्चय ही है। भारतमे ये सारी सस्कृतिया अेकत्र हुअी है और यदि यहा प्रतिनिधियोके रूपमे आये हुअे हिन्दुओ और मुसलमानोको अीश्वर अैसी सही प्रेरणा दे कि वे आपसमे मिल जाये और दोनोके लिअे सम्मान्य किसी समझौते पर पहुच जाये, तो फिर ये दोनो राष्ट्र मिलकर क्या नही कर सकते? मै अपने-आपसे और आप लोगोसे पूछता हू कि भारत स्वतत्र हो, ग्रेट ब्रिटेन जितना ही स्वतत्र हो, तो अिन दोनो राष्ट्रोके वीचमे होनेवाली सम्मानपूर्ण

भागीदारी क्या अिस महान राष्ट्रकी घरकी स्थितिकी दृष्टिसे भी परस्पर लाभदायी नहीं होगी? और अिसलिअे यह स्वप्निल आशा लेकर ही मैं यहा आया हू और अभी भी मैं अिस सपनेको पाल रहा हू।

अितना कहकर शायद मैंने मुझे जो-कुछ कहना चाहिये था वह सब कह दिया है। बाकी सब आप खुद पूरा कर लेंगे। मैं मानता हू कि आप मुझसे अैसी आशा नही रखेंगे कि मैं अिस सिलसिलेमें आपको हर चीजका पूरा ब्यौरा दू और यह बताअू कि सेना पर नियन्त्रणमें और विदेशी मामलो पर तथा वित्तीय, राजस्व-सम्बन्धी और आर्थिक नीति पर या वित्तीय लेन-देन पर नियन्त्रणमें मेरा क्या अर्थ है। वित्तीय लेन-देनके मामलोका अुल्लेख करते हुअे कल अेक मित्रने अुन्हें पवित्र और परिवर्तनके परे कहा था। मैं अैसा नहीं मानता। यदि नये आनेवाले और पुराने जानेवाले भागीदारोंके बीचमें हिसाब हो, तो अुनके किये हुअे लेन-देनकी जाच की जाती है और अुसमें आवश्यकतानुसार घट-बढ भी की जाती है। अिसलिअे अगर काग्रेस यह कहती है कि राष्ट्र जो बोझ स्वीकार कर रहा है अुसमें से कितना अुसे अुठाना चाहिये और कितना अुसे नही अुठाना चाहिये, अितना जानने-समझनेका अुसे अधिकार है तो वह कोअी अपराध नही करती। अिस हिसाब और जाचकी माग केवल भारतके ही हितमें नहीं, दोनों देशोंके हितमें की जा रही है। मुझे निश्चय है कि ब्रिटिश जनता भारत पर अैसा कोअी भी बोझ नही लादना चाहती, जो कि अुसे न्यायकी दृष्टिसे अुठाना नहीं चाहिये। और मैं यहा काग्रेसकी ओरसे यह घोषणा करता हू कि काग्रेस अैसे अेक भी ऋणका त्याग करनेका विचार भी नही करेगी, जो अुसे न्यायकी दृष्टिसे चुकाना ही चाहिये। यदि हमें अैसे सम्मान्य राष्ट्रके रूपमें रहना है जिसकी सारी दुनियामें साख हो, तो हम अपने न्याय्य कर्जकी पाअी-पाअी, जरूरत हो तो अपने रक्तसे भी, भरेंगे और चुकायेंगे।

मुझे लगता है कि अिस आदेशकी धाराओंको अिनसे ज्यादा समझानेकी और काग्रेसके लोग अुनका जो अर्थ करते हैं अुस अर्थका आपके समक्ष और अधिक पृथक्करण करनेकी कोअी जरूरत नही है। अगर अीश्वरकी अैसी अिच्छा होगी कि मैं अिन चर्चाओंमें भाग लेता रहू, तो आगे अिन चर्चाओंके दरमियान मैं अिन धाराओंके आशयको सविस्तार समझाअूगा। आगे अिन चर्चाओंके दरमियान मुझे सरक्षणों (Safeguards) के बारेमें जो कुछ कहना है वह भी कहूगा। किन्तु, चान्सलर महोदय, मेरा खयाल है कि आपकी मेहरबानीसे अिस सभाका समय लेकर किंचित् विस्तारके साथ मैंने जो कुछ कहा है वह फिलहाल काफी है। अिस सभाका अितना

ज्यादा समय लेनेका मेरा कोओी विचार नही था, लेकिन मुझे लगा कि यदि अिस अवसर पर भी मैंने अपनी प्रिय आकाक्षा अपने हृदयकी सारी भावना अुडेलकर आपके सामने नही रखी, तो मै अुस मामलेके प्रति न्याय नही करूगा जिसे आपको, अिस अुप-समितिको और ब्रिटिश राष्ट्रको — जिसके कि हम भारतीय प्रतिनिधि अिस समय मेहमान है — समझानेके लिअे मै यहा आया हू। मेरी बडी अिच्छा है कि जब मै यहासे जाअू तो यह विश्वास लेकर जाअू कि ग्रेट ब्रिटेन और भारतके बीच सम्मानास्पद और समानतामूलक भागीदारीका सम्बन्ध बननेवाला है।

अन्तमे मै यह कहूगा कि जितने दिन मै आप लोगोके बीचमे हू, सदैव मै यह प्रार्थना करता रहूगा कि भगवान अुपर्युक्त शुभ परिणाम लाये। अिससे अधिक तो मै क्या कहू? चान्सलर महोदय, मै लगभग ४५ मिनट ले चुका हू, फिर भी आपने मुझे बीचमे टोका नही। अिस तरह आपने मेरे प्रति जो मेहरबानी दिखाअी है, अुसके लिअे मै आपको धन्यवाद देता हू। मै अिस अुदारताका अधिकारी नही था। अिसलिअे आपको फिर अेक बार धन्यवाद देता हू।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी (चौथा सस्करण), जी० अे० नटेसन अेण्ड क०, पृ० ७८७।

५

मेरे सपनोंकी आजादी

दोस्तोने बार-बार मुझ पर जोर डाला है कि मै यह बताअू कि आजादी क्या है? बातके दोहराये जानेका डर होते हुअे भी मुझे कहना चाहिये कि मेरे सपनोकी आजादीका अर्थ तो 'रामराज्य' यानी दुनियामें अीश्वरका राज्य है। स्वर्गमे यह राज्य कैसा होगा सो मै नही जानता। बहुत दूरकी चीज जाननेकी मुझे अिच्छा भी नही है। अगर वर्तमान मनको काफी अच्छा लगता हो, तो भविष्य अुससे बहुत अलग नही हो सकता।

अिसलिअे राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक तीनो तरहकी आजादी ही सच्ची अजादी है।

'राजनीतिक' आजादीका मतलब ही यह है कि देश पर ब्रिटिश फौजोकी किसी भी प्रकारकी कोओी हुकूमत न रहे।

'आर्थिक' आजादीका मतलब ब्रिटिश पूजीपतियो और ब्रिटिश पूजीके साथ ही अुनके प्रतिरूप हिन्दुस्तानी पूजीपतियो और अुनकी पूजीसे पूरी

तरह छुटकारा पाना है। दूसरे शब्दोंमें, छोटेसे छोटे आदमीको भी यह महसूस होना चाहिये कि वह बड़ेसे बड़े आदमीके बराबर है। यह तभी हो सकता है जब पूंजीपति अपनी कुशलता और अपनी पूंजीमें छोटेसे छोटे और गरीबसे गरीबको अपना हिस्सेदार बना ले।

'नैतिक' आजादीका मतलब देशकी रक्षाके लिअे रखी हुअी हथियार-बन्द फौजोंसे छुटकारा पाना है। रामराज्यकी मेरी कल्पनामें ब्रिटिश फौजी हुकूमतकी जगह राष्ट्रीय फौजी हुकूमतको बैठा देनेकी कोअी गुंजाअिश नहीं है। जिस देशमें फौजी हुकूमत होती है, फिर वह फौज देशकी अपनी ही क्यों न हो, वह देश नैतिक दृष्टिसे कभी आजाद नहीं हो सकता और अिसलिअे अुसके सबसे कमजोर कहे जानेवाले नागरिक कभी पूरी तरहसे नैतिक अुन्नति नहीं कर सकते।

यद्यपि यह दावा किया जाता है कि श्री चर्चिलने ब्रिटेनके लिअे लड़ाअी जीती है, तो भी अेक सच्चे अहिंसावादी सुधारकके दृष्टिकोणसे अुन्होंने अेबर्डीनके अपने भाषणमें बुद्धिमत्ताकी बातें कही हैं। किसी हथियारोंसे लैस सिपाहीकी तरह ही श्री चर्चिल भी जानते हैं कि हमारे जमानेकी पिछली दोनों लड़ाअियोंमें कितनी तबाही और बरबादी हुअी है। अखबारोंमें अुनके भाषणका जो सार छपा है अुसे मैं अिसी अंकमें दूसरी जगह दे रहा हूं। अुनके भाषणसे निराशावादकी जो गूंज अुठती है, अुसके खिलाफ मुझे जनताको सावधान कर देना चाहिये। अगर मनुष्य-समाज लड़ाअीसे मुंह मोड़ ले तो अुसका कुछ भी नुकसान नहीं होगा। लोगोंने आखिरी बूंद तक अपना जो खून बहाया है वह बेकार गया नहीं कहा जायगा, अगर अुससे हम यह सीख लेते हैं कि अच्छा या बुरा कैसा भी कारण क्यों न हो, हमें दूसरोंका खून लेनेके बजाय खुद अपना ही खून खुशीसे देना चाहिये।

अगर ब्रिटिश मंत्रियोंका मिशन हिन्दुस्तानको स्वराज्य दे देता है, तो हिन्दुस्तानको यह तय करना पड़ेगा कि अेक फौजी राष्ट्र बननेकी कोशिशमें वह, कमसे कम कुछ सालोंके लिअे, दुनियामें पांचवें दरजेकी ताकत बना रहना चाहेगा और अिस तरह अूपर जिस निराशावादका जिक्र हुआ है अुसके जवाबमें वह दुनियाको आशाका कोअी संदेश नहीं देगा, या अपनी अहिंसाको और भी संवारकर वह अपनेको दुनियाका अैसा सबसे पहला राष्ट्र बननेके लायक साबित करेगा, जो बड़ी मुश्किलोंसे प्राप्त की हुअी अपनी आजादीका अुपयोग दुनियाके सिरसे अुस बोझको अुतारनेमें करेगा, जो लड़ाअीमें प्राप्त की गअी विजयके बावजूद अुसे पीस रहा है।

हरिजनसेवक, ५-५-'४६, पृ० ११६

श्री चर्चिलके भाषणका अखबारी साराश

दुनियाकी हालत आज वहुत नाजुक है। वह नफरतसे भरी पडी है। मानव-परिवारकी वडी-वडी शाखाअे — जीती हुअी या हारी हुअी, निर्दोप या गुनहगार — आज घवराहट, दुःख और तवाहीमे डूवी पडी है। हमारे जीवनमे दो भयानक लडाअियोने मानव-हृदयको अुसकी भव्यता और सम्यतासे अलग कर दिया है।

जिसको १९ वी सदी 'औसाअी सम्यता' कहती है, अुसे अपार हानि पहुची है। क्योकि सव वडी-वडी कौमे अैसे तनावोमे से गुजर रही है कि अुनकी भावनाये कुन्द हो गअी है और सामाजिक व्यवहारके सुन्दर ढग तवाह हो गये है।

सिर्फ विज्ञान घातक युद्धकी जवरदस्त हवाओकी मार खाता हुआ आगे वढा है। अिसने आदमियोके हाथमे सहारके अैसे साधन दिये है, जो मनुष्य द्वारा सामान्य ज्ञान या सद्गुणमे की हुअी अुन्नतिसे कही ज्यादा शक्तिशाली है।

अेक अैसी दुनियामे जहा कि पहले जरूरतसे ज्यादा खुराककी अुपज समय-समय पर अेक समस्या वन जाती थी, आज कअी देशोके लोगो पर अकालने अपना सूखा और डरावना पजा फैला दिया है और खुराककी कमी तो सभी देशोमे पैदा कर दी है।

मनुष्य-जातिकी आत्मिक शक्तियोको अुन सव तकलीफोने खतम कर दिया है, जिनमे से वह गुजर चुकी है और आज भी गुजर रही है। सिर्फ खूरेजीने ही हमे कमजोर और निर्वल नही वनाया है।

मानव-प्रेरणाके मूल स्रोत फिलहाल तो सूख चुके है। मानव-जातिको अैसा समय मिलना ही चाहिये, जिसमे वह अपनी पुरानी शक्तिया फिरसे प्राप्त कर सके। अपनी आजकी हालतमे मनुष्य-जाति नये आघात और नअी लडाअिया विलकुल वरदाश्त नही कर सकती। नही तो वह विल्कुल शुरूकी और भद्दी दशामे पहुच जायगी।

फिर भी हम नही जानते कि जो घृणा और अनिश्चितताकी भावनाये आज सव देशोमे फैली हुअी है, वे अुन कसौटियोसे अधिक कडी कसौटिया हमारे सामने पेश नही करेगी, जिनमे से अत्यन्त कष्टमे निकल कर हम वाल-वाल वचे है।

वहुतसे मुल्कोमे, जहा कि सवका सगठित और मिला-जुला प्रयत्न भी पूरा नही पडता, पार्टियोके झगडे और आपसी फूटको भडकाया जाता है और कठपुतलियो-जैसे मतान्ध लोगोको खडा किया जाता है, जो अपनी विरोधी विचारधाराओको चिल्ला चिल्लाकर अेक-दूसरे पर थोपनेका प्रयत्न करते है।

फिर भी हर मुल्कके आम लोग अपनी दयालुताको, बहादुरीको और अपने साथियोकी सेवाकी भावनाको प्रकट करते है। लेकिन पार्टिया, सस्थाअें और सिद्धान्त अुनको अेक-दूसरेके खिलाफ बिना कारण और बेदर्दीसे अिस तरह भिडा रहे है, जैसे बिलकुल निरकुश राजाओ और बादशाहोके जमानेमे वे भिडाये जाते थे।

हरिजनसेवक, ५-५-'४६, पृ० ११६

६

हिन्दुस्तानकी आजादीकी मेरी कल्पना

प्र० — आपने १५ जुलाअीके 'हरिजन'मे 'सच्चा खतरा' नामके लेखमे कहा है कि आम तौर पर काग्रेसवाले जानते ही नही है कि अुन्हे किस किस्मकी आजादी चाहिये। क्या आप अपनी कल्पनाके आजाद हिन्दुस्तानका व्यापक चित्र देगे?

अु० — हिन्दुस्तानकी आजादीके बारेमे अपने विचार मै समय-समय पर बता चुका हू। मगर चूकि यह सवाल कुछ सिलसिलेवार पूछे गये सवालोमे से अेक है, अिसलिअे कही गअी बातोको दोहराकर भी अिसका जवाब देना बेहतर होगा।

हिन्दुस्तानकी आजादीसे मतलब है, सारे हिन्दुस्तानकी आजादी। अुसमे हिन्दुस्तानकी रियासते भी आ जाती है और दूसरी विदेशी हुकूमते भी। अुदाहरणके लिअे, फ्रासीसी और पुर्तगाली हुकूमते। मै समझता हू कि ये परदेशी हुकूमते तो ब्रिटेनकी सरकारके सहारे ही यहा निभ रही है। आजादीका अर्थ हिन्दुस्तानके आम लोगोकी आजादी होना चाहिये, अुन पर आज हुकूमत करनेवालोकी आजादी नही। हाकिम आज जिन्हे अपने पाव-तले रौद रहे है, आजाद हिन्दुस्तानमे अुन्ही लोगोकी मेहरबानी पर हाकिमोको रहना होगा। अुन्हे लोगोके सेवक बनना होगा और अुनकी मरजीके मुताबिक काम करना होगा।

आजादी नीचेसे शुरू होनी चाहिये। हरअेक गावमे जमहूरी सल्तनत या पचायत राज होगा। अुसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी। अिसका मतलब यह है कि हरअेक गावको अपने पाव पर खडा होना होगा — अपनी जरूरते खुद पूरी कर लेनी होगी, ताकि वह अपना सारा कारोबार खुद चला सके। यहा तक कि वह सारी दुनियाके खिलाफ अपनी हिफाजत खुद कर सके। अुसे तालीम देकर अिस हद तक तैयार करना होगा कि वह

श्री र्चाचलके भाषणका अखबारी साराश

दुनियाकी हालत आज वहुत नाजुक है। वह नफरतसे भरी पडी है। मानव-परिवारकी वडी-वडी शाखाअे — जीती हुअी या हारी हुअी, निर्दोप या गुनहगार — आज घवराहट, दु ख और तवाहीमे डूवी पडी है। हमारे जीवनमे दो भयानक लडाअियोने मानव-हृदयको अुसकी भव्यता और सभ्यतासे अलग कर दिया है।

जिसको १९वी सदी 'अीसाअी सभ्यता' कहती है, अुसे अपार हानि पहुची है। क्योकि सव वडी-वडी कौमे अैसे तनावोमे से गुजर रही है कि अुनकी भावनाये कुन्द हो गअी है और सामाजिक व्यवहारके सुन्दर ढग तवाह हो गये है।

सिर्फ विज्ञान घातक युद्धकी जवरदस्त हवाओकी मार खाता हुआ आगे वढा है। अिसने आदमियोके हाथमे सहारके अैसे साधन दिये है, जो मनुष्य द्वारा सामान्य ज्ञान या सद्गुणमे की हुअी अुन्नतिसे कही ज्यादा शक्तिशाली हैं।

अेक अैसी दुनियामे जहा कि पहले जरूरतसे ज्यादा खुराककी अुपज समय-समय पर अेक समस्या वन जाती थी, आज कअी देशोके लोगो पर अकालने अपना सूखा और डरावना पजा फैला दिया है और खुराककी कमी तो सभी देशोमे पैदा कर दी है।

मनुष्य-जातिकी आत्मिक शक्तियोको अुन सव तकलीफोने खतम कर दिया है, जिनमे से वह गुजर चुकी हे और आज भी गुजर रही हे। सिर्फ खूरेजीने ही हमे कमजोर और निर्वल नही वनाया है।

मानव-प्रेरणाके मूल स्रोत फिलहाल तो सूख चुके है। मानव-जातिको अैसा समय मिलना ही चाहिये, जिसमे वह अपनी पुरानी शक्तिया फिरसे प्राप्त कर सके। अपनी आजकी हालतमे मनुष्य-जाति नये आघात और नअी लडाअिया विलकुल वरदाश्त नही कर सकती। नही तो वह विलकुल शुरुकी और भद्दी दशामे पहुच जायगी।

फिर भी हम नही जानते कि जो घृणा और अनिश्चितताकी भावनाये आज सव देशोमे फैली हुअी हैं, वे अुन कसौटियोसे अधिक कडी कसौटिया हमारे सामने पेश नही करेगी, जिनमे से अत्यन्त कष्टमे निकल कर हम वाल-वाल वचे है।

वहुतसे मुल्कोमे, जहा कि सवका सगठित और मिला-जुला प्रयत्न भी पूरा नही पडता, पार्टियोके झगडे और आपसी फूटको भडकाया जाता है और कठपुतलियो-जैसे मतान्ध लोगोको खडा किया जाता है, जो अपनी विरोधी विचारधाराओको चिल्ला चिल्लाकर अेक-दूसरे पर थोपनेका प्रयत्न करते हैं।

तरह् बनाना या पाना मुमकिन नही है, तो भी अिस सही तसवीरको पाना या अिस तक पहुचना हिन्दुस्तानकी जिन्दगीका मकसद होना चाहिये। जिस चीजको हम चाहते है अुसकी सही-सही तसवीर हमारे सामने होनी चाहिये। तभी हम अुससे मिलती-जुलती कोअी चीज पानेकी अुम्मीद रख सकते है। अगर हिन्दुस्तानके हरअेक गावमे कभी पचायती राज कायम हुआ, तो मैं अपनी अिस तसवीरकी सचाअी साबित कर सकूगा, जिसमें सबसे पहला और सबसे आखिरी दोनो बराबर होगे या यो कहिये कि न कोअी पहला होगा, न आखिरी।

अिस तसवीरमे हरअेक धर्मकी अपनी पूरी और बराबरीकी जगह होगी। हम सब अेक ही आलीशान पेडके पत्ते है। अिस पेडकी जड हिलायी नही जा सकती, क्योकि वह पाताल तक पहुची हुअी है। जबरदस्तसे जबरदस्त आधी भी अुसे हिला नही सकती।

अिस तसवीरमे अुन मशीनोके लिअे कोअी जगह न होगी, जो अिन्सानकी मेहनतकी जगह लेकर चन्द लोगोके हाथोमे सारी ताकत अिकट्ठी कर देती है। सुधरे हुअे लोगोकी दुनियामे मेहनतकी अपनी अनोखी जगह है। अुसमे अैसी मशीनोकी गुजाअिश होगी, जो हर आदमीको अुसके काममें मदद पहुचाये। लेकिन मुझे कबूल करना चाहिये कि मैंने कभी बैठकर यह सोचा नही कि अिस तरहकी मशीन कैसी हो सकती है। सिलाअीकी सिंगर मशीनका खयाल मुझे आया था। लेकिन अुसका जिक्र भी मैंने यो ही कर दिया था। अपनी अिस तसवीरको पूर्ण बनानेके लिअे मुझे अुसकी जरूरत नही।

हरिजनसेवक, २८-७-'४६, पृ० २३६

७

पंचायत राज

अगर हम पचायन राज चाहते है, तो छोटेसे छोटा हिन्दुस्तानी बडेसे बडे हिन्दुस्तानीके बराबर ही हिन्दुस्तानका राजा है। अिसके लिअे अुसे शुद्ध होना चाहिये। न हो तो अुसे अैसा बनना चाहिये। जैसा वह शुद्ध हो वैसा ही समझदार भी हो। अिससे वह जातिभेद, वर्णभेदको नही मानेगा। सबको अपने समान समझेगा। दूसरोको अपने प्रेमपाशमे बाधेगा। अुसके लिअे कोअी अछूत नही होगा। अुसी तरह मजदूर और महाजन दोनो अुसके लिअे बराबर होगे। अिससे वह करोडो मजदूरोकी तरह पसीनेकी रोटी कमायेगा और कलम तथा कुदालीको अेकसा समझेगा। अिस शुभ अवसरको नजदीक लानेके लिअे वह खुद भगी बन जायेगा। वह समझदार होगा, अिसलिअे अफीम या शराबको छुअेगा ही क्यो? स्वभावसे ही वह स्वदेशी-व्रतका पालन करेगा। अपनी पत्नीको छोडकर वह सभी स्त्रियोको अुम्रके मुताबिक अपनी मा, बहन या लडकी मानेगा। किसी पर बुरी नजर नही डालेगा। मनमे भी दूसरी भावना नही रखेगा। जो हक अुसका है वही अपनी स्त्रीका समझेगा। समय आने पर खुद मरेगा, दूसरेको कभी नही मारेगा। और बहादुर अैसा होगा कि सिक्खोके गुरुओकी तरह अकेला सवा लाखके सामने अडा रहेगा और अेक कदम भी पीछे नही हटेगा। अैसा हिन्दुस्तानी यह नही पूछेगा कि आजकी परिस्थितियोमें अुसका क्या कर्तव्य है।

हरिजनसेवक, १८-१-'४८, पृ० ४५७

८

ग्राम-स्वराज्य

प्र० — हिन्दुस्तानमे किसी भी क्षण जो परिस्थिति पैदा हो सकती है, अुसको ध्यानमे रखकर क्या आप ग्राम-स्वराज्य-समितिकी कोअी जैसी रूपरेखा पेश करेंगे, जो देशके गावोमे किसी अूपरी सत्ता या सस्थाके अभावमे, और अुस पर किसी तरहका कोअी आधार न रखते हुअे भी, अपना काम कर सके? खास तौर पर आप अैसा क्या प्रबन्ध करेंगे कि जिससे समितिको गावका पूरा-पूरा प्रतिनिधित्व प्राप्त रहे और वह निष्पक्ष भावसे क्षमता व कुशलतापूर्वक, किसीकी राजी-नाराजीकी परवाह किये विना, अपना काम कर सके? अुसके अधिकार-क्षेत्रकी क्या मर्यादा होगी और अुसके आदेशोका पालन करानेके लिअे कौनसा तत्र काम करेगा? और, वह कौनसा तरीका होगा, जिससे समूची समिति या अुसके व्यक्तिगत सदस्य अपनी घूसखोरी, अक्षमता अथवा दूसरी अयोग्यताके कारण हटाये जा सकेंगे?

अु० — ग्राम-स्वराज्यकी मेरी कल्पना यह हे कि वह अेक अैसा पूर्ण प्रजातत्र होगा, जो अपनी अहम जरूरतोके लिअे अपने पडोसियो पर भी निर्भर नही करेगा, और फिर भी वहुतेरी दूसरी जरूरतोके लिअे — जिनमें दूसरोका सहयोग अनिवार्य होगा — वह परस्पर सहयोगसे काम लेगा। अिस तरह हरअेक गावका पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरतका तमाम अनाज और कपडेके लिअे पूरी कपास खुद पैदा कर ले। अुसके पास अितनी फाजिल जमीन होनी चाहिये, जिसमे ढोर चर सके और गावके वडो व बच्चोके लिअे मन-बहलावके साधन और खेलकूदके मैदान वगैराका बन्दोवस्त हो सके। अिसके बाद भी जमीन बचे, तो अुसमे वह अैसी अुपयोगी फसलें वोयेगा, जिन्हें वेचकर वह आर्थिक लाभ अुठा सके, यो वह गाजा, तम्वाकू, अफीम वगैराकी खेतीसे बचेगा। हरअेक गावमें गावकी अपनी अेक नाटकशाला, पाठशाला और सभा-भवन रहेगा। पानीके लिअे अुसका अपना अिन्तजाम होगा — वाटरवर्क्स होंगे — जिससे गावके सभी लोगोको शुद्ध पानी मिला करेगा। कुओं और तालावो पर गावका पूरा नियत्रण रखकर यह काम किया जा सकता है। वुनियादी तालीमके आखिरी दरजे तक शिक्षा सवके लिअे लाजिमी होगी। जहा तक हो सकेगा, गावके सारे काम सहयोगके आधार पर किये जायगे। जात-पात और क्रमागत अस्पृश्यताके जैसे भेद आज हमारे समाजमे पाये जाते है, वैसे अिस ग्राम-समाजमे विलकुल न रहेंगे। सत्याग्रह और असहयोगके

शास्त्रके साथ अहिंसाकी सत्ता ही ग्रामीण समाजका शासन-बल होगी। गावकी रक्षाके लिअे ग्राम-सैनिकोका अेक अैसा दल रहेगा, जिसे लाजिमी तौर पर बारी-बारीसे गावके चौकी-पहरेका काम करना होगा। अिसके लिअे गावमे अैसे लोगोका रजिस्टर रखा जायगा। गावका शासन चलानेके लिअे हर साल गावके पाच आदमियोकी अेक पचायत चुनी जायगी। अिसके लिअे नियमानुसार अेक खास निर्धारित योग्यतावाले गावके बालिग स्त्री-पुरुषोको अधिकार होगा कि वे अपने पच चुन ले। अिन पचायतोको सब प्रकारकी आवश्यक सत्ता और अधिकार रहेगे। चूकि अिस ग्राम-स्वराज्यमे आजके प्रचलित अर्थोमे सजा या दडका कोअी रिवाज नही रहेगा, अिसलिअे यह पचायत अपने अेक सालके कार्यकालमे स्वय ही धारासभा, न्यायसभा और कारोबारी सभाका सारा काम सयुक्त रूपसे करेगी। आज भी अगर कोअी गाव चाहे तो अपने यहा अिस तरहका प्रजातत्र कायम कर सकता है। अुसके अिस काममे मौजूदा सरकार भी ज्यादा दस्तदाजी नही करेगी। क्योकि अुसका गावसे जो भी कारगर सबध है, वह सिर्फ मालगुजारी वसूल करने तक ही सीमित है। यहा मैने अिस बातका विचार नही किया है कि अिस तरहके गावका अपने पास-पडोसके गावोके साथ या केन्द्रीय सरकारके साथ, अगर वैसी कोअी सरकार हुअी तो, क्या सम्बन्ध रहेगा। मेरा हेतु तो ग्राम-शासनकी अेक रूपरेखा पेश करनेका ही है। अिस ग्राम-शासनमे व्यक्तिगत स्वतत्रता पर आधार रखनेवाला सपूर्ण प्रजातत्र काम करेगा। व्यक्ति ही अपनी अिस सरकारका निर्माता भी होगा। अुसकी सरकार और वह दोनो अहिंसाके नियमके वश होकर चलेगे। अपने गावके साथ वह सारी दुनियाकी शक्तिका मुकाबला कर सकेगा, क्योकि हरअेक देहातीके जीवनका सबसे बडा नियम यह होगा कि वह अपनी और अपने गावकी अिज्जतकी रक्षाके लिअे मर मिटे।

अिन पक्तियोको लिखते हुअे मेरे मनमे जो सवाल अुठ रहा है, वही सवाल सभव है कि पाठक भी मुझे पूछे। सवाल यह है कि अपनी अिस तसवीरके अनुसार मै सेवाग्रामको अैसा ही रूप क्यो नही दे पाया हू? मेरा जवाब यह है कि मै कोशिश कर रहा हू। मै सफलताके धुधले-से चिह्न देख रहा हू, लेकिन मै प्रत्यक्षमे कुछ भी नही दिखा सकता। किन्तु जो चित्र यहा अुपस्थित किया गया है, अपने-आपमे असभव जैसी कोअी चीज अुसमे नही है। अैसे गावको तैयार करनेमे अेक आदमीकी पूरी जिन्दगी भी खतम हो सकती है। सच्चे प्रजातत्रका और ग्राम-जीवनका कोअी भी प्रेमी अेक गावको लेकर बैठ सकता है और अुसीको अपनी सारी दुनिया मानकर अुसके काममे मशगूल रह सकता है। निश्चय ही अुसे अिसका अच्छा फल मिलेगा। वह गावमे बैठते ही अेक साथ गावके भगी, कतवैये, चौकीदार, वैद्य और

शिक्षकका काम शुरू कर देगा। अगर गांवका कोओी आदमी अुसके पास न फटके, तो भी वह सन्तोषके साथ अपने सफाओी और कताओीके काममें जुटा रहेगा।

हरिजनसेवक, २–८–'४२, पृ० २४३–४४

९

हिन्द सचमुच कैसे आजाद होगा ?

[नीचेके दोनों अुद्धरण 'हिन्द स्वराज्य' से लिये गये हैं। पाठकके अिस प्रश्न पर कि सम्पादक (गांधीजी) हिन्दुस्तानको आजाद करनेके लिअे क्या सुझाते हैं, यह निम्नलिखित वार्तालाप सम्पादक और पाठकके बीच हुआ था।]

१

पाठक सुधारके बारेमें आपके विचार मैं समझ गया। आपने जो कहा अुस पर मुझे ध्यान देना होगा। तुरन्त सब मंजूर कर लिया जाय, अैसा तो आप नहीं मानते होंगे, अैसी आशा भी नहीं रखते होंगे। आपके अैसे विचारोंके मुताबिक आप हिन्दके आजाद होनेका क्या अुपाय बतायेंगे?

संपादक मेरे विचार सब लोग तुरन्त मान लें अैसी मैं आशा नहीं रखता। मेरा फर्ज अितना ही है कि आपके जैसे जो लोग मेरे विचार जानना चाहते हैं, अुनके सामने मैं अपने विचार रख दूं। वे विचार अुन्हें पसन्द आयेंगे या नहीं आयेंगे, यह तो समय बीतने पर ही मालूम होगा।

हिन्दकी आजादीके अुपायोंका हम विचार कर चुके। फिर भी हमने दूसरे रूपमें अुन पर विचार किया। अब हम अुन पर अुनके स्व-रूपमें विचार करें।

जिस कारणसे रोगी बीमार हुआ हो वह कारण अगर दूर कर दिया जाय तो रोगी अच्छा हो जायगा, यह जग-मशहूर बात है। अिसी तरह जिस कारणसे हिन्द गुलाम बना वह कारण अगर दूर कर दिया जाय तो वह बंधनसे मुक्त हो जायगा।

पाठक आपकी मान्यताके मुताबिक हिन्दका सुधार (सभ्यता) अगर सबसे अच्छा है तो फिर वह गुलाम क्यों बना?

संपादक सुधार तो मैंने कहा वैसा ही है, लेकिन देखनेमें आया है कि सब सुधारों पर आफतें आया करती हैं। जो सुधार अचल है वह

आखिरकार आफतको दूर कर देता है। हिन्दके बालकोमे कोअी न कोअी कमी थी अिसलिअे वह सुधार आफतोसे घिर गया। लेकिन अिस घेरेमे से छूटनेकी अुसमे ताकत है, यह अुसका गौरव दिखाता हे।

और फिर सारा हिन्दुस्तान अुसमे (गुलामीमे) घिरा हुआ नही है। जिन्होने पश्चिमकी शिक्षा पाअी हे और जो अुसके पाशमे फस गये है, वे ही गुलामीमे घिरे हुअे है। हम जगतको अपनी दमडीके मापसे नापते है। अगर हम गुलाम है तो जगतको भी गुलाम मान लेते है। हम कगाल दशामें है अिसलिअे मान लेते है कि सारा हिन्दुस्तान अैसी दशामे है। दरअसल अैसा कुछ नही हे। फिर भी हमारी गुलामी सारे देशकी गुलामी हे, अैसा मानना ठीक हे। लेकिन अूपरकी बात हम ध्यानमे रखे तो समझ सकेंगे कि हमारी अपनी गुलामी मिट जाय, तो हिन्दुस्तानकी गुलामी मिट गअी मान लेना चाहिये। अिसमे अब आपको स्वराज्यकी व्याख्या भी मिल जाती है। हम अपने अूपर राज करे वही स्वराज्य है, और वह स्वराज्य हमारी हथेलीमे है।

अिस स्वराज्यको आप सपने जैसा न माने। मनसे मानकर बैठे रहनेका यह स्वराज्य नही है। यह तो अैसा स्वराज्य हे कि आपने अगर अुसका स्वाद चख लिया हो, तो दूसरोको अुसका स्वाद चखानेके लिअे आप जिन्दगी-भर कोशिश करेगे। लेकिन मुख्य बात तो हर शख्सके स्वराज्य भोगनेकी है। डूबता आदमी दूसरेको नही तारेगा, लेकिन तैरता आदमी दूसरेको तारेगा। हम खुद गुलाम होंगे और दूसरोको आजाद करनेकी बात करेगे तो वह बननेवाली नही हे।

लेकिन अितना काफी नही है। हमे और भी आगे सोचना होगा।

अब आपकी समझमे अितना तो आया होगा कि अंग्रेजोको देशसे निकालनेका मकसद सामने रखनेकी जरूरत नही है। अगर अंग्रेज हिन्दी होकर रहे तो हम अुनका समावेश यहा कर सकते है। अंग्रेज अगर अपने सुधार (सभ्यता) के साथ रहना चाहे तो अुनके लिअे हिन्दुस्तानमे जगह नही है। अैसी हालत पैदा करना हमारे हाथमे है।

पाठक अंग्रेज हिन्दी बने यह आपकी बात नामुमकिन है।

संपादक हमारा अैसा कहना यह कहनेके बराबर हे कि अंग्रेज मनुष्य नही है। वे हमारे जैसे बने या न बने, अिसकी हमे परवाह भी नही है। हम अपना घर साफ करे। फिर रहने लायक लोग ही अुसमे रहेंगे, दूसरे अपने आप चले जायेगे। अैसा अनुभव तो हरअेक आदमीको हुआ होगा।

पाठक अैसा होनेकी बात अितिहासमे तो नही देखी।

सपादक जो चीज अितिहासमे नही देखी वह नही होगी, अैसा माननेमें तो हमारी ही कमी (न्यूनता) है। जो बात हमारी अकलमें आ सके अुसे आखिर हमे आजमाना तो चाहिये ही।

हर देशकी हालत अेकसी नही होती। हिन्दुस्तानकी हालत विचित्र है। हिन्दुस्तानका बल असाधारण है। अिसलिअे दूसरे अितिहासोसे हमारा कम सबध है। मैंने आपको बताया कि जब और सुधार (सभ्यतायें) मिट्टीमे मिल गये, तब हिन्दके सुधारको आच नही आयी है।

पाठक मुझे ये सब बाते ठीक नही लगती। हमे लडकर अग्रेजोको निकालना ही होगा, अिसमे कोअी शक नही। जब तक वे हमारे मुल्कमे है तब तक हमे चैन नही पड सकता। 'पराधीन सपनेहु सुख नाही' जैसा देखनेमे आता है। अग्रेज यहा है अिसलिअे हम कमजोर होते जा रहे है। हमारा तेज चला गया है और हमारे लोग घबराये-से दीखते है। वे हमारे देशके लिअे यम (काल) जैसे है। अुस यमको हमें किसी भी प्रयत्नसे भगाना ही होगा।

सपादक आप अपने आवेशमे मेरा सारा कहना भूल गये है। अग्रेजोको यहा लानेवाले हम है और वे हमारी बदौलत यहा रहते है। आप यह कैसे भूल जाते है कि हमने अुनका सुधार अपनाया है अिसलिअे वे यहा रह सकते है? आप अुनसे जो नफरत करते है वह नफरत आपको अुनके सुधारसे करनी चाहिये। फिर भी यह मान ले कि हम लडकर अुन्हे निकालना चाहते है। तो यह कैसे हो सकेगा?

पाठक जैसे अिटलीने किया वैसे। मेजिनी और गैरीबाल्डीने जो किया वह तो हम भी कर सकते है। वे महावीर थे अिस बातसे क्या आप अिनकार कर सकेगे?

हिन्द स्वराज्य, प्रक० १४, पृ० ४८–५०

२

सपादक आपने अिटलीका अुदाहरण ठीक दिया। मैजिनी महात्मा था। गैरीबाल्डी बडा योद्धा था। वे दोनो पूजनीय थे। अुनसे हम बहुत सीख सकते है। फिर भी अिटलीकी दशा और हिन्दुस्तानकी दशामें फरक है।

पहले तो मैजिनी और गैरीबाल्डीके बीचका भेद जानने लायक है। मैजिनीके अरमान अलग थे। मैजिनी जैसा सोचता था वैसा अिटलीमे नही हुआ। मैजिनीने मनुष्य-जातिके फर्जके बारेमें लिखते हुअे यह बताया है कि हरअेकको स्वराज्य भोगना चाहिये। यह बात तो अुसके लिअे सपने जैसी

रही। गैरीवाल्डी और मैजिनीके बीच मतभेद हो गया था, यह हमे याद रखना चाहिये। असके सिवा, गैरीवाल्डीने हर अिटालियनके हाथमे हथियार दिये और हर अिटालियनने हथियार लिये।

अिटली और आस्ट्रियाके बीच सुधार (सभ्यता) का भेद नही था। वे तो 'चचेरे भाओी' माने जायगे। 'जैसेको तैसा' वाली बात अिटलीकी थी। अिटलीको परदेशी (आस्ट्रियाके) जूअेसे छुडानेका मोह गैरीवाल्डीको था। असके लिअे अुसने कावूरके मारफत जो साजिशे की, वे अुसकी शूरताको बट्टा लगानेवाली है।

और अतमें नतीजा क्या निकला? अिटलीमे अिटालियन राज करते है असलिअे अिटलीकी प्रजा सुखी है, अैसा अगर आप मानते हो तो मै आपसे कहूगा कि आप अधेरेमे भटकते हैं। मैजिनीने साफ साफ बताया है कि अिटली आजाद नही हुआ है। विक्टर अिमेन्युअलने अिटलीका अेक अर्थ किया, मैजिनीने दूसरा। अिमेन्युअल, कावूर और गैरीवाल्डीके विचारसे अिटलीका अर्थ था अिमेन्युअल या अिटलीका राजा और अुसके हुजूरी। मैजिनीके विचारसे अिटलीका अर्थ था अिटलीके लोग — अुसके किसान। अिमेन्युअल वगैरा तो अुनके (प्रजाके) नौकर थे। मैजिनीका अिटली अब भी गुलाम है। दो राजाओके बीच शतरजकी बाजी लगी थी, अिटलीकी प्रजा तो सिर्फ प्यादा थी और है। अिटलीके मजदूर अब भी दुखी है। अिटलीके मजदूरोकी दाद-फरियाद नही सुनी जाती, असलिअे वे लोग खून करते है, विरोध करते हैं, सिर फोडते है और वहा बलवा होनेका डर आज भी बना हुआ है। आस्ट्रियाके जानेसे अिटलीको क्या लाभ हुआ? जिन सुधारोंके लिअे जग मचा वे सुधार हुअे नही, प्रजाकी हालत सुधरी नही।

हिन्दुस्तानकी अैसी दशा करनेका तो आपका अिरादा नही ही होगा। मैं जानता हू कि आपका विचार हिन्दुस्तानके करोडो लोगोको सुखी करनेका होगा, यह नही होगा कि आप या मै राजसत्ता ले लू। अगर अैसा है तो हमे अेक ही विचार करना चाहिये। वह यह कि प्रजा स्वतत्र कैसे हो।

आप कबूल करेगे कि कुछ देशी रियासतोमे प्रजा कुचली जाती है। वहाके शासक नीचतासे लोगोको कुचलते है। अुनका जुल्म अग्रेजोके जुल्मसे भी ज्यादा है। अैसा जुल्म अगर आप हिन्दुस्तानमे चाहते हो तो हमारी पटरी कभी नही बैठेगी।

मेरा स्वदेशाभिमान मुझे यह नही सिखाता कि देशी राजाओके मातहत जिस तरह प्रजा कुचली जाती है अुसी तरह अुसे कुचलने दिया जाय। मुझमे बल होगा तो मैं देशी राजाओके जुल्मके खिलाफ और अग्रेजी जुल्मके खिलाफ जूझूगा।

स्वदेशाभिमानका अर्थ मै देशका हित समझता हू। अगर देशका हित अग्रेजोके हाथो होता हो तो मै आज अग्रेजोको झुककर नमस्कार करूगा। अगर कोअी अग्रेज कहे कि देशको आजाद करना चाहिये, जुल्मके खिलाफ होना चाहिये और लोगोकी सेवा करनी चाहिये, तो अुस अग्रेजको मैं हिन्दी मानकर अुसका स्वागत करूगा।

फिर अिटलीकी तरह हिन्दको हथियार मिलें तव वह लड सकता हे, पर अिस महाभारत (वहुत वडे) कामका तो, मालूम होता है, आपने विचार ही नही किया है। अग्रेज गोला-वारूदसे पूरी तरह लैस हैं, अिमसे कुछ डर नही लगता। लेकिन अैसा तो दीखता है कि अुनके हथियारोंसे अुन्हीके खिलाफ लडना हो तो हिन्दको हथियारवद करना ही होगा। अगर अैसा हो सकता हो तो अिसमे कितने साल लगेगे? और तमाम हिन्दियोको हथियारवद करना तो हिन्दको यूरोप-सा वनाने जैसा होगा। अैसा अगर हुआ तो आज यूरोपके जो वेहाल हैं वैसे ही हिंदके भी होगे। थोडेमे हिन्दको यूरोपका सुधार अपनाना होगा। अैसा ही होनेवाला हो तो अच्छी वात यह होगी कि जो अग्रेज अुस सुधारमे कुशल हैं अुन्हीको हम यहा रहने दे। अुनसे थोडा-वहुत झगडकर हम कुछ हक पायेंगे, कुछ नही पायेंगे और अपने दिन गुजारेंगे।

लेकिन वात तो यह है कि हिन्दकी प्रजा कभी हथियार नही अुठायेगी, न अुठाये यह ठीक ही है।

पाठक आप तो वहुत आगे वढ गये। सवके हथियारवद होनेकी जरूरत नही। हम पहले तो कुछ खून करके आतक फैलायेंगे। फिर जो थोडे लोग हथियारवद तैयार होगे वे खुल्लमखुल्ला लडेंगे। अुसमे पहले तो वीस पचीस लाख हिन्दी मरेंगे सही। लेकिन आखिर हम देशको अग्रेजोंसे जीत लेंगे। हम गुरीला (डाकुओं जैसी) लडाअी लडकर अग्रेजोको हरा देंगे।

सपादक आपका खयाल हिन्दकी पवित्र भूमिको राक्षसी वनानेका लगता हे। खून करके हिन्दको छुडायेंगे, अैसा विचार करते हुअे आपको त्रास क्यो नही होता? खून तो हमे अपना करना चाहिये। क्योकि हम नामर्द वन गये हैं अिसलिअे हम खूनका विचार करते हैं। अैसा करके आप किसको आजाद करेंगे? हिन्दकी प्रजा अैसा कभी नही चाहती। हम जैसे लोग ही, जिन्होंने अधम सुधाररूपी भाग पी है, नशेमे अैसा विचार करते हैं। खून करके जो लोग राज्य करेंगे वे प्रजाको सुखी नहीं वना सकेंगे। धीगराने[1] जो खून किया, जो खून हिन्दुस्तानमें हुअे हैं, अुनसे देशको

---

१ पजावी युवक मदनलाल धीगराने जुलाअी १९०९ मे लदनमे कर्नल सर कर्ज़न वाअिलीको गोलीका निशाना वनाया था। अुसे फासीकी सजा मिली थी।

फायदा हुआ है अैसा अगर कोअी मानता हो तो वह बडी भूल करता है। धीगराको मै देशाभिमानी मानता हू, लेकिन अुसका देशप्रेम पागल था। अुसने अपने शरीरका बलिदान गलत तरीकेसे दिया। अुससे अतमे तो देशको नुकसान ही होनेवाला है।

पाठक लेकिन आपको अितना तो कबूल करना ही होगा कि अग्रेज अिस खूनसे डर गये है, ओर लॉर्ड मॉर्लेने जो कुछ दिया हे वह अैसे डरसे ही दिया है।

सपादक अग्रेज डरपोक प्रजा है, और बहादुर भी है। गोला-बारूदका असर अुन पर तुरत होता हे यह मै मानता हू। सभव है लॉर्ड मॉर्लेने जो दिया वह डरसे दिया हो। लेकिन डरसे मिली हुअी चीज जब तक डर बना रहता है तभी तक टिक सकती है।

हिन्द स्वराज्य, प्रक० १५, पृ० ५१–५४

१०

हिंसा या अुद्योगीकरणसे स्वराज्य प्राप्त नही होगा

[गाधीजी द्वारा रस्किनके 'अन्टु दिस लास्ट' के आधार पर लिखित 'सर्वोदय' * के अतिम प्रकरण 'साराश' से।]

रस्किनने अपने बधुओ — अग्रेजो — के लिअे जो लिखा, वह अगर अग्रेजोको अेक दरजा लागू होता हो तो हिन्दियोको हजार दरजा लागू होता है। हिन्दुस्तानमे नये विचार फैल रहे है। आजकलके पश्चिमी शिक्षा पाये हुअे जवानोमे जोश आया हे वह तो ठीक हे। लेकिन जोशका अगर अच्छा अुपयोग किया जाय तो अच्छा परिणाम आता है और गलत अुपयोग किया जाय तो बुरा परिणाम ही आनेवाला है। 'स्वराज्य' पाना चाहिये, अैसी अेक ओरसे आवाज अुठती है। विलायतकी तरह कारखाने खोलकर झटपट पैसा जमा करना चाहिये, अैसी आवाज दूसरी ओरसे अुठती है।

स्वराज्यका अर्थ हम शायद ही समझते होगे। नातालमे स्वराज्य है। फिर भी हम कहना चाहते है कि अगर नातालके जैसा हम करना चाहते हो तो वह स्वराज्य नरक-राज्यके बराबर होगा। वे (गोरे) काफिरो[1] को कुचलते है, हिंदियोको मिटाते है। स्वार्थमे अधे होकर स्वार्थ-राज्य भोगते

* नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४, द्वारा प्रकाशित।

१ अफ्रीकाके आदिवासी, हबशी।

है। अगर काफिर और हिंदी नातालमे मे चले जायें, तो वे आपसमें लडकर खतम हो जायेगे।

तो क्या ट्रांसवालके जैसा स्वराज्य हम लेगे? जनरल स्मट्स अुसके अगुआओंमे मे अेक है। वे अपने लिखित या जवानी दिये हुअे वचन निभाते नही है। कहते है कुछ, करते है कुछ। अंग्रेज अुनसे परेशान हो गये है। पैसा बचानेके बहाने अंग्रेज सिपाहियोकी रोजी छीन ली जाती है और अुनकी जगह डचोंको रखते है। हम नही मानते कि अिससे से अंतमे डच भी सुखी होगे। जिनकी निगाह स्वार्थ पर ही है वे परायी प्रजाको लूटकर अपनी प्रजाको लूटनेके लिअे भी आसानीसे तैयार हो जायेगे।

दुनियाके चारो ओर नजर डालनेसे हम देख सकेंगे कि स्वराज्यके नामसे पहचाना जानेवाला राज्य प्रजाकी खुशहाली या सुखके लिअे काफी नही है। अेक आसान मिसाल लेनेसे यह बात झट समझमे आ जायगी। लुटेरोकी टोलीमे अगर स्वराज्य हो तो अुसका क्या परिणाम आयेगा, यह सब समझ सकते है। अुन पर तो जो लुटेरे न हो अुन्हीका अगर काबू हो तो वे अंतमे सुखी होंगे। अमरीका, फ्रांस, अिंग्लैंड ये सब बडे राज्य है। लेकिन वे सचमुच सुखी है अैसा माननेका कोअी कारण नही है।

'स्वराज्य' का सच्चा अर्थ है अपनेको काबूमें रखना जानना। अैसा तो वह आदमी कर सकता हे, जो खुद नीतिका पालन करता है, किसीको ठगता नही हे, सत्यको छोडता नही है, अपने मा-बाप, अपनी पत्नी, अपने बच्चे, अपने नौकर, अपने पडोसी, सबके प्रति अपना फर्ज अदा करता है। अैसा आदमी किसी भी देशमें अपना स्वराज्य भोगता है। जिस प्रजामें अैसे बहुतसे लोग हो वहा सहज रूपमे ही स्वराज्य हे।

अेक प्रजा दूसरी पर राज्य करे यह आम तौर पर गलत है। अंग्रेज हम पर राज्य करते है यह विपरीत बात हे, लेकिन अगर अंग्रेज हिन्दुस्तान छोड जाये तो हिन्दियोंने कुछ कमाया अैसा माननेका कारण नही है।

वे (यहा) राज्य करते है अिसका कारण हम ही है, वह कारण है हमारा आपसी बेमेल — हमारे घरकी फूट, हमारी अनीति और हमारा अज्ञान। ये तीन चीजें अगर दूर हो जाये तो अेक पत्ता भी हिलाये बिना अंग्रेज हिन्दुस्तान छोडकर चले जायेगे, अितना ही नही हम सच्चा स्वराज्य भोगने लगेंगे।

'बमगोला' छोडनेमे बहुतोंको मजा आता है। यह निरे अज्ञान और नासमझीकी निशानी है। अगर सब अंग्रेजोको मार डालना मुमकिन हो, तो जो मारनेवाले हैं वे ही हिन्दुस्तानके मालिक बन जायेंगे। अिसलिअे हिन्दुस्तान तो अनाथ विधवा ही रहेगा। अंग्रेजो पर चलाये जानेवाले बमगोले अंग्रेजोंके

चले जाने पर हिन्दियो पर गिरेगे। फ्रासके प्रजातत्रके प्रेसिडेटको मारनेवाला फ्रेंच ही था। अमरीकाके प्रेसिडेट क्लीवलैन्डको मारनेवाला अमेरिकन था। अिसलिअे जल्दीमे विना सोचे-समझे पश्चिमकी प्रजाकी अधी नकल न करना ही हमारे लिअे ठीक है।

जैसे पापकर्मसे — अग्रेजोको मारकर — सच्चा स्वराज्य नही मिलेगा, वैसे हिन्दुस्तानमे बडे कारखाने खोलनेसे भी नही मिलेगा। सोना-चादी जमा होनेसे कुछ स्वराज्य नही मिल जायगा। यह वात रस्किनने अच्छी तरह सावित कर दी है। याद रखना चाहिये कि पश्चिमी सभ्यताको अभी सौ ही साल हुअे है। सचमुच तो पचास ही साल मानने चाहिये। अितने समयमे तो पश्चिमकी प्रजा वर्णसकर-सी मालूम होती है। हमारी प्रार्थना है कि जैसी यूरोपकी दशा है वैसी हिन्दुस्तानकी कभी न हो। यूरोपकी प्रजाये अेक-दूसरेकी ताकमे बैठी है। मात्र अपने गोला-बारूदकी तैयारीसे ही सव चुप बैठे है। जव किसी समय जवरदस्त आग भडकेगी तव यूरोप नरक नजर आयेगा। यूरोपका हरअेक राज्य काले आदमीको अपना भक्ष्य समझ लेता है। जहा सिर्फ पैसेका ही लोभ हो वहा दूसरा कुछ हो ही नही सकता। अुन्हे अेक भी मुल्क अगर नजर आये तो जैसे कौअे मासके टुकडे पर टट पडते है वैसे अुस मुल्क पर वे टूट पडते है। यह अुनके कारखानोके कारण होता है अैसा माननेके कुछ कारण है।

अतमे, हिन्दुस्तानको स्वराज्य मिले अैसी सव हिन्दियोकी पुकार है और वह सही है। लेकिन स्वराज्य नीतिके रास्ते पर पाना है। वह सच्चा स्वराज्य होना चाहिये। और वह नाश करनेवाले तरीकोसे या वडे कारखानोसे नही मिलेगा। अुद्योग चाहिये, लेकिन सही रास्तेसे चाहिये। हिन्दुस्तानकी भूमि अेक समय सुवर्ण-भूमि मानी जाती थी, क्योकि हिंदी लोग सुवर्ण-रूपसे थे। आज भूमि तो वही है, लेकिन लोग वदल गये है। अिसलिअे वह भूमि वीरान-सी हो गअी है। अुसको फिरसे सुवर्ण-भूमि वनानेके लिअे हमे खुद सद्‌गुणोसे सुवर्ण वनना होगा। अुसका पारस (जिसे छूनेसे लोहा सोना वन जाता है वह) तो दो अक्षरोमें रहा है और वह है 'सत्य'। अिसलिअे अगर हरअेक हिन्दी 'सत्य' का ही आग्रह रखेगा, तो हिन्दुस्तानको घर वैठे स्वराज्य मिलेगा।

११

स्वराज्य पर कुछ विचार

[गांधीजीने आजादीकी लडाओीमे हिंसाके अुपयोगका विरोध किया था। निम्नलिखित अुद्धरण हमें बतलाते है कि लडाओीके जरिये प्राप्त होनेवाले स्वराज्यका अुन्होंने क्यों विरोध किया था]

१ यदि समस्याका समाधान तलवारके बल होना है, तो वह सिक्खों या गुरखोंकी तलवारसे नही, वह तो अखिल भारतीय तलवारसे होना चाहिये। यदि पशुबलका शासन चलना हो तो भारतके लाखो लोगोंको युद्धकला सीखनी चाहिये, वर्ना अुन्हे हमेशाके लिअे अुसकी शरणमें रहना होगा जो तलवारसे शासन करता हे, चाहे वह परदेशी हो या स्वदेशी। लाखो लोग मूक पशुओंकी तरह रहनेवाले हैं। असहयोग आन्दोलन जनतामे आत्म-गौरव और शक्तिका भान जाग्रत करनेका प्रयत्न है। यह तभी हो सकता हे जब अुन्हे यह महसूस करा दिया जाये कि अुन्हे पशुबलसे डरनेकी जरूरत नहीं है।

यंग अिंडिया, १-१२-'२०, पृ० ३

२ मैं कहता हू कि क्रांतिकारी तरीका भारतमे सफल नहीं हो सकता। यदि खुल्लमखुल्ला लडाओी संभव होती, तो मैं शायद मान लेता कि हम हिंसाके अुस पथ पर चले जिस पर दूसरे देश चले है और कमसे कम अुन गुणोंका ही विकास करे जिनका अुदय रणक्षेत्रमें दिखायी गयी वीरतामे होता हे। पर युद्धकांडके द्वारा भारतके स्वराज्यकी प्राप्तिको तो मैं, जहा तक नजर पहुचती है वहा तक किसी भी समयमे असंभव मानता हू। युद्धके द्वारा हमें चाहे अंग्रेजी शासनकी जगह दूसरा शासन मिल जाय, पर जिसे जनताकी दृष्टिमे स्वशासन कहा जा सके जैसा स्वशासन नहीं मिल सकता। स्वराज्यकी तीर्थयात्रा बडी कठिन, बडी कष्टप्रद चढाओी है। अुसके मानी हैं देहातियोंकी सेवा करनेके ही अुद्देश्यसे देहातोंमें प्रवेश करना। दूसरे शब्दोंमे असका अर्थ ह राष्ट्रीय शिक्षा — जनताकी शिक्षा। असका अर्थ है जनताके अंदर राष्ट्रीय चैतन्य और जागृति अुत्पन्न करना। वह कोओी जादूगरके आमकी तरह अचानक नहीं टपक पडेगा। वह तो वट-वृक्षकी तरह प्राय बे-मालूम बढेगा। खूनी क्रांति कभी यह चमत्कार नहीं दिखा सकती।

हिन्दी नवजीवन, २१-५-'२५, पृ० ३२७

[यद्यपि गाधीजी भारतके लिअे राजनीतिक सत्ताका हस्तातरण अत्यन्त आवश्यक मानते थे, लेकिन वे अैसे निरे हस्तातरणसे ही सन्तुष्ट नही होनेवाले थे। अपने स्वराज्यकी योजनामे वे जनताके सभी प्रकारके शोषणका अन्त चाहते थे।]

३ फिर भी मेरा मन कहता है कि असलमे देखा जाय तो क्या यूरोप — यद्यपि यूरोपको राजनीतिक स्वराज्य प्राप्त है — और क्या भारत, दोनोको अेक ही रोग है। केवल राजनीतिक सत्ताके अेक हाथसे निकलकर दूसरे हाथमे चले जानेसे मेरी महत्त्वाकाक्षाको सतोप न होगा, हालाकि मै भारतके राष्ट्रीय जीवनके लिअे सत्ताका अिस प्रकार हस्तातरित होना परम आवश्यक मानता हू। यूरोपके लोग नि सन्देह राजनीतिक सत्ता तो रखते है पर स्वराज्य नही। अेशिया और अफ्रीकाके लोगोको वे अपने आशिक लाभके लिअे लूटते है और अुनका शासक-वर्ग अुन्हे प्रजासत्ताके पवित्र नाम पर लूटता है। सो यदि जडको देखे तो रोग वही दिखाअी देता है जो कि भारतवर्षको है। अिसलिअे अिलाज भी वही काम दे सकेगा।

हिन्दी नवजीवन, ३–९–'२५, पृ० २०

४ वह आम जनता है जिसे स्वराज्य प्राप्त करना है। यह न तो धनवानोका अेकमात्र कार्य है और न शिक्षित वर्गोका। दोनोको अपने स्वार्थोको स्वराज्यकी किसी भी योजनामे विलीन कर देना चाहिये।

यग अिडिया, २०–४–'२१, पृ० १२४

५ मै आपसे कह सकता हू कि काग्रेस लोगोके किसी खास दलकी नही है। वह तो सबकी है, लेकिन अुसका मुख्य रस अुन गरीब किसानोकी रक्षा करनेमे होना चाहिये, जो हमारी जनसख्याका बहुत बडा भाग है। अिसलिअे काग्रेसको वास्तवमे गरीबोका प्रतिनिधित्व करना चाहिये। लेकिन अिसका यह मतलब नही कि और सब वर्गो — मध्यम वर्गो, पूजीपतियो या जमीदारोके हितोकी वह अुपेक्षा करेगी। काग्रेसका अेकमात्र लक्ष्य यह है कि भारतके अन्य सब वर्ग गरीब जनताके हितोकी रक्षा करे और अुन्हे बढाये।

यग अिडिया, १६–४–'३१, पृ० ७९

६ अिसलिअे मै हमारा ध्येय आपके समक्ष रखूगा। यह ध्येय है विदेशी जुअेसे अुसके सपूर्ण अर्थोमे मुकम्मिल आजादी। और यह आजादी लाखो मूक लोगोके लिअे होगी। अिसलिअे प्रत्येक अैसे स्वार्थ पर, जो कि अुनके

स्वार्थके विपरीत है, फिरसे विचार होना चाहिये और यदि वह सशोधनके योग्य न हो तो अुसे खतम हो जाना चाहिये।

यंग अिंडिया, १७–९–'३१, पृ० २६३

[जो स्वराज्य गांधीजी चाहते थे वह कुछ लोगोंका अेकाधिकार नहीं होगा। अिसके विपरीत वह श्रमिक जनताकी स्वेच्छापूर्ण अनुमतिके व्यापक आधार पर स्थापित होगा, जो जनता सत्ताका नियमन और नियंत्रण करनेकी क्षमता प्राप्त करेगी।]

७ स्वराज्यसे मेरा मतलब भारतके लोगोंकी स्वीकृतिसे होनेवाले शासनसे है। वह स्वीकृति बालिग आबादीकी बड़ीसे बड़ी सख्या द्वारा निश्चित होनी चाहिये और अुसमें देशमें पैदा हुअे या बाहरसे आकर बसे हुअे वे सब स्त्री-पुरुष शामिल होने चाहियें, जिन्होंने शरीर-श्रम द्वारा राज्यकी सेवामें भाग लिया हो और अपना नाम मतदाताओंकी सूचीमें लिखवानेका कष्ट अुठाया हो। मैं यह दिखा देनेकी आशा रखता हूं कि स्वराज्य चंद आदमियोंके सत्ता प्राप्त करनेसे नहीं आयेगा, परन्तु सत्ताका दुरुपयोग होने पर सबमें अुसका मुकाबला करनेकी क्षमता अुत्पन्न होनेसे आयेगा। दूसरे शब्दोंमें स्वराज्य जनसाधारणको सत्ताका नियमन और नियंत्रण करनेकी अुनकी शक्तिका भान करानेसे प्राप्त होगा।

यंग अिंडिया, २९–१–'२५, पृ० ४०–४१

[वास्तवमें गांधीजीका अन्तिम राजनीतिक ध्येय अराजकतावाद था।]

८ स्वशासनका अर्थ है सरकारी नियंत्रणसे स्वतंत्र होनेका सतत प्रयत्न, फिर सरकार विदेशी हो चाहे राष्ट्रीय। स्वराज्य सरकार अेक हास्यास्पद चीज बन जायगी, अगर जीवनकी हर छोटी बातके नियमनके लिअे लोग अुसके मुंहकी तरफ देखने लगें।

यंग अिंडिया, ६–८–'२५, पृ० २७६

९ मेरी दृष्टिमें राजनीतिक सत्ता कोअी साध्य नहीं है, परन्तु जीवनके प्रत्येक विभागमें लोगोंके लिअे अपनी हालत सुधार सकनेका अेक साधन है। राजनीतिक सत्ताका अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवनका नियमन करनेकी शक्ति। अगर राष्ट्रीय जीवन अितना पूर्ण हो जाता है कि वह स्वयं आत्म-नियमन कर ले, तो किसी प्रतिनिधित्वकी आवश्यकता नहीं रह जाती। अुस समय ज्ञानपूर्ण अराजकताकी स्थिति हो जाती है। अैसी स्थितिमें हरअेक अपना राजा होता है। वह अिस ढंगसे अपने पर शासन करता है कि अपने पड़ोसियोंके लिअे कभी बाधा नहीं बनता। अिसलिअे आदर्श अवस्थामें

कोअी राजनीतिक सत्ता नही होती, क्योकि कोअी राज्य नही होता। परन्तु जीवनमे आदर्शकी पूरी सिद्धि कभी नही होती। अिसलिअे थोरोने कहा है कि जो सबसे कम शासन करे वही अुत्तम सरकार है।

यग अिडिया, २–७–'३१, पृ० १६२

१२

मेरी कल्पनाके स्वराज्यमें राजा और रंकका स्थान

विलेपारलेमे (बम्बअी) कार्यकर्ताओकी जो सभा हुअी थी, अुसमे यह सवाल पूछा गया था

> "आप कहा करते है कि आपकी कल्पनाका स्वराज्य राजा और रक दोनोको न्याय देगा, दोनोकी रक्षा करेगा और दोनोके हितोका ध्यान रखेगा। क्या यह बात परस्पर विरोधी नही है? आज मजदूर और मालिक, धनवान और अुसके नौकर, ब्राह्मण और भगी, अमीर और गरीब — अिन दोके बीच जहा देखिये वहा वर्ग-सघर्ष चल रहा है। 'है' और 'नही' का झगडा अनादि कालसे चला आता मालूम होता है। अैसा लगता है कि दूसरेको दु खी बनाये बिना मनुष्य खुद सुखी हो ही नही सकता। यह कुदरतका ही नियम मालूम होता है। आप कुदरतके अिस नियमको बदलने पर तुले हुअे हैं। यह हवामे तलवार चलाने जैसा नही लगता?"

सवाल अच्छा है और बहुतसे लोगोके मनमे अुठता होगा। अिस पर हम विचार करे।

अगर कभी अिस दुनियामे रामराज्य जैसी कोअी चीज थी, तो अुसकी स्थापना आज भी सभव होनी चाहिये। मेरा विश्वास हे कि रामराज्य था। राम यानी पच, पच यानी परमेश्वर। पच यानी लोकमत। जब लोकमत बनावटी नही होता तब वह शुद्ध होता हे। लोकमत पर रचा हुआ राज्य किसी जगहके लिअे रामराज्य है। अैसा तत्र हम आज भी कही कही देखते है। कुछ जमीदार आज सादेपनमे अपनी रैयतसे भी आगे बढ गये हैं और अुसमे ओतप्रोत हो जानेकी कोशिश करते है। यह सच नही है कि सब राजा लोग अपनी प्रजाको लूटने और चूसनेवाले ही होते हैं। अपने दौरोमे मैंने अच्छे बुरे दोनो तरहके लोग देखे हैं। सारे मालिक निर्दय और कठोर नही होते। यह सच हे कि गरीबोंके मित्र या रक्षक जैसा बरताव करनेवाले बहुतसे धनवान मैंने नही देखे। मैं यह भी

स्वीकार करता हू कि जिन्हे मैंने देखा है अुनमें सुधारकी गुंजाअिश ह। मै जिसे राक्षसी तंत्र कहता हू अुसमे मुझे यह अनुभव हुआ है। तंत्र लंकामें अगर विभीषण ही अेक अपवाद हो, तो अिसमें अचरज कैसा? जहा अेक भला है वहा अनेककी आशा जरूर रखी जा सकती ह। जब अपवाद बढ जाते है, तब वे नियमका रूप ले लेते है। यह तो मैंने जो सभव ह अुसकी बात कही। अितनेसे पूछनेवाले भाअीको सन्तोष नही हो सकता।

सभवको अस्तित्वमें लानेकी कोशिश सत्याग्रह है। सत्य यानी न्याय। न्यायी तंत्रका मतलब है सत्ययुग या स्वराज्य, धर्मराज्य, रामराज्य, लोकराज्य। अैसे तंत्रमें राजा प्रजाका रक्षक होता है, मित्र होता है। अुसके जीवन और प्रजाके गरीबसे गरीब आदमीके जीवनके बीच आजका जमीन आसमानका फर्क नही होगा। राजाके महल और प्रजाकी झोपडीके बीच अुचित साम्य होगा। दोनोकी जरूरतोंके बीच अगर कोअी फर्क होगा तो मामूली ही होगा। दोनोको शुद्ध हवा और पानी मिलेगा। प्रजाको जरूरी खुराक मिलेगी। राजा अपने भोजनमें से छप्पन भोगका त्याग करके सिर्फ छह भोगसे ही सतोष मानेगा। गरीब लोग अगर लकडी या मिट्टीके बरतनोंमे अपना काम चलायें, तो राजा भले तांबे-पीतलके बरतन अिस्तेमाल करे। सोने-चादीके बरतन अिस्तेमाल करनेका लोभ रखनेवाले राजा प्रजाको लूटनेवाले ही होने चाहियें। गरीबको पहनने-ओढनेके जरूरी कपडे मिलने चाहियें। राजा भले ज्यादा कपडे रखे, लेकिन अुसके कपडो और गरीबोंके कपडोंके बीचका भेद अीर्ष्या और द्वेष पैदा करानेवाला नही होना चाहिये। राजाके और रंकके बच्चे अेक ही प्राथमिक शालामे पढेंगे। राजा अपनेको प्रजाका आश्रयदाता नही मानेगा। अगर वह प्रजाकी सेवा करेगा, तो अुसे प्रजा पर किया हुआ अुपकार नही मानेगा। कर्तव्य-पालनमें अुपकारको कोअी जगह नही है। प्रजाकी सेवा करना राजाका धर्म है।

जिस प्रकार राजाका धर्म प्रजाका रक्षक और मित्र बनकर रहनेका है, अुसी प्रकार रंकका धर्म राजाका द्वेष न करनेका है। गरीबको यह जानना चाहिये कि अुसकी गरीबी बहुत हद तक अुसके अपने दोषोंके कारण ही है। गरीब अपनी हालत सुधारनेकी कोशिश तो करे, लेकिन राजासे द्वेष न करे, अुसका नाश न चाहे। वह राजाका सुधार ही चाहे। गरीब राजा बननेकी अिच्छा न रखे, अपनी जरूरतें पूरी करके सन्तुष्ट रहे। अिस तरह जिसमें दोनो अेक-दूसरेकी मदद करते रहे वही मेरी कल्पनाका स्वराज्य है।

मेरी रायमे अिस स्वराज्यको पानेके लिअे राजा और प्रजा दोनोंकी शिक्षामें महत्त्वका परिवर्तन करना जरूरी ह। आज लूटनेवाले और लुटनेवाले दोनो अंधेरेमे भटक रहे है। वे रास्ता भूल गये है। दोनोंमे से अेकको भी

हालत सहन करने लायक नही है। लेकिन राजाओ और धनिकोके गले यह बात जल्दी अुतरेगी नही। लेकिन अेकके गले अुतर जाय, तो दूसरेके गले अपने-आप अुतर जायगी, अिस नीतिके मुताबिक मैने रक या गरीबकी सेवा पसन्द की है। हर कोअी राजा नही हो सकता, लेकिन हर कोअी सबमे तो समा सकता है। अगर गरीब अपने हको और फर्जोको समझ ले, तो आज हमे स्वराज्य मिल सकता है। यह भान सत्याग्रहके जरिये जितनी तेजीसे हो सकता है, अुतनी तेजीसे दूसरे किसी तरीकेसे नही हो सकता। अिसका हमने पिछले १२ महीनोमे प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया है। अिस सत्याग्रहमे जितनी गदगी घुस गयी थी, अुस हद तक हमारी स्वराज्य-प्राप्तिमे बाधा पडी।

सत्याग्रह लोकशिक्षा और लोक-जागृतिका सबसे बडा साधन है। सत्याग्रहका दूसरा अर्थ आत्मशुद्धि है। राजवर्गके सामने हम सिर्फ आत्म-शुद्धिकी बात ही कर सकते है। अुस पर अिसका असर पडनेमे थोडा समय लगेगा। गरीब वर्ग तो हमेशा रहनुमाअीकी खोजमे ही रहता है, अुसे अपने दुखोका ज्ञान है, पर अुन्हे दूर करनेवाले अुपायका नही। अिसलिअे जो भी अुन्हे अुपाय बतानेवाला मिल जाता है, अुसीका अुपाय वे आजमाते है। अैसी हालतमे अगर कोअी सच्चे सेवक अुन्हे मिल जाते है, तो वे अुन्हे छोडते नही और अुनका अुपाय स्वीकार करते है। अिसलिअे अेक दृष्टिसे गरीब वर्ग जिज्ञासु कहा जायेगा। स्वराज्य भी अुसीके मारफत मिल सकता है। वह अपनी शक्तिको पहचाने और पहचानते हुअे भी मर्यादामें रहकर ही अुसका अुपयोग करे अितना हो जाय, तो मेरी कल्पनाका स्वराज्य आया समझिये। जब जनता अैसी शक्ति पा लेगी, तब वह विदेशी या देशी सरकार दोनोका सफलतासे मुकाबला कर सकेगी।

अिसलिअे कार्यकर्ताओका धर्म सिर्फ लोकसेवा ही है। लोकसेवा सत्य और अहिंसाके रास्तेसे ही हो सकती है। अुसमे जितनी गदगी घुसेगी अुतनी लोक-प्रगति रुकेगी।

अिसी बीच अगर राजवर्ग और धनिक-वर्ग जमानेके तकाजेको पहचाने, तो वे अपने पास रहे धन और धनोपार्जनकी शक्तिका मालिकाना हक छोडकर अुनके रक्षक या ट्रस्टी बन जायेगे, और चूकि रक्षकको भी अपनी जीविका कमानेका हक है अिसलिअे वे अुस धनका मर्यादित और जरूरी अुपयोग ही करेगे। अगर वे अैसा नही करेगे, तो राजा और प्रजा तथा अमीर और गरीबके बीचका जहरीला सघर्ष चला ही करेगा। सत्याग्रह अिस जहरको रोक सकेगा, अैसी आशासे मेरे जैसे लोग अुस शस्त्रको अपना सब कुछ अर्पण कर चुके है।

हरिजनसेवक, ३०–१०–'४१, पृ० ३०८–९

१३
मजदूरोका गणराज्य

['साप्ताहिक पत्र'से।]

लालकुर्तीवालोके थोडेसे प्रतिनिधियाका अेक शिष्ट-मडल गाधीजीसे मिला और अुसने अुनसे दिल खोलकर लम्बी बातचीत की। अुन लोगोने समझाया कि 'आपको कोअी शारीरिक हानि पहुचानेका हमारा हरगिज अिरादा नही था, आपकी जान और तन्दुरुस्ती हमे अुतनी ही प्यारी है जितनी और किसीको। और व्यक्तिगत आतकवाद हमारा धर्म नही है।' हा, अस्थायी सधिके* अपने विरोध पर वे अटल थे। अुनका विश्वास है कि अुससे भारतवर्षमे मजदूरो और किसानोके स्वतत्र गणराज्यका अुनका ध्येय प्राप्त करनेमे कोअी सहायता नही मिल सकती। गाधीजीने अुन्हे अुमडते हुअे प्रेमसे कहा, "लेकिन् मेरे प्यारे नौजवानो, बिहारमे जाकर देखो तो तुम्हे पता चलेगा कि वहा मजदूरो और किसानोका गणराज्य काम कर रहा है। जहा दस वर्ष पहले भय और गुलामी थी, वहा आज साहस, वीरता और अन्यायका विरोध नजर आ रहा है। यदि तुम पूजीको नेस्तनाबूद करना चाहते हो या धनवानो या पूजीपतियोको मिटा देना चाहते हो, तो अिसमे तुम्हे कभी सफलता नही मिलेगी। तुम्हे करना यह चाहिये कि पूजीपतियोको मजदूरोकी ताकतका प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा दो। फिर वे अुन लोगोके लिअे, जो अुनके खातिर घोर परिश्रम करते है, सरक्षक बनना मजूर कर लेंगे। मै मजदूरो और किसानोके लिअे अिससे अधिक कुछ नही चाहता कि अुन्हे खाने, रहने और पहननेको काफी मिल जाय और वे स्वाभिमानी मनुष्योकी तरह साधारण आरामसे रह सके। यह स्थिति पैदा हो जानेके बाद अुनमे से अुमदा दिमागवाले जरूर औरोकी अपेक्षा अधिक धन कमायेंगे। परन्तु मैं तुम्हे बता चुका हू कि मैं क्या चाहता हू। मैं चाहता हू कि धनवान अपने धनको गरीबोकी धरोहर समझे या अपनेको अुनकी सेवामे अर्पित कर दे। क्या तुम्हे मालूम है कि मैंने टॉल्स्टाय फार्मकी स्थापना की, तब अपनी तमाम जायदाद छोड दी थी? रस्किनकी 'अन्टु दिस लास्ट' पुस्तकने मुझे प्रेरणा दी थी और मैंने अुसीके ढग पर अपने फार्मकी स्थापना की थी। अब तुम स्वीकार करोगे कि अेक तरहसे मैं तुम्हारे किसानो और मजदूरोके गणराज्यका 'सस्थापक सदस्य' हू। और तुम अिस

---

* १९३१ मे हुआ गाधी-अिर्विन समझौता।

चीजको अधिक मूल्यवान समझते हो — धनको या श्रमको ? मान लो कि तुम सहाराके रेगिस्तानमे फस गये और तुम्हारे पास गाडियो रुपया-पैसा है। वह तुम्हारे क्या काम आयेगा ? परतु यदि तुम श्रम कर सकते हो, तो तुम्हे भूखे रहनेकी जरूरत नही होगी। तो फिर धनको श्रमसे अधिक अच्छा कैसे समझा जाये ? अहमदावाद जाकर वहाके मजदूर-सघको आखोसे देखो कि वह कैसा काम कर रहा है, तब तुम्हे पता चलेगा कि वे अपना खुदका गणराज्य स्थापित करनेकी कैसी कोशिश कर रहे है।

यग अिडिया, २–४–'३१, पृ० ५८–५९

१४

समाजवादी कौन ?

समाजवाद अेक सुन्दर शब्द है और जहा तक मुझे मालूम है, समाजवादमे समाजके सब सदस्य बराबर होते है — न कोअी नीचा होता हे, न कोअी अूचा। किसी व्यक्तिके शरीरमे सिर सबसे अूपर होनेके कारण अूचा नही होता और न पैरके तलवे जमीनको छूनेके कारण नीचे होते है। जैसे व्यक्तिके शरीरके सब अग बराबर होते है, वैसे ही समाजरूपी शरीरके मारे अग भी बराबर होते है। यही समाजवाद है।

अुसमे राजा और प्रजा, अमीर और गरीब, मालिक और मजदूर मब अेक स्तर पर होते है। धर्मकी भाषामे कहे तो समाजवादमे द्वैत या भेदभाव नही होता। सर्वत्र अेकता, अद्वैतका प्रभुत्व होता हे। ससार भरके ममाजको देखे तो द्वैत या अनेकताके सिवा कुछ नही दिखाअी देता। अेकता या अद्वैतका नाम-निशान नही दिखाअी देता। यह आदमी अूचा है, वह नीचा है, यह हिन्दू है, वह मुसलमान है, तीसरा अिसाअी है, चौथा पारसी है, पाचवा सिक्ख है और छठा यहूदी है। अिनमें भी बहुतसी अुप-जातिया है। मेरी कल्पनाकी अेकता या अद्वैतवादमें सब अेक हो जाते है, अेकतामें समा जाते है।

अिस अवस्था तक पहुचनेके लिअे हम अेक-दूसरेकी तरफ देखते नही रह सकते। जब तक सारे लोग समाजवादी न बन जाये तब तक हम कोअी हलचल न करे, अपने जीवनमे कोअी फेरफार न करके भाषण देते रहे और बाज पक्षीकी तरह जहा शिकार मिल जाय वहा अुस पर झपट पडे — यह समाजवाद नही है। समाजवाद जैसी शानदार चीज झपट्टा मारनेसे हमसे दूर ही जानेवाली है।

समाजवाद पहले समाजवादीसे शुरू होता है। अगर अैसा अेक भी समाजवादी हो तो आप अुस पर शून्य बढा सकते हैं। पहले शून्यमे अुसकी ताकत दस गुनी हो जायगी। अुसके बाद हरअेक शून्यका अर्थ पिछली संख्यासे दस गुना होगा। परन्तु यदि आरंभ करनेवाला स्वयं ही शून्य हो, दूसरे शब्दोंमें कोअी भी आरंभ नही करे, तो कितने ही शून्योंके बढ जाने पर भी परिणाम शून्य ही होगा। शून्योंके लिखनेमें जितना समय और कागज खर्च होगा वह भी व्यर्थ ही जायेगा।

यह समाजवाद स्फटिककी तरह शुद्ध है। अिसलिअे अिसे सिद्ध करनेके साधन भी शुद्ध होने ही चाहिये। अशुद्ध साधनोंसे प्राप्त होनेवाला साध्य भी अशुद्ध ही होता है। अिसलिअे राजाका सिर काट डालनेसे राजा और प्रजा बराबर नहीं हो जायेंगे। और न मालिकका सिर काटनेसे मालिक और मजदूर बराबर हो जायेंगे। हम असत्यसे सत्यको प्राप्त नहीं कर सकते। सत्यमय आचरण द्वारा ही सत्यको प्राप्त किया जा सकता है। क्या अहिंसा और सत्य दो चीजें हैं ? हरगिज नहीं। अहिंसा सत्यमें और सत्य अहिंसामें छिपा हुआ है। अिसीलिअे मैंने कहा है कि वे अेक ही सिक्केके दो पहलू हैं। वे अेक-दूसरेसे अभिन्न हैं। सिक्केको किसी भी तरफसे पढ लीजिये। केवल पढनेमें ही फर्क है — अेक तरफ अहिंसा है, दूसरी तरफ सत्य। दोनोंका मूल्य अेक ही है। सम्पूर्ण शुद्धताके बिना यह दिव्य स्थिति अप्राप्य है। मन या शरीरकी अशुद्धि रखी और आपमें असत्य और हिंसा आअी।

अिसीलिअे सत्यपरायण, अहिंसक और शुद्ध-हृदय समाजवादी ही भारत और संसारमें समाजवादी समाज स्थापित कर सकेंगे। जहां तक मैं जानता हूं, संसारमें कोअी भी देश अैसा नहीं है जो शुद्ध समाजवादी हो। अुपरोक्त साधनोंके बिना अैसे समाजका अस्तित्वमें आना असम्भव है।

हरिजन, १३–७–'४७, पृ० २३२

१५

सत्य और अहिंसा — समाजवादके मूल आधार

समाजवादीको सत्य और अहिंसाकी मूर्ति होना चाहिये। और अिनके लिअे अीश्वरमें अुसकी जीती-जागती श्रद्धा होनी चाहिये। सत्य और अहिंसाका यंत्रकी तरह पालन करना कसौटीके वक्त काम नहीं देता। अिसलिअे मैंने कहा है कि सत्य ही परमेश्वर है।

यह परमेश्वर चेतनामय शक्ति है। जीव भी अिसी शक्तिसे बना हुआ है। यह जीव शरीरमें रहता है, मगर वह खुद शरीर नहीं है। अिस महान शक्तिके अस्तित्वसे अिनकार करनेवाला व्यक्ति अपनेमें रहनेवाली अिस अखूट शक्तिसे वंचित रहकर अपंग बनता है। बेपतवारकी नावकी तरह वह अिधर-अुधर टकराता है और आखिरमें कहीं भी पहुंचे बिना बरबाद हो जाता है। यह हालत हममें से बहुतोंकी होती है। अैसे लोगोंका समाजवाद कहीं भी नहीं पहुंचता। करोड़ों मनुष्यों तक अुनके पहुंचनेकी तो बात ही दूर है।

यह सारी बात अगर सच हो तो क्या अीश्वरमें श्रद्धा रखनेवाला कोअी समाजवादी नहीं होगा? अगर हो तो अुसने प्रगति क्यों नहीं की? अीश्वर-भक्त तो बहुतसे हो गये। अुन्होंने क्यों नहीं समाजवाद कायम किया?

अिन दो शंकाओंका सचोट जवाब देना मुश्किल है। फिर भी मैं मानता हूं कि अीश्वरको माननेवाले समाजवादीको अैसा कभी नहीं लगा होगा कि समाजवादका आस्तिकतासे कोअी सीधा सबंध है। शायद अीश्वर-भक्तोंको समाजवादकी जरूरत ही न रही हो। अीश्वर-भक्तोंके मौजूद रहते हुअे भी दुनियामें वहम कहां नहीं देखनेमें आते? हिन्दू धर्ममें अीश्वर-भक्तोंके होते हुअे भी छुआछूत जैसे महान कलंकने क्या समाज पर राज्य नहीं किया?

अीश्वर-तत्त्व क्या है, अुसमें कितनी शक्ति छिपी हुअी है, यह हमेशा खोजका विषय रहा है।

मेरा यह दावा रहा है कि अिसी खोजमें से सत्याग्रहकी खोज हुअी है। यह नहीं कहा जा सकता कि सत्याग्रहसे सबंध रखनेवाले सारे कायदे बन गये हैं। मैं यह भी नहीं कहता कि अिसके सारे कायदे मैं जानता हूं। मगर मैं अितना दृढ़तासे कह सकता हूं कि सत्याग्रहसे जो कुछ भी पाने जैसा है वह सब पाया जा सकता है। सत्याग्रह बड़ेसे बड़ा साधन

है, हथियार है। मेरी रायमें समाजवाद तक पहुचनेका अिसके सिवा दूसरा कोअी रास्ता नहीं है।

सत्याग्रहके जरिये समाजके सारे राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक रोगोको मिटाया जा सकता है।

हरिजनसेवक, २०-७-'४७, पृ० २०४

१६

मेरा समाजवादी होनेका दावा तथाकथित समाजवादके बाद भी जिंदा रहेगा

[श्री प्यारेलालजी द्वारा लिखित 'चार साल बाद'के महत्त्वपूर्ण अंश।]

लुअी फिशर* ने विधान-निर्मात्री सभा पर बातचीत शुरु की। "मैं विधान-निर्मात्री सभामे जाकर अेक अलग ही मतलब हल करूगा — अुसे लडाअीका मैदान बना दूगा — और अुसे सर्वोपरि सत्तावाली सभा जाहिर कर दूगा। अिस बारेमें आपकी क्या राय है?"

गाधीजीने कहा "दूसरेकी खडी की हुअी चीजको सर्वोपरि सत्ता जाहिर कर देनेसे कोअी फायदा नही होगा, आखिर तो वह अग्रेजोकी ही बनाअी हुअी है। सिर्फ अधिकार जता देनेसे कोअी सभा सर्वोपरि सत्तावाली नही बन जाती। सर्वसत्ताधारी बननेके लिअे आपको वैसा बरताव भी करना होगा। जोहानिसबर्गकी टूले स्ट्रीटके तीन दर्जियोने मिलकर अैलान किया था कि वे सर्वसत्ताधारी है। लेकिन अुससे कोअी नतीजा नही निकला। वह कोरा मजाक ही साबित हुआ।

"फिर भी मै प्रस्तावित विधान-निर्मात्री सभाको क्रातिकारी ही मानता हू। मैने यह कहा है और मै सोलह आने अिस बातको मानता हू कि प्रस्तावित विधान-निर्मात्री सभा रचनात्मक ढगसे सविनय आज्ञाभगका अेक पुर-असर अेवज है। हालाकि मै हमारे समाजवादी मित्रोकी कुरबानी और आत्म-सयमकी भावनाकी बडीसे बडी कदर करता हू, फिर भी अुनके और मेरे तरीकोमे जो स्पष्ट फर्क है अुसे मैने कभी छिपाया नही। वे जाहिरा तौर पर हिंसा और अुससे सम्बन्ध रखनेवाली बातोमे विश्वास रखते है, जब कि मेरे लिअे अहिंसा ही सब कुछ है।"

---

* लुअी फिशर, सुप्रसिद्ध अमेरिकन पत्रकार।

अिससे बातचीतका विषय समाजवादकी ओर मुडा। श्री फिशरने बीचमे ही कहा "जैसे आप समाजवादी हैं, वैसे ही वे भी हैं।"

गाधीजी "सच्चा समाजवादी तो मैं हू, वे नही। अुनमे से कअियोके पैदा होनेसे पहले भी मैं समाजवादी था। जोहानिसबर्गके अेक अुग्र समाजवादीको मैंने अपने समाजवादी होनेका यकीन करा दिया था। लेकिन अिस बातके कहनेसे यहा कोअी मतलब हासिल नही होगा। मेरा यह दावा तो तब भी कायम रहेगा, जब अुनका समाजवाद मिट जायेगा।"

फिशर "आपके समाजवादसे आपका क्या अर्थ है?"

गाधीजी "मेरे समाजवादका अर्थ हे 'सर्वोदय'। मै गूगे, बहरे और अधोको मिटाकर अुठना नही चाहता। अुनके समाजवादमे अिन लोगोके लिअे कोअी जगह नही है। भौतिक अुन्नति ही अुनका अेकमात्र मकसद हे। मसलन्, अमेरिकाका मकसद है कि अुसके हर शहरीके पास अेक मोटर हो। मेरा यह मकसद नही। मै अपने व्यक्तित्वके पूर्ण विकासके लिअे आजादी चाहता हू। अगर मैं चाहू तो आसमानमें टिमटिमाते तारो तक पहुचनेकी निसैनी बनानेकी आजादी मुझे मिलनी चाहिये। अिसका मतलब यह नही कि मै अैसी कोअी बात करूगा ही। दूसरी तरहके समाजवादमे व्यक्तिगत आजादी नही है। अुसमे आपका कुछ नही होता, आपका अपना शरीर भी आपका नही होता।"

फिशर "हा, लेकिन समाजवादके भी कअी प्रकार है। सुधरे हुअे रूपमे मेरे समाजवादका अर्थ यह है कि हर चीज पर स्टेटका हक नही हे। पर रूसमें अैसा ही है। वहा सचमुच आपके शरीर पर भी आपका हक नही होता। बिना किसी गुनाहके आप किसी भी वक्त गिरफ्तार किये जा सकते हैं। वे आपको जहा चाहे वहा भेज सकते हैं।"

गाधीजी "क्या आपके समाजवादमे राज्यका आपके बच्चो पर अधिकार नही होता? और क्या वह अुन्हे मनचाहे तरीकेसे तालीम नही देता?"

फिशर "सभी राज्य अैसा करते है। अमेरिका भी अैसा ही करता है।"

गाधीजी "तब तो रूस और अमेरिकामें कोअी बडा फर्क नही हे।"

फिशर "आप असलमें तानाशाहीका विरोध करते हैं।"

गाधीजी "लेकिन अगर समाजवाद तानाशाही नही है तो निकम्मे लोगोका शास्त्रभर है। मैं अपने आपको साम्यवादी भी कहता हू।"

फिशर "नही, नही, अैसा न कहिये। अपनेको साम्यवादी कहना आपके लिअे बडी खतरनाक बात है। मैं वही चाहता हू, जो आप चाहते हैं, जो जयप्रकाश और दूसरे समाजवादी चाहते हैं—अेक आजाद दुनिया।

लेकिन साम्यवादी अैसा नही चाहते। वे अैसा कायदा चाहते है जो शरीर और मन दोनोको गुलाम बना दे।"

गाधीजी "क्या मार्क्सके बारेमे भी आपके यही खयाल है?"

फिशर "साम्यवादियोने अपने मतलबके अनुसार मार्क्सवादको तोड-मरोड लिया है।"

गाधीजी "लेनिनके बारेमे आपकी क्या राय है?"

फिशर "लेनिनने अिसकी शुरुआत की थी। स्टालिनने अुसे पूरा कर दिया। जब साम्यवादी आपके पास आते है तो वे काग्रेसमे शामिल होना चाहते है और अुस पर कब्जा करके अुसे अपनी स्वार्थसिद्धिका साधन बनाना चाहते है।"

गाधीजी "समाजवादी भी अैसा ही करते है। मेरा साम्यवाद समाजवादसे ज्यादा भिन्न नही है। वह दोनोका मीठा मेल है। साम्यवाद, जैसा कि मैने अुसे समझा हे, समाजवादका कुदरती परिणाम है।"

फिशर "हा, आप ठीक कहते है। अेक समय था जब दोनोमे फर्क करना कठिन था। लेकिन आज साम्यवादियो और समाजवादियोमे बडा फर्क है।"

गाधीजी "तो क्या आपका मतलब यह हे कि आप स्टालिन-मार्का साम्यवाद नही चाहते?"

फिशर "लेकिन हिन्दुस्तानी साम्यवादी हिन्दुस्तानमे स्टालिन-मार्का साम्यवाद ही कायम करना चाहते है। और अुसके लिअे आपके नामका नाजायज फायदा अुठाना चाहते है।"

गाधीजी "लेकिन अिसमे वे कामयाब नही होगे।"

हरिजनसेवक, ४–८–'४६, पृ० २५०

१७

अहिंसक समाजवादी व्यवस्था

श्री जयप्रकाश नारायणने मेरे पास अेक प्रस्तावका नीचे लिखा मसविदा भेजा था, और मुझे लिखा था कि अगर मैं अिस प्रस्तावमे दी गअी तसवीरसे सहमत होअू, तो अिसे रामगढमे होनेवाली काग्रेस कार्य-समितिके सामने पेश कर दू। प्रस्ताव अिस प्रकार था

"काग्रेस और देशके सामने आज अेक महान राष्ट्रीय अुथल-पुथलका अवसर अुपस्थित है। आजादीकी आखिरी लडाअी जल्दी ही लडी जानेवाली है, और यह सब अैसे समय हो रहा है जब महान शक्तिशाली परिवर्तनोके द्वारा सारा ससार जडसे हिलाया जा रहा है। दुनियाभरके विचारक लोग आज अिस बातके लिअे चिंतित है कि अिस यूरोपीय युद्धके महानाशमे से अेक अैसी नयी दुनियाका जन्म हो, जिसकी जड राष्ट्रो-राष्ट्रो और मनुष्यो-मनुष्योके बीचके सद्भावपूर्ण सहयोग पर कायम की गअी हो। अैसे समय काग्रेस स्वतत्रताके अपने अुन आदर्शोको निश्चित रूपसे व्यक्त कर देना आवश्यक समझती है, जिन पर कि वह अडी हुअी है और जिनके लिअे वह जल्दी ही देशकी जनताको अधिकसे अधिक कष्ट सहनेका न्यौता देनेवाली है।

"स्वतत्र भारतीय राष्ट्रका काम होगा कि वह राष्ट्रोके बीच शान्तिकी स्थापना करे, सम्पूर्ण नि शस्त्रीकरणके लिअे यत्नशील रहे और राष्ट्रीय झगडोको किसी स्वतत्रतापूर्वक स्थापित आन्तर-राष्ट्रीय सत्ता द्वारा शान्तिपूर्वक निबटानेकी कोशिश करे। वह खास तौर पर अपने पडोसी देशोके साथ, फिर वे महान शक्तिशाली साम्राज्य हो या छोटे-छोटे राष्ट्र, मित्र बनकर रहनेका यत्न करेगा और किसी भी विदेशी राज्य या प्रदेश पर अपना अधिकार जमानेकी अिच्छा न करेगा।

"देशके सभी कायदे-कानून सर्व-साधारण जनता द्वारा स्वतत्रतापूर्वक व्यक्त की गअी अिच्छाके अनुसार बनाये जायेगे, और देशमें शान्ति और सुव्यवस्था कायम रखनेका अन्तिम आधार जन-साधारणकी स्वीकृति और सम्मति पर ही रहेगा।

"स्वतत्र भारतीय राष्ट्रमे जनताको सम्पूर्ण व्यक्तिगत और नागरिक स्वतत्रता होगी और सास्कृतिक तथा धार्मिक मामलोमे पूरी आजादी दी जायेगी। पर अिसका यह मतलब नही होगा कि हिन्दुस्तानकी जनता

अपनी सविधान-सभा द्वारा अपने लिअे जो शासन-विधान तैयार करेगी, अुसको हिंसा द्वारा अुलट देनेकी आजादी किसीको रहेगी।

"देशकी राष्ट्रीय सरकार राष्ट्रके नागरिकोंके बीच किसी प्रकारका भेदभाव न रखेगी। प्रत्येक नागरिकको समान अधिकार रहेंगे। जन्म और परम्पराके कारण मिलनेवाली सभी सुविधायें या भेदभाव मिटा दिये जायगे। न तो सरकार द्वारा किसीको कोअी पद या अुपाधि दी जायगी और न परम्परागत सामाजिक दरजेके कारण ही कोअी किसी अुपाधिका हकदार माना जायगा।

"राज्यका राजनीतिक और आर्थिक सगठन सामाजिक न्याय और आर्थिक स्वतत्रताके सिद्धान्तो पर किया जायेगा। अिस सगठनके फलस्वरूप जहा समाजके प्रत्येक व्यक्तिकी राष्ट्रीय आवश्यकताओंकी पूर्ति होगी, तहा अिसका अुद्देश्य केवल भौतिक आवश्यकताओंकी तृप्ति ही न रहेगा, बल्कि अपेक्षा यह रखी जायेगी कि अिसके कारण राष्ट्रका हरअेक व्यक्ति स्वास्थ्यपूर्ण जीवन बिता सके और अपना नैतिक तथा बौद्धिक विकास कर सके। अिसके लिअे और समाजमे समताकी भावना स्थापित करनेके लिअे राज्य द्वारा छोटे पैमाने पर चलनेवाले अैसे अुद्योग-धधोको प्रोत्साहित किया जायेगा, जो व्यक्तियो द्वारा या सहकारी सस्थाओ द्वारा सभीके समान हितकी दृष्टिसे चलाये जायेंगे। बडे पैमाने पर सामूहिक रूपसे चलनेवाले सभी अुद्योग-धधोको अन्तमे जाकर अिस तरह चलाना होगा कि जिससे अुनका अधिकार और आधिपत्य व्यक्ति-योके हाथसे निकलकर समाजके हाथमे आ जाये। अिस लक्ष्यकी सिद्धिके लिअे राज्य यातायातके भारी साधनो, व्यापारी जहाजो, खानो और दूसरे बडे-बडे अुद्योग-धधोका राष्ट्रीयकरण शुरू कर देगा। वस्त्र-व्यवसायका प्रबध अिस तरह किया जायेगा कि जिससे अुत्तरोत्तर अुसका केन्द्रीकरण रुके और विकेन्द्रीकरण बढे।

"गावोके जीवनका पुन सगठन किया जायेगा, अुन्हे स्वतत्र शासित अिकाअी बनाया जायेगा और जहा तक सभव होगा अधिकसे अधिक स्वावलम्बी बनानेका यत्न किया जायेगा। देशके जमीन-सम्बन्धी कानूनोंमें जड-मूलसे सुधार किया जायेगा, और यह सुधार अिस सिद्धान्त पर होगा कि जमीनका मालिक अुसे जोतनेवाला ही हो सकता है। और हर काश्तकारके पास अुतनी ही जमीन होनी चाहिये, जितनीसे वह अपने परिवारका अुचित रीतिसे भरण-पोषण कर सके। अिससे जहा अेक ओर जमीदारीकी अनेक प्रथाये बन्द हो जायेंगी, तहा खेतीमें गुलामीकी प्रथा भी नष्ट हो जायेगी।

"राज्य वर्गोके हितो या स्वार्थोकी रक्षा करेगा। लेकिन जब ये स्वार्थ गरीबो या पद-दलितोके स्वार्थमे बाधक होगे, तो राज्य गरीबो और पद-दलितोके स्वार्थकी रक्षा करके सामाजिक न्यायकी तुलाको समतौल रखेगा।

"राज्यकी मालिकीवाले और राज्यकी व्यवस्थामे चलनेवाले सभी अुद्योग-धधोके प्रवधमे मजदूरोको अपने चुने हुअे प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार रहेगा और अिस प्रवधमे अुनका हिस्सा सरकारके प्रतिनिधियोके बराबर होगा।

"देशी राज्योमे सम्पूर्ण प्रजातत्रात्मक सरकारे स्थापित होगी और नागरिकोकी समताके तथा सामाजिक भेदभावको मिटानेके सिद्धान्तके अनुसार राजाओ और नवाबोके रूपमे देशी रियासतोमे कोअी नामधारी शासक नही रहेगे।"

मुझे श्री जयप्रकाशका यह प्रस्ताव पसन्द आया और मैने कार्य-समितिको अुनका पत्र और प्रस्तावका यह मसविदा पढकर सुनाया। लेकिन समितिने यह सोचा कि रामगढ काग्रेसमे अेक ही प्रस्ताव पास करनेकी बात पर डटे रहना जरूरी है, और पटनामे जो मूल प्रस्ताव पास हुआ था अुसमें किसी प्रकारका परिवर्तन करना अिष्ट नही है। समितिकी यह दलील निरपवाद थी, अिसलिअे प्रस्तुत प्रस्तावके गुण-दोषोकी चर्चा किये बिना ही अुसे छोड दिया गया। मैने श्री जयप्रकाशको अपने प्रयत्नके परिणामसे सूचित कर दिया। अुन्होने मुझे लिखा कि अिसके बाद अुनको सतोष देनेवाली सबसे अच्छी बात यह होगी कि मै अुनके अिस प्रस्तावको अपनी पूरी सहमति या जितनी मै दे सकू अुतनी सहमतिके साथ प्रकाशित कर दू।

श्री जयप्रकाशकी अिस अिच्छाको पूरा करनेमे मुझे कोअी कठिनाअी नही मालूम होती। अेक अैसे आदर्शके नाते, जिसे देशके स्वतत्र होते ही हमे कार्यरूपमे परिणत करना है, मै श्री जयप्रकाशकी अेक सूचनाको छोडकर शेष सभी सूचनाओका आम तौर पर समर्थन करता हू।

मेरा दावा है कि आज हिन्दुस्तानमे जो लोग समाजवादको अपना ध्येय मानते है, अुनसे बहुत पहले मै समाजवादको स्वीकार कर चुका था। लेकिन मेरा समाजवाद मेरे लिअे सहज और स्वाभाविक था और पुस्तकोसे ग्रहण नही किया गया था। वह अहिंसामे मेरे अटल विश्वासका ही परिणाम था। कोअी भी आदमी, जो सक्रिय अहिंसामे विश्वास करता है, सामाजिक अन्यायको, फिर वह कही भी क्यो न होता हो, बरदाश्त नही कर सकता — वह अुसका विरोध किये बिना रह नही सकता। जहा तक मै जानता हू,

दुर्भाग्यवश पश्चिमके समाजवादियोने यह मान लिया है कि अपने समाजवादी सिद्धान्तोको वे हिंसा द्वारा ही अमलमें ला सकते है।

मैं सदासे यह मानता आया हू कि नीचसे नीच और कमजोरसे कमजोरके प्रति भी हम जोर-जवरदस्तीके जरिये सामाजिक न्यायका पालन नही कर सकते। मै यह भी मानता आया हू कि पतितसे पतित लोगोको भी सही तालीम दी जाये, तो अहिंसक सावनो द्वारा सव प्रकारके अत्याचारोका प्रतिकार किया जा सकता है। अहिंसक असहयोग ही अुसका मुख्य साधन है। कभी कभी असहयोग भी अुतना ही कर्तव्य-रूप हो जाता है जितना कि सहयोग। अपनी वरवादी या गुलामीमें खुद सहायक होनेके लिअे कोअी वधा हुआ नही है। जो स्वतत्रता दूसरोके प्रयत्नो द्वारा — फिर वे कितने ही अुदार क्यो न हो — मिलती है, वह अुन प्रयत्नोके न रहने पर कायम नही रखी जा सकती। दूसरे शब्दोमें, अैसी स्वतत्रता सच्ची स्वतत्रता नही है। लेकिन जव पतितसे पतित भी अहिंसक असहयोग द्वारा अपनी स्वतत्रता प्राप्त करनेकी कला सीख लेते है, तो वे अुसके प्रकाशका अनुभव किये विना नही रह सकते।

अिसलिअे जव मैंने श्री जयप्रकाशके अिस प्रस्तावको पढा और देखा कि वे देशमे जिस प्रकारकी शासन-व्यवस्था कायम करना चाहते है, अुसका आधार अुन्होने अहिंसाको ही माना है तो मुझे खुशी हुअी। मेरा यह पक्का विश्वास है कि जिस चीजको हिंसा कभी नही कर सकती, वही अहिंसात्मक असहयोग द्वारा सिद्ध की जा सकती है, और अुससे अन्तमें जाकर अत्याचारियोका हृदय-परिवर्तन भी हो सकता है। हमने हिन्दुस्तानमें अहिंसाको अुसके अनुरूप अवसर अभी तक दिया ही नही है। फिर भी आश्चर्य है कि अपनी अिस मिलावटी अहिंसा द्वारा भी हमने अितनी शक्ति प्राप्त कर ली है।

जमीनके वारेमे श्री जयप्रकाशकी सूचनाये भडकानेवाली हो सकती है, लेकिन वे दरअसल वैसी है नही। सभ्योचित जीवनके लिअे जितनी जमीनकी आवश्यकता है, अुससे अधिक किसी आदमीके पास नही होनी चाहिये। अैसा कौन हे जो अिस हकीकतसे अिनकार कर सके कि आम जनताकी घोर गरीवीका मुख्य कारण आज यही है कि अुसके पास अुसकी अपनी कही जानेवाली कोअी जमीन नही है?

लेकिन यह याद रखना चाहिये कि अिस तरहके सुधार तावडतोड नही किये जा सकते। अगर ये सुधार अहिंसात्मक तरीकोंसे करने है, तो धनिको और निर्धनोको सुशिक्षित वनाना लाजिमी हो जाता है। धनिकोको यह विश्वास दिलाना होगा कि अुनके साथ कभी जोर-जवरदस्ती नही की जायेगी, और निर्धनोको यह सिखाना और समझाना होगा कि अुनकी मरजीके खिलाफ

अुनसे जवरन कोअी काम नही ले सकता, और कष्ट-सहन या अहिंसाकी कलाको सीखकर वे अपनी स्वतत्रता प्राप्त कर सकते है। अगर अिस लक्ष्यको हमे प्राप्त करना है, तो अूपर मैने जिस शिक्षाका जिक्र किया है अुसका प्रारम्भ अभीसे हो जाना चाहिये। अिसके लिअे पहली जरूरत अैसा वातावरण तैयार करने की है, जिसमे पारस्परिक आदर और सद्भावका साम्राज्य हो। अुस अवस्थामे वर्गो और आम जनताके वीच किसी प्रकारका कोअी हिंसात्मक सघर्ष नही हो सकता।

अिसलिअे यद्यपि अहिंसाकी दृष्टिसे श्री जयप्रकाशकी सूचनाओका सामान्य समर्थन करनेमे मुझे कोअी कठिनाअी नही मालूम होती, तो भी मै राजाओ सम्वन्धी अुनकी सूचनाका समर्थन नही कर सकता। कानूनकी दृष्टिसे वे स्वतत्र है। यह सच है कि अुनकी स्वतत्रताका कोअी विशेष मूल्य नही है, क्योकि अेक प्रवल शक्ति अुनका सरक्षण करती है। लेकिन वे अपनी स्वतत्रताका दावा कर सकते है, जव कि हम नही कर सकते। श्री जयप्रकाशकी प्रस्तावित सूचनाओमे जो वाते कही गअी है, अुनके अनुसार अगर अहिंसात्मक साधनो द्वारा हम स्वतत्र हो जाये, तो अुस हालतमे मै अैसे किसी समझौतेकी कल्पना नही कर सकता, जिसमे राजा लोग अपनेको खुद ही मिटानेके लिअे तैयार होगे। समझौता किसी भी तरहका क्यो न हो, राष्ट्रको अुसका पूरा-पूरा पालन करना ही होगा। अिसलिअे मै तो सिर्फ अैसे समझौतेकी ही कल्पना कर सकता हू, जिसमे वडी-वडी रियासते अपने दरजेको कायम रखेगी। अेक तरहसे वह चीज आजकी स्थितिसे कही वढकर होगी, लेकिन दूसरी दृष्टिसे राजाओकी सत्ता अितनी सीमित रह जायेगी कि जिससे देगी रियासतोकी प्रजाको अपनी रियासतोमे स्वायत्त शासनके वे ही अधिकार प्राप्त रहेगे, जो हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोकी जनताको प्राप्त रहेगे। अुनको भाषण, लेखन तथा मुद्रणकी स्वतत्रता और शुद्ध न्याय प्राप्त रहेगा। शायद श्री जयप्रकाशको यह विश्वास नही है कि राजा लोग स्वेच्छासे अपनी निरकुशताका त्याग कर देगे। मुझे यह विश्वास है। अेक तो अिसलिअे कि वे भी हमारी ही तरह भले आदमी है और दूसरे अिसलिअे कि मेरा शुद्ध अहिंसाकी अमोघ शक्तिमे सम्पूर्ण विश्वास है। अत अन्तमे मै यह कहना चाहता हू कि क्या राजा-महाराजा और क्या दूसरे लोग सभी सच्चे और अनुकूल वन जायगे, जव हम खुद अपने प्रति, अपनी श्रद्धाके प्रति — यदि हममे श्रद्धा है — और राष्ट्रके प्रति सच्चे वनेगे। अिस समय तो हममें अैसा वननेकी पूरी श्रद्धा नही है। अैसी अधकचरी श्रद्धासे स्वतत्रताका मार्ग कभी नही प्राप्त किया जा सकता। अहिंसाका प्रारभ और अन्त आत्म-निरीक्षणमे होता हे — 'जिन खोजा तिन पाअिया गहरे पानी पैठ।'

हरिजनसेवक, २०-४-'४०, पृ० ८०-८२

१८

अहिंसा और राज्य

लन्दनके अेक भाअीने अहिंसाके अमलके बारेमे सात सवाल पूछे है। हालाकि 'यग अिंडिया' या 'हरिजन' मे अिस तरहके मवालोके जवाब दिये जा चुके है, तो भी अगर अिन जवाबोमे कुछ मदद मिल सकती है, तो अेक ही लेखमे सब सवालोके जवाब दे देना फायदेमन्द होगा।

प्र० — १ क्या किसी मौजूदा हुकूमतके लिअे, जो लाजिमी तौर पर हिंसाके बल चलती है, यह मुमकिन है कि वह अुपद्रव (बलवा) करनेवालोकी अन्दरूनी और बाहरी ताकतोको रोकनेके लिअे अहिंसात्मक लडाअी लड सके? या जो लोग अहिंसात्मक ढगसे अुपद्रवोको रोकना चाहते है, क्या अुनके लिअे यह जरूरी है कि वे राज्याधिकारको छोडकर बिलकुल निजी तौर पर विरोधियोके सामने खडे हो जाय?

अु० — हिंसाके बल पर चलनेवाली हुकूमतके लिअे अन्दरूनी या बाहरी किसी भी तरहके अुपद्रवोको अहिंसात्मक ढगसे शान्त करना मुमकिन नही है। आदमी अीश्वर और धनकी पूजा अेकसाथ नही कर सकता और न वह अेकसाथ शान्त और क्रुद्ध रह सकता है। दावा यह है कि राज्य अहिंसाके बल पर चल सकता है, यानी वह दुनियाकी सारी हथियारबन्द ताकतोके खिलाफ अहिंसात्मक लडाअी लड सकता है। अैसा राज्य अशोकका था। फिरसे वैसा राज्य कायम किया जा सकता है। लेकिन अगर यह साबित कर दिया जाय कि अशोकका राज्य अहिंसाके बल नही चलता था, तो भी अुससे यह दावा कमजोर नही पडता। अिसके गुण-दोष पर ही अिसकी जाच होनी चाहिये।

प्र० — २ क्या आप समझते है कि काग्रेसी सरकार बाहरी और अन्दरूनी अुपद्रवोको बिलकुल अहिंसात्मक ढगसे शान्त कर सकेगी?

अु० — बेशक, काग्रेसी सरकारके लिअे यह मुमकिन है कि वह बाहरी हमलो और अन्दरूनी बलवोको अहिंसात्मक ढगसे शान्त कर सके। मुमकिन है कि काग्रेसको अहिंसामे अितना विश्वास न हो जितना मुझे है। अगर काग्रेस अपना रास्ता बदलती है, तो अिससे यही साबित होगा कि अब तककी हमारी अहिंसा कमजोरोकी अहिंसा थी और यह कि काग्रेसको अिस बातका विश्वास या श्रद्धा नही है कि कोअी 'स्टेट' भी अहिंसक हो सकती है।

प्र० — ३ क्या यह जान लेनेसे कि विरोधी अहिंसावादी है, झगडा करनेवालेकी हिम्मत वढ नही जाती?

अु० — झगडा करनेवालोको फायदा तभी होता है, जव अुनका मुकावला कमजोरकी अहिंसासे हो। वहादुरकी अहिंसा तो किसी भी हालतमें पूरी तरह हथियारोसे लैस अेक वहादुर सिपाहीसे या समूची फौजसे भी मजवूत ही होती है।

प्र० — ४ अगर हिन्दुस्तानके लोगोका अेक दल अपने स्वार्थके लिअे — जो न सिर्फ दूसरोके खिलाफ है वल्कि वुनियादी तौर पर अन्यायपूर्ण भी है — तलवारसे काम ले, तो आपकी क्या नीति होगी? गैर-सरकारी सस्थाओंके लिअे तो अैसे मौके पर सत्याग्रह करना मुमकिन है, मगर क्या अैसी हालतमे हुकूमत करनेवालोके लिअे भी सत्याग्रह मुमकिन हो सकता है?

अु० — सवालमे अैसी मिसाल ली गअी है, जो कभी पेश आ ही नही सकती। अहिंसात्मक राज्य ज्यादासे ज्यादा समझदार जनताकी मरजीके मुताविक चलनेवाला और अुसके मनकी वात समझकर अुस तरह काम करनेवाला होना चाहिये। अैसे राज्यमे जिस दलकी कल्पना की गअी है वह नहीके वरावर ही होगा। वह अुस वडे वहुमतकी निश्चित मरजीके खिलाफ, जिसका कि राज्य प्रतिनिधित्व करता है, खडा ही नही हो सकता। आजकी सरकार जनतासे वाहरकी चीज नही है। वह वहुत वडे वहुमतकी अिच्छा ही है। अगर अुसे अहिंसात्मक ढगसे जाहिर करे तो वह अेकका नही, वल्कि अेकके खिलाफ निन्यानवेका वहुमत होगा।

प्र० — ५ क्या ज्यादा मजवूत फौजी ताकतवालेका सत्याग्रह कमजोर फौजी ताकतवालेसे ज्यादा कारगर नही है?

अु० — ये दोनो विरोधी वाते है। जिसके पास मजवूत फौजी ताकत है वह सत्याग्रह कर ही नही सकता। मसलन्, अगर रूस अहिंसासे काम लेना चाहे तो पहले अुसे अपनी सारी हिंसक ताकतको छोड देना होगा। अिसमें सचाअी यह है कि जो अेक वार फौजी ताकतमे वहुत वढे-चढे थे वे अपने विचार वदल दे, तो न सिर्फ दुनियाको वल्कि अपने विरोधियोको भी वे अपनी अहिंसा दिखा सकते है। जो लोग पक्के अहिंसक है वे अिस वातकी परवाह नही करेगे कि अुनके विरोधी मजवूत फौजी ताकतवाले है या कमजोर है।

प्र० — ६ अेक अहिंसक सेनाके लिअे किस तरहके अनुशासन और ट्रेनिगकी जरूरत है? क्या कुछ वातोमें अुसकी ट्रेनिग मौजूदा फौजी ट्रेनिगसे मिलती-जुलती नही होगी?

अु० — मौजूदा फौजी ट्रेनिंगके शुरूका बहुत थोड़ा हिस्सा अहिंसक सेनाकी ट्रेनिंगमें शामिल हो सकता है। जैसे, अनुशासन, कवायद, कोरस, झंडा-वन्दन, सिग्नलिंग और अिसी तरहकी दूसरी चीजें। ये सब भी बिलकुल फौजी ढंगसे नहीं सिखाये जायेंगे, क्योंकि अिनकी बुनियाद ही दूसरी है। अेक अहिंसक सेनाके लिअे जिस तालीमकी ठीक-ठीक जरूरत है, वह है अीश्वरमें अटल श्रद्धा (विश्वास), अहिंसक सेनाके सेनापतिके हुक्मका अपनी मरजीसे पूरा पालन, और सेनाके हिस्सोंमें बाहरी और अन्दरूनी दोनों तरहका पूरा-पूरा सहयोग।

प्र० — ७ क्या आजकी हालतमें यह ज्यादा अच्छा नहीं होगा कि हिन्दुस्तान और अिंग्लैण्ड जैसे मुल्क किसी भी फौजी कदमको अुठानेसे पहले — सत्याग्रहकी आजमाअिशको पूरा मौका देनेका अिरादा रखते हुअे भी — अपनी फौजी काबलीयतको पूरा बनाये रहें?

अु० — अूपर दिये गये जवाबोंसे यह साफ हो जाना चाहिये कि जब तक हिन्दुस्तान और अिंग्लैण्ड अपनी पूरी फौजी काबलीयतको कायम रखते हैं, वे किसी भी हालतमें सत्याग्रहके साथ न्याय नहीं कर सकते। साथ ही, यह बिलकुल सही है कि फौजी ताकतें अपने आपस-आपसके झगड़ोंको शान्तिके साथ मिटानेके लिअे बराबर समझौतेकी बातचीत चलाती रहती हैं। लेकिन यहां हम लड़ाअीकी शरण लेनेसे पहले होनेवाली शान्तिकी प्रारंभिक बातचीतकी चर्चा नहीं कर रहे हैं। हम तो यह सोच रहे हैं कि लड़ाअीके नामसे पहचाने जानेवाले हथियारबन्द झगड़ेकी जगह, जिसे खुले शब्दोंमें कत्लेआम कहा जा सकता है, आखिर किस चीजको दी जाय।

हरिजनसेवक, १२–५–'४६, पृ० १२८

१९

क्या अहिंसक राज्य कभी अस्तित्वमें आ सकेगा?

अमेरिकासे आअी हुअी चिट्ठियोमे से वैनकोवर (केनेडा) की अेक नमूनेदार चिट्ठी नीचे देता हू

"मै सच्चे दिलसे अपने लिअे यह तो नही कह सकता कि मै आपकी 'हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियोके लिअे' वाली नीतिका हिमायती हू, लेकिन 'लिबर्टी' मासिकमे मैने आपका लेख पढा है और समाचार-पत्रोमे छपे हुअे आपके सुप्रसिद्ध जीवनके वर्णन भी पढे है। 'सुप्रसिद्ध' शब्दका प्रयोग मैने अुस अर्थमे नही किया है जिस अर्थमे यह यूरोपके महान नेताओके लिअे प्रयुक्त होता है, बल्कि अुस पुरुषके अर्थमे किया है जो अपनी निजी कल्पना-तरगोको स्थायी रूप देनेके बदले अपने देश-वासियोकी स्थितिको सुधारनेका सच्चा प्रयत्न करता है। निस्सन्देह मै यह तो जानता हू कि आपके सिद्धान्तोमे हिन्दुस्तानको पुन ग्रामोद्योगोकी ओर ले जाने, राष्ट्र-राष्ट्रके बीच आपसी आर्थिक सहयोग स्थापित करने और मनुष्य-मनुष्यके बीच सद्भाव पैदा करनेका लक्ष्य रहा है। लेकिन मै यह जानना चाहता हू कि आपका नया प्रजातत्र ससारकी राजनीतिमे कौनसा स्थान ग्रहण करेगा? यूरोपके छोटे-छोटे देश मानते थे कि वे अलिप्त रह सकेगे, लेकिन आप देख लीजिये कि आज अुनकी हालत क्या है। स्वय हिन्दुस्तानके आध्यात्मिक नेताकी कलमसे मै यह जानना चाहता हू कि अुनकी सरकारका रुख अुनके देशमे रहनेवाले अग्रेजोके प्रति किस तरहका रहेगा, और अग्रेजो व दूसरे देशवालोकी पेढियोको वहा रहने दिया जायगा या नही? सन् १८५३ मे अमेरिकन बेडेके और अेडमिरल पेरीके योकोहामाके बन्दरगाहमे प्रवेश करने तक जो नीति जापानने अख्तियार कर रखी थी, अुसीको हिन्दुस्तानकी नअी सरकार भी अपनायेगी क्या? अर्थात् क्या देशमे विदेशियोको आने और विदेशी व्यापारको जमनेसे रोका जायगा?

"मुझे आशा है कि आप अेक केनेडियन नौजवानकी — जो आपके देशकी समस्याओको भलीभाति समझना चाहता है — अिस धृष्टताको क्षमा करेगे।"

अिस पत्रके शिष्टाचारवाले अशको छोड देने पर लेखकका सीधा सवाल यह रह जाता है. "क्या स्वतत्र हिन्दुस्तानमे अग्रेजो और विदेशियोके लिअे

स्थान रहेगा?" अिस सवालका मेरी कल्पित या सच्ची आध्यात्मिकताके साथ कोअी सम्बन्ध न होना चाहिये। स्वतंत्र अमेरिका और स्वतंत्र ब्रिटेनके लिअे यह सवाल नही अुठता। और जब हिन्दुस्तान सचमुच स्वतंत्र हो जायगा, तो अुसके लिअे भी नही अुठेगा। क्योंकि अुस समय हिन्दुस्तानको बिना किसीकी रोक-टोकके अपनी मनचीती करनेकी स्वतंत्रता रहेगी। किन्तु हिन्दुस्तानके स्वतंत्र होने पर — और देरमे या जल्दी वह स्वतंत्र होगा ही — वह क्या करेगा, यह कल्पना करनेमे आनन्दका अनुभव होता है। यदि अुसकी राजनीति पर मेरा कोअी प्रभाव रहा, तो देशमे विदेशियोंका स्वागत किया जायेगा, बशर्ते कि अुनकी अुपस्थिति देशके लिअे हितकारी हो। जैसा कि आज तक अुन्होंने किया है, अुसका शोषण करके अुसे कंगाल बनानेकी सहूलियत अुन्हे कभी न दी जायगी।

स्वतंत्र हिन्दुस्तान और बातोंमे कैसा होगा, सो तो देखनेकी बात है। जिस अहिंसात्मक नीतिका अुसने कुछ-कुछ सम्पूर्णता और कुछ-कुछ सफलताके साथ अब तक व्यवहार किया है, यदि आगे भी वह अुस पर दृढ रहा, तो यूरोपके छोटे-छोटे राष्ट्रोंकी बेबसीके खयालसे अुसको भयभीत होनेकी कोअी जरूरत न रहेगी। अहिंसक राज्यको बाहरी हमलोंसे अपनी रक्षा करनेके लिअे बडे विस्तार या कदकी आवश्यकता नही रहती। बाहरी हमलोंसे बचनेके लिअे अैसे राज्यको थोडा भी खर्च करना जरूरी नही होता। हां, यह पूछना अुचित हो सकता है कि अिस तरहका राज्य कभी कायम होगा भी या नही? तात्त्विक दृष्टिसे अैसे राज्यकी कल्पनामें बुद्धि कोअी दोष नही पाती। दूसरा सवाल यह है कि अिस चीजको, जिसका व्यवहार कठिन बताया जाता है, कार्यरूपमे परिणत करनेके लिअे मनुष्य-स्वभाव अुतनी अुच्च कक्षा तक कभी पहुंच सकेगा या नही? हम जानते है कि व्यक्तिगत रूपसे मनुष्योंने अपने स्वभावकी अकल्पित अुच्चताका परिचय दिया है। धैर्यके साथ यत्न करनेसे अिनकी संख्याका बढना असंभव नही। सो कुछ भी हो, सिर्फ अिसलिअे कि मैं हिन्दुस्तानकी ओरसे अैसे प्रत्युत्तरका कोअी प्रकट चिह्न दिखा नही सकता, मैं अपनी श्रद्धा खोकर प्रयत्न करना न छोडूंगा। तब तो मुझे हिन्दुस्तानके लिअे शुद्ध स्वतंत्रताकी आशा भी हमेशाके लिअे छोड देनी पडेगी, जैसी कि कुछ लोगोंने छोड दी है। अुनका कहना यह है कि हिन्दुस्तान अेक बहुत बडा और बिलकुल निहत्था देश है, अुसे सैनिक राष्ट्र बननेमे सैकडो बरस लग जायगे। मैं अैसी निराशाका शिकार बननेसे अिनकार करता हूं। लोकमान्यके ज्वलन्त शब्दोंमे कहूं, तो 'स्वराज्य हिन्दुस्तानका जन्मसिद्ध अधिकार है और अुसे वह हर तरह लेकर ही रहेगा।' यश ध्येयप्राप्तिके प्रयत्नमें है, ध्येयको प्राप्त करनेमे नही। यह यश अहिंसात्मक प्रक्रियाओंकी सम्पूर्णता द्वारा प्राप्त हो सकेगा, अिस विषयमे मेरी श्रद्धा और मेरा अुत्साह अखूट है। अहिंसाकी अिस गूढ शक्तिका पता किसीने अभी तक

लगाया नहीं है। हमें सिर्फ पैर रखनेको जगह भर मिली है। लगनके साथ जुटे रहनेसे शाश्वत आनन्दके देनेवाले रत्न-भडार खुल सकते है। अगर मेहनत ज्यादा है तो फल भी अुमका अुतना ही वडा है।

हरिजनसेवक, ५–४–'४२, पृ० १००

२०

अहिंसक राज्य-संचालन

[श्री महादेव देसाअी द्वारा लिखित 'अहिंसाकी मर्यादा' से।]

"अहिंसाके द्वारा राज्य-सचालन कैसे किया जाये?"

गाधीजी "यह प्रश्न पूछते समय आप अेक वात स्वीकार कर लेते हैं, अर्थात् अहिंसक स्वराज्यकी प्राप्ति — यह समझमे आता है क्या? यदि हमने सचमुच अहिंसक मार्गसे स्वराज्य प्राप्त किया होगा, तो हममे से अधिकतर लोग अहिंसक वन चुके होगे और हमारे देशका सगठन अहिंसक तरीकेसे हुआ होगा। अगर हमने स्वराज्य प्राप्त करने जितनी अहिंसक तैयारी की होगी, तो अहिंसक तरीकोसे अुसे सभालनेमे हमे मुश्किल नही आनी चाहिये। क्योंकि अहिंसक स्वराज्य कुछ अूपरसे तो अुतरा नही होगा। अुसे पानेके लिअे हमे लोगोका वहुमतसे साथ मिला होगा। अैसे राज्यका तो यह अर्थ हुआ कि गुडे भी हमारे अकुशमे आये होगे। मिसालके तौर पर, सेवाग्रामकी सात सौकी आवादीमें पाच-सात गुडे हो और वाकी सव लोगोको अहिंसक तालीम मिली हो, तो या तो वे गुडे वाकी लोगोके अकुशको स्वीकार करेगे या गाव छोडकर भाग जायेगे।

"मगर आप देखेगे कि अिस मवालकी चर्चा मै सावधानीसे कर रहा हू। मेरी सत्यकी भावना मुझसे कहलाती है कि शायद हम पुलिसके विना न चला सके। और पुलिस भी जिम तरहकी ब्रिटिश सरकार रखती है वैसी नही, मगर हमारे ही ढगकी होगी। और फिर हमारी कल्पनाका वालिग मताधिकार होगा, अिसलिअे २१ वर्पके युवकका भी राजकाजमे हिस्सा होगा। अिसलिअे मैंने कहा है कि पूर्ण अहिंसक राज्य, विना राजाके व्यवस्थित राज्य होगा। अिसलिअे वही राज्य अुत्तम होगा जिसमे पुलिस अित्यादिका अिन्तजाम कमसे कम हो। मगर वात तो यह है कि राज्यकी लगाम मेरे हाथमें देता कौन है? दे तो मै राज्य चलाकर वता दू। अगर मै पुलिस रखूगा तो वह काग्रेसमें से लिये हुअे समाज-सुधारकोकी पुलिस होगी।"

*

"मगर", खेर साहब[1] बोल अुठे, "कांग्रेसके मंत्री अहिंसक सत्ता लेकर नहीं आये थे। ५०० गुंडे तूफान करने पर तुल जायें और अगर अुन्हें रोका न जाये, तो वे चारों तरफ हाहाकार मचा सकते हैं। मुझे डर है कि अैसे लोगोंके साथ आप भी दूसरा बरताव न करते।"

गांधीजी हंस पड़े और बोले, "मगर अैसी परिस्थितिकी कल्पना तो मैंने की थी और अैसी हालतमें आप लोगोंको क्या करना चाहिये यह मैं कहा ही करता था। मंत्री अैसे प्रसंगोंमें घर या ऑफिससे निकलकर गुंडोंके सामने खड़े होकर अपने प्राण निछावर कर सकते थे। मगर सच्ची बात तो यह है कि हममें अैसी अहिंसा नहीं थी तो भी हमने मंत्रीपद लिया। लिया तो भले लिया। कारण कि जब हमें लगा कि सत्ता छोड़नी चाहिये तो अुसे छोड़नेमें अेक घड़ी भी नहीं लगी। हां, अितना कहूंगा कि अगर हमारे मंत्रीपदके दो या तीन सालमें हमने अखंड अहिंसाका पालन किया होता, तो कांग्रेस अहिंसा और स्वराज्यकी दिशामें बहुत आगे बढ़ गअी होती।"

बाला साहबने कहा, "मगर चार या पांच साल पहले जब अैसा प्रसंग आया था, तब मैंने कांग्रेसके नेताओंसे कहा था कि चलो निकलो और आगमें कूद पड़ो। मगर कोअी तैयार नहीं हुआ।"

गांधीजी, "यह आप मेरी ही दलीलका समर्थन कर रहे हैं। मैं यही कह रहा हूं न कि हमारी अहिंसा हृदयगत नहीं हुअी थी, वह जिह्वा तक ही रही थी। मगर अिस परसे अनुमान तो यह निकलता है कि यदि कच्ची अहिंसासे भी हम अितने आगे बढ़ सके, तो हमारी अहिंसा सच्ची रहती तो हम कितना बढ़ जाते। संभव है, शायद हम अपना ध्येय प्राप्त भी कर चुके होते।"

प्र० — "बाहरी आक्रमणका अहिंसक रीतिसे आप कैसे सामना करेंगे, यह समझाअिये?"

अु० — "अिसका चित्र मैं पूरी तरह आपके सामने नहीं खींच सकूंगा। क्योंकि हमारे पास न तो अिस चीजका अनुभव है और न यह खतरा आज हमारे सामने आकर खड़ा हुआ है। और आज तो सिखों, पठानों और गुरखोंके सरकारी लश्कर खड़े ही हैं। मेरी कल्पना तो यह है कि मैं अपनी हजार या दो हजारकी सेना दोनों लड़ती हुअी फौजोंके बीचमें रख दूंगा। अैसा करके मैं दूसरा कोअी परिणाम न भी ला सकूं, तो दुश्मनकी हिंसाको तो जरूर कम कर दूंगा। अहिंसक सेनाके सेनापतिको हिंसक सेनापतिसे ज्यादा तीव्र बुद्धि और ज्यादा समय-सूचकताकी आवश्यकता रहती है। मगर पहलेसे ही सब

---

१ बाला साहब खेर, बम्बअी राज्यके मुख्यमंत्री, सन् १९३७–३९ और १९४६–५२ के वर्षोंमें।

चित्र खीच सकनेकी शक्ति अुसे अीश्वर दे दे, तो वह अभिमानी वन जाये। और अीश्वर अैसा कजूस है कि आवश्यकतासे ज्यादा शक्ति किसीको देता ही नही।"

खेर साहव विद्वान पुरुप है, अिसलिअे अुन्होने अव गीताकी भापामे अेक सवाल पूछा, "ससार सव द्वद्वका ही वना हुआ है — हर्प-शोक, सुख-दु ख, भय-साहस। डर होगा तो हिम्मत भी आयेगी। डर भी निकम्मी चीज नही है। पहाड पर डरकर न चले, तो कही-न-कही खाअीमे जा पडेगे। तो क्या आपकी अहिंसक सेना द्वद्वातीत होगी, गुणातीत होगी ?"

तुरन्त ही गाधीजीने गीताकी ही भापामे अुत्तर दिया, "नही, हरगिज नही, क्योकि मेरी सेनाने अहिंसा और हिंसाके द्वद्वमे से अहिंसाको अपनाया होगा। मै या मेरी सेना द्वद्वोसे परे नही है, त्रिगुणातीत नही है। गीताका त्रिगुणातीत तो हिंसा अहिंसासे परे है। डरका अुपयोग है, मगर डरपोक-पनका अुपयोग नही। डरके कारण मै सापके मुहमे अुगली न रखूगा, मगर डरपोकपनसे सापको देखते ही भयभीत होकर कापने न लगूगा। वात यह है कि हम तो मृत्यु आनेसे पहले ही अनेक वार मर जाते है। डर तो केवल अीश्वरका ही हो सकता है।

"मगर मेरी फौज किस किस्मकी होगी, यह मै समझाअू। सव सैनिकोके पास सेनापतिकी वुद्धि होगी अैसी कल्पना ही नही है। मगर अुनमे सेनापतिकी अेक-अेक आज्ञाका पालन करनेकी निष्ठा और अनुशासन होगा। सेनापतिमे अैसी चीज जरूर होनी चाहिये कि जिसके कारण सव अुसका हुक्म माने। लाखोके दलके पाससे तो वह केवल आज्ञा-पालन ही चाहेगा। दाडीकूच केवल मेरी कल्पना ही थी। पहले तो पडित मोतीलालजीने अुसका मजाक अुडाया था और जमनालालजीने कहा था कि अिससे तो वाअिसरॉयके महल पर कूच करके धावा करना ज्यादा अच्छा है। मगर मुझे तो नमकके सिवा दूसरी चीज सूझ ही नही सकती थी। क्योकि मुझे तो करोडोका विचार करके निर्णय करना था। यह कल्पना अीश्वर-दत्त थी। पडित मोतीलालजीने थोडी दलील की, मगर अन्तमे कहा 'आखिर सेनापति तो आप है, आप जो कल्पना करे वही सही है। अुसमे फेर-फार करनेके लिअे मै आपको कैसे कह सकता हू ? हमे तो आपमे विश्वास रखकर चलना है।' अिसके वाद जव जवूसरमें वह मुझसे मिलने आये, तव अुनकी आखे खुल गअी थी। जनताकी जागृतिको देखकर अुन्हे आश्चर्य हुआ था। और जागृति भी कैसी ? हजारो स्त्रियोने अुस वक्त जो शान्त हिम्मत वताअी थी, अुसके जोडकी मिसाल अितिहासमे कहा मिलेगी ?

"और अैसा होते हुअे भी जिन हजारोंने सत्याग्रहमें हिस्सा लिया था, वे असाधारण स्त्री-पुरुष नहीं थे। अुनमें से कअी तो व्यसनी होंगे और भूलें करनेवाले होंगे। मगर अीश्वर तो जो भी कच्चे-पक्के साधन मिलते हैं, अुनका अुपयोग कर लेता है और स्वयं अलिप्त रहता है। कारण यह है कि वह गुणातीत है।"

आगे अुन्होंने कहा, "और सच्ची सेना है कौनसी ? तुलसीकृत रामायणमें वानर-सेना, भालू-सेनाका वर्णन तो दिया है, पर सच्ची सेनाका वर्णन तो रामचन्द्रजीके मुखसे कहलाया गया है।"

ये सब चौपाअियां गांधीजीने पूरी नहीं सुनाअी थीं, मगर पाठकोंकी खातिर मैं (महादेवभाअी) अुन्हें यहां दे रहा हूं। प्रसंग यह है कि लंकाकांडमें रावणके सामने जब रामचन्द्रजी रणक्षेत्रमें आते हैं, तब विभीषण रामचन्द्रजीको बिना रथके पैदल जाते देखकर भयभीत हो जाता है और पूछता है

'नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥'

अिसके अुत्तरमें रामचन्द्रजी कहते हैं

"सुनहु सखा, कह कृपा निधाना।
जेहिं जय होअि सो स्यंदन आना॥
सौरज, धीरज तेहि रथ-चाका।
सत्य, सील दृढ ध्वजा पताका॥
बल, बिबेक, दम, परहित घोरे।
छमा, कृपा, समता रजु जोरे॥
अीस-भजन सारथी सुजाना।
बिरति चर्म, संतोष कृपाना॥
दान परसु, बुधि सक्ति प्रचंडा।
बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥
अमल, अचल मन तून समाना।
सम, जम, नियम, सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा।
अेहिसम बिजय-अुपाय न दूजा॥
महा अजय संसार रिपु, जीति सकअि सो बीर।
जाके अस रथ होअि दृढ, सुनहु सखा मति धीर॥"

अिस तरह रामायणका अुल्लेख करके गांधीजी बोले, "सो जीतनेवाली सेना तो यह है। मैं संसारसे विरक्त नहीं हुआ हूं। होना चाहता भी नहीं।

अैसे किसी विरक्तको मै जानता भी नही हू। मै तो सेवाग्राममें बैठकर जो कुछ काम कर सकता हू अुतना करके और जो कोअी मेरी सलाह लेने आये अुसे सलाह देकर सतोप मानता हू। बात यह है कि हमें श्रद्धाकी जरूरत है। सत्यके मार्ग पर चलकर हम खोनेवाले क्या है? बहुत होगा तो कुचले जायेगे। मगर हारनेसे क्या कुचला जाना बेहतर नही है?

"मगर हिंसक तैयारी करनी हो तो मेरी बुद्धि काम नही करेगी। हवाअी जहाज और टैंको अित्यादिका विचार करते ही मेरा माथा चकरा जाता है। अुसके सामने मेरी अहिंसक तैयारी तो अितनी आसान है कि कोअी बात ही नही। और फिर अुसमे ओीश्वर-जैसा सारथी मिला है, जो कभी हमे अुलटे मार्ग ले ही नही जा सकता। फिर डरनेका कारण ही क्या है?"

हरिजनसेवक, ३१-८-'४०, पृ० २४३-४४

२१

अहिंसक प्रतिरक्षा

नीचे लिखा हुआ सवाल अेक अंग्रेज मिलिटरी अफसरने भेजा है। अुन्होने २८ जुलाअी, १९४६ के 'हरिजन' मे 'आजादी' पर मेरा लेख बडी दिलचस्पीसे पढा है। ये अफसर अेक फौजी अिंजीनियर हैं। अमेरिका और यूरोपमे खूब घूमे है और अपनी आखोसे जर्मनीमे लडाअीकी तबाही और बरबादी देख चुके है।

प्र० — अिस आदर्श हुकूमतमे (और बेशक यह हुकूमत आदर्श होगी) आदमी बाहरके हमलोसे किस तरह बच सकता है? आजकल जब कि मशीनका दौर-दौरा है, अगर राज्यके पास नये नये हथियारोसे लैस फौज न होगी, तो अैसे हथियारोवाली फौज हमला करके देशको जीत सकती है और वहाके रहनेवालोको गुलाम बना सकती है।

अु० — सवाल पूछनेवाले भाअी कहते है कि अुन्होने मेरे लेखको बडे ध्यानसे बार-बार पढा है और फौजी आदमी होनेके बावजूद अुसे पसन्द भी किया है। मगर साफ पता चलता है कि मेरे लेखमे जो असल बात है अुसे वे चूक गये हैं। वह यह है कि अेक व्यक्तिकी तरह अेक राष्ट्र, चाहे वह कितना ही छोटा क्यो न हो, और राष्ट्र तो क्या अेक वर्ग भी हथियारोसे लैस सारी दुनियाके खिलाफ अपनी अिज्जतकी रक्षा कर सकता है। लेकिन शर्त यह है कि अुसमें सब अेकमतके हो और अुनमें अिस रक्षाके लिअे

पक्का अिरादा हो। यही निहत्थे लोगोंकी शक्ति और खूबसूरती है, जिसकी कोअी मिसाल नही मिल सकती। यही अहिंसक रक्षा है, जो किसी मजिल पर न तो हार जानती है, न हार मानती है। अिसलिअे जिस राष्ट्र या समूहने हमेशाके लिअे अहिंसाका रास्ता अपना लिया हो, वह अणुगोलोंसे भी गुलाम नही बनाया जा सकता।

हरिजनसेवक, १८–८–'४६, पृ० २६९

२२

पुलिस-बलकी मेरी कल्पना

अेक मित्र अिस प्रकार लिखते है

"अेक अंग्रेज बहनने, जिसका आपने हालमे ही अुल्लेख किया है, ठीक ही कहा है कि बाहरी आक्रमणके आगे अहिंसाका प्रयोग करना, यह हमेशाके लिअे और आजकी परिस्थितियोमे खास जरूरी है और यह भी सभव है कि अिसका अधिक अच्छा परिणाम सिद्ध हो। मगर अदरूनी हुल्लडोके सामने अहिंसाका प्रयोग करना ज्यादा मुश्किल है। हमारे यहा मुख्य तीन प्रकारके हुल्लडोकी कल्पना की जाती है साम्प्रदायिक दगे, जहा औद्योगिक केन्द्र हो वहा मजदूरोके झगडे और चोर-डाकुओंकी लूटपाट या डाकेके अुपद्रव। अिस प्रकारके हुल्लडोमें निहित मूल कारण, जैसे पारस्परिक अविश्वास, सामाजिक अन्याय तथा आर्थिक शोषणमें से पैदा हुअी गरीबी और बेकारी, जब तक दूर नही हो जाते, तब तक अिन हुल्लडोको चाहे जितनी जोर-जबरदस्तीसे दबा दिया जाये, तो भी वे बार-बार होते रहेंगे और चाहे जितना बन्दोबस्त होते हुअे भी लोगोको जिनके कारण कष्ट-सहन करने पडेगे। मूल कारण तो रचनात्मक प्रवृत्तिसे ही दूर किये जा सकेंगे। पर अैसा करनेमे वक्त लगेगा। अिस दरमियान अैसे हुल्लडोके अवसर पर अधिकाश मनुष्य हिंसा-बलवालोंका रक्षण ढूढनेके लिअे ही प्रेरित होगे। अैसे समय पर भी अैसे मनुष्य जिन्हें अहिंसा पर श्रद्धा है, अपनी अहिंसाको जितने दरजे तक अधिक सक्रिय रूप दे सकेंगे अुतने दरजे तक वे अिन किस्मके हुल्लडोको निर्मूल करनेमे अधिक योग देगे। अिसलिअे हुल्लडोके लिअे भी आखिरी अुपाय तो अहिंसा ही है।

"पर क्या हम अैसी समाज-रचनाकी कल्पना कर सकते है कि जिसमे किसी भी रूपकी हिसाका आश्रय बिलकुल लेना ही न पडे? हम अैसी कल्पना कर सकते है कि समाजमे अधिकाश लोगोके पास अितनी सम्पत्ति न हो कि अुसे छीन लेनेके लिअे दूसरोकी नीयत बिगड जाये, अिसी प्रकार हरअेकके पास अितना हो कि सब सुख-सतोपसे रह सके, जिससे कि दूसरोकी सम्पत्ति छीननेका अुनका मन ही न हो। फिर भी जमीन या दूसरी मिल्कियतके हक और अुपयोगके सबधमे तथा लेन-देन और अन्य व्यवहारोके अिकरारके सबधमे तकरार खडी ही न होने पाये, अैसा होना सभव नही दिखाअी देता। अिसके लिअे न्याय-व्यवस्था रखनी पडेगी, और अुसे टिकानेके लिअे तथा पच या अदालतके निर्णयो पर अमल करानेके लिअे पुलिस-बलकी आवश्यकता तो रहेगी ही। पुलिस रखनेके सबधमें आपने ढिलाअी तो दी ही है। पर अुसकी मर्यादा कहा रखेगे? आज अहिंसा-भक्तोके हाथमे राज्यका अुत्तरदायित्व हो, तो वे आन्तरिक हुल्लडोके अवसर पर पुलिस-बलका अुपयोग करे या नही? फिर पुलिस-बलको आप तात्कालिक आवश्यकताके लायक निभा लेनेको तैयार है या स्थायी तौर पर? मुझे तो अैसा मालूम होता है कि लम्बे समयके लिअे, जिसके अतकी हम कल्पना नही कर सकते, समाजमे पुलिस-बलकी जरूरत पडेगी। अैसा लगता है कि अहिंसाकी अितनी मर्यादा स्वीकार करनी ही पडेगी।"

अिस पत्रमे पूछे गये प्रश्न महत्त्वके है और हरअेक जवाबदार सत्याग्रहीके लिअे विचारणीय हैं। अगर हम लोगोमे सच्ची अहिसा पैदा हुअी होती, अगर हमारी अहिसक मानी हुअी लडाअिया सचमुच अहिसक होती, तो अैसे प्रश्न अुठ ही नही सकते थे, क्योकि अुनका हल अपने-आप हो गया होता।

पृथ्वीके ठेठ अुत्तर ध्रुवके प्रदेशका हमे अनुभव न होनेसे अुसके कल्पना-चित्र ही हमको मिल सकते है, पर अुमसे यथेष्ट तृप्ति होती ही नही। यही बात अहिसा-विषयक प्रश्नोकी है। अगर सबके सब काग्रेसवादी (जन) प्रामाणिक रहे होते, तो हमारी स्थिति आज त्रिशकुकी जैसी न होती। हम सर्वत्र अहिसाके चिह्न देखते, हममे साम्प्रदायिक अैक्य होता, हम लोगोमें से छुआछूतका भूत निकल गया होता और समाज अधिकाशमे सुव्यवस्थित होता। मगर हम अिनमे से कुछ नही देखते, अितना ही नही, बल्कि हम देखते है कि काग्रेसके प्रति जगह-जगह कटुताका प्रदर्शन किया जा रहा है। हमारे वचनो पर बहुतसे लोग विश्वास नही करते। मुस्लिम लीग और बहुतसे राजाओको काग्रेसका विश्वास नही, अुसके प्रति आज तो वैर-भाव

ही अुनके मनमें है। हम लोगोंमें शुद्ध अहिंसाका आचरण होता, तो कांग्रेसका आज किसीको भय न होता, बल्कि वह सबकी प्रेम-भाजन बन गअी होती।

अिसलिअे जिन्हें अहिंसा पर अटल विश्वास है, अुनके लिअे आज तो मैं काल्पनिक चित्र ही दे सकता हूं।

जहां तक हममें शुद्ध अहिंसा प्रगट नहीं होती, वहां तक हम अहिंसक मार्गसे स्वराज्य प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा बहुमत हो तभी हमें सत्ता मिल सकती है, अिसका अर्थ यह हुआ कि प्रजाका बहुत बड़ा भाग अहिंसाके शासनके नीचे रहनेवाला होगा। अैसी स्थिति जब होगी तब काफी हिंसा-वृत्तिका नाश हो गया होगा और हिंसक अुपद्रव काबूमें आ गये होंगे।

अैसा होते हुअे भी मैंने यह तो स्वीकार किया ही है कि अहिंसक शासनमें अेक मर्यादित हद तक पुलिस-बलके लिअे स्थान होगा। यह मान्यता मेरी अपूर्ण अहिंसाका चिह्न है। पुलिसके बिना मैं काम चला सकूंगा अैसा कहनेकी मेरी हिम्मत नहीं, जैसे कि यह कहनेकी हिम्मत है कि बिना फौजके मैं चला लूंगा। मैं जरूर अैसी स्थितिकी कल्पना करता हूं, जब पुलिसकी भी जरूरत नहीं पड़ेगी। पर अिसका सच्चा पता तो अनुभवसे ही लग सकता है।

यह पुलिस आजकी पुलिससे बिलकुल भिन्न ही प्रकारकी होगी। अुसमें अहिंसामें विश्वास रखनेवालोंकी भरती होगी। वे लोगोंके सेवक होंगे, सरदार नहीं। लोग अुनकी मदद करते होंगे और वे रोज-ब-रोज कम होते जाने-वाले अुपद्रवोंका आसानीसे मुकाबला कर सकेंगे। पुलिसके पास कुछ शस्त्र तो होंगे, पर अुसका अुपयोग शायद ही कभी होगा। असलमें देखा जाये तो अिस पुलिसको सुधारकके तौर पर समझना चाहिये। अैसी पुलिसका अुपयोग मुख्यतया चोर-डाकुओंको काबूमें रखनेके लिअे ही होगा। अहिंसक शासनमें मजदूर-मालिकोंका झगड़ा क्वचित् ही होगा, हड़तालें [illegible] ही होंगी। क्योंकि अहिंसक बहुमतकी प्रतिष्ठा स्वभावतः अितनी होगी कि समाजके प्रमुख समुदायोंका आदर अुसे प्राप्त होगा। अितना [illegible] चाहिये कि कांग्रेसका जब अधिकार होगा, तब अधिकतर [illegible] और अिससे अूपरकी अुमरके स्त्री-पुरुष मताधिकारी होंगे। [illegible] विधानको अिस काल्पनिक चित्रमें स्थान नहीं है।

हरिजनसेवक, २४–८–'४०, पृ० २३४–३५

२३

कांग्रेसी मंत्री और अहिंसा

श्री शकरराव देव लिखते है

"लोगोकी समझमें यह बात नही आ रही है कि जो लोग अपनेको सत्याग्रही कहते थ, वे मत्री बनते ही फौज और पुलिसका अुपयोग क्यो करते हैं। लोग मानते है कि धर्म या व्यवहारके रूपमें मानी हुअी अहिंसाका यह भग है, और अूपरी खयालसे यह सच भी मालूम होता है। काग्रेसी मत्रियोके विचारोमे और बरतावमें यह जो विरोध दिखाअी देता है, अुसका समर्थन करना आसान न होनेके कारण हमारे कार्यकर्ता अुलझनमें पड जाते है, और अिस विसगतिसे लाभ अुठानेवाले काग्रेसी और गैर-काग्रेसी प्रचारकोका मुकाबला करना अुनके लिअे मुश्किल हो जाता है।

"आम तौर पर काग्रेसियोकी अहिंसा कमजोरोकी अहिंसा ही रही है। हिन्दुस्तानकी मौजूदा हालतमें यही हो सकता था, अिसे तो आप भी जानते हैं। आप कहते हैं कि ताकतवरकी अहिंसामें तेज होता है, फिर भी कमजोरको तगडा बनानेके लिअे आपने अहिंसाका अुपयोग करना स्वीकार किया, यही नही बल्कि आप अुनके नेता भी बनें। अिस तरह दुर्बल या कमजोर होते हुअे भी आज अुनके हाथमें सत्ता आअी है। वे अग्रेजी हुकूमतके खिलाफ तो अहिंसासे लडे, लेकिन अब अपने हाथमे सत्ता लेकर देशमें दगा-फसादके समय भी अहिंसाका अुपयोग करके अुसे मिटानेको वे तैयार नही हैं। अगर वे अैसी कोशिश करे भी तो न वे अुसमें कामयाब होंगे और न अिस काममें अुन्हे आम लोगोका सहकार ही मिलेगा।

"मैंने आपसे पूछा था कि क्या सत्याग्रही अपने हाथमें हुकूमतकी बागडोर ले सकता है? अगर ले सकता है तो अुस हुकूमतके जरिये वह अहिंसाको कैसे आगे बढा सकता है? कृपा करके आप अिस पर थोडी रोशनी डालिये। जिसने अहिंसाको धर्म माना है वह कभी हुकूमतमें शामिल होना पसद नही करेगा। और, मेरी राय है कि अुसे अैसा करना भी नही चाहिये। लेकिन मैं मानता हू कि जिन्होंने अहिंसाको सिर्फ नीति या व्यवहारकी दृष्टिसे अपनाया है, अुनके लिअे पद लेनेमें कोअी दिक्कत न होनी चाहिये। बहुतेरे काग्रेसियोने पद

संभाले है और जिसके लिये आपने उन्हें इजाजत दी है। ऐसी हालतमें सवाल यह उठता है कि उन मंत्रियोंसे, जो अहिंसामें मानते है, आपका यह उम्मीद रखना कहा तक मुनासिब है कि कमसे कम वे खुद तो दगा-फसादके मौकों पर अहिंसाका उपयोग करें? अहिंसाके जरिये सत्ता प्राप्त करनेके बाद उसका उपयोग किस तरह किया जाय, जिससे सत्ता ही गैर-जरूरी हो जाय? अगर ऐसा कोई रास्ता आप न सुझायेंगे, तो हमारे अपने मकसद तक पहुचनेके लिये सत्याग्रह एक अधूरा साधन माना जायगा।"

मेरे विचारसे इसका जवाब आसान है। कुछ समयसे मैंने यह कहना शुरू कर दिया है कि कांग्रेसके विधान या कानूनसे 'सत्य और अहिंसाको' हटा देना चाहिये। लेकिन कांग्रेसके विधानसे ये दोनों सचमुच हटाये जाय या न हटाये जाय, अगर हम यह मान ले कि वे हटा दिये गये है, तो स्वतंत्र रूपसे हम यह समझ सकेंगे कि कोई काम सही है या नहीं। मैं मानता हू कि जब तक हम देशमें भीतरी शक्तिकी रक्षाके लिये फौज या पुलिसका उपयोग करेंगे, तब तक अंग्रेजी सल्तनतके या दूसरी किसी विदेशी सल्तनतके मातहत ही हम रहेंगे — फिर चाहे देशकी सरकार कांग्रेसवालोंके हाथमें हो या दूसरोंके हाथमें हो। फर्ज कीजिये कि कांग्रेसी मंत्रि-मंडलोंको अहिंसामें विश्वास नहीं है। यह भी मान लीजिये कि हिन्दू, मुसलमान और दूसरे हिंदुस्तानी फौज और पुलिसका सहारा चाहते हैं। अगर ऐसा है तो वह उन्हें मिलता रहेगा। जो कांग्रेसी मंत्री अहिंसामें विश्वास रखते है, उन्हें फौज या पुलिसकी मदद लेना अच्छा न लगेगा। इसलिये वे इस्तीफा दे सकते है। इसके मानी यह हुए कि जब तक लोगोंमें आपसमें ही फैसला कर लेनेकी ताकत नहीं आती, तब तक हुल्लडबाजी होती रहेगी और हममें अहिंसाका सच्चा बल पैदा ही नहीं होगा।

अब सवाल यह रहा कि ऐसा अहिंसक बल किस प्रकार पैदा हो सकता है? इस सवालका जवाब अहमदाबादसे आये हुए एक पत्रके जवाबमें ४ अगस्तको मैं दे चुका हू। जब तक हममें बहादुरी और प्रेमसे मरनेकी ताकत पैदा नहीं होती, तब तक हममें वीरोंकी अहिंसाका बल नहीं आ सकता।

अब सवाल यह है कि आदर्श समाजमें कोई राजसत्ता रहेगी या वह एक बिलकुल अराजक समाज बनेगा? मेरे खयालमें ऐसा सवाल पूछनेसे कोई फायदा नहीं होगा। अगर हम ऐसे समाजके लिये मेहनत करते रहें, तो वह धीरे धीरे किसी हद तक अस्तित्वमें आयेगा; और उस हद तक लोगोंको उससे फायदा पहुचेगा। युक्लिडने कहा है कि लाइन वही हो सकती है जिसमें चौडाई न हो। लेकिन ऐसी लाइन न आज तक कोई

वना पाया है, न आगे भी कोअी वना पायेगा। फिर भी अैसी लाअिनको खयालमे रखनेसे ही प्रगति हो सकती है। जो वात अिस मामलेमे सच है, वह हरअेक आदर्शके वारेमे सच है।

हा, अितना याद रखना चाहिये कि आज दुनियामे कही भी अराजक समाज नही है। अगर कभी कही वन सकता है, तो अुसका आरभ हिन्दुस्तानमे ही हो सकता है। क्योकि हिन्दुस्तानमे अैसा समाज वनानेकी कोशिश की गअी है। आज तक हम आखिरी दरजेकी वहादुरी नही दिखा सके, लेकिन अुसे दिखानेका अेक ही रास्ता है। और वह यह है कि जो लोग अुसमे विश्वास रखते है, वे अुस पर चल कर दिखाये। अैसा करनेके लिअे, जिस तरह हमने जेलोका डर छोड दिया है अुसी तरह, मृत्युका डर भी विलकुल छोडना पडेगा।

हरिजनसेवक, १५-९-'४६, पृ० ३०९-१०

२४

सत्य और अहिंसाको न छोड़ें

अेक सेवाभावी भाअी अपना नाम देकर लिखते है·

"आपका साप्ताहिक अखवार 'हरिजनवन्धु' मैं नियमित पढता हू। १५ सितम्वरके 'हरिजनवन्धु' मे श्री शकरराव देवको दिये गये जवावमे आपने लिखा है 'मैंने कुछ समयसे कहना शुरू किया है कि काग्रेसके विधानमे से सत्य और अहिंसाको निकाल देना चाहिये।'

"आजकी परिस्थितियोमे अैसा होगा, तो काग्रेस परसे लोगोका विश्वास अुठ जायेगा। लोग अैसा समझेगे कि जव तक काग्रेसके हाथमे सत्ता नही थी, वह लोगोको सत्य और अहिसा पर चलनेको समझाती थी। आज सत्ता हाथमे आते ही वह सत्य और अहिंसाको विधानमें से निकालनेका सोच रही है।

"अगर काग्रेसके विधानमे से ये दो शब्द, जिनके जरिये काग्रेस अितनी आगे वढी हे और आज अूची चोटी पर वैठी हे, निकल जायेगे, तो काग्रेस फौरन ही नीचे गिर जायेगी। अुसकी प्रतिष्ठा हलकी पड जायेगी। आप ही कहते थे कि सत्य और अहिंसाके विना आप अेक कदम भी आगे नही चल सकते।

"किसलिअे लोग काग्रेसवालोको विश्वासके लायक, दयालु, सेवाभावी, हिम्मतवाले — वगैरा-वगैरा मानते आये है? सत्य और अहिंसाके ही कारण। सत्य और अहिंसा अुसकी जड है। जडके नाश

होनेसे साराका सारा पेड अपने-आप सूख जायेगा। आपको तो यह कोशिश करनी चाहिये कि वह जड ज्यादासे ज्यादा गहरी जाय।

"अिसलिअे मुझे लगता है कि आप हरअेक कांग्रेसजनको अिन सिद्धान्तोका पालन करनेके लिअे वाध्य करे, यदि वह अिनका पालन करनेसे अिनकार करता हे, तो अुसे कांग्रेस छोड देनी चाहिये।"

अहिंसाका दावा करनेवाला मै अच्छा काम करनेके लिअे भी किसीको मजवूर कैसे कर सकता हू? अेक महान अंग्रेजने कहा है कि आजाद रहकर भूल करना अच्छा हे, मगर मजवूर होकर अच्छा वनना वुरा हे। मै अिस सत्यको मानता हू। कारण साफ हे। जो दूसरोंके दवावसे अच्छा रहता है, अुसका दिल अच्छा नही रहता, अुलटा ज्यादा विगडता है, और जव दवाव हट जाता है तो अन्दर हुआ विगाड अूपर आ जाता है।

और, किसी अेक व्यक्तिके पास तो किसी पर दवाव डालनेकी ताकत होनी ही नही चाहिये। कांग्रेस भी जवरन् किसीसे सत्य या अहिंसा पर अमल नही करवा सकती। अैसी चीजे खुशीका सौदा ही होनी चाहिये।

सत्य और अहिंसाको कांग्रेसके विधानसे निकालनेकी वात पेश किये मुझे अेक सालसे ज्यादा अरसा हो गया है। मेरी अिस सलाहके पीछे जोरदार कारण है। सत्य और अहिंसाकी ओटमे कांग्रेसका झूठ और हिंसाको छिपाना कोअी मामूली कारण नही है। अगर कांग्रेसी दिखावा न करे और सचमुच सत्य और अहिंसाके अिन दो खभोको पकडे रहे, तो अिससे अच्छा और क्या हो सकता है?

मै तो कभी यह चाह ही नही सकता कि सत्ता हाथमें आने पर कांग्रेस-जन सत्य और अहिंसाकी अुस सीढीको छोड दें, जिसके सहारे वे अितने आगे वढे हैं। मैं मानता हू कि अगर कांग्रेस सत्ता पाकर अिस सीढीको छोडेगी, तो अुसका तेज विलकुल मन्द पड जायगा।

अेक और भूलसे सवको वचना चाहिये। जो विधानमें नही लिखा हो अुस पर किसीको अमल नही करना चाहिये, अैसी वात तो है ही नही। मैंने तो आशा रखी ही हे कि सत्य और अहिंसाके विधानमे से निकल जाने पर भी सव या ज्यादातर कांग्रेसी अपनी अिच्छासे अुन पर अमल करेगे और करते-करते मरेगे भी।

अेक भूल, जिसका जिक्र अिन सेवाभावी भाअीने नही किया है, सुधार दू। कांग्रेसके विधानमे 'शातिपूर्ण और न्यायसगत' शव्द हैं। अुन्हे अहिंसक और सत्यपूर्ण माननेका मुझे हक नही। कांग्रेसके पास धर्म नही, कर्म ही है। अंग्रेजीमे अुसे 'पॉलिसी' कहेगे। मेरे हकका तो सवाल ही नही है। मगर जव तक कर्म चलता है तव तक वह धर्म हो जाता है। यानी अुस पर

अमल करनेका वचन होता है। अगर 'शान्ति' का मतलव अशान्ति भी हो सकता हो और 'न्यायसगत' का मतलव झूठ भी हो सकता हो, तो मेरी सलाहके लिअे कोअी स्थान नही रह जाता।

हरिजनसेवक, २९-९-'४६, पृ० ३२९

२५
मैं अहिंसक साम्यवादमें विश्वास रखता हूं

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

हम लोग वेहद थक गये थे। सोनेकी तैयारीमें ही थे, क्योकि दूसरे दिन सवेरे तीन वजे अुठना था। आध्रके तूफान-पीडित प्रदेशमे घूमना था। गाडी चल पडी थी। अितनेमें ही अेक दोहरे वदनके सज्जन दौडते हुअे आये और अुन्होने खिडकीमें से झाका। पहनावा यूरोपियन था। कहने लगे, "जनाव, मै ठेठ मिस्रसे आ रहा हू। हिन्दुस्तानके सवसे वडे महापुरुषसे हाथ मिलाने और अुनसे थोडी-सी वातचीत करनेका मौका तो मिलना ही चाहिये।" वे अग्रेजीमें वोले, पर लहजा और अुच्चारण फ्रेंच था। अुन्हे हम क्या कहते? सिवा अदर लेनेके चारा ही नही था। पर दरवाजेमें ताला लगा हुआ था। हमने कहा, "आप अगले स्टेशन पर आ जाअिये।" पर वे जरा भी समय खोना नही चाहते थे। खिडकीमें से ही वे अदर घुसे। हमने भी थोडी सहायता की और वे आ गये। अिस वातसे वे वडे खुश थे कि मिस्रको कुछ तो आजादी मिली। हिन्दुस्तानके प्रति भी अुन्होने शुभाशा प्रगट की।

"पर मै कुछ सवाल आपसे पूछू। मै देखता हू कि आप काफी थक गये हैं; पर मुझे अपने जीवनमें फिर कभी अैसा मौका नही मिलेगा। अिसलिअे आशा करता हू कि आप मुझे जरूर माफ करेगे।" मारे नीदके गाधीजीकी आखें मुद रही थी। पर अिस प्रेमी आगन्तुकको वे टाल नही सके। "अच्छा कहिये," वे वोले।

"कम्युनिज्मके वारेमे आप क्या सोचते है? क्या आपके खयालसे अुससे हिन्दुस्तानका भला हो सकता है?" यह अुनका पहला सवाल था।

"रूसी ढगका अर्थात् लोगो पर अूपरसे जवरदस्ती लादा हुआ कम्युनिज्म हिन्दुस्तानके लिअे विलकुल नामुमकिन होगा। मै तो अहिंसात्मक साम्यवादमें विश्वास करता हू।" गाधीजीने कहा।

"पर रूसी कम्युनिज्म तो खानगी सपत्तिके खिलाफ है। क्या आप खानगी संपत्ति रहने देना चाहते हैं?"

"अगर कम्युनिज्म वगैर किसी तरहकी जोर-जबरदस्तीके आ सकता हो, तब तो अुसका स्वागत होगा। क्योंकि अुस हालतमें संपत्ति पर किसीका भी अधिकार तब तक नहीं होगा, जब तक कि वह जनताकी ओरसे और जनताके लिअे नहीं होगा। अेक लखपतिके पास लाखों होंगे। पर वह जनताकी ओरसे अनका रक्षक-मात्र होगा। और जब कभी सर्व-साधारणके हितके लिअे अुनकी जरूरत होगी, तब राज्य सारी संपत्ति पर अधिकार कर सकेगा।"

"क्या समाजवादके बारेमें आप और जवाहरलालजीके बीच कोअी मतभेद है?"

"हां, है तो। पर वह अितना ही कि वे अुसके अेक अंग पर जोर देते हैं तो मैं दूसरे पर। वे शायद परिणाम पर जोर देते हैं और मैं साधन पर देता हूं। मैं शायद अुनके खयालसे अहिंसा पर जरूरतसे ज्यादा जोर दे रहा हूं। वे भी अहिंसामें विश्वास तो करते हैं। पर अगर वे यह देखें कि अहिंसाके द्वारा समाजवाद नहीं लाया जा सकता, तो वे अन्य साधनोंको भी काममें लेना बुरा न समझेंगे। असलमें मैं तो सैद्धान्तिक दृष्टिसे अहिंसाको अितना महत्त्व दे रहा हूं। मुझे अगर कोअी यह विश्वास दिला दे कि अन्य साधनोंसे आजादी लायी जा सकती है, तो भी मैं अुसे लेनेसे अिनकार कर दूंगा। वह सच्ची आजादी नहीं होगी।"

"पर क्या आपका यह खयाल है कि आपके अहिंसात्मक प्रचार (आन्दोलन) से अंग्रेज हिन्दुस्तानको आपके हाथोंमें सौंपकर यहांसे चुपचाप चले जायेंगे?"

"हां, जरूर मेरा यही खयाल है।"

"पर आपके अिस खयालका आधार क्या है?"

"अीश्वर और अुसके न्याय पर मेरी श्रद्धा आधार रखती है।"

अुन मिस्री सज्जन पर गांधीजीके अिन शब्दोंका बड़ा असर पड़ा। अुन्होंने ये शब्द लिख लिये और कहने लगे "हम अीसाअी कहलानेवालोंकी अपेक्षा आपमें अीसाअी श्रद्धा अधिक है। मैं अिन शब्दोंको खूब मोटे मोटे अक्षरोंमें लिखकर लगा दूंगा।"

"हां, जरूर लिख लीजिये, क्योंकि अगर अैसा न हो तो अुस अीश्वरको दयामय कौन कहेगा? तब तो अुसे हिंसाका पोषक अीश्वर कहना पड़ेगा।"

यहां पर वे मित्र हमें छोड़कर चले गये। और अगला स्टेशन आनेसे पहले तो गांधीजी गाढ़ी नींदमें निमग्न हो गये।

हरिजनसेवक, १३-२-'३७, पृ० ४१३

२६

हृदय-परिवर्तन बनाम वैज्ञानिक समाजवाद

मुझे चिट्ठी-पत्री लिखनेवाले कुछ सज्जन बडे आग्रही है। वे मुझे निग्रह-स्थानमे लाना चाहते हैं। अुनमे से अेक नमूना यह है

“जब कभी आर्थिक कठिनाअिया खडी होती है और जब कभी पूजीपति और मजदूरोके आर्थिक सम्बन्धोके विषयमे आपसे कोअी सवाल पूछा गया है, आपने हमेशा अपना ‘सरक्षकता’ का सिद्धान्त सामने रख दिया है, जो मुझे हमेशा हैरान किया करता है। आप चाहते है कि धनवान लोग अपनी दौलत और माल-मिल्कियत पर गरीबोकी ओरसे सरक्षक रहे और अुन्हीके फायदेके लिअे अुसे खर्च करे। अगर मै आपसे पूछू कि भला यह सभव भी है, तो आप कहेगे कि मै मनुष्यको असलमे स्वभावत स्वार्थी मानता हू, अिसलिअे अैसे सवाल पूछ रहा हू, जब कि आपने अपना सिद्धात अिस आधार पर कायम किया है कि वह स्वभावत भला होता है। फिर भी राजनीतिक क्षेत्रमें तो आपके ये विचार नही हैं। नही तो आपको अपना यह विश्वास छोडना पडेगा कि मनुष्य असलमे स्वभावत भला होता है। अग्रेज भी तो यहा अपनी हुकूमतके समर्थनमे अिसी प्रकार ‘सरक्षक’ होनेका दावा पेश करते हैं।

“पर ब्रिटिश साम्राज्य परसे तो आपका विश्वास कभीका अुठ गया है और आज अिस साम्राज्यका आपसे अधिक बडा कोअी दुश्मन नही है। राजनीतिक क्षेत्रमे अेक और आर्थिक क्षेत्रमे दूसरे नियमका पालन करे, तो यह मेल कैसे बैठेगा? अथवा आपका मतलब यह तो नही कि ब्रिटिश जनता और ब्रिटिश साम्राज्यकी भाति अभी पूजीवाद और पूजीपतियो परसे आपका विश्वास नही अुठा है? क्योकि आपका यह सरक्षकतावाला सिद्धान्त तो ठीक वैसा ही दिखाअी देता है, जैसा राजाओका अीश्वरदत्त अधिकारवाला सिद्धान्त मालूम होता था। पर अब अुसे कोअी नही मानता। पहले अेक आदमीको अपने अन्य भाअियोकी ओरसे अुन्हीके द्वारा दी हुअी राजनीतिक सत्ताको धारण करने दिया जाता था। पर अुसने अिसका दुरुपयोग किया और जनताने अुसके खिलाफ बगावत कर दी, और अिस तरह लोकसत्ताका जन्म हुआ। अिसी प्रकार जब वे मुट्ठीभर लोग, जिन्हे जनतासे आर्थिक

सत्ता प्राप्त होती है और जिसे वे अिन लोगोंकी तरफसे धारण करते है, अपनी अिस सत्ताका अुपयोग अपना ही स्वार्थ साधने तथा औरोको नुकसान पहुचानेके लिअे करने लगे, तो अुसका अनिवार्य परिणाम यही होगा कि जनता अिन थोडेसे लोगोंके हाथोमे से वह अर्थसत्ता छीन लेगी — अर्थात् समाजवादका जन्म होगा।

"अब तक तो हर भली और बुरी चीजको हासिल करनेका सिर्फ अेक ही तरीका — हिंसा — माना गया था। पर जहा किसी भले कामके लिअे भी हम हिंसाका अुपयोग करने लगते है, तो अुनके साथ अपने-आप कुछ बुराअिया भी आ ही जाती है और अुससे प्राप्त होनेवाले सुफल पर भी बुरा असर पडता है। पर अहिंसाका मार्ग हिंसाकी अपेक्षा अधिक अुच्च है, और वह मनुष्योंके पारस्परिक सम्बन्धोको विषाक्त नही कर देता। मै यह भी मानता हू कि आपने अिस अुपायकी कारगरताको बडी सफलताके साथ सिद्ध कर दिया है। अिसलिअे मेरी यह हार्दिक अभिलाषा है कि आप अिस वर्तमान अर्थ-प्रणालीके साथ अपने अहिंसात्मक तरीकोसे लडकर अिसका अन्त कर दें और अेक नवीन अर्थ-प्रणाली निर्माण करनेमें सहायता करे।"

पूजीवाद और साम्राज्यवादके साथ मेरे व्यवहारमें मुझे कोअी असगति नही दिखाअी देती। पत्र-प्रेषकको कुछ विचार-भ्रम हो रहा है। मैंने कभी यह नही कहा और न अिसका खयाल ही किया कि राजाओ, साम्राज्यवादियो और पूजीपतियोका क्या दावा है या अुन्होने क्या दावा किया है। मैंने तो सिर्फ यही कहा और लिखा है कि पूजीका विनियोग हमें किस तरह करना चाहिये। फिर दावा करना तो अेक बात है और अुस पर अमल करना जुदी बात है। अुदाहरणार्थ, लोकसेवक होनेका दावा तो हर कोअी — जैसे मै भी — कर सकता हू। पर केवल दावा करनेसे ही कोअी वैसा थोडे ही बन जाता है। लेकिन अगर मै अपने दावेके अनुसार व्यवहार भी करने लगू तो सभी मेरी कद्र करेंगे। अिसी तरह कोअी पूजीपति सम्पत्ति परसे अपना अेकान्त प्रभुत्व हटाकर यह घोषणा कर दे कि यह सम्पत्ति तो जनताकी है और वह अुसका सरक्षक-मात्र है तो सबको खुशी होगी। बहुत सभव है कि मेरी सलाह कोअी नही मानेगा और मेरे सपने सच्चे न हो पायेगे। पर यह भी तो कौन कह सकता है कि समाजवादियोके सपने सच्चे होगे? समाजवादका जन्म अिसलिअे नही हुआ कि पूजीपति अपने धनका दुरुपयोग करते है। जैसा कि मै बता चुका हू, ओशोपनिषद्के पहले मत्रमे समाजवादके ही नही, बल्कि साम्यवादके सिद्धातका भी स्पष्ट अुल्लेख है। बात असलमें यह है कि जिसे हम शास्त्रशुद्ध समाजवादकी विद्या कहते है अुसका जन्म

तो तव हुआ, जव हृदय-परिवर्तनके तरीको परसे कुछ लोगोकी श्रद्धा अुठ गअी। मै भी अुसी समस्याका हल करनेमें लगा हुआ हू, जो शास्त्रशुद्ध समाजवादियोके सामने पेश है। हा, यह सच है कि मै तो हमेशा और सिर्फ शुद्ध अहिंसाके रास्ते ही जानेवाला हू। शायद वह असफल भी हो। पर अगर अैसा हुआ तो अुसका कारण अहिंसाकी विद्यासे सम्वन्व रखनेवाला मेरा अज्ञान ही होगा। मै अिसका चाहे प्रवीण प्रवर्तक न होअू, पर अिसमें मेरी श्रद्धा जरूर दिन-दिन वढ रही है। अखिल भारत चरखा-सघ और अ० भा० ग्रामोद्योग-सघ अैसी सस्थाअें है, जिनके जरिये अहिंसाकी कलाकी अखिल भारतीय पैमाने पर जाच हो रही है। चूकि काग्रेसका सचालन पूर्णतया लोकसत्तात्मक सिद्धान्तोके अनुसार होता है, अत अुसकी सचालन-नीतिमें समय-समय पर परिवर्तन होना स्वाभाविक है। अैसे परिवर्तनोके कारण मेरे प्रयोगोमें रुकावटें न आने पायें अिसलिअे काग्रेसने अिन दो सस्थाओको अुत्पन्न किया है, जिनके द्वारा मै अपने प्रयोग वे-रोकटोक जारी रख सकू। मेरी मनोगत सरक्षकताकी जाच तो अभी होनेको है। सुयोग्य सचालको द्वारा सम्पत्तिका लोकहितार्थ सवसे अच्छा अुपयोग करनेका यह अेक प्रयास है।

अव पत्रके दूसरे हिस्सेको ले। मै जीवनको जड दीवारोंसे विभक्त नही किया करता। अेक व्यक्तिकी भाति राष्ट्रका भी जीवन अविभक्त और पूर्ण होता है। काग्रेस अथवा तथोक्त राजनीतिक जीवनसे मेरे अलग हो जानेके कारण मेरे हृदयसे हिन्दुस्तानकी आजादीके लिअे लगन लेशमात्र भी कम नही हुअी है। और न सविनय कानून-भग अहिंसाकी कोअी खास प्रक्रिया है। वह तो अुन अनक अहिंसक प्रक्रियाओमें से अेक है, जो किसी प्रकार भी अेक-दूसरेसे असगत नही है। मेरा तो यही काम है कि मै जो-कुछ भी करू अुसमें अहिंसा ही हो। मेरा तो यह दावा है कि मै अपना प्रयोग ठीक शास्त्रशुद्ध ढगसे किये जा रहा हू। अहिंसाके वगीचेमें तो कअी पौवे है। पर अुनका अुद्‌गम-स्थान अेक ही है। यह कोअी जरूरी नही कि सवका प्रयोग अेकसाथ ही ! ो। अुनमे से कुछ ज्यादा प्रवल है, कुछ अुतने प्रवल नही है। पर है सव निरुपद्रवी। फिर भी अुनका अुपयोग करते समय कुशलतासे काम लेना पडता है। परमात्माने मुझे जो कुछ भी कौशल दिया है अुससे मै काम ले रहा हू। पर चूकि मै किसी खास पौधेको छोडकर अेक अमुक पौधेसे काम ले रहा हू अिसके मानी यह नही कि मैंने युद्धको छोड दिया है। युद्ध तो लक्ष्यसिद्धिके पहले रुकनेवाला नही है। अहिंसाके कोशमे पराजय-जैसे शब्दके लिअे स्थान ही नही है।

हरिजनसेवक, २०-२-'३७, पृ० ४-५

२७

क्या आप वर्गयुद्धको टाल सकते है?

प्र० — यदि आप मजदूरो, किसानो और कारखानेके श्रमिकोको लाभ पहुचाना चाहते है, तो क्या आप वर्गयुद्धको टाल सकते है?

अु० — वेशक मै टाल सकता हू, वगर्ते कि लोग अहिसक मार्गका अनुसरण करे। पिछले वारह मास यह अच्छी तरह दिखा चुके है कि अहिंसाको नीतिके रूपमें अपनाने पर भी वह क्या कर सकती है। जव लोग अुसे आचरणका सिद्धान्त मान लेते है, तव वर्गयुद्ध असभव वन जाता है। अिस दिशामें अहमदावादमें प्रयोग किया जा रहा है। अुसके अत्यत सतोपजनक परिणाम आये है। और अुस प्रयोगके निर्णायक सिद्ध होनेकी पूरी सभावना है। अहिसक तरीकेमें हम पूजीपतिका नही, वल्कि पूजीवादका नाश करना चाहते है। हम पूजीपतिसे कहते है कि वह अपनेको अुन लोगोका सरक्षक समझे, जिन पर अुसकी पूजी वनने, टिकने और वढनेका दारमदार है। श्रमिकको पूजीपतिके हृदय-परिवर्तनकी प्रतीक्षा करनेकी भी जरूरत नही है। यदि पूजीमें वल है तो श्रममें भी है। वलका अुपयोग विनागक और रचनात्मक दोनो प्रकारसे किया जा सकता है। दोनो अेक-दूसरे पर निर्भर है। ज्यो ही मजदूर अपनी ताकतको पहचान लेता है, त्यो ही वह पूजीपतिका गुलाम वना रहनेके वजाय अुसका वरावरीका हिस्सेदार वननेकी स्थितिमें आ जाता है। यदि वह अकेला ही मालिक वनना चाहेगा, तो वह सभवत सोनेका अडा देनेवाली मुर्गीको मार डालेगा। वुद्धि और अवसरकी असमानतायें अनन्त काल तक वनी रहेगी। नदीके किनारे रहनेवाले आदमीके लिअे सूखी मरुभूमिमें रहनेवालेकी अपेक्षा फसल अुगानेका अवसर सदा ही अधिक रहेगा। परन्तु यदि असमानतायें हमारे सामने है, तो मूलभूत समानताओको भी हमें अपनी पहुचके वाहर नही समझना चाहिये। पशु-पक्षियोकी तरह ही प्रत्येक मनुष्यको जीवनकी आवश्यकताओंके लिअे समान हक है। और चूकि प्रत्येक अधिकारके साथ अनुरूप कर्तव्य और अुस पर होनेवाले हमलेको रोकनेका अनुरूप अिलाज लगा हुआ है, अिसलिअे मूल प्रारभिक समानताकी प्राप्ति और रक्षा करनेके लिअे अुन कर्तव्यो और अुपायोको खोज निकालनेकी ही वात रह जाती है। यह अनुरूप कर्तव्य है अपने हाथ-पैरोसे परिश्रम करना और वह अनुरूप अुपाय है अुस आदमीसे असहयोग करना, जो मुझसे मेरे परिश्रमका फल छीन लेता है। और यदि

क्या? असलमें पैदा किये हुअे मालका मालिक तो वह है जो अुसके अुत्पादनके लिअे परिश्रम करता है। अगर तमाम श्रमजीवी अक्लमदीके साथ अपना सगठन कर ले, तो अुनकी शक्तिको कौन दवा सकता है? अिसलिअे मुझे वर्ग-विग्रह अनिवार्य नही दीखता। अगर मुझे वह अनिवार्य दिखाअी दे, तो अुसका प्रचार करने और अुसके तरीके वतानेमें मुझे कोअी हिचकिचाहट नही होगी।

हरिजनसेवक, ५–१२–'३६, पृ० ३३४–३५

२९

क्या समाजवादी क्रांति रामराज्यकी ओर ले जायेगी?

प्र० — अधिकतर समाजवादियोका यह विश्वास है कि समाजवादी क्रान्ति होनेसे हिन्दू-मुस्लिम झगडा पीछे पड जायगा और आर्थिक सवाल सामने आ जायेगे। क्या आपकी समझसे यह अच्छा होगा कि अैसी क्रान्ति हो? क्या अिससे रामराज्य कायम होनेमें मदद मिलेगी?

अु० — समाजवादी क्रान्तिसे हिन्दू-मुस्लिम झगडा कुछ हद तक तो शात पडेगा। अितना तो हम सवको साफ होना चाहिये कि झगडोके वहुतसे कारण होते हैं। हिन्दू-मुस्लिम झगडा मिट जानेसे सव झगडे मिट जाते हैं, अैसा तो नही कह सकते। अितना ही कहा जा सकता है कि हिन्दू-मुस्लिम झगडेने अेक भयकर रूप ले रखा है। छोटे-मोटे दूसरे झगडे मिट जानेसे अिस भयकरताका रूप कम हो जायेगा अिसमे शक नही है। जव गुलामी मिटकर आजादी आती है, तव समाजकी सारी व्याधिया (वुराअिया) अूपर आ जाती हैं। अिससे भडकनेका कोअी कारण मैं नही पाता। अगर अैसे मौके पर हमारा मन स्थिर रहे, तो हरअेक समस्या हल हो जाती है। हर हालतमें आर्थिक सवालको हल होना ही है। आज आर्थिक असमानता है। समाजवादकी जडमे आर्थिक समानता है। थोडोको करोड और वाकी लोगोको सूखी रोटी भी नही मिलती, अैसी भयानक असमानतामे राम-राज्यका दर्शन करनेकी आशा कभी न रखी जाय। अिसलिअे मैंने दक्षिण अफ्रीकामे ही समाजवादको स्वीकार किया था। मेरा समाजवादियो और दूसरोसे यही विरोध रहा है कि सव सुधारोके लिअे सत्य और अहिंसा ही सवसे अूचे साधन हैं।

हरिजनसेवक, १–६–'४७, पृ० १४८

३०

सेवा और स्वावलम्बनका सिद्धांत

प्र० — जब धनवान कठोर और स्वार्थी हो जाते हैं और बुराअी बेरोक जारी रहती है, तो लाजिमी तौरसे अपनी तमाम भयकरताके साथ जनताकी क्रान्ति पैदा होती है। जब जीवन, जैसा कि आपने कहा है, अकसर बुराअियोंके बीच चुनाव है, तब क्रान्तियोंके अितिहाससे मिलनेवाली शिक्षाको मद्देनजर रखते हुअे क्या आप अैसी अुदार तानाशाहीका स्वागत करेंगे जो कमसे कम जबरदस्तीके साथ 'धनियोंका शोषण' कर ले, गरीबोंके साथ अिन्साफ करे और यों दोनोंकी सेवा करे?

अु० — मैं अुदार अथवा किसी और तरहकी डिक्टेटरशाहीको मजूर नही कर सकता। अुसमें धनिकोंका लोप नही होगा और न गरीबोंकी हिफा-जत होगी। निश्चय ही कुछ धनी मारे जायेंगे और गरीब मुहताज असहाय हो जायेंगे। अेक वर्गके रूपमे धनिक रह जायेंगे और 'अुदार' विशेषणके बावजूद गरीबोंका वर्ग भी बना रहेगा। असली दवा है अहिंसात्मक लोकतत्र, जिसे दूसरे रूपमें सबका सच्चा शिक्षण कह सकते हैं। धनियोंको गरीबोंकी सेवाकी और गरीबोंको स्वावलम्बनके सिद्धान्तकी शिक्षा दी जानी चाहिये।

हरिजनसेवक, ८–६–'४०, पृ० १३८

३१

बोलशेविज्म

प्र० — बोलशेविज्मके सामाजिक अर्थशास्त्रके बारेमें आपकी क्या राय है और आपके विचारसे हमारे देशके लिअे अुसका अनुकरण करना कहा तक ठीक होगा?

अु० — मुझे स्वीकार करना चाहिये कि बोलशेविज्म शब्दका अर्थ मैं पूरी तरह अभी तक नही समझ सका हू। मैं अितना ही जानता हू कि अुसका अुद्देश्य निजी सम्पत्तिकी सस्थाको खतम कर देना है। यह कोअी नयी बात नही है। यह तो अर्थ-व्यवस्थाके क्षेत्रमें अपरिग्रहके नैतिक आदर्शका प्रयोग हुआ। और यदि लोग अिस आदर्शको अपनी अिच्छासे या समझाने-बुझानेके फलस्वरूप स्वीकार कर लेते है तो बहुत अच्छी बात होगी। लेकिन बोलशेविज्मके बारेमें मुझे जो कुछ जाननेको मिला है अुससे अैसा प्रतीत होता है कि वह न केवल हिंसाके प्रयोगका बहिष्कार नही करता, बल्कि

अिन दो विपरीत रायोमें से किसका विश्वास करना चाहिये। यहा भी सही निर्णय पर पहुचनेके लिअे वे अेक बहुत आसान अुपाय आजमा सकते थे। वे यह मालूम करते — और अैसा करना कठिन नही — कि बोलशेविज्मकी वह पहली तसवीर कौन लोग खीचते है? यह तसवीर वे लोग खीचते है जो दुनिया पर हथियारो और रक्तपातकी नीतिका अमल करके राज्य कर रहे है। अपनी निष्पक्षताकी वृत्तिका आदर करनेके लिअे वे दूसरी तसवीर खीचनेवालोकी राय न मानना चाहते तो न मानते। लेकिन महात्माजीको अिस बातका विश्वास दिलानेकी जरूरत तो नही होनी चाहिये कि पहला पक्ष मानव-जातिका मित्र या मुक्तिदाता तो नही है। अिसलिअे जब यह पक्ष किसी चीजको कुरूप बताता है, तो मानव-जातिका पीडित अग आसानीसे समझ सकता है कि अुनके अिस कार्यके पीछे कोअी अशुभ हेतु है। अुन्हे यह समझनेमे कोअी कठिनाअी नही होनी चाहिये कि तसवीरका डरावना चित्रण करनेमे अिस पक्षका अुद्देश्य अुन्हे ठगनेका है। युद्धकालमे भारतीय राष्ट्रवादी अिसी सहज बुद्धिके द्वारा जब रायटर मित्रराष्ट्रोकी किसी विजयका तार भेजता था, तब यह समझ लेते थे कि जर्मनीने दो लडाअिया जीती होगी और अिसी सहज बुद्धिको मानकर मेक्सिकोका मजदूर अपनेको गर्वपूर्वक बोलशेविक कहता है, क्योकि वह देखता है कि अमेरिकी पूजीपति बोलशेविज्मके बहुत खिलाफ है। लेकिन महात्माजीके अैसा न कर सकनेका कारण शायद यह है कि महात्माकी मनोरचना बहुत जटिल होती है और सहज बुद्धिको सूझनेवाली बात अुसे नही सूझती।

चूकि बोलशेविज्मके बारेमें यह शोचनीय अज्ञान केवल महात्माजीमे ही नही, भारतके दूसरे कअी लोगोमे भी पाया जाता है और चूकि अिस अज्ञानके बावजूद भी वे बोलशेविज्मके बारेमे अपनी राय तो बनाते ही है, अिसलिअे अिस 'खतरनाक' सिद्धान्तके बारेमे कुछ शब्द कहना अनुचित न होगा — खासकर अिसलिअे कि बोलशेविज्म आजकी दुनियाका सबसे ज्यादा प्रभावशाली राजनीतिक बल है। (यहा यह याद रहे कि वह १९१७ की रूसी क्रातिका बुनियादी सिद्धान्त है, परिणाम नही, जैसा कि अकसर लोगोका खयाल है।) जिस तरह सन् १७८९ की महान फ्रेच क्रान्तिने अुस कालमे यूरोपके राजनीतिक विचार-प्रवाह और जीवनको प्रभावित किया था, अुसी तरह यह रूसी क्राति भी हमारे कालमे वही कार्य करनेवाली है। फर्क अितना ही है कि रूसकी भौगोलिक स्थिति और अुसकी क्रातिके प्रेरक सिद्धान्तोके कारण अिस क्रातिका प्रभाव ज्यादा बडे क्षेत्र तक पहुचेगा और अेशिया तथा अफ्रीका भी अुससे अछूते नही रहेगे। यह वस्तुस्थिति है बावजूद शातिकी ध्वजा अुडानेवाले अुन सज्जनोके भय और प्रकोपके (अुनकी अिस प्रतिक्रियाको

आसानीसे समझा जा सकता है), जिनकी सद्भावना पर महात्माजी सहज ही विश्वास कर लेते हैं, किन्तु जिसे दुनियाके अधिक व्यावहारिक लोग सदेहकी दृष्टिसे देखते हैं।

अब, जहा तक महात्माजीका सबध है, बोलशेविज्मके मुख्य सिद्धान्त कुछ नये नही है। वे खुद भी अैसा ही मानेंगे। लेकिन यदि सिद्धान्तोको कार्यमे न अुतारा जाय, तो सिद्धान्तोका बेजान शब्दोमे ज्यादा कोअी मूल्य नही होता। अपने घोषित लक्ष्यके अनुसार महात्माजी यह तो चाहते ही हैं कि जनता पूजीवादके जुअेके बोझसे मुक्त हो जाय। बोलशेविज्म भी यही चाहता है। बोलशेविज्मके पुरस्कर्ता सामान्यत महात्माजीके अिस कथनसे सहमत हैं कि "दुनियाके लिअे अिस समय सबसे बडा खतरा अुत्तरदायित्वकी भावनासे शून्य, शोषण करनेवाला और लगातार बढ रहा वह साम्राज्यवाद है, जो कमजोर राष्ट्रोंके स्वतत्र अस्तित्व और विस्तारका नाश करनेके लिअे अुद्यत है।" लेकिन महात्माजी और बोलशेविकोमें फर्क यह है कि महात्माजीके हाथोमें स्वतत्रताके अिस सदेशका कोअी व्यावहारिक मूल्य नही रहता, क्योकि वे अुसे नीति, धर्म और अीश्वरकी अपनी रहस्यमय कल्पनाके नियत्रणमे बाधकर रखते हैं, जब कि बोलशेविक लोग अपने ध्येय और अपनी दृष्टिको अैसे भ्रमोसे धुधला नही होने देते हैं और दुनिया जैसी है वैसा ही अुससे व्यवहार करते हैं। फल यह है कि जहा साम्राज्यवादी सत्ताओंके सम्मिलित और प्रबल विरोधके होते हुअे भी दीर्घकालीन गुलामीकी सुदृढ शृखलाकी कडियोको लगातार तोडते हुअे बोलशेविज्म आगे बढता जा रहा है, वहा गाधीवाद अभी अधेरेमे अपना रास्ता ही टटोल रहा है और अैसे नैतिक तथा धार्मिक विधि-निषेधोकी सृष्टि करता रहता है, जो जनताको स्वतत्रताके लिअे लडनेकी सकल्प-शक्तिका निर्माण करनेसे रोकते हैं।

मैं यह मान लेता हू कि महात्माजी समाजवादके— सेट साअिमन, टामस मूर, टॉल्स्टॉय आदिके कल्पना पर आधारित समाजवादके नही, बल्कि कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक अेंगेल्स द्वारा आर्थिक तथ्यो और वैज्ञानिक जानकारीकी भित्ति पर निर्मित वैज्ञानिक समाजवादके — सामान्य सिद्धान्तोसे परिचित होगे। ये सिद्धान्त अिस प्रकार हैं (१) अुत्पादनकी पूजीवादी प्रणालीका अुच्छेद, (२) वैयक्तिक सम्पत्तिकी समाप्ति, (३) सामाजिक स्वामित्वके आधार पर अुत्पादन और वितरणके साधनोका पुनर्गठन, और (४) वर्गोकी बुराअीसे दूषित समाजका भाअीचारेकी भावनासे युक्त मानव-परिवारमे रूपान्तर। यही सब सिद्धान्त बोलशेविज्मके भी हैं, क्योकि बोशलनेविज्म समाजवादकी ही वह प्रारभिक अवस्था है, जब वह अपने विरोधियोको परास्त कर रहा होता है और अिसलिअे कुछ अुग्र होता है।

वोलशेविज्म शब्दको रक्तपात, विनाश, आतक आदिके साथ जोड दिया गया है, लेकिन वास्तवमे अुसके मूल अर्थमें अैसी कोअी वुराअी नही है। वोलशेविज्म रूसी शब्द वोलशेविकीसे बना है और वोलशेविकीका अर्थ है बहुसख्यक पक्षके अनुयायी। अिस शब्दका प्रयोग पहले-पहल तब हुआ था, जब सन् १९०३ मे कार्यक्रम और कार्य-प्रणालीके सवाल पर रूसकी सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक लेवर पार्टी दो टुकडोमे बट गयी थी। बहुसख्यक दलके— जिसके नेता लेनिन और कुछ दूसरे लोग थे — कार्यक्रम और कार्य-प्रणालीका नाम वोलशेविज्म पड गया। और चूकि रूसके मजदूर वर्गने अिसी बहुसख्यक दलके कार्यक्रम और कार्य-प्रणालीके अनुसार लडकर अक्तूबर १९१७ मे अपनी विजय प्राप्त की थी, अिसीलिअे अक्तूबर क्रातिको वोलशेविस्ट विजय कहा जाता है। यह वोलशेविस्ट विजय समाजवादकी पहली विजय है। अब हम रूसी क्रातिके ठोस परिणाम देखे (१) अेक भ्रष्ट, अनुत्तरदायी और निरकुश शासनका अत हो गया। (२) अुन मध्यम वर्गोका भी सफाया हो गया जो जनतत्रकी आडमे, विदेशी सरकारोकी मददसे रूसी जनताको क्रातिके लाभोसे वचित करना चाहते थे। (३) जारकी निरकुश सत्ताका मूलाधार जमीदार-वर्ग नष्ट कर दिया गया, जमीन पूरे राष्ट्रकी सपत्ति घोषित कर दी गयी और किसानोमे बाट दी गयी। (४) बडे-बडे अुद्योग राष्ट्रकी सम्पत्ति घोषित कर दिये गये। (५) वैदेशिक व्यापार पर राज्यका अेकाधिकार हो गया। (६) विधान और शासनकी सारी सत्ता लोक-समुदायकी प्रचड बहुसख्याको यानी मजदूरो, किसानो और सैनिकोको सौप दी गयी। वे अिस सत्ताका प्रयोग अपनी कौसिलो या समितियो द्वारा करते हैं, जिन्हे रूसी भाषामें सोवियत कहा जाता है। (७) वैयक्तिक सपत्तिका सारा अधिकार और अुसके कारण मिलनेवाले सब विशेषाधिकार खतम कर दिये गये। ये है वोलशेविज्मके सिद्धान्त जिन्हे रूसमे क्रातिके फलस्वरूप व्यवहारमे अुतारा गया है। हमने वोलशेविज्मकी सामान्य जानकारी दे दी, अब हम यह जानना चाहेगे कि महात्माजी अुसके बारेमें क्या सोचते है? अिस प्रश्नके अुत्तरमे न सिर्फ भारतको बल्कि सारी दुनियाको दिलचस्पी होगी।

अिसके बाद हम ज्यादा मुश्किल सवाल पर पहुचते है। महात्माजीको शायद अिन सिद्धान्तोके खिलाफ कोअी आपत्ति न हो, लेकिन अुन्हे कार्यान्वित करनेकी रीतिके बारेमें जरूर ही वे अनेको शर्ते मनवाना चाहेगे। अुनके लिअे तो हर चीजकी अेक ही कसौटी है। अगर वोलशेविज्म अनीश्वरवादी है, तो वे अुसके खिलाफ है। अपने निर्णयके लिअे अुन्हे अितना ही काफी हो जाता है। हमने अुन्हे सक्षेपमें वोलशेविज्मकी परिभाषा दे दी है। अब

वे विचार करें और कहें कि वह ओश्वरकी अस्वीकृतिका सूचक है या नही है। वे असे ओश्वरकी अस्वीकृतिका सूचक तब तक नही कह सकते, जब तक कि वे वैयक्तिक सम्पत्ति और स्थापित स्वार्थोंको ओश्वरीय विधान न मानते हों। अिसमें शक नही कि बोलशेविज्म वैयक्तिक संपत्ति और स्थापित स्वार्थोंको — जो कि अितिहासके आदिकालसे ही मनुष्य-समाजके लिअे अभिशाप-रूप सिद्ध हुअे हैं — अमान्य करता है। बोलशेविज्मके व्यावहारिक कार्यक्रममें ओश्वर या धर्मका कोओी सवाल नही है। वह न ओश्वरवादी है और न अनीश्वरवादी है। असका संबंध मनुष्यके दुनियवी जीवनसे है। ओश्वर या धर्मके साथ असका झगडा यदि होता है तो तब होता है, जब ओश्वर और धर्म असके रास्तेमें आते हैं, यानी असके व्यावहारिक कार्यक्रममें बाधा अपस्थित करते हैं। वैसी हालतमें बोलशेविज्म अस सर्वशक्तिमान माने जानेवाले ओश्वरकी चुनौती स्वीकार करनेमें संकोच नही करता। तब वह अनीश्वरवादी बन जाता है और महात्माजीकी अनुकूलताको खोनेका खतरा अुठा लेता है। लेकिन अैसा करके वह न केवल जनताके भौतिक अधिकारोंके लिअे लडता है, बल्कि अपने हाथमें लोगोंका बौद्धिक और मानसिक अुद्धार करनेवाले ज्ञानकी मशाल भी अुठाता है, ताकि अज्ञान और अंधविश्वासका वह अंधेरा दूर हो जाय जिसमें प्रभुता-भोगी वर्गने जनताको युगों-युगों तक रखा है।

लेकिन बोलशेविज्मका यह कार्यक्रम, जिसे महात्माजीको भी मानवता-सम्मत मानना पडेगा — वे जाहिरा तौर पर अूपरी वर्गके हितोंकी हिमायत शुरू कर दें तो दूसरी बात — व्यवहारमें अुतारना आसान नही है। अिसमें शक नही कि क्रांतिके बाद रूसमें अत्यंत विनाशकारी गृहयुद्ध चला और आतंकका राज्य रहा। लेकिन असका कारण यह था कि अिस कार्यक्रमका कार्यान्वित होना रोकनेके लिअे विरोधियोंने बडा प्रबल प्रतिरोध चलाया। यह प्रतिरोध न सिर्फ रूसके अभिजात और मध्यम वर्गके लोगोंने, जो अपनी खोयी बाजी फिरसे जीत लेना चाहते थे, चलाया, बल्कि अुन्हें सारी दुनियाके अुन वर्गोंकी प्रगट मदद भी मिली। क्योंकि अुन्होंने देख लिया कि रूसी क्रांति अुनके किलेकी प्राचीरमें गोया पहली दरार है। अुनके प्रतिरोधकी अिस सतत चलायी गयी मुहिमका अेक अंग यह था कि वे बोलशेविज्मका चित्रण अत्यंत डरावने रंगोंमें करते थे। खेदकी बात है कि महात्माजी भी अेक हद तक अुनके अिस झूठे चित्रणसे प्रभावित हो गये हैं। प्रश्न यह है कि अुपस्थित परिस्थितिमें बोलशेविक क्या कर सकते थे? अुनके सामने दो ही विकल्प थे अेक तो यह कि वे रूसी मजदूरों और किसानोंसे कह देते कि वे ओश्वरकी और धर्मकी बात मानकर गुलामीकी अुन जंजीरोंको पुनः स्वीकार

कर ले, जिन्हे अुन्होने अितनी वहादुरीसे तोडा था। और दूसरा यह कि अगर अीश्वर और धर्म अुनके रास्तेमे आते है, तो अपनी जीती हुअी आजादीकी रक्षा और मजवूतीके लिअे अीश्वर और धर्मके खिलाफ भी लड ले। परिस्थितियोने वोलशेविज्मको दूसरा विकल्प चुननेके लिअे वाध्य किया। कारण, रूसी मजदूरो और किसानोको पुन जार वादशाहो और पूजीपतियोके अत्याचारी शासनके पाशमे फासनेके लिअे न सिर्फ सारे भौतिक सावनोको अिकट्ठा किया गया था और काममे लाया जा रहा था, वल्कि अीश्वर और धर्म आदिके हथियारोको भी अुनके खिलाफ अुसी अुद्देश्यसे अिकट्ठा किया गया था। वोलशेविज्म अीश्वरकी भक्तिका अुपदेश नही करता और वोलशेविज्मके अनुयायी या प्रचारक अीश्वरके दूत नही है। लेकिन वोलशे-विज्म असुरत्वका हामी भी नही है। महात्माजी "जनताको हृदयके रास्तेसे, अुनकी सत्-प्रकृतिके द्वारा छूना चाहते है"। अुनकी यह अिच्छा और कोशिश भली मालूम होती है और यदि अूपरी वर्गोंकी प्रभुता और साम्राज्यवादके अत्याचारसे जनताका अुद्धार करनेमे वह अुपयोगी सावित हुअी होती, तो वोलशेविज्मको अुसका विरोध करनेके लिअे कोअी कारण न रहता। अिसी तरह महात्माजीकी 'अनुशासन' की वात भी सशयास्पद है। वह लोगोके आध्यात्मिक कल्याणके लिअे अच्छी हो सकती है, लेकिन वह आजादीके लिअे लडनेकी अुनकी सकल्प-शक्तिको जरूर कमजोर करती है। 'हृदय', 'सत्-प्रकृति', 'अनुशासन' आदिकी ये वाते स्मरणातीत कालसे कही जाती रही है; और जो अुन्हे करते रहे है वे जानते रहे हो या नही, अुनसे निचले वर्गो पर अूपरी वर्गके सत्ताके वन्धन अधिक मजवूत ही हुअे है। वोलशेविक किसी भी कर्तव्यको, वह कितना ही अरुचिकर या कठिन क्यो न हो, टालता नही है। वह अीश्वरके अस्तित्वको चुनौती देता है, और अिस मान्यतासे अुद्भूत धर्म और नीतिकी व्यवस्थाओका खडन करता है, क्योकि आजादीकी लडाअीके दरमियान ये सव शासकोकी निरकुश सत्ता और अत्याचार और दमनके पक्षमे खडे दिखाअी देते है।

यदि अीश्वर और पृथ्वी पर अुसके प्रतिनिधि अैहिक सवालोमे दखल देना छोड दे, तो वोलशेविज्म अीश्वरको अुसकी जगह रहने देनेके लिअे तैयार है। लेकिन यदि वे अपनी अति-भौतिक (Supermaterial) स्थितिमें सतुष्ट रहनेके लिअे तैयार नही है और पृथ्वी पर गडवड फैलाते है, तो वोलशेविज्म, धर्मने जनताको अज्ञानके जिस जालमे जकड रखा है, अुससे अुसका अुद्धार करनेके लिअे अनीश्वरवादका प्रचार करनेमे भी नही चूकेगा।

अेम० अेन० राय

यग अिडिया, १-१-'२५, पृ० ५-६

३३

युवा साम्यवादियोके साथ प्रश्नोत्तर

[श्री महादेव देसाओकी 'लदनकी चिट्ठी' मे।]

श्रीमती नायडूमे कुछ हद तक प्राचीन रोमकी महिलाओ जैसा वाग्युद्धका प्रेम है, साथ ही अपने नौजवान बच्चोके लिअे अुतना ही गर्व भी है। अुस दिन अुन्होने गाधीजीसे युवा भारतीय साम्यवादियोके अेक दलका परिचय कराया, जिसका नेता अुनका सबसे छोटा पुत्र बाबा था। जैसा स्वाभाविक था, गाधीजीने अिस रक्तहीन प्रतिस्पर्धाका अध्यक्ष श्रीमती नायडूको ही बनाया, क्योकि अुन्होने ही अिसकी व्यवस्था की थी।

ये सभी नौजवान अपनी मातृभूमिसे लगभग निर्वासित-से थे और अुसकी सेवाकी सच्ची लगन रखते थे। मेरा खयाल है कि अुन सबको गाधीजीसे बडा प्रेम था और यह अुनकी समझमें नही आता था कि जब गाधीजीको सामाजिक न्यायके लिअे अितनी आतुरता और गरीबोंकी अितनी चिन्ता है, तब अुनके सिद्धान्तोसे सहमत हुअे बिना वे कैसे रह सकते है। बाबाने श्रीगणेश करते हुअे कहा, "हमे आपकी भाषा समझनेमें अक्सर कठिनाअी अनुभव होती है, क्योकि आप न केवल अेक राष्ट्रको बल्कि अंग्रेजी भाषाको भी नये साचेमे ढाल रहे है और हमें कअी बार अैसा लगता है कि जब आपके कथनका अेक अर्थ होता है, तब लोग अुसका बिलकुल दूसरा ही अर्थ लगाते है। अिसलिअे हम यह देखने आये है कि हमारे प्रकट मत-भेदोके पीछे कोअी समान पृष्ठभूमि खोजी जा सकती है या नही।" यह कहकर अुन्होने अपनी काफी बडी प्रश्नमाला, जिसे वे थोडे दिन पहले गाधीजीके पास छोड गये थे, शुरू की। अुनमे से कुछ प्रश्न और गाधीजीके अुत्तर नीचे दिये जाते है।

विशेषाधिकार-प्राप्त वर्गोकी स्थिति

पहला प्रश्न यह था

"आपके खयालसे भारतीय राजा-महाराजा, जमीदार, मिल-मालिक, साहूकार और दूसरे मुनाफाखोर लोग धनवान कैसे बनते है?"

गाधीजीने अुत्तर दिया "अभी तो आम जनताका शोषण करके ही बनते है।"

फिर अुन्होने पूछा, "क्या ये वर्ग भारतके मजदूरो और किसानोंके शोषणके बिना धनवान बन सकते है?"

गाधीजीने जवाब दिया, "हा, अमुक हद तक।"

"क्या अिन वर्गोंके मामूली किसान और मजदूरसे, जो धन जुटानेका काम करता है, अधिक आरामसे रहनेमे कोअी सामाजिक न्याय है?"

गाधीजीने स्पष्ट रूपमे अुत्तर दिया, "बिलकुल नही।" फिर वे समझाने लगे, "समाजकी मेरी कल्पना यह है कि हम पैदा तो समान दरजे पर होते है, अर्थात् हम सबको समान अवसर पानेका हक है, परतु हम सबकी क्षमता अेकसी नही है। प्रकृतिकी रचना ही अैसी है कि सबकी क्षमता अेकसी हो ही नही सकती। अुदाहरणके लिअे, सबकी अेकसी अूचाअी, अेकसा रग या बुद्धि आदिकी अेकसी मात्रा नही हो सकती। अिसलिअे कुदरतन् ही कुछ लोगोकी कमानेकी योग्यता अधिक होगी और दूसरोकी कम। बुद्धिशाली लोगोकी योग्यता अधिक होगी और वे अपनी बुद्धिका अिस कामके लिअे अुपयोग करेगे। यदि वे अुपकारकी भावना रखकर अपनी बुद्धिका अुपयोग करे तो राज्यका ही काम करेगे। अैसे लोग तो ट्रस्टी या सरक्षक बनकर रहते है, और किसी तरह नही। मै बुद्धिशाली आदमीको अधिक कमाने दूगा, अुसकी बुद्धिको कुठित नही करूगा। परतु अुसकी अधिकाश कमाअी राज्यकी भलाअीके लिअे वैसे ही काम आनी चाहिये, जैसे कि बापके तमाम कमाअू बेटोकी आमदनी परिवारके कोषमे जमा होती है। वे अपनी कमाअीको सरक्षक बनकर ही रखेगे। सभव है कि अिसमे मुझे बुरी तरह असफलता मिले, परतु मै अिसी दिशामे चल रहा हू। और 'बुनियादी अधिकारोकी घोषणा' मे भी यही अर्थ निहित है।"

वर्गयुद्ध

अिससे वर्गयुद्धकी चर्चा छिड गअी। प्रश्न यह था कि अुससे विशेष अधिकार भोगनेवाले वर्गोका वाछित कायापलट किया जा सकता है या नही?

प्र० — क्या आपका यह खयाल नही है कि किसान और मजदूर आर्थिक और सामाजिक मुक्तिके लिअे वर्गयुद्ध चलाकर ठीक कर रहे है, ताकि वे समाजके मुफ्तखोर वर्गोका भरण-पोषण करनेके भारसे सदाके लिअे मुक्त हो जाये?

अु० — नही। मै स्वय अुनके पक्षमे क्राति कर रहा हू, परतु वह अहिसक क्रान्ति है।

प्र० — युक्तप्रातमें लगान कम करानेके आन्दोलनसे आप किसानोकी स्थितिमे सुधार कर सकते है, परन्तु अुस प्रणालीकी जड नही काटते।

अु० — हा। परतु अेक ही साथ सब कुछ नही किया जा सकता।

प्र० — तो फिर आप सरक्षकता (ट्रस्टीशिप) कैसे लायेंगे ? समझा-बुझाकर ही न ?

अु० — केवल जवानसे समझा-बुझाकर नही। मैं अपने अुपायो पर सारी शक्ति लगाअूगा। कुछ लोगोने मुझे अपने समयका सबसे बडा क्रान्तिकारी बताया है। यह गलत हो सकता है, परतु मैं अपने-आपको अेक क्रातिकारी — अहिंसक क्रातिकारी मानता हू। मेरा अुपाय असहयोग होगा। कोअी व्यक्ति सबधित लोगोके, अिच्छा या अनिच्छासे किये गये, सहयोगके बिना धन अिकट्ठा नही कर सकता।

विशेषाधिकार-प्राप्त वर्ग सरक्षकोंके रूपमें

परतु अिससे प्रश्न पूछनेवालोको पूरा सतोष नही हुआ। वे तो कुछ वर्गोंको प्राप्त आजके विशेष अधिकारोके आधारको ही चुनौती दे रहे थे। अुन्होने पूछा, "पूजीपतियोको सरक्षक (ट्रस्टी) किसने बनाया ? अुन्हे कमीशन लेनेका हक क्यो है और वह आप कैसे तय करेगे ?" गाधीजीने समझाया, "अुन्हे कमीशन लेनेका हक अिसलिअे है कि रुपया अुनके कब्जेमे है। किसीने अुन्हे सरक्षक नही बनाया है। मैं अुनसे सरक्षक बन जानेका अनुरोध कर रहा हू। जो लोग आज मालिक बने हुअे हैं, अुनसे मैं कहता हू कि वे सरक्षक बनकर काम करे, अर्थात् अैसे सरक्षक बन जाय जो अपने अधिकारसे नही, परतु जिनका अुन्होने शोषण किया है अुनके दिये हुअे अधिकारसे मालिक रहे। मैं मनमाने तौर पर यह तय नही करूगा कि वे क्या कमीशन ले, परतु अुनसे कहूगा कि जितना अुचित हो अुतना ही ले। अुदाहरणार्थ, जिस आदमीके पास १०० रुपये हैं अुससे मैं कहूगा कि ५० रुपये तुम ले लो और बाकी ५० रुपये मजदूरोको दे दो। परतु जिसके पास अेक करोड रुपये हैं, अुसे शायद अपने लिअे अेक प्रतिशत ही रखनेको कहूगा। अिस प्रकार आप देखते हैं कि मैं कमीशनकी कोअी निश्चित रकम मुकर्रर नही करूगा, क्योकि अुसका परिणाम भयकर अन्याय होगा।"

व्यक्ति बनाम प्रणाली

अिसके बादकी प्रश्नमालाका सबध भारतीय पूजीपतियो और जमीदारोंके विरुद्ध लडे जानेवाले युद्धके प्रति गाधीजीके रवैयेसे था। अिसने गाधीजीको प्रणाली और मनुष्यके बीच भेद करनेकी आवश्यकता समझानेका अवसर दिया। अिससे वे अपना भूमि-सबधी और आर्थिक कार्यक्रम भी ठोस रूपमें अुपस्थित कर सके। साम्यवादी युवकोने कहा, "राजा-महाराजाओ और जमीदारोने अग्रेजोका साथ दिया। परतु आपको तो आम जनतासे समर्थन प्राप्त होता है। अुधर आम जनता अिन वर्गोंको अपना शत्रु समझती है। जब आम जनताके

हाथमें सत्ता आ जायगी अुस समय यदि अुसने अिन वर्गोंके भाग्यका निर्णय कर दिया तो आपका क्या रुख होगा ? "

गाधीजीने अुत्तर दिया, "आज तो आम जनता जमीदारो और दूसरे मुनाफाखोरोको अपना शत्रु नही समझती। परतु अिन वर्गोकी तरफसे किये जानेवाले अन्यायका भान आम जनताको कराना होगा। मै आम लोगोको पूजीपतियोको अपना दुश्मन समझना नही सिखाता, परतु मैं अुन्हे यह सिखाता हू कि वे स्वय ही अपने दुश्मन है। असहयोगियोने लोगोको यह कभी नही कहा कि अग्रेज या जनरल डायर बुरे है। अुन्होने लोगोको यही समझाया कि वे अेक प्रणालीके शिकार है। अिसलिअे वह प्रणाली नष्ट की जानी चाहिये, न कि अुसके शिकार बने हुअे व्यक्ति। यही कारण है कि आजादीकी चाहसे अितनी प्रज्वलित भारतीय जनताके बीच भी ब्रिटिश कर्म-चारी निर्भय होकर रह सकते है।"

अपना सामूहिक हमला जारी रखते हुअे अुन्होने फिर पूछा, "यदि आप किसी प्रणाली पर आक्रमण करना चाहते है, तो अेक भारतीय पूजीपति और अेक अग्रेज पूजीपतिमे कोअी फर्क नही हो सकता। आप करबन्दीको जमीदारोके प्रति क्यो नही लागू करते ? "

गाधीजीने अुत्तर दिया, "जमीदार अेक प्रणालीका अस्त्रमात्र है। ब्रिटिश प्रणालीके साथ ही साथ जमीदारके खिलाफ भी आदोलन करना जरूरी नही है। दोनोमे भेद करना सभव है। परतु हमे लोगोको जमीदारोका लगान चुकानेसे रोकना पडा, क्योकि अिन्ही रुपयोमे से जमीदार सरकारको देते है। हमारा खुद जमीदारोके साथ अुस वक्त तक कोअी झगडा नही है, जब तक वे काश्तकारोके साथ अच्छा बरताव करते है।"

ठोस कार्यक्रम

प्र० — किसान और मजदूरोको अपने भाग्यका निर्णय करनेका पूर्ण अधिकार दिलानेके लिअे आपका ठोस कार्यक्रम क्या है ?

अु० — मेरा कार्यक्रम वही है जिस पर मै काग्रेसके मारफत अमल कर रहा हू। मुझे दृढ विश्वास है कि अिसके परिणामस्वरूप आज अुनकी स्थिति अुस स्थितिसे कही श्रेष्ठ है, जो लोगोकी यादमे पहले किसी भी समय रही हो। मै अिस वक्त अुनकी आर्थिक स्थितिकी बात नही कर रहा हू। मैं अुस जबरदस्त जागृतिका जिक्र कर रहा हू, जो अुनमें आ गयी है और जिसके कारण अुनमे अन्याय और शोषणका विरोध करनेकी योग्यता पैदा हो गअी है।

प्र० — किसानोंको अुनके ५०० करोड रुपयेके कर्जसे मुक्त करनेके लिअे आप क्या अुपाय करना चाहते है?

अु० — कर्जकी ठीक रकम तो किसीको भी मालूम नही है। मगर जो भी हो, यदि कांग्रेसको सत्ता मिली तो जैसे वह जानेवाली विदेशी सरकारके लेन-देनकी जिम्मेदारी अुसका स्थान लेनेवाली भारतीय सरकार द्वारा स्वीकार किये जानेकी जाच करायेगी, वैसे ही वह किसानोके कथित कर्जकी भी जाच करानेका आग्रह रखेगी।

यग अिडिया, २६–११–'३१, पृ० ३६७–६८

३४

अपनी बुद्धि पर ताला न लगाअिये

[बम्बअीके मजदूरोकी अेक सभामें बोलते हुअे गाधीजीने हिन्दीमे जो भाषण दिया था, अुसका सार नीचे दिया जाता है। अिस सभामें कुछ नौजवान साम्यवादियोने गडबड मचाअी थी। — म० दे०]

मै जानता था कि भारतमे साम्यवादी है। परन्तु मेरठ जेलके सिवा बाहर अुनसे मिलनेका मौका नही आया था और न अुनके भाषण मैने सुने थे। दो वर्ष पूर्व अपने युक्तप्रान्त (अु० प्र०) के दौरेमे मैने मेरठके बन्दियोसे मिलनेका खास ध्यान रखा था और अिस तरह अुनका कुछ परिचय प्राप्त किया था। आज मैने अुनमे से अेकका भाषण सुना। मै अुनसे कह सकता हू कि वे मजदूरोके लिअे स्वराज्य प्राप्त करनेका दावा भले ही बहुत करते हो, परन्तु मुझे अुनकी शक्तिमे शका है। जब कि अिन नौजवान साम्यवादियोमे से किसीका जन्म भी नही हुआ था, अुससे बहुत पहले ही मैने मजदूरोके कामको अपना बना लिया था। मैने दक्षिण अफ्रीकामे अपने समयका सर्वोत्तम भाग अुनके लिअे काम करनेमे लगाया था। मै अुनके साथ अुनके सुख-दुःखमे अेक साथीकी तरह भाग लेते हुअे रहता था। अिसलिअे आपको समझ लेना चाहिये कि मै श्रमिकोकी ओरसे बोलनेका दावा क्यो करता हू। मै आपको निमत्रण देता हू कि आप मेरे पास आअिये और मुझसे जितने साफ दिलसे चर्चा कर सके कीजिये।

आप साम्यवादी होनेका दावा करते है, परन्तु साम्यवादी जीवन व्यतीत करते दिखाअी नही देते। मै आपको बता दू कि मै साम्यवाद शब्दके अुत्तम

अर्थमें अुसके आदर्शके अनुसार जीनेका भरसक प्रयत्न कर रहा हू। यदि आप देशको अपने साथ ले चलना चाहते हो, तो आपमें देशको समझाकर अुस पर असर डालनेकी योग्यता होनी चाहिये। आप दबावसे अैसा नही कर सकते। आप देशको अपने विचारोका बनानेके लिअे विनाशका पथ ग्रहण कर सकते है। परन्तु आप कितने लोगोका विनाश करेगे? करोडोका तो कर नही सकते। अगर आपके साथ लाखो लोग हो, तो आप कुछ हजारको मार सकते है। परन्तु आज तो आप मुट्ठीभरसे अधिक नही है। मै आपसे कहता हू कि आप काग्रेसका मत बदल सकते हो, तो बदलकर अुसे अपने हाथमे ले लीजिये। लेकिन शिष्टताके प्रारम्भिक नियमोको तोडनेसे क्या लाभ? और शिष्टताके अिन नियमोको तोडनेका कोअी कारण भी तो नही है। अपने विचारोको पूरी तरह प्रगट करनेका आपको अधिकार है। भारतवर्षमे अितनी सहिष्णुता है कि कोअी भी अपनी बात सार्थक ढगसे कह सके तो वह धीरजसे सुन लेगा।

अस्थायी सधिसे मजदूरोका कोअी नुकसान नही हुआ हे। मेरा दावा है कि मेरी किसी भी प्रवृत्तिसे मजदूरोको कभी हानि नही हुअी, कभी हो ही नही सकती। यदि काग्रेस परिषदमें अपने प्रतिनिधि भेजेगी, तो वे किसानो और मजदूरोके स्वराज्यके सिवा और किसी स्वराज्यके लिअे अपना जोर नही लगायेगे। साम्यवादी दलके अस्तित्वमे आनेसे बहुत पहले ही काग्रेस निश्चय कर चुकी थी कि जो स्वराज्य श्रमिको और कृषकोके लिअे न हो अुसका कोअी अर्थ नही होगा। शायद यहाके मजदूरोसे किसीको भी २० रुपये मासिकसे कम मजदूरी नही मिलती। परन्तु न मै सिर्फ आपके लिअे, बल्कि अुन घोर परिश्रम करनेवाले और बेकार लाखो लोगोके लिअे भी स्वराज्य-प्राप्तिकी कोशिश कर रहा हू, जिनको अेक जून भी पूरा खानेको नही मिलता और जिन्हे बासी रोटीके टुकडे और चुटकी भर नमकसे काम चला लेना पडता है। परन्तु मैं आपको धोखा नही देना चाहता। मुझे आपको अवश्य यह चेतावनी दे देनी चाहिये कि मै पूजीपतियोका बुरा नही चाहता, मै अुन्हे हानि पहुचानेका विचार नही कर सकता। परन्तु मै कष्ट-सहन करके अुनकी कर्तव्य-भावनाको जगाना चाहता हू। मै अुनके दिल पिघलाकर अपने कम भाग्यशाली भाअियोके प्रति अुनसे न्याय कराना चाहता हू। वे मनुष्य है और अुनसे की गअी मेरी अपील व्यर्थ नही जायेगी। जापानके अितिहासमे त्यागी पूजीपतियोके बहुतसे अुदाहरण मिलते है। पिछले सत्याग्रहके दिनोमें पूजीपतियोने खासी सख्यामे बडा त्याग किया। वे जेलोमे गये और अुन्होने बडे बडे कष्ट अुठाये। क्या आप अुन्हे अपनेसे अलग करना चाहते है? क्या आप नही चाहते कि समान अुद्देश्यके लिअे वे आपके साथ काम करे?

आपने मुझसे यह जानना चाहा है कि मेरठके वन्दियोकी मुक्तिके लिअे मैं क्या कर रहा हू। मैं आपको वताना चाहता हू कि यदि मेरे पास सत्ता होती, तो मैं हमारे जेलोमें जितने भी वन्दी हैं अुन सवको मुक्त कर देता। लेकिन अुनकी मुक्तिको मैं समझौतेकी पूर्व-शर्त नही वना सकता था। वैसा करना न्यायोचित न होता। मै आपको वताना चाहता हू कि अुन्हे छुडवानेके लिअे मैं अपनी पूरी कोशिश कर रहा हू। यदि शान्त वातावरण पैदा करके आप लोग मेरे साथ सहयोग करनेका निर्णय करे, तो सभव है कि हम अुन सवको — यहा तक कि गढवाली कैदियोको भी छुडा सकेंगे। आप लोग आजादीकी वात करते हैं। क्या मैं भी अुसे अुतना ही नही चाहता जितना आप? ('आजादीका सार' की आवाजें।) हा, ठीक है, मैं आजादीका सार चाहता हू, अुसकी छाया नही। मैं कहना चाहता हू कि आप थोडा धीरज रखे और देखें कि अुचित समय आने पर अपनी अल्पतम मागके रूपमें कांग्रेस क्या मागती है। मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि कराचीमें हम अपना लाहौरवाला प्रस्ताव फिर दुहरायेंगे और यदि हम लोग गोलमेज परिषदमें गये तो या तो हम जो चाहते हैं वही लेकर लौटेंगे या कुछ भी नही लेंगे।

आपने 'ग्यारह मुद्दो' के वारेमें भी पूछा है। मेरे खयालसे अिन ग्यारह मुद्दोमें आजादीका सार आ जाता है। अुनमें किसानो और मजदूरोको पूरी सुरक्षा प्रदान की गयी है। लेकिन समझौतेकी चर्चामें मैं अिन मुद्दोका अुल्लेख नही कर सकता था, क्योकि ये मुद्दे सविनय आज्ञाभगके विकल्पके रूपमें पेश किये गये थे। अव स्थिति यह है कि सविनय आज्ञाभगका आन्दोलन हम चला चुके हैं और यदि हमें निमत्रण मिलता है तो हमें गोलमेज परिषदमें अपनी राष्ट्रीय माग रखनेके लिअे जाना है। यदि हम वहा सफलता प्राप्त करते हैं, तो ग्यारह मुद्दोकी पूर्ति हो ही जाती है। आप विश्वास रखिये कि जो स्वराज्य अिन ग्यारह मुद्दोकी पूर्ति नही करेगा, वह मुझे मान्य नही होगा।

अीश्वरने आपको वुद्धि और योग्यता प्रदान की है, अुसका सदुपयोग कीजिये। मेरी आपसे विनती है कि अपनी वुद्धि पर ताला न लगाअिये। भगवान आपकी सहायता करे।

यग अिंडिया, २६–३–'३१, पृ० ५३

३५

साम्यवादियोंका मुकाबला कैसे करें?

प्र०—साम्यवादी कांग्रेसका खुला विरोध कर रहे हैं। हम अुनकी प्रवृत्तियोका प्रतिकार कैसे कर सकते हैं?

अु०—मालूम होता है कि साम्यवादियोने वखेडे खडे करना अपना पेशा वना लिया है। अुनमे मेरे मित्र भी हैं। कुछ तो मेरे लिअे पुत्र जैसे हैं। परन्तु अैसा दिखाअी देता है कि वे न्याय-अन्याय और सच-झूठमे कोअी फर्क नही करते। वे अिस अिलजामको स्वीकार नही करते, परन्तु अुनके कृत्योंके समाचारोसे अिसकी पुष्टि होती मालूम होती है। अिसके अलावा मालूम होता है कि वे रूसके आदेशो पर काम करते हैं, क्योकि वे भारतके वजाय रूसको अपना आध्यात्मिक घर मानते हैं। मै किसी वाहरी शक्ति पर अिस तरह निर्भर रहना वरदाश्त नही कर सकता। मैंने तो यहा तक कह दिया है कि अपने मौजूदा खाद्य-सकटमे हमे रूसी गेहू पर भी दारमदार नही रखना चाहिये। हममे अितना सामर्थ्य और साहस होना चाहिये कि विदेशी दानके वजाय अपनी भूमिसे जो कुछ मिल जाय अुसी पर हम गुजर कर सके। नही तो हमे अेक स्वतत्र देशके रूपमे जिंदा रहनेका हक नही होगा। यही वात विदेशी विचारधाराओ पर लागू होती है। मै अुन्हे अुसी हद तक स्वीकार करूगा कि जिस हद तक मैं अुन्हे पचा सकूगा और भारतीय परि-स्थितिके अनुकूल वना सकूगा। मै नये विचारोको रोकना नही चाहता, पर मैं अुनका गुलाम भी नही वनना चाहता।

अिसलिअे साम्यवादियोका मुकावला करनेके लिअे मेरा नुसखा यह है कि मैं अुनके हाथसे मर जाअूगा, मगर अुन पर हाथ नही अुठाअूगा।

हरिजन, ६-१०-’४६, पृ० ३३८-३९

३६

शरीर-श्रम क्या है?

प्र० — जिसे टॉल्स्टॉय 'रोटीके लिअे श्रम करना' कहते हैं, अुसके बारेमे आपका क्या अभिप्राय है? क्या आप शरीर-श्रम करके अपनी आजीविका प्राप्त करते है?

अु० — सच पूछा जाय तो 'रोटीके लिअे श्रम करना' ये शब्द टॉल्स्टॉयके है ही नही। अुन्होने दूसरे अेक रूसी लेखक वोन्दरेव्हसे अुन्हे ग्रहण किया था और अुनका अर्थ यह है कि हरअेकको रोटी पानेके लिअे काफी शारीरिक मेहनत करनी चाहिये। अिसलिअे आजीविकाका विशाल अर्थ करने पर यह आवश्यक नही है कि शारीरिक मेहनत करके ही आजीविका प्राप्त की जाय। लेकिन हर आदमीको कुछ न कुछ अुपयोगी शरीर-श्रम अवश्य करना चाहिये। अभी तो मै शरीर-श्रम सिर्फ कातनेमे ही करता हू। यह तो शरीर-श्रमका अेक प्रतीक-मात्र है। मै काफी शरीर-श्रम नही कर रहा हू। और यह भी अेक कारण है कि मै अपनेको मित्रोके दान पर जीनेवाला कहता हू। लेकिन मै यह भी मानता हू कि हरअेक राष्ट्रमे अैसे मनुष्योकी आवश्यकता है, जो अपना शरीर, मन और आत्मा सब कुछ राष्ट्रको अर्पण कर देते है और जिन्हे अपनी आजीविकाके लिअे दूसरे मनुष्यो पर अर्थात् अीश्वर पर आधार रखना पडता है।

हिन्दी नवजीवन, ५–११–'२५, पृ० ९५

'शरीर-श्रम' के कानूनकी खोज

शरीर-श्रम तमाम मनुष्योके लिअे लाजिमी है, यह बात पहले-पहल टॉल्स्टॉयका अेक निबध पढकर मेरे मनमे बैठ गयी। यह बात अितनी साफ जाननेके पहले अुस पर अमल तो मै रस्किनका 'अन्टु दिस लास्ट' (सर्वोदय) पढकर तुरत ही करने लग गया था। शरीर-श्रम अग्रेजी शब्द 'ब्रेड-लेबर' का तरजुमा है। 'ब्रेड-लेबर' का शब्दके मुताबिक अनुवाद है रोटी (के लिअे) मजदूरी। रोटीके लिअे हरअेक मनुष्यको मजदूरी करनी चाहिये, शरीरको झुकाना चाहिये, यह अीश्वरका कानून है। यह मूल खोज टॉल्स्टॉयकी नही है, लेकिन अुससे बहुत कम मशहूर रशियन लेखक बोन्दरेव्ह (T M Bondarev) की है। टॉल्स्टॉयने अुसे रोशन किया और अपनाया। अिसकी झाकी मेरी आखे भगवद्गीताके तीसरे अध्यायमे करती है। यज्ञ किये बिना जो खाता है वह चोरीका अन्न खाता है, अैसा कठिन शाप यज्ञ नही करनेवालेको दिया गया है। यहा यज्ञका अर्थ शरीर-श्रम या रोटी-मजदूरी ही शोभता है और मेरी रायमे यही मुमकिन है। जो भी हो, हमारे अिस व्रतका जन्म अिस तरह हुआ है।

बुद्धि भी अुस चीजकी ओर हमे ले जाती है। जो मजदूरी नही करता अुसे खानेका क्या हक है? बाअिबल कहती है 'अपनी रोटी तू अपना पसीना बहाकर कमा और खा'। करोडपति भी अगर अपने पलग पर लोटता रहे और अुसके मुहमे कोअी खाना डाले तब खाय, तो वह ज्यादा देर तक खा नही सकेगा। अिसमें अुसको मजा भी नही आयेगा। अिसलिअे वह कसरत वगैरा करके भूख पैदा करता है और खाता तो है अपने ही हाथ-मुह हिलाकर। अगर यो किसी न किसी रूपमे अगोकी कसरत राय-रक सबको करनी ही पडती है, तो रोटी पैदा करनेकी कसरत ही सब क्यो न करे? यह सवाल कुदरती तौर पर अुठता है। किसानको हवाखोरी या कसरत करनेके लिअे कोअी कहता नही है और दुनियाके ९० फीसदीसे भी ज्यादा लोगोका निवाह खेती पर होता है। बाकीके दस फीसदी लोग अगर अिनकी नकल करे, तो जगतमे कितना सुख, कितनी शाति और कितनी तदुरुस्ती फैल जाये? और अगर खेतीके साथ बुद्धि भी मिल जाय तो खेतीसे सबध रखनेवाली बहुतसी मुसीबतें आसानीसे दूर हो जायेंगी। फिर, अगर अिस शरीर-श्रमके निरपवाद कानूनको सब माने, तो अूच-नीचका भेद मिट जाय। आज तो

जहा अूच-नीचकी वू भी नही थी वहा यानी वर्ण-व्यवस्थामे भी वह घुस गअी है। मालिक-मजदूरका भेद आम और कायम हो गया है और गरीब धनवानसे जलता है। अगर सब रोटीके लिअे मजदूरी करे, तो अूच-नीचका भेद न रहे, और फिर भी धनिक वर्ग रहेगा तो वह खुदको मालिक नही, बल्कि अुस धनका रखवाला या ट्रस्टी मानेगा और अुसका ज्यादातर अुपयोग सिर्फ लोगोकी सेवाके लिअे करेगा। जिसे अहिंसाका पालन करना है, सत्यकी भक्ति करनी है, ब्रह्मचर्यको कुदरती बनाना है, अुसके लिअे तो शरीर-श्रम रामबाण-सा हो जाता है। यह श्रम सचमुच तो खेतीमें ही है। लेकिन सब खेती नही कर सकते, अैसी आज तो हालत है ही। अिसलिअे खेतीके आदर्शको खयालमें रखकर खेतीके अेवजमे आदमी भले दूसरी मजदूरी करे —जैसे कताअी, बुनाअी, बढअीगिरी, लुहारी वगैरा वगैरा।

सबको खुदका भगी तो बनना ही चाहिये। जो खाता है वह टट्टी तो फिरेगा ही। जो टट्टी फिरता है वही अपनी टट्टीको जमीनमे गाड दे यह अुत्तम रिवाज है। अगर यह नही हो सके तो प्रत्येक कुटुब अपना यह फर्ज अदा करे। जिस समाजमें भगीका अलग पेशा माना गया है, वहा कोअी बडा दोष पैठ गया है, अैसा मुझे तो बरसोसे लगता रहा है। अिस जरूरी और तदुरुस्ती बढानेवाले कामको सबसे नीचा काम पहले-पहल किसने माना, अिसका अितिहास हमारे पास नही है। पर जिसने अैसा माना अुसने हम पर अुपकार तो नही ही किया। हम सब भगी है, यह भावना हमारे मनमें बचपनसे जम जानी चाहिये, और अुसका सबसे आसान तरीका यह है कि जो समझ गये है वे शरीर-श्रमका आरभ पाखाना-सफाअीसे करे। जो समझ-बूझकर, ज्ञानपूर्वक यह करेगा, वह अुसी क्षणसे धर्मको निराले ढगसे और सही तरीकेसे समझने लगेगा।

मगल-प्रभात, प्र० ९, पृ० ४१–४४

३८

'सर्वोदय' की शिक्षायें

. . . मैं नेटालके लिअे रवाना हुआ। पोलाक[1] तो मेरी सब बातें जानने लगे ही थे। वे मुझे छोडने स्टेशन तक आये और यह कहकर कि यह पुस्तक रास्तेमे पढने योग्य है, अिसे पढ जाअिये, आपको पसद आयेगी, अुन्होंने रस्किनकी 'अन्टु दिस लास्ट' पुस्तक मेरे हाथमे रख दी।

अिस पुस्तकको हाथमे लेनेके बाद मैं अिसे छोड ही न सका। अिसने मुझे पकड लिया। जोहानिस्वर्गसे डरबनका रास्ता लगभग चौवीस घटोका था। मुझे सारी रात नीद नही आअी। मैंने पुस्तकमे सूचित विचारोको अमलमे लानेका अिरादा किया।

अिससे पहले मैंने रस्किनकी अेक भी पुस्तक नही पढी थी। विद्याध्ययनके समयमे पाठ्य-पुस्तकोंके बाहरकी मेरी पढाअी लगभग नहीके बराबर मानी जायगी। कर्मभूमिमे प्रवेश करनेके बाद तो समय बहुत कम बचता था। आज तक भी यही कहा जा सकता है। मेरा पुस्तकीय ज्ञान बहुत ही कम है। मैं मानता हू कि अिस अनायास अथवा बरबस पाले गये सयमसे मुझे कोअी हानि नही हुअी है। बल्कि जो थोडी पुस्तके मैं पढ पाया हू, कहा जा सकता है कि अुन्हे मैं ठीकसे हजम कर सका हू। अिन पुस्तकोमे से जिसने मेरे जीवनमें तत्काल महत्त्वके रचनात्मक परिवर्तन कराये, वह 'अन्टु दिस लास्ट' ही कही जा सकती है। बादमे मैंने अुसका गुजराती अनुवाद किया और वह 'सर्वोदय' के नामसे छपा।

मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मेरे अन्दर गहराअीमे छिपी पडी थी, रस्किनके ग्रथरत्नमे मैंने अुसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखा। और, अिस कारण अुसने मुझ पर अपना साम्राज्य जमाया और मुझसे अुसमे दिये गये विचारो पर अमल कराया। जो मनुष्य हममे सोअी हुअी अुत्तम भावनाओको जाग्रत करनेकी शक्ति रखता है वह कवि है। सब कवियोका सब लोगो पर समान प्रभाव नही पडता, क्योंकि सबके अदर सारी सद्भावनाये समान मात्रामे नही होती।

मैं 'सर्वोदय' के सिद्धान्तोको अिस प्रकार समझा हू .

१ सबकी भलाअीमे हमारी भलाअी निहित है।

---

१ श्री अेच० अेस० अेल० पोलाक दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहमे गाधीजीके सहयोगी थे।

२ वकील और नाओी दोनोंके कामकी कीमत अेकसी होनी चाहिये, क्योंकि आजीविकाका अधिकार सबको अेक समान है।

३ सादा मेहनत-मजदूरीका यानी किसानका जीवन ही सच्चा जीवन है।

पहली चीजको मैं जानता था। दूसरीको मैं धुंधले रूपमें देखता था। तीसरीका मैंने कभी विचार ही नहीं किया था। 'सर्वोदय' ने मुझे दीयेकी तरह स्पष्ट दिखा दिया कि पहली चीजमें दूसरी दोनों चीजें समाओी हुओी हैं। सवेरा हुआ और मैं अिन सिद्धान्तोंका अमल करनेके प्रयत्नमें लगा।

आत्मकथा, पृ० २५९–६०, १९५७

३९

शरीर-श्रमका सुनहला नियम

[श्री महादेव देसाओीके 'साप्ताहिक पत्र' में।]

गांधीजी जो कितनी ही सादीसे सादी बातें कहते और लिखते हैं, वे भी कुछ लोगोंको पहेली-सी मालूम होती हैं और अुन्हें ससारके भवरमें डाल देती हैं। सादीसे सादी बातका भी कुछ लोग तरह तरहका अर्थ लगाते हैं और अनेक पहेलियां खड़ी करते हैं। गांधीजीने शरीर-श्रम पर जो लेख लिखा था अुसका सीधा-सादा भावार्थ तो अितना ही है कि हरअेक आदमी खुद अपने पसीनेकी कमाओी खाने लगे, तो परावलम्बन और गरीबोंका शोषण बन्द हो जाय और किसीको किसी मनुष्यसे अुसकी शक्तिसे अधिक काम न लेना पड़े। पर कुछ लोग अिससे घबराहटमें पड़ गये हैं कि अधिकांश मनुष्य तो यह शरीर-श्रम करते ही नहीं, तब अुन्हें रोटी पानेका क्या हक है? वकीलोंको ही लीजिये। ये लोग हजारों रुपये कमाते हैं। अिनकी अेक अेक घंटेकी फीस रुपयोंकी नहीं, अशर्फियोंकी होती है। अिसी तरह डॉक्टर भी खासी चांदी बनाते हैं। पर ये लोग कुछ भी शरीर-श्रम नहीं करते। गांधीजीने अिस प्रश्नका जवाब दिया — "जो लोग शरीर-श्रम नहीं करते, अुनसे तुम ओीर्ष्या क्यों करते हो? दुनियामें हरअेक आदमी अपने पसीनेकी ही कमाओी खायेगा, अैसी कल्पना तो मैंने कभी नहीं की। मैंने तो स्वर्ण-नियम भर बतला दिया है। अुस पर चलनेके लिअे तुम खुद तैयार हो या नहीं? यदि हां, तो जिस मनुष्यमें अिस नियम पर चलनेकी तैयारी या शक्ति नहीं है, अुसके प्रति तुम्हें द्वेष नहीं करना चाहिये। मैं जो दूध और फल खाता हूं अुन्हें अगर शरीर-श्रम करके प्राप्त नहीं करता, तो अिसका अर्थ यह हुआ कि मैं दयाका पात्र हूं, अिससे शरीर-श्रमके अुक्त नियमोंमें कोओी न्यूनता नहीं आती। ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन थोड़ेसे अिने-गिने

लोग ही करते होंगे, पर अिससे क्या अुन्हे ब्रह्मचर्यका पालन न कर सकने-वाले करोडो मनुष्योंके प्रति द्वेष करना चाहिये? वे तो द्वेषके नही दयाके पात्र है।"

अैसी ही अुलझनका अेक दूसरा अुदाहरण है, पर अुसका कारण अिससे अुलटा है। अेक सज्जन पूछते है —"मुझे अिस नियमका पालन तो करना है, पर मेरा शरीर अितना कमजोर है कि अुसका पालन हो नही सकता। मुझे अिस वातका दु ख तो वहुत होता है, पर अव करू क्या?" गाधीजीने अुत्तर दिया —"मैने तो जिस आदर्श तक हमे पहुचना है वह आदर्श वतलाया है। हरअेक मनुष्य अुसका यथाशक्ति पालन करे। अगर आपसे किसी भी तरहका शारीरिक श्रम नही हो सकता तो अुसके लिअे आप दु ख न करे। आप दूसरा जो शुद्ध धधा कर सकते हो वह करे, और अितना ध्यान रखे कि आपके लिअे जो लोग तन गलाते है अुनको आप चूसें नही। आप यह मानते है कि डॉक्टरो वगैराको शारीरिक श्रम करनेके लिअे फुरसत नही मिलती, तो अुसके लिअे आप चिता न करे। वे लोग यदि शुद्ध सेवाभावसे समाजकी सेवा करेगे, तो समाज अितना ध्यान तो रखेगा ही कि अुन्हे भूखो न मरना पडे।"

हरिजनसेवक, ९–८–'३५, पृ० २०२

४०

श्रमयज्ञ

गीतामे कहा गया है कि "आरम्भमे यज्ञके साथ-साथ प्रजाको अुत्पन्न करके ब्रह्माने अुससे कहा 'अिस यज्ञके द्वारा तुम्हारी समृद्धि हो, यह यज्ञ तुम्हारी कामधेनु हो, अर्थात् यह तुम्हारे अिच्छित फलोका देनेवाला हो।' जो यह यज्ञ किये विना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है।" "तू अपने पसीनेकी कमाअी खा," यह वाअिवलका वचन है। यज्ञ अनेक प्रकारके हो सकते है। अुनमें से अेक श्रमयज्ञ भी हो सकता है। यदि सव लोग अपने ही परिश्रमकी कमाअी खावे, तो दुनियामें अन्नकी कमी न रहे और सवको अवकाशका काफी समय भी मिले। तव न तो किसीको जनसख्याकी वृद्धिकी शिकायत रहे, न कोअी वीमारी आवे और न मनुष्यको कोअी कष्ट या क्लेश ही सतावे। यह श्रमयज्ञ अुच्चसे अुच्च प्रकारका यज्ञ होगा। अिसमें सन्देह नही कि मनुष्य अपने शरीर या वुद्धिके द्वारा और भी अनेक काम करेंगे, पर अुनका वह सारा श्रम लोक-कल्याणके लिअे प्रेममूलक श्रम होगा।

अुस अवस्थामें न कोअी राव होगा न कोअी रक, न कोअी अूचा होगा न कोअी नीचा, न कोअी स्पृश्य होगा न कोअी अस्पृश्य।

भले ही यह अेक अलभ्य आदर्श हो, पर अिस कारणसे हमें अपना प्रयत्न बन्द कर देनेकी जरूरत नही है। यज्ञके सपूर्ण नियमको अर्थात् अपने 'जीवनके नियम' को पूरा किये बिना भी अगर हम अपने नित्यके निर्वाहके लिअे पर्याप्त शारीरिक श्रम करे, तो भी अुस आदर्शके बहुत कुछ निकट पहुच ही जायेगे।

यदि हम अैसा करेगे तो हमारी आवश्यकताये बहुत कम हो जायेगी और हमारा भोजन भी सादा बन जायगा। तब हम जीनेके लिअे खायेगे, न कि खानेके लिअे जियेगे। अिस बातकी यथार्थतामे जिसे शका हो वह अपने परिश्रमकी कमाअी खानेका प्रयत्न करे। अपने पसीनेकी कमाअी खानेमें अुसे कुछ और ही स्वाद मिलेगा, अुसका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा और अुसे यह मालूम हो जायेगा कि जो बहुतसी विलासकी चीजे अुसने अपने अूपर लाद रखी थी, वे सब बिलकुल फिजूल थी।

क्या मनुष्य अपने बौद्धिक श्रमकी कमाअी न खाये? नही, यह ठीक नही है। शरीरकी आवश्यकताओंकी पूर्ति शारीरिक श्रमसे ही होनी चाहिये।

केवल मस्तिष्कका, अर्थात् बौद्धिक, श्रम तो आत्माके प्रीत्यर्थ है और वह स्वत सतोषरूप है। अुसमे पारिश्रमिक मिलनेकी अिच्छा नही करनी चाहिये। अुस आदर्श अवस्थामें डॉक्टर, वकील आदि पूर्णत समाजके हितके लिअे काम करेगे, अपने लिअे नही। शारीरिक श्रमके नियम पर चलनेसे समाजमे अेक शातिमय क्राति पैदा होगी। जीवन-सग्रामके स्थान पर पारस्परिक सेवाकी प्रतिस्पर्धा स्थापित करनेमे मनुष्यकी विजय होगी। पाशविक नियमका स्थान मानवीय नियम ले लेगा।

ग्रामोकी ओर लौटनेका अर्थ यह है कि निश्चित रीतिसे शरीर-श्रमके धर्मको, अुसके सारे अर्थोके साथ, स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लिया जाय। किन्तु आलोचक अिस पर यह कहते है कि "करोडो भारतवासी आज गावोमे ही तो रहते है, तो भी अुन बेचारोको वहा पेटभर भोजन नसीब नही होता और वे भूखो मर रहे है।" बात तो बिलकुल सत्य है। सद्भाग्यसे हम यह जानते है कि वे स्वेच्छासे नियमका पालन नही कर रहे है। अगर अुनकी चलती तो अैसा शारीरिक श्रम वे कभी न करते, बल्कि वे किसी बिलकुल पासके शहरकी ओर भागनेके लिअे दौडते, अगर वहा अुनके लिअे जगह होती। मालिकका हुक्म जब जबरदस्तीसे बजाया जाता है, तब अुसे परवशता या दासताकी स्थिति कहते है। पिताकी आज्ञाका जब स्वेच्छासे पालन किया जाता

है तब वह आज्ञा-पालन पुत्रत्वका गौरव बन जाता है। अिसी तरह शरीर-श्रमके नियमका बलात्कार-पूर्वक पालन किया जायेगा, तो अुससे दरिद्रता, रोग और असंतोषकी सृष्टि होगी। जब स्वेच्छासे अुस नियमका पालन किया जायगा, तब अुससे अवश्य ही संतोष और आरोग्यका लाभ होगा। और आरोग्य ही तो सच्चा धन है। चांदी-सोनेके टुकड़े सच्ची संपत्ति नहीं हैं। ग्रामोद्योग संघ स्वेच्छापूर्ण शरीर-श्रमका अेक प्रयोग है।

हरिजनसेवक, ५–७–३५, पृ० १६०

४१

शरीर-श्रमकी आवश्यकता

अेक जागरूक मित्र लिखते हैं

जमशेदपुरकी सभाके आपके भाषणमें, जो २० अगस्तके 'यंग अिंडिया' में प्रकाशित हुआ है, पहले पैराग्राफमें बौद्धिक श्रमकी तुलनामें शारीरिक श्रमके महत्त्वका प्रतिपादन करनेके बाद, प्रकाशित रिपोर्टके अनुसार, आपने कहा है "यही विचार हिन्दू धर्ममें सर्वत्र पाया जाता है। 'जो मनुष्य शारीरिक श्रम किये बिना खाता है, वह पापको खाता है, वह निश्चित रूपसे चोर है।'" यह भगवद्‌गीताके अेक श्लोकका शाब्दिक अनुवाद है। (तथाकथित) शारीरिक और (तथाकथित) बौद्धिक श्रमके बीच गीता अैसा कोअी फर्क करती है या नहीं, अिस सवालको मैं छोड़ देता हूं। पर यह मैं कह सकता हूं कि गीताके जिन शब्दोंका वह अर्थ किया जा सकता है, जिसे (रिपोर्टके अनुसार) आप गीताके किसी अेक श्लोकका शाब्दिक अनुवाद कहते हैं, वे शब्द तृतीय अध्यायके १२ वें और १३ वें श्लोकोंमें मिलते हैं। मतलब यह कि अेक तो श्रमके समर्थनमें आप गीताके जिस अुद्धरणका अुपयोग करते हैं वह अेक श्लोकसे नहीं, बल्कि अुसके दो श्लोकोंसे लिया गया है। दूसरे, अिन श्लोकोंमें श्रमकी — शारीरिक या किसी भी अन्य प्रकारके श्रमकी — कोअी चर्चा नहीं है। बेशक, पहले श्लोकमें यज्ञके कर्तव्यको समझाते हुअे यह अवश्य कहा गया है कि मनुष्यको चाहिये कि देवोंने अुसे जो कुछ दिया है अुनका अुपभोग वह देवोंके साथ या अुन्हें अर्पण करके करे। यदि वह अैसा नहीं करता है तो वह चोर है। और दूसरे श्लोकमें यह कहा गया है कि 'जो लोग केवल अपने ही लिअे भोजन पकाते हैं

वे पापको ही खाते है।' जाहिर है कि यह बात गीताके अेक श्लोकके अुन शाब्दिक अनुवादसे बहुत दूर है, जो आपके पत्रमें जेम० डी० (श्री महादेव देसाअी) के द्वारा दिया गया है। मैं आशा करता हू कि आप अपनी सुविधाके अनुसार अिस भूलको स्वीकार करेंगे।

शाब्दिक दृष्टिसे पत्रलेखकका यह कहना ठीक है कि जेम० डी० ने जो अनुवाद दिया है वह अेक श्लोकका नही बल्कि दो श्लोकोंके अर्थोंके योगका है। और अिस भूल-सुधारके लिअे मैं लेखकको धन्यवाद देता हू। लेकिन अुनकी दलीलका मुख्य आशय मुझे यह मालूम होता है कि मेरे भाषणकी रिपोर्टमे गीताके प्रसिद्ध शब्द — यज्ञका जो अर्थ दिया गया है अुसका कोअी अुचित आधार नही है। लेकिन मैं अुस अनुवादको गलत माननेसे अिनकार करता हू और यह सुझानेका साहस करता हू कि गीताके तीसरे अध्यायके १२ वे और १३ वे श्लोकोंमें 'यज्ञ' शब्दका अेक ही अर्थ हो सकता है। १४ वा श्लोक अुसे बिलकुल स्पष्ट कर देता है

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्याद् अन्न-सभव।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञ कर्म-समुद्भव॥
गीता, अ० ३, श्लो० १४

अन्नसे सब प्राणी अुत्पन्न होते है। वर्षासे अन्न अुत्पन्न होता है। यज्ञसे वर्षा होती है। और यज्ञकी अुत्पत्ति कर्मसे होती है।

अतअेव मेरी रायमे यहा न केवल शरीर-श्रमके सिद्धान्तका प्रतिपादन किया गया है, बल्कि अिस बातकी स्थापना भी की गयी है कि जब श्रम केवल अपने लिअे न होकर सबके लिअे होता है तब वह यज्ञका रूप लेता है। वर्षा बडे बडे बौद्धिक कार्योंसे नही होती है, परन्तु केवल श्रमके जरिये ही होती है। यह सर्व-सम्मत वैज्ञानिक तथ्य है कि जहा जगलोंके पेड काट दिये जाते है वहा वर्षा बन्द हो जाती है, और जहा पेड लगाये जाते है वहा वर्षा खिच आती है और वनस्पतिकी वृद्धिके साथ ही वर्षाके पानीकी मात्रा भी बढ जाती है। कुदरतके कानूनोंकी खोज होना अभी बाकी है। हमने केवल अूपरी सतहको ही छुआ है। शरीर-श्रमके बन्द हो जानेसे जो नैतिक और शारीरिक बुरे परिणाम होते है, अुन सबको भला कौन जानता है? मुझे गलत न समझा जाये। मै बौद्धिक श्रमकी कीमत कम नही करता, किन्तु बौद्धिक श्रम कितना भी किया जाय अुससे शारीरिक श्रमकी पूर्ति नही हो सकती। सबके कल्याणके लिअे शारीरिक श्रम तो हमें करना ही चाहिये। वह हमारा जन्मप्राप्त कर्तव्य है। बौद्धिक श्रम गुणवत्तामें शारीरिक श्रमसे अनेक गुना बडा-चढा हो सकता है और अक्सर होता है,

लेकिन वह अुसकी जगह कभी नही ले सकता; जैसे कि बौद्धिक आहार अन्नाहारकी जगह नही ले सकता यद्यपि अन्नाहारकी तुलनामें अुसका स्थान कही अूचा है। सच तो यह है कि धरतीकी अुपजके अभावमें बुद्धिकी अुपज ही असभव है।

यग अिडिया, १५-१०-'२५, पृ० ३५५

४२

शरीर-श्रमका कर्तव्य

['गाधीजीकी पैदल यात्राकी डायरी' से।]

गाधीजीने प्रार्थनाके बादके भाषणमे अुनसे पूछे गये प्रश्नोंके अुत्तर देना शुरू किया।

प्र० — आप हमेशा खैरातके खिलाफ रहे है और अिस अुसूलको समझाते रहे हैं कि कोअी भी अिन्सान मेहनत करनेके फर्जसे बरी नही है। आपकी अुन लोगोंके लिअे क्या सलाह है, जो बैठे-बैठेका धन्धा करते है और पिछले दगोंमे अपना सब कुछ खो बैठे हैं? क्या अुन्हे अपना वतन छोडकर असी जगह चला जाना चाहिये जहा वे अपनी पुरानी आदतके मुताबिक जीवन बिता सके? या अुन्हे आपके अुक्त अुसूलके अनुसार रोटी कमानेके लिअे शरीर-श्रम करना चाहिये? अुस हालतमें अुनकी खास खूबिया किस काम आयेगी?

अु० — जैसा कि समझा जाता है, यह सच है कि मै बरसोंसे खैरातके खिलाफ रहा हू, और रोटीके लिअे शरीर-श्रम करनेकी सीख देता हू। जिला मजिस्ट्रेट, जमान साहब और अेक पुलिस अफसर मुझसे मिलने आये थे। वे बेआसरा लोगोको खैरात देनेके बारेमे मेरी राय जानना चाहते थे। अुन्होने पहलेसे यह तय कर लिया था कि वे लोगोंके सामने पानीमें से 'हेयासिन्थ' निकालने, सडकोंकी मरम्मत करने, गाबोंका सुधार करने और खुदके खेतोंकी हदे सुधारकर सीधमें लाने और अपनी जमीन पर मकान बनानेका काम रखेंगे। जो लोग अिनमें से कोअी भी काम करेंगे, अुन्हे राशन पानेका पूरा हक होगा। मैं अिस खयालको पसन्द करता हू, लेकिन अपने अुसूलो पर अमल करनेवालेके नाते मै बेआसरा लोगोंको अेकदम कोअी काम करनेके लिअे मजबूर नही करूगा। कअी तरहके काम लोगोंके सामने रख देने चाहिये, और अेक महीनेका नोटिस देकर हाकिमोको अुन्हे यह

कह देना चाहिये कि अगर आप सुझाये गये कामोंमें से कोओ काम नहीं चुनते और न कोओी मजूर करने लायक दूसरा पेशा ही सुझाते, बल्कि हट्टे-कट्टे होने पर भी काम करनेसे अिनकार करते हैं, तो मोहलतके खतम होने पर हमें न चाहने पर भी आप लोगोंको खैरात देना बन्द करना पड़ेगा। बेआसरा लोगों और अुनके दोस्तोंको मेरी यह सलाह है कि सरकारकी अिस स्कीममें वे पूरी मदद करें। किसी भी शहरीके लिअे बगैर शरीर-श्रमके राशन पानेकी आशा रखना गलत होगा।

मैं लोगोंको वतन छोड़नेकी सलाह कभी नहीं दे सकता। मैं चाहूंगा कि अेक अकेला हिन्दू भी हर हालतमें अपनेको सही-सलामत समझे और मुसलमानोंसे अुम्मीद रखूंगा कि वे अपने बीच अुसे पूरी तरह सलामत रखें। मैं अिस बातका स्वागत करूंगा कि लोग अपने-अपने ढंगसे औश्वरकी पूजा करें।

सट्टेसे कमाया हुआ रुपया मेरे खयालमें यकीनन जायज रुपया नहीं है। और न मैं यह मानता हूं कि किसी आदमीके लिअे अपनी बुरी आदतोंको छोड़ना कभी नामुमकिन है। अगर हरअेक आदमी अपने पसीनेकी कमाओी पर रहे, तो यह दुनिया स्वर्ग बन जाय। मनुष्यकी खास खूबियोंके अुपयोगके प्रश्न पर अलगसे विचार करनेकी बिलकुल जरूरत नहीं। अगर सब लोग रोटीके लिअे शरीर-श्रम करें, तो अुसका यह नतीजा होगा कि कवि, शायर, डॉक्टर, वकील वगैरा मनुष्यकी सेवाके लिअे अपनी अुन खूबियोंका मुफ्त अुपयोग करना अपना फर्ज समझेंगे। बिना किसी स्वार्थके अपना फर्ज अदा करनेके कारण अुनके कामका नतीजा और भी अच्छा होगा।

हरिजनसेवक, २–३–'४७, पृ० ३९

४३

अमली शरीर-श्रम

अहिंसाके प्रयोगोसे मैं यह सीखा हू कि अमली अहिंसाका अर्थ सब लोगोका शरीर-श्रम है। अेक रूसी दार्शनिक वोन्दरेव्हने अिसे रोटीके लिअे श्रम कहा है। अिसका परिणाम लोगोमें आपसमे गहरेसे गहरा सहयोग होगा। दक्षिण अफ्रीकाके पहले सत्याग्रही सबकी भलाअी और सम्मिलित कोषके लिअे मेहनत करते थे और अुन्हे अुडते पछियोकी-सी बेफिक्री रहती थी। अुनमें हिन्दू, मुसलमान (शिया और सुन्नी), ओसाअी (प्रोटेस्टेट और रोमन कैथलिक), पारसी और यहूदी सभी थे। अग्रेज और जर्मन भी थे। धधेके लिहाजसे अुनमे वकील, अिमारत और बिजलीकी विद्या जाननेवाले अिजीनियर, छापनेवाले और व्यापारी थे। सत्य और अहिंसाके व्यवहारसे धार्मिक झगडे मिट गये थे और हमने सब धर्मोमे सत्यके दर्शन करना सीख लिया था। दक्षिण अफ्रीकामे मैने जो आश्रम कायम किये अुनमे अेक भी मजहबी झगडा हुआ हो अैसा मुझे याद नही आता। सब लोग छपाअी, बढअीगिरी, जूते बनाना, बागवानी, अिमारत वगैरा हाथके काम करते थे। यह मेहनत किसीको भाररूप नही लगती थी। अुसमे सबको आनन्द आता था। सत्याग्रही सेनाका अग्रणी दल अिन्ही स्त्री-पुरुषो और लडकोका बना था। अिनसे ज्यादा वीर और सच्चे साथी मुझे नही मिल सकते थे। हिन्दुस्तानमे दक्षिण अफ्रीकाका-सा ही अनुभव रहा और मुझे भरोसा है कि अुसमें कुछ सुधार ही हुआ। सभी लोग मानते है कि अहमदाबादका मजदूर-सगठन भारतमे सबसे बढिया है। अुसका काम जिस ढगसे शुरू हुआ था अुसी तरह चलता रहा, तो अन्तमे वहाकी मिलोमे मौजूदा मालिको और मजदूरोकी सयुक्त मालिकी होकर रहेगी। यह स्वाभाविक परिणाम न निकला तो पता चल जायेगा कि सगठनकी अहिंसामे खामिया थी। बारडोलीके किसानोने वल्लभभाअीको सरदारकी पदवी दी और अपनी लडाअी फतह की। बोरसद और खेडाके किसानोने भी वैसा ही किया। वे सब वर्षोसे रचनात्मक कार्यक्रम पर अमल कर रहे है। मगर अिस अमलसे अुनके सत्याग्रही गुणोका ह्रास नही हुआ है। मुझे पूरा यकीन हे कि सविनय आज्ञाभग हुआ, तो अहमदाबादके मजदूर और बारडोली तथा खेडाके किसान भारतके और किसी भी हिस्सेके किसानो और मजदूरोसे जौहर दिखानेमे पीछे नही रहेगे।

चौंतीस सालके सत्य और अहिंसाके लगातार प्रयोग और अनुभवने मुझे दृढ विश्वास हो गया है कि यदि अहिंसाका ज्ञानपूर्ण शरीर-श्रमके साथ सम्बन्ध न होगा और हमारे पडोसियोंके साथ रोजमर्राके व्यवहारमें अुसका परिचय न मिलेगा तो अहिंसा टिक नहीं सकेगी। यह है रचनात्मक कार्यक्रमका रहस्य। यह साध्य नहीं है, साधन है, मगर है अितना अनिवार्य कि अुसे साध्य भी समझ ले तो बेजा नहीं होगा। अहिंसक विरोधकी शक्ति रचनात्मक कार्यक्रम पर अीमानदारीके साथ अमल करनेसे ही पैदा हो सकती है।

हरिजनसेवक, २७–१–'४०, पृ० ४०३

४४

मेरा शरीर-श्रम

'यंग अिंडिया' के कुछ पाठक अैसे है, जो अकसर बेढब प्रश्न पूछा करते है। लेकिन क्योंकि अुससे अुन्हें आनन्द होता है, मुझे अितनी असुविधाको भी सहन कर लेना चाहिये और अुनके प्रश्नोंका अुत्तर देना चाहिये।

प्र० — आप कहते है कि आप और आपके साथ काम करनेवाले दूसरे लोग अुन मित्रोंकी अुदारता पर अपनी आजीविकाका आधार रखते है, जो सत्याग्रह आश्रमका खर्च पूरा करते है। क्या अुस सस्थाको, जिसमें सशक्त शरीरके लोग हो, अपनी आजीविकाके लिअे मित्रोंकी अुदारता पर आधार रखना अुचित है?

अु० — पत्रलेखक महाशय 'अुदारता-दान' का केवल शब्दार्थ ही समझ रहे है। अिस सस्थाका हरअेक शख्स, स्त्री हो या पुरुष, अपने कार्यमें शरीर और बुद्धि दोनोंका पूरा अुपयोग करता है। लेकिन फिर भी यह तो कहा ही जायगा कि अिस सस्थाका आधार मित्रोंकी अुदारता पर ही है। क्योंकि वे जो कुछ भी अुसे दानमें देते है अुसके बदलेमें अुन्हें तो कुछ भी नहीं मिलता है। अुसके लोगोंकी मेहनतका फल तो राष्ट्रको मिलता है।

प्र० — जिसे टॉल्स्टॉय 'रोटीके लिअे श्रम' कहते है अुसके बारेमें आपका क्या अभिप्राय है? क्या आप शारीरिक श्रम करके अपनी आजीविका प्राप्त करते है?

अु० — सच पूछा जाय तो 'रोटीके लिअे श्रम' ये शब्द टॉल्स्टॉयके है ही नहीं। अुन्होंने अिन शब्दोंको दूसरे अेक रूसी लेखक बोन्दरेव्हसे ग्रहण किया था और अुनका अर्थ यह है कि हरअेकको रोटी पानेके लिअे काफी शारीरिक श्रम करना चाहिये। अिसलिअे आजीविकाका विशाल अर्थ करने

पर यह आवश्यक नही है कि शरीर-श्रम करके ही आजीविका प्राप्त की जाय। लेकिन हर शख्सको कुछ न कुछ अुपयोगी शरीर-श्रम अवश्य करना चाहिये। अभी तो मैं सिर्फ कताअीका ही शरीर-श्रम करता हू। यह तो सिर्फ प्रतीकमात्र है। मैं काफी शरीर-श्रम नही कर रहा हू। और यह भी अेक कारण है कि मैं अपनेको मित्रोके दान पर जीनेवाला कहता हू। लेकिन मैं यह भी मानता हू कि हरअेक राष्ट्रमे अैसे मनुष्योकी आवश्यकता रहेगी, जो अपना शरीर, मन और आत्मा सब कुछ राष्ट्रको अर्पण कर देते है और जिन्हे अपनी आजीविकाके लिअे दूसरे मनुष्यो पर अर्थात् अीश्वर पर आधार रखना पडता है।

हिन्दी नवजीवन, ५–११–'२५, पृ० ९५

४५

आश्रम-जीवनमे शरीर-श्रमका स्थान

हर स्त्री-पुरुष शरीरसे मेहनत करे, अिसे आश्रम अपना धर्म मानता है। अिस अुसूलकी जानकारी या सूझ मुझे टॉल्स्टॉयके अेक लेखसे हुअी। अुन्होने रूसके अेक लेखक बोन्दरेव्हके बारेमे लिखते हुअे बताया कि रोटी-श्रमकी जरूरत अिस लेखककी अिस युगकी बहुत बडी खोजोमे से अेक थी। अुसका मतलब यह है कि हर तन्दुरुस्त आदमीको अपने गुजारेके लायक शरीर-श्रम करना ही चाहिये। मनुष्यको अपनी बुद्धिकी शक्तिका अुपयोग आजीविका प्राप्त करने या अुससे भी ज्यादा प्राप्त करनेके लिअे नही, बल्कि सेवाके लिअे, परोपकारके लिअे करना चाहिये। अिस नियमका पालन सारी दुनिया करने लगे, तो सहज ही सब मनुष्य बराबर हो जाय, कोअी भूखो न मरे और जगत बहुतसे पापोसे बच जाय।

यह सभव है कि अिस स्वर्ण-नियमका अमल सारी दुनिया कभी न कर सके। नियमको बिना जाने-बूझे तो करोडो लोग अुसका पालन जबरदस्तीसे करते है। अुनके मन अुनके विरुद्ध चलते है, अिसीलिअे वे दुःख पाते है और अुनकी मेहनतसे जितना लाभ दुनियाको होना चाहिये अुतना नही होता। जो लोग अिस नियमको समझते है, अुन्हे अिस ज्ञानसे अिस नियमका पालन करनेका प्रोत्साहन मिलता है। नियमका पालन करनेवाले पर अुसका चमत्कारी असर होता है, क्योकि अुसे परम शाति मिलती है, अुसकी सेवा करनेकी शक्ति बढती है और अुसकी तदुरुस्ती भी बढती है।

मुझ पर टॉल्स्टॉयका बहुत असर हुआ था और अुनकी बातों पर यथासंभव अमल करना तो मैंने दक्षिण अफ्रीकामें ही शुरू कर दिया था। आश्रम कायम हुआ तभीसे रोटी-श्रमको अुसमें मुख्य स्थान मिला।

गीताका अध्ययन करने पर मैं अिसी नियमको गीताके तीसरे अध्यायमें यज्ञके रूपमें देखता हूं। मैं यह नहीं कहना चाहता कि यज्ञका अर्थ वहां शरीर-श्रम ही है। परन्तु यज्ञसे पर्जन्य होता है, अिस भावमें मुझे शरीर-श्रमका धर्म दीखता है। यज्ञसे बचा हुआ अन्न वही है, जो मेहनत करनेके बाद मिलता है। आजीविकाके लिअे पर्याप्त श्रमको गीताने यज्ञ कहा है। पोषणके लिअे जितना चाहिये अुससे ज्यादा जो खाता है वह चोरी करता है, क्योंकि मनुष्य आजीविकाके लिअे आवश्यक श्रम भी मुश्किलसे ही करता है। मैं मानता हूं कि मनुष्यको आजीविकासे ज्यादा लेनेका अधिकार ही नहीं है। और जो मेहनत करते हैं अुन सबको अुतना लेनेका अधिकार है जितनेसे अुनका शरीर कायम रहे।

अिसमें कोअी यह न कहे कि अिसमें श्रमके बटवारेकी गुंजाअिश ही नहीं है। मनुष्यकी आवश्यकताओंके लिअे जो भी चीज तैयार होती है, अुसमें शरीर-श्रम तो लगता ही है। अिसलिअे श्रम चाहे जिस जरूरी क्षेत्रमें किया जाय वह रोटी-श्रम ही है। अितना श्रम भी सब नहीं करते, अिसलिअे तन्दुरुस्ती बनाये रखनेके लिअे व्यायामके नाम पर खास तौर पर शरीर-श्रम करना पड़ता है। जो प्रतिदिन खेतीमें श्रम करता है, अुसे लगभग व्यायामकी जरूरत नहीं रहती। किसान तन्दुरुस्तीके दूसरे नियम पाले तो वह बीमार ही न पड़े।

यह देखा जाता है कि अिस दुनियामें मनुष्यको रोज जितना चाहिये अुतना अीश्वर रोज पैदा करता है। अुसमें से अगर कोअी अपनी आवश्यकतासे अधिक काममें लेता है, तो अुसके पड़ोसीको भूखा रहना ही पड़ेगा।

बहुतसे लोग अपनी आवश्यकतासे अधिक लेते हैं, अिसीलिअे दुनियामें भूखों मरनेकी नौबत आती है। हम कुदरतकी देनको किसी भी तरह काममें लें, फिर भी कुदरत तो रोज दोनों पलड़े बराबर ही रखती है। कुदरतके बहीखातेमें न तो जमामें कुछ बाकी रहता है न नामेमें। वहां तो रोज आमद-खर्चका हिसाब बराबर होकर शून्य ही बाकी रहता है। अिस शून्यमें हमें शून्यके समान बनकर समा जाना चाहिये।

अूपरके नियममें यह बात बाधक नहीं है कि कअी रसायनों और यन्त्रोंके जरिये मनुष्य जमीनसे ज्यादा फसल पैदा करता है, अपनी मेहनतसे दूसरी तरह भी अनेक वस्तुअें अुत्पन्न करता है। यह कुदरतकी शक्तियोंका रूपान्तर है। सबका आखिरी परिणाम तो शून्य ही होनेवाला है। मगर हमें रोज

जो कुछ अनुभव होता है अुसका पृथक्करण किया जाय, तो अुससे यही अनुमान होता हे कि दोनो पलडे बराबर रहते हैं।

कुदरत अैसा करती हो या नही करती हो, मेरी दूसरी दलीलोंमे सार हो या न हो, आश्रममे रोटी-श्रमके नियमका अधिकसे अधिक अच्छे ढगसे पालन किया गया है। अिसमे आश्चर्यकी कोअी बात नही हे। पालन करनेका साधारण आग्रह हो तो पालन आसान है। अगर अमुक दिनके अमुक घटोमे मेहनतके सिवा दूसरा काम न हो तो मेहनत जरूर होगी। भले ही अुसमे आलस्य हो, कार्य-दक्षता न हो, मन न हो, मगर कुछ घटे पूरे तो होगे ही। फिर, कुछ मेहनत तुरत फल देनेवाली होती है, अिसलिअे अुसमें बहुत आलस्यकी गुजाअिश भी नही रहती। श्रम-प्रधान सस्थाओमे नौकर नही होते या थोडे ही होते हैं। पानी भरना, लकडी फाडना, दियाबत्ती तैयार करना, पाखाने और रास्ते साफ करना, मकानोकी सफाअी रखना, अपने अपने कपडे धोना, रसोअी करना वगैरा अनेक काम अैसे है जो किये ही जाने चाहिये।

अिनके सिवा खेती, बुनाअी-काम, अुनसे सबधित और दूसरी तरहसे जरूरी बढअी-काम, गोशाला, चमार-काम वगैरा काम आश्रमके साथ जुडे हुअे है। अुनमे थोडे-बहुत आश्रमवासियोके लगे बिना काम नही चल सकता।

ये सब काम रोटी-श्रमके नियम-पालनके लिअे काफी माने जायगे। मगर यज्ञका दूसरा अग परमार्थ या सेवाकी वृत्ति है। अुसे अिन कामोमे शामिल करते वक्त आश्रमकी कमजोरी जरूर मालूम होगी। आश्रमका आदर्श सेवाके लिअे ही जीना है। अिस ढगसे चलनेवाली सस्थामे आलस्यका, कामकी चोरीका स्थान नही है। वहा सब काम तन-मनसे होने चाहिये। सभी लोग अैसा करते तो आश्रमकी सेवाकी योग्यता बहुत बढ गअी होती। लेकिन अैसी सुदर स्थितिसे आश्रम अब भी दूर हे। अिसलिअे यद्यपि आश्रमका हर काम यज्ञरूप है, फिर भी आदर्शका विचार करके दरिद्र-नारायणके लिअे कमसे कम अेक घटेकी कताअीको आवश्यक स्थान दिया गया हे।

यह आरोप समय समय पर सुना गया है और आज भी मैं सुना करता हू कि श्रम-प्रधान सस्थामे बुद्धिके विकासकी गुजाअिश नही रहती, अिसलिअे वह जड बन जाती है। मेरा अनुभव अिससे अुलटा है। आश्रममे जितने भी लोग आये हैं, सभीकी बुद्धि कुछ तेज हुअी है, किसीकी मन्द हुअी हो अैसा जाननेमे नही आया।

बहुत बार अैसा मान लिया जाता है कि जगतकी अनेक घटनाओका बाहरी ज्ञान ही बुद्धि है। मुझे यह कबूल करना पडेगा कि अैसी बुद्धि आश्रममें कम विकसित होती हे। लेकिन अगर बुद्धिका अर्थ समझ, विवेक वगैरा हो, तो वह आश्रममे काफी विकसित होती है। जहा मजदूरके रूपमें

मेहनत सिर्फ गुजारे लिअे होती है, वहा मनुष्यका जड बन जाना सभव है। अमुक चीज किसलिअे या किस तरह होती है, अिसका ज्ञान अुसे कोअी नही देता है। अुसे खुद अिस विषयमें जिज्ञासा नही होती, न अपने काममें दिलचस्पी होती। आश्रममें अिससे अुलटा होता है। हर काम — पाखाना-सफाअी तक — समझ कर करना पडता है। अुसमें दिलचस्पी ली जाती है। वह परमेश्वरको प्रसन्न करनेके लिअे होता है। अिसलिअे अुसे करते हुअे भी बुद्धिके विकासकी गुजाअिश रहती है। सबको अपने अपने विषयका पूरा ज्ञान प्राप्त करनेका प्रोत्साहन दिया जाता है। जो यह ज्ञान लेनेकी कोशिश नही करते, अुनके लिअे वह दोष माना जाता है। आश्रममें या तो सभी मजदूर है या कोअी भी मजदूर नही है।

यह मानना कि किताबोंमे ही, मेज-कुर्सी पर बैठनेसे ही, ज्ञान मिलता है, बुद्धिका विकास होता है, हमारा घोर अज्ञान है, भारी वहम है। हमें तो अिसमे से निकल जाना चाहिये। जीवनमें वाचनके लिअे स्थान जरूर है, मगर वह अपनी जगह पर ही शोभा देता है। शरीर-श्रमको हानि पहुचाकर अुसे बढाया जाय, तो अुसके खिलाफ विद्रोह करना फर्ज हो जाता है। शरीर-श्रमके लिअे दिनका ज्यादा समय देना चाहिये और वाचन वगैराके लिअे थोडा। आजकल अिस देशमे, जहा अमीर लोग या अूचे वर्गके माने जानेवाले लोग शरीर-श्रमका अनादर करते है, शरीर-श्रमको अूचा दरजा देनेकी बडी जरूरत है। और बुद्धिशक्तिको सच्चा वेग देनेके लिअे भी शरीर-श्रमकी यानी किसी भी अुपयोगी शारीरिक धन्धेमे शरीरको लगानेकी जरूरत है।

अगर वाचनको आश्रम कुछ ज्यादा समय दे सके तो देने जैसा है। निरक्षर आश्रमवासियोको शिक्षककी मदद मिल सके तो वह भी दी जानी चाहिये। फिर भी अैसा लगता रहा है कि जो जो कार्य आश्रममें हो रहे है अुनको नुकसान पहुचाकर वाचन वगैरामे समय न लगाया जाय। शिक्षक वैतनिक तो रखे नही जाते। और जब तक वर्तमान शिक्षा देनेवाले ज्यादा शिक्षकोको आश्रम अपनी तरफ खीच न सके, तब तक जितने है अुन्हींसे काम चलाया जाता है। स्कूलो और कॉलेजमे पढे हुअे जो लोग आश्रममें है, वे श्रमके साथ शिक्षाको मिला देनेकी कलामे पूरी तरह दक्ष नही है। हम सबके लिअे यह नया प्रयोग है। मगर अनुभवसे कामकी समझ बढती जा रही है। और जैसे जैसे व्यवस्था-शक्ति बढती जायगी वैसे वैसे जो साधारण शिक्षा पाये हुअे लोग यहा है, अुन्हे प्राप्त किया हुआ ज्ञान दूसरोको देनेका अुपाय सूझता जायगा।

सत्याग्रह आश्रमका अितिहास, पृ० ४०, ४२–४४, १९५९

४६

श्रम और बुद्धिके बीच अलगाव

श्रम और बुद्धिके बीच जो अलगाव हो गया है, अुसके कारण हम अपने गावोके प्रति अितने लापरवाह हो गये है कि वह अेक गुनाह ही माना जा सकता है। नतीजा यह हुआ है कि देशमें जगह-जगह सुहावने छोटे-छोटे गावोके बदले हमे घूरे जैसे गाव देखनेको मिलते हैं। बहुतसे या यो कहिये कि करीब-करीब सभी गावोमें घुसते समय जो अनुभव होता है अुससे दिलको खुशी नही होती। गावके बाहर और आसपास अितनी गदगी होती है और वहा अितनी बदबू आती है कि अकसर गावमें जानेवालोको आख मूदकर और नाक दबाकर ही जाना पडता है। ज्यादातर काग्रेसी गावके वाशिन्दे होने चाहिये, अगर अैसा हो तो अुनका फर्ज हो जाता है कि वे अपने गावोको सब तरहसे सफाअीके नमूने बनाये। लेकिन गाववालोके हमेशाके यानी रोज-रोजके जीवनमे शरीक होने या अुनके साथ घुलने-मिलनेको अुन्होने कभी अपना कर्तव्य माना ही नही। हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाअीको न तो जरूरी गुण माना और न अुसका विकास ही किया। यो रिवाजके कारण हम अपने ढगसे नहा-भर लेते है, मगर जिस नदी, तालाब या कुअेंके किनारे हम श्राद्ध या वैसी ही कोअी दूसरी धार्मिक क्रिया करते है और जिन जलाशयोमे पवित्र होनेके विचारसे हम नहाते है, अुनके पानीको बिगाडने या गन्दा करनेमे हमे कोअी हिचक नही होती। हमारी अिस कमजोरीको मैं अेक बडा दुर्गुण मानता हू। अिस दुर्गुणका ही यह नतीजा है कि हमारे गावोकी और हमारी पवित्र नदियोंके पवित्र तटोकी लज्जाजनक दुर्दशा और गन्दगीमे पैदा होनेवाली बीमारिया हमे भोगनी पडती है।

रचनात्मक कार्यक्रम, पृ० २७–२८; १९५९

बुद्धि-विकास या बुद्धि-विलास ?

त्रावणकोर और मद्रासके भ्रमणमे विद्यार्थियो तथा विद्वानोंके सहवासमे मुझे अैसा लगा कि मैं जो नमूने अुनमे देख रहा था वे बुद्धि-विकासके नही किन्तु बुद्धि-विलासके थे। आधुनिक शिक्षा भी हमें बुद्धि-विलास सिखाती है और बुद्धिको अुलटे रास्ते ले जाकर अुसके विकासको रोकती है। सेगावमे पडा पडा मै जो अनुभव ले रहा हू, वह मेरी अिस बातकी पुष्टि करता दिखाअी देता है। मेरा अवलोकन तो वहा अभी चल ही रहा है। अिसलिअे अिस लेखमे आये हुअे विचार अुन अनुभवोंके अूपर आधार नही रखते। मेरे ये विचार तो जब मैंने फिनिक्स सस्थाकी स्थापना की तभीसे है — यानी १९०४ से।

बुद्धिका सच्चा विकास हाथ-पैर, कान आदि अवयवोंके सदुपयोगसे ही हो सकता है अर्थात् शरीरका ज्ञानपूर्वक अुपयोग करते हुअे बुद्धिका विकास सबसे अच्छी तरह और जल्दीसे जल्दी होता है। अिसमें भी यदि पारमार्थिक वृत्तिका मेल न हो, तो बुद्धिका विकास अेकतरफा होता है। पारमार्थिक वृत्ति हृदय यानी आत्माका क्षेत्र है। अत यह कहा जा सकता है कि बुद्धिके शुद्ध विकासके लिअे आत्मा और शरीरका विकास साथ-साथ तथा अेकसी गतिसे होना चाहिये। अिसमे कोअी अगर यह कहे कि ये विकास अेकके बाद अेक हो सकते हैं, तो यह अूपरकी विचारसरणीके अनुसार ठीक नही होगा।

हृदय, बुद्धि और शरीरके बीच मेल न होनेसे जो दु सह परिणाम आया है वह प्रगट है, तो भी अुल्टे सहवासके कारण हम अुसे देख नही सकते। गावके लोगोका पालन-पोषण पशुओंमें होनेके कारण वे मात्र शरीरका अुपयोग यत्रकी भाति किया करते है, बुद्धिका अुपयोग वे करते ही नही, और अुन्हे करना भी नही पडता। हृदयकी शिक्षा नहीके बराबर है, अिसलिअे अुनका जीवन यो ही गुजर रहा है, जो न अिस कामका रहा है, न अुस कामका। और दूसरी ओर, आधुनिक कॉलेजो तककी शिक्षा पर जब नजर डालते है, तो वहा बुद्धिके विकासके नाम पर बुद्धिके विलासकी तालीम दी जाती है। हम समझते है कि बुद्धिके विकासके साथ शरीरका कोअी मेल नही। पर शरीरको कसरत तो चाहिये ही, अिसलिअे अुपयोग-रहित कसरतोंसे अुसे निभानेका मिथ्या प्रयोग होता है। पर चारो ओरसे मुझे जिस तरहके

प्रमाण मिलते ही रहते है कि स्कूल-कॉलेजोसे पास होकर जो विद्यार्थी निकलते है, वे मेहनत-मशक्कतके काममें मजदूरोकी बरावरी नही कर सकते। जरासी मेहनत की तो माथा दुखने लगता है और धूपमे घूमना पडे तो चक्कर आने लगते है। यह स्थिति स्वाभाविक मानी जाती है। बिना जुते खेतमे जैसे घास अुग आती है, अुसी तरह हृदयकी वृत्तिया आप ही अुगती और कुम्हलाती रहती है और यह स्थिति दयनीय माने जानेके वदले प्रगसनीय मानी जाती है!

अिसके विपरीत अगर वचपनसे वालकोके हृदयकी वृत्तियोको ठीक तरहसे मोडा जाय, अुन्हे खेती, चरखा आदि अुपयोगी कामोमे लगाया जाय, और जिस अुद्योग द्वारा अुनका शरीर खूब कसा जा सके अुस अुद्योगकी अुपयोगिता और अुसमे काम आनेवाले औजारो वगैराकी बनावट आदिका ज्ञान अुन्हे दिया जाय, तो अुनकी वुद्धिका विकास सहज ही हो जाय और नित्य अुसकी परीक्षा भी होती जाय। अैसा करते हुअे जिस गणित आदिके ज्ञानकी आवश्यकता हो वह अुन्हे दिया जाय और विनोदके लिअे साहित्यादिका ज्ञान भी देते जाय, तो तीनो वस्तुअे समतोल हो जाय और कोअी अग अुनका अविकसित न रहे। मनुष्य न केवल वुद्धि है, न केवल शरीर, न केवल हृदय या आत्मा। तीनोके अेक समान विकासमे ही मनुष्यका मनुष्यत्व सिद्ध होगा। अिसमे शिक्षाका सच्चा अर्थशास्त्र है। अिसके अनुसार यदि तीनो विकास अेकसाथ हो, तो हमारी अुलझी हुअी समस्याअे अनायास सुलझ जाये। यह विचार या अिस पर अमल तो देशको स्वतत्रता मिलनेके वाद होगा, अैसी मान्यता भ्रमपूर्ण हो सकती है। करोडो मनुष्योको अैसे-अैसे कामोमे लगानेसे ही स्वतत्रताका दिन हम नजदीक ला सकते है।

हरिजनसेवक, १७-४-'३७; पृ० ७०-७१

४८

बुद्धिपूर्वक किया हुआ शरीर-श्रम — समाज-सेवाका अुच्चतम प्रकार

"कुछ साथियोंकी सहायतासे मैं अेक आश्रम चला रहा हूं। अुनका अुद्देश्य हमें अपनेको आदर्श किसान बनानेकी शिक्षा देना है, जिससे कि हम गांवके लोगों और गांवके समाजके साथ अेकरूप हो जायं, और अिस प्रकार अुनकी थोडी-बहुत सेवा कर सकें। अिस अुद्देश्यको सामने रखकर खेतीको यहां आजीविकाका मुख्य साधन बनाया गया है और कताअी तथा बुनाअी अुसमें पूरक अुद्योगका काम देती हैं।

गत जनवरी मासमें धानकी मुख्य फसल काट लेनेके बाद आश्रमने अिधर अीख, अुडद और साग-भाजी जैसी गौण फसलोंकी खेती शुरू की है। गये सालके जूनमें, यानी आश्रमके आरंभ-कालसे आज तक आश्रमवासियोंने औसतन् १० नम्बरका करीब २ लाख ६० हजार गज सूत काता है, और मार्चके महीनेसे अेक करघे पर बुनाअीका काम भी शुरू कर दिया गया है। बुनाअीका काम भी आश्रममें होता है। जिस तरह आश्रमने अपनी मर्यादित आवश्यकताओंके लिअे काफी सूत कात लिया है और आशा है कि अब यह सारा सूत हमारे आश्रममें ही बुन जायगा।

अिस तरह हमारे आश्रमको अपने अिस प्रथम वर्षमें अेक अैसे स्वावलंबी कृषक-परिवारके आदर्श तक पहुंचनेके प्रयत्नमें सफलता प्राप्त हुअी है, जो अपनी प्राय: सभी आवश्यकताओंकी पूर्ति अपने ही परिश्रमसे कर लेता है और शहरकी तमाम लूट-खसोटसे बच जाता है।

आश्रमने आज तक कभी अपना आटा दूसरी जगह नहीं पिसवाया और न शक्करका ही कभी अुसने अुपयोग किया है। पिछले तीन महीनेसे हम आश्रमवासी अपने आश्रमके धानका ही बिना पालिशका चावल काममें ला रहे हैं।

आश्रमका आरंभ करते समय अैसा सोचा गया था कि स्वावलंबी किसानकी जिंदगी बसर करनेका आदर्श साधनेके साथ-साथ हम लोग हरिजन-सेवा और चरखा वगैराके द्वारा गांवकी भी कुछ सेवा कर सकेंगे। मगर हमें अिस अुद्देश्यमें पूरी निराशा ही हुअी है, क्योंकि हमें अभी तक आश्रमके लिअे कोअी अनुकूल स्थान नहीं मिल सका है। आजकल जिस जगह आश्रम है वहां अेक-अेक दो-दो घरकी ही

वस्ती है और ये छोटे-छोटे झोपडे अेक-दूसरेसे आध आध मील या अेक अेक मीलके फासले पर है।

फिर अेक चीजसे आश्रमके कामको भारी धक्का पहुचा है। आहारके विषयमे मैने कअी भारी भूले की और अुनका पता मुझे अव चला है। मुझे अव अैसा मालूम होता है कि गरीवीके आदर्शको लेकर जरूरतसे ज्यादा अुत्साहके कारण हमने अपने आहारका मान वहुत नीचा रखा था। अुदाहरणके लिअे, साग-भाजीको ले लीजिये। सब्जी आश्रममें तो पैदा होती नही थी, अिसलिअे नियमित रूपसे नहीं किन्तु कभी कभी हम साग-तरकारी खाते थे। अेक दो महीनेके वाद हमने अिस भूलको तो सुधार लिया, मगर घी-दूध न लेनेकी भूल तो रही ही। घी-दूधको हम भोग-विलासकी चीज समझते थे और यह मान वैठे थे कि गरीवोके भोजनमे तो घी-दूध आ ही नही सकता। अिसलिअे घी-दूधका हमने विलकुल परित्याग कर दिया था। लेकिन अव हमने अेक गाय खरीद ली है और दूध वगैरा अव लेने लगे है। गाय खरीदे हमे आठेक दिन हुअे है। तव तक तो हम घीकी जगह नारियलका तेल खाकर ही सतोष मान रहे थे। फिर अिस प्रदेशमे मुख्य आहार चावलका है। अिन सव कारणोसे आश्रमवासियोके स्वास्थ्यको वहुत क्षति पहुची है। आरम्भमें हम वारह आश्रमवासी थे, पर आजकल हम केवल पाच ही आदमी रहते हैं। मलेरियासे भी आश्रमवासियोकी तवीयत कमजोर रहती है। यह जगली तालुका है अिसलिअे मलेरिया तो यहा वारहो माह डेरा डाले रहता है।

आश्रम अव तक शारीरिक श्रमसे ही आजीविका प्राप्त करनेके आदर्शको पकडे हुअे है। यह सही है कि अिस आदर्श पर अगर वुद्धिपूर्वक अमल किया जाय, तो हमारा नीतिवल वढे और सिद्धान्तोके अनुसार जीवन वितानेमे हम दृढ भी वने। पर अिसके कारण हमारे कुछ साथी हमसे अलग भी रहते है। प्रश्न यह है कि 'ब्रेड लेवर' (शरीर-श्रमके द्वारा आजीविका प्राप्त करना) का आदर्श अक्षुण्ण रखते हुअे भी अैसे कार्यकर्ता किस तरह आश्रमकी ओर आर्कापित हो सकते है।

मित्र तथा सहानुभूति दिखानेवाले सज्जन और आलोचक टॉल्स्टॉयके अिस 'ब्रेड लेवर' के सिद्धान्तके विरुद्ध समाज-सेवाका आदर्श रखते है, और कहते हैं कि तुम्हारा आश्रम समाजकी जो सेवा कर सकता है, वह अिस सिद्धान्तके कारण रुक गअी है। 'समाज-सेवा' करनेके लिअे मनुष्य यदि 'ब्रेड लेवर' के सिद्धान्तके साथ कुछ समझौता कर ले, तो

यह कहा तक ठीक समझा जा सकता है? 'होना' और 'करना' अिन दोनोंके बीच यह जो भेद दिखाअी देता है वह अकसर क्या आभासमात्र नही होता? और अमलमें तो 'होना' ही क्या 'करना' नही होता? 'ब्रेड लेबर' का सिद्धान्त अतिशयताको पहुचा हुआ कब कहा जा सकता है? या यह कब समझा जायगा कि अुनके 'अक्षरो' का पालन करके अुसके अर्थका घात कर दिया गया है?

औसतन् हम सात आदमियो पर आठ महीनेमे नीचे लिखे अनुसार खर्च हुआ है

भोजन	१७१॥)॥।
कपडे	१६॥-)॥।
रोशनी	८॥=)
डाकखर्च	३।=)॥।
फुटकर	६≡)५
बरतन	३॥)॥।
दवाअिया	७॥।)।
अखबार ('हरिजन')	३॥।=)
सफर-खर्च	१०=)।
कुल	२३१॥≡)११

अिससे यह प्रगट होता है कि प्रति मास प्रति व्यक्ति भोजन-खर्च ३) और वस्त्रादिका खर्च १) आया है।"

श्री किशोरलाल मशरूवालाके नाम अेक सुशिक्षित निस्स्वार्थ कार्यकर्ताने जो पत्र लिखा है, अुसीमे से यह अुद्धरण दिया गया है। अेक विशुद्ध-हृदय सेवकके प्रयत्नोका यह हूबहू चित्र है, और जो व्यक्ति सेवामय जीवन बितानेका प्रयत्न कर रहे हो अुन सबको सभव है अिसमे कुछ सहायता मिल सके।

प्रयत्न सराहनीय है। यह अच्छा है कि लेखक तथा अुनके साथियोंको जब कोअी भूल दिखाअी देती है, तब वे अुसे स्वीकारने और सुधारनेमें हिचकिचाते नही।

यह मैं नही जानता कि लेखकने अिस पत्रमे जो प्रश्न पूछे हैं, अुनका श्री किशोरलालने क्या जवाब दिया है। पर अिस पत्रलेखकको जिन प्रकारके प्रश्नोंने परेशान कर रखा है, अुनमे दिलचस्पी लेनेवाले साधारण पाठकोंके सहायतार्थ अुनके अुत्तर देनेका प्रयत्न मैं अवश्य करूगा।

अैसा मालूम होता है कि 'ब्रेड लेबर' (रोटीके लिअे परिश्रम, शरीर-श्रम) के सिद्धान्तके विषयमें कुछ गलतफहमी हो गअी है। यह सिद्धान्त

समाज-सेवाका विरोधी तो है ही नही। बुद्धिपूर्वक किया हुआ श्रम अुच्चसे अुच्च प्रकारकी समाज-सेवा है। कारण यह है कि यदि कोअी मनुष्य अपने शारीरिक श्रमसे देशकी अुपयोगी सपत्तिमे वृद्धि करता है, तो अिससे अुत्तम और हो ही क्या सकता है? 'होना' निश्चय ही 'करना' है।

श्रमके साथ जो 'बुद्धिपूर्वक किया हुआ' विशेषण लगाया गया है, वह यह बतलानेके लिअे लगाया गया है कि समाज-सेवामे श्रम तभी खप सकता है, जब अुसके पीछे सेवाका कोअी निश्चित हेतु हो, नही तो यह कहा जा सकता है कि हरअेक मजदूर समाजकी सेवा करता है। अेक प्रकारसे तो वह समाजकी सेवा करता ही है, पर जिस सेवाकी यहा बात हो रही है वह बहुत अूचे प्रकारकी सेवा है। जो मनुष्य सबके हितके लिअे सेवा करता है वह समाजकी सेवा करता है, और जितनेसे अुसका पेट भर जाय अुतनी मजदूरी पानेका अुसे हक है। अिसलिअे अिस प्रकारका 'ब्रेड लेबर' (शरीर-श्रम) समाज-सेवासे भिन्न नही है। अधिकाश मनुष्य जो काम अपने शरीरके पोषणके लिअे या बहुत हुआ तो अपने कुटुम्बके लिअे करते है, अुसे समाज-सेवक सबके हितके लिअे करता है।

अिन सात आश्रमवासियोको आज यह मालूम हो रहा है कि अुन्हे अपने अन्न-वस्त्रके लिअे मेहनत करनेके पश्चात् दूसरी सेवा करनेका समय शायद ही रहता है। ये सेवक अगर अपने काममे कुशल होते, तो अैसी बात कभी न होती। असलमे वे कार्यकुशल नही हैं। खेती-बाडीके मजदूरोके रूपमे अुन्हे हम देखते है, तो वे साधारण मजदूरोकी बराबरी कर ही नही सकते। कारीगरोकी कोटिमे भी वे नौसिखिये ही कहे जा सकते है। अीश्वरकी कृपासे प्रत्येक कार्यकर्ता अब यह जानता है कि सूत कातनेवाला अपने औजारोको अगर बुद्धिके साथ काममे लावे, तो अमुक समयमे वह सूतकी मात्रा सहजमें दूनी कर सकता है, अर्थात् अुसकी चरखेकी आमदनी दूनी हो सकती है। यह बात अधिकाश वस्तुओके सबबमे सत्य है। खेतीमे अुनके अिन्ही औजारोमें तरक्की करनेका क्षेत्र अितना विशाल है कि यदि प्रकृति बीचमें न पडे, तो किसान अपनी बुद्धिका अुपयोग करके नित्य अुतने ही घटे काम करते हुअे अपनी आमदनी सहज ही चौगुनी कर सकते हैं। अिसका मतलब यह हुआ कि आज-जितनी आमदनीके लिअे वह जितनी मेहनत करता है, अुतनी करनेकी अुसे जरूरत न रहेगी। अिसलिअे ये सेवक जब कुशलता प्राप्त कर लेगें, तब आजकी अपेक्षा बहुत कम समयमे वे अपने अन्न-वस्त्रके लायक कमा लेगे और हरिजन-सेवा अथवा दूसरे किसी काममे वे अपनी शक्तिको बिना किसी बाधाके लगा सकेगे। अनेक प्रकारके खर्चोंमें फसे हुअे साधारण गृहस्थोके लिअे यह समस्या जटिल हो सकती है, पर जिस त्यागी सेवकको महीनेमें

केवल चार ही रुपयेकी जरूरत है अुनका तो चार रुपये कमानेकी मेहनत-मजदूरी कर लेनेके बाद बहुतसा समय बच सकता है।

लेकिन प्रति मनुष्य यह तीन रुपयेका मासिक खर्च देखते हुअे मनुष्यका पेट क्या सचमुच भर सकता है? डॉ० तिलकने बम्बअीके लिअे जो ५ रु० का हिसाब बाधा है वह अगर सही है, तो गावके रहन-सहनके लिअे यह तीन रुपया ठीक ही है। और डॉ० तिलकने भोजनकी जो सूची दी है अुसमें मै अपना निजी अनुभव जोड दू तब तो कोअी कठिनाअी रहती ही नही। डॉ० तिलकने गावकी खुराकमे से दूधके चूर्णको अलग कर दिया है। पर जैसा कि वे स्वीकार करते है बिना दूधके काम चल ही नही सकता। जिन आश्रमवासियोने दूधका जो त्याग कर दिया था वह अुनकी भूल थी। यह सही है कि करोडो मनुष्योको दूधकी अेक बूद भी नसीब नही होती। पर अैसी तो अनेक चीजे है जो अुन्हे नही मिलती। अगर हमे सेवा करनेके लिअे जीवित रहना ह, तो अुन्हे छोडनेका हमे साहस नहीं करना चाहिये। अिसलिअे जिनके बिना हमारा काम चल ही नही सकता अैसी चीजे हम न छोडे और गाववालोको अिसमे मदद दे कि वे अपने लिअे भी अुन चीजोको पैदा कर ले। गेहू, चावल, बाजरा, जुआर जैसे पूर्ण अनाज और हरी भाजिया, जो कच्ची ही खाअी जा सकती है, और दूध तथा गावोमे पैदा होनेवाले आम, अमरूद, जामुन, बेर आदि मौसमी फल निरोगी जीवनके लिअे जरूरी है। नीमकी पत्तीको तो शायद हरी भाजियोकी रानी कहा जा सकता है। नीमकी पत्तिया भारतमे सर्वत्र मिल सकती है। और मनुष्यके खाने लायक अनेक प्रकारका अैसा घास भी हे जिसका हमें पता नही। अिमली सब जगह मिलती है। यह भी फेंक देनेकी चीज नही है। पर अिमलीके विरुद्ध अेक तरहका जो पूर्वग्रह है अुसे समझना कठिन है। कीमती नीबुओकी जगह मै अब अिमली काममे लाने लगा हू। और अिससे मुझे बहुत ही लाभ हुआ है। आहारमे क्या क्या सुधार हो सकते है अिस सबकी शोधके लिअे हमारे सामने असीम क्षेत्र पडा हुआ है। अिस शोधके असे बडे-बडे परिणाम निकल सकते है, जो संसारके लिअे और खासकर भारतके भूखो मरनेवाले करोडो मनुष्योके लिअे काफी महत्त्वका स्थान रखते है। अिसका यह अर्थ हुआ कि स्वास्थ्य और संपत्ति दोनोकी ही अुनसे प्राप्ति हो सकती है। रस्किनके कथनानुसार तो ये दोनो चीजे अेक ही है। अिस छोटेसे आश्रमके सदस्योकी यह धारणा बिलकुल सही है कि वे सदा सन्मार्ग पर चलकर बडीसे बडी समाज-सेवा करेगे। अुनकी सेवाकी सुगन्ध वहा आसपास फैलेगी और वह सक्रामक सिद्ध होगी। कालातरमे यह सेवा-भावना समस्त भारतमे और फिर अखिल विश्वमे व्याप्त हो जायगी। अिस सेवामे अेकका कल्याण सबका कल्याण है।

हरिजनसेवक, १४–६–’३५, पृ० १३६–३८

४९
बौद्धिक और शारीरिक काम

प्र० — हम किसी रवीन्द्रनाथ या रमणके लिअे शरीर-श्रम करके ही रोटी कमाने पर जोर क्यो दें? क्या यह अुनकी दिमागी ताकतकी निरी बरबादी न होगी? दिमागी काम करनेवालोको अंग-मेहनत करनेवालोंके बराबर ही क्यो न समझा जाय, क्योकि दोनो ही समाजको फायदा पहुचानेवाला काम करते है?

अु० — दिमागी काम भी अपना महत्त्व रखता है और जीवनमे अुसका निश्चित स्थान है। लेकिन मै तो शरीर-श्रमकी जरूरत पर जोर देता हू। मेरा यह दावा है कि अुस फर्जसे किसी भी मनुष्यको छुटकारा नही मिलना चाहिये। अिससे मनुष्यके दिमागी कामकी अुन्नति ही होगी। मै तो यहा तक कहनेकी हिम्मत करता हू कि पुराने जमानेमें हिन्दुस्तानके ब्राह्मण बौद्धिक और शारीरिक दोनो काम करते थे। वे चाहे न भी करते हो, लेकिन आज तो शारीरिक कामकी जरूरत सिद्ध हो चुकी है। अिस सिलसिलेमें मै आपको टॉल्स्टॉयके जीवनका हवाला देते हुअे यह बताना चाहूगा कि अुन्होने रूसी किसान बोन्दरेव्हके शारीरिक कामके सिद्धान्तको किस प्रकार मशहूर किया।

हरिजनसेवक, २३–२–'४७, पृ० २८

५०
बौद्धिक विषय बनाम अुद्योग

श्री नरहरि परीख लिखते है

"खादी और नअी तालीमके विद्यालयोमे 'बौद्धिक विषय' शब्दका प्रयोग बहुत ही गलत तरीकेसे किया जाता है। अक्षरज्ञान अथवा पुस्तकका अध्ययन बौद्धिक विषय कहा जाता है। अमुक समय अुद्योगके लिअे है और अमुक समय बौद्धिक विषयके लिअे — अैसा भी कहा जाता है। कुछ विद्यालयोमे तो यह भी कहते है कि अुन्हे दो घंटे अुद्योगमे लगाने होते है और तीन पढनेमे। किताबोंके शुरू होनेमे ही यह माना जाता है कि पढाअी आरम्भ हुअी। अिस विषय पर आप लिख तो चुके है, लेकिन फिर भी लिखनेकी जरूरत है। अुद्योगमे बुद्धिका विकास तो होता ही है। अिसलिअे यह नही

कहा जा सकता कि अुद्योग बुद्धिका विषय नहीं है। यह आवश्यक है कि आप अिसके सम्बन्धमें भी स्पष्ट रूपसे लिखें।"

लेखककी शिकायत बिलकुल सच है। अक्षरज्ञान बुद्धिका विषय नहीं, वह तो स्मरण-शक्तिका विषय है। जिस तरह किसी पदार्थका चित्र देखकर सीखना बुद्धिका विषय नहीं, अुसी तरह अक्षरके चित्रके बारेमें है। लेकिन अक्षरज्ञानमें अुसके अर्थका भी समावेश तो है ही। अनेक विषयोंकी किताबें पढना और समझना भी अक्षरज्ञानमें शामिल है। यही बात अुद्योगको भी लागू होती है। औद्योगिक ज्ञानका मतलब केवल कोअी धन्धा सीखना ही नहीं, बल्कि अुससे सम्बन्धित शास्त्रको भी जानना है। अिस तरहके औद्योगिक ज्ञानसे बुद्धिका सिर्फ विकास ही नहीं होता, बल्कि अक्षरज्ञानके मुकाबले बहुत अधिक विकास होता है। अक्षरज्ञानसे तो बुद्धिके विकासके बदले स्मरण-शक्तिका ही विकास होता है। यह बात हम हाअीस्कूल और कालेजोंसे निकले हुअे सैकडो विद्यार्थियोंके बारेमें कह सकते हैं। अुद्योगके शास्त्रज्ञानके विषयमें अैसा दुष्परिणाम होनेकी सम्भावना नहीं दीखती। अैसी सूरतमें अमुक समय अुद्योगके लिअे और अमुक समय अक्षरज्ञानके लिअे यह भेद, अुद्योगके दर्जेको कम करनेकी यह प्रथा, दूर हो जानी चाहिये। क्योंकि यह भेद निकम्मा है और प्राय अिससे नुकसान भी होता है। विद्यार्थियोंके मनमें यह भेद समा जाता है और अिससे अुद्योगके प्रति अुदासीनता और पढनेके लिअे मोह पैदा होता है। अिस तरह दोनों चीजें बिगड जाती हैं। किताबका कीडा बननेसे ही बुद्धिका विकास नहीं हो जाता। अुससे तो आंख और विचार-शक्ति दोनों ही खराब होती हैं। अुद्योगके प्रति अुदासीनता होनेसे अुसका ज्ञान अूपरी रहता है। *प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा* देती है। अुद्योगके पूर्ण ज्ञानके लिअे पुस्तकोंके अध्ययनकी आवश्यकता रहती ही है। और अुसके सिलसिलेमें जो कुछ पढना पडता है, सो तो समझकर ही पढा जा सकता है। अिस तरह अुसमें हानिके लिअे अवकाश ही नहीं रहता। जिनको मैं समझा सकूंगा अुनका पूर्ण विकास तो अुद्योगके द्वारा ही करूंगा। अिसीका नाम नअी तालीम या सच्ची तालीम है। यह तो अपने समयानुसार आवेगी ही। फिर भी अुस समय तक अुद्योग और अक्षरज्ञानका भेद तो मिट ही जाना चाहिये। जिस तरह गणित, साहित्य अित्यादिका वर्ग होता है अुसी तरह अुद्योगका भी होना चाहिये। सबको शिक्षाका अंग ही समझना चाहिये। यह भ्रम तो निकल ही जाना चाहिये कि अुद्योग शिक्षा-क्षेत्रके बाहरका विषय है। जब तक यह भ्रम न टलेगा, विद्यार्थियोंके विकासमें रुकावट होती रहेगी।

हरिजनसेवक, १२-४-'४२, पृ० ११२

५१

अहिंसक अुद्योग

[लेखक महादेव देसाओ]

अखिल भारत चरखा-सघ और गावी-सेवा-सघकी मिलीजुली वैठकमे, जो पिछले जूनमे हुअी थी, खादीके अर्थशास्त्रकी व्यापक समझसे सवधित कओी प्रश्नो पर चर्चा हुअी। अेक वैठकमे गाधीजी हाथ-अुद्योगकी अुन्नतिके अहिंसक पहलू पर लवे समय तक वोले। अुन्होने कहा

"अहिंसा-परायण मनुष्यके सारे कामकाज और सारी प्रवृत्तिया अहिंसासे रगी हुअी होगी, अिसलिअे अुसका धधा, अुसका व्यवसाय निश्चित रूपसे अहिंसक होगा। वैसे तो सूक्ष्म दृष्टिसे देखा जाय तो विना थोडी-वहुत हिंसाके कोओी भी काम या अुद्योग-धन्धा सभव नही है। कुछ न कुछ हिंसा किये विना जीना भी शक्य नही है। हमारा काम तो यही सोचना है कि अैसी हिंसाकी मात्रा घटाकर कमसे कम कैसे की जाय। अहिंसा शब्द भी नकारात्मक है, यानी वह जीवनमे अनिवार्य हिंसा छोडनेके प्रयत्नका सूचक है। अिसलिअे जिसकी अहिंसामे श्रद्धा है वह अैसे ही अुद्योग-धधेमे लगेगा, जिसमें कमसे कम हिंसा होगी। अुदाहरणके लिअे, हम यह कल्पना नही कर सकते कि अहिंसामे विश्वास रखनेवाला मनुष्य कसाअीका धधा पसन्द करेगा। अिसका यह अर्थ नही कि मास खानेवाला अहिंसक नही हो सकता। मास खानेवालोमे अैसे वहुतसे लोग मिलेगे, जो मास न खानेवालोसे ज्यादा अहिंसक होगे। जैसे कि दीनवन्धु अेन्ड्रूज। लेकिन मास खानेवालोमे भी जो अहिंसामे श्रद्धा रखते है, वे शिकारीका धधा नही करेगे और लडाअीमे या लडाअीकी तैयारीमे शामिल नही होगे।

"अिस तरह कितने ही काम और धन्धे अैसे है, जिनमे निश्चित रूपसे हिंसा रहती हे। अुन्हे अहिंसक मनुष्यको छोडना होगा। लेकिन खेतीका धन्धा नही छोडा जा सकता, यद्यपि अमुक मात्रामे अुसमे हिंसा अनिवार्य है। अिसलिअे अैसे मामलोमे कसौटी यह है जो धन्धा हम स्वीकार करना चाहते है, अुसका आधार क्या अहिंसा पर है? वैसे तो हर काममे, हर क्रियामे थोडी-वहुत हिंसा रहती ही है। हमारा काम अितना ही हे कि अुसे यथासभव कम करनेका प्रयत्न करे। यह काम अहिंसा पर हार्दिक श्रद्धाके विना नही हो सकता। मान लीजिये कि कोओी आदमी प्रत्यक्ष हिंसा विलकुल नही करता, मेहनत करके खाता है, लेकिन पराया धन या खुशहाली देखकर

हमेशा अीर्ष्यासे जल अुठता है। अैसा आदमी अहिंसक हरगिज नहीं माना जा सकता। अर्थात् अहिंसक धन्धा वही है, जो जडमे हिंसा-रहित है और जिसमें दूसरेकी अीर्ष्या या शोषण नहीं है।

"मेरे पास अिस बातका अैतिहासिक प्रमाण तो नहीं है, परन्तु मैंने हमेशा यह माना है कि भारतवर्षमे अेक समय गावोका अर्थतत्र जैसे निर्दोष अहिंसक अुद्योग-धन्धो पर रचा गया था। वह मनुष्यके अधिकारो पर नहीं, बल्कि मनुष्यके धर्मों और फर्जों पर खडा था। अैसे धन्धोमे लगे हुअे लोग अपनी जीविका तो कमाते ही थे, लेकिन अुनके परिश्रमसे सारे समाजका हित और कल्याण होता था। अुदाहरणके लिअे, गावका सुतार गावके किसानोकी जरूरतें पूरी करता था। अुसे नगद पैसा नहीं मिलता था, लेकिन गावके लोग अुसे अपनी मेहनतसे पैदा की हुअी अनाज वगैरा चीजे मेहनतानेके रूपमे देते थे। मेरा कहनेका यह मतलब नहीं कि अिस प्रथामे भी अन्याय नहीं हो सकता था, लेकिन अैसे अन्यायकी सभावना अिसमे कमसे कम रहती थी। मैं साठ बरससे पहलेके काठियावाडके लोक-जीवनकी बात आपको बता रहा हू, जिसका मुझे निजी अनुभव है। आज हम लोगोकी आखोमें जितना तेज और अुनके हाथ-पावोमें जितनी शक्तिसे देखते है अुससे अुस जमानेके लोगोकी आखोमें ज्यादा तेज और अुनके हाथ-पावोमें ज्यादा शक्ति और स्फूर्ति दिखाअी देती थी।

"अिन अुद्योग-धन्धोमे शरीर-श्रम मुख्य चीज थी। विशाल यत्रोद्योग अुस समय नहीं थे। क्योकि जब मनुष्य हाथसे जोत सके अुतनी ही जमीनसे सतोष मानता हो, तब वह दूसरेका शोषण नहीं कर सकता। हाथ-अुद्योगोंमें गुलामी और शोषणकी गुजाअिश ही नहीं है। विशाल यत्रोद्योग अेक मनुष्यके हाथमे धनके ढेर अिकट्ठे करते है, जिसके बल पर वह अनेक लोगोंसे अपने लिअे कडी मेहनत कराता है। अपने मजदूरोके लिअे आदर्श स्थिति पैदा करनेकी भी शायद वह कोशिश करता होगा, फिर भी अुससे अन्याय और शोषण तो रहता ही है और अुसका अर्थ अमुक रूपमे हिंसा ही है।

"जब मैं यह बात कहता हू कि अुस जमानेमे समाज दूसरोंके शोषण पर नहीं किन्तु न्याय पर रचा गया था, तब मैं अितना ही बताना चाहता हू कि सत्य और अहिंसा अैसे गुण नहीं है, जिन्हे केवल व्यक्ति ही सिद्ध कर सकता है, बल्कि सारी जातिया और मानव-समाज भी अुन पर अमल कर सकते हैं। जो गुण केवल मठ या कुटियामे ही खिल सकता है या व्यक्ति ही जिसका विकास कर सकते है, अुसे मैं गुण ही नहीं मानता। मेरी नजरमें अैसे गुणकी कोअी कीमत नहीं है।"

हरिजन १-९-'४०, पृ० २७१

चला आ रहा है, और विचार करना, मैं मानता हू, लाभप्रद ही होगा। दिनके चौबीसो घटे कर्तव्य-पालन करना या सेवा करना यज्ञ है। अिसलिअे 'परोपकाराय सता विभूतय'—जैसी सूक्ति, यदि 'अुपकार' शब्दमे दूसरो पर कृपा करनेका भाव हो, सदोष कही जायगी।

निष्काम सेवा करना दूसरो पर नही बल्कि स्वय अपने पर कृपा करना है, ठीक जैसे कि हम ऋणका भुगतान करते है तो हम अपनी ही सेवा करते है, अपने बोझको हलका करते है और अपने कर्तव्यको पूरा करते हैं। अिसके सिवा, न केवल भले लोग बल्कि हम सब अपनी साधन-सामग्रीको मानव-जातिकी सेवामे लगानेके कर्तव्यसे बधे हुअे है। और यदि अैसा कानून है—जैसा कि वह स्पष्ट रूपमे है ही—तो जीवनमे फिर भोगका कोअी स्थान नही रहता और अुसका स्थान त्याग ले लेता है। त्यागका कर्तव्य ही मानव-जातिकी विशेषता है, पशुसे अुसके भेदका सूचक है।

लेकिन त्यागका अर्थ यहा ससारको छोडकर अरण्यमे वास करना नही है। अुसका अर्थ यह है कि जीवनकी तमाम प्रवृत्तियोमे त्यागकी भावना होनी चाहिये। कोअी गृहस्थ जीवनको भोगरूप न मानकर कर्तव्य-रूप माने, तो अिससे अुसका गृहस्थपन मिट नही जाता। यज्ञार्थ व्यापार करनेवाला व्यापारी करोडोका व्यापार करते हुअे भी लोकसेवाका ही विचार करेगा। वह किसीको धोखा नही देगा, सट्टा नही करेगा, सादगीसे रहेगा, किसी जीवको कष्ट नही देगा और किसीका नुकसान करनेके बजाय खुद करोडोका नुकसान सह लेगा। कोअी यह कहकर अिस बातकी हसी न अुडाये कि अैसा व्यापारी केवल मेरी कल्पनामे ही है। दुनियाका सौभाग्य है कि अैसे व्यापारी पूर्वमे भी है और पश्चिममे भी हैं। यह सच है कि अैसे व्यापारी अुगलियो पर गिने जा सकते है, लेकिन यदि अुक्त आदर्शको प्रगट करनेवाला अेक भी जीवित नमूना हो, तो फिर अुसे काल्पनिक नही कह सकते। और यदि हम अिस प्रश्नकी गहराअीमे जाय, तो जीवनके हर क्षेत्रमे हमे अैसे मनुष्य मिलेगे जो समर्पणका जीवन बिताते है। अिसमे सदेह नही कि अैसे याज्ञिक अपना धधा करते हुअे अपनी आजीविका भी कमाते हैं। लेकिन वे धधा आजीविकाके लिअे नही करते, आजीविका अुनके धधेका गौण फल है।

यज्ञमय जीवन कलाकी पराकाष्ठा है, अुसीमे सच्चा रस और सच्चा आनन्द है। जो यज्ञ बोझरूप मालूम हो वह यज्ञ नही है। जिस त्यागसे कष्ट मालूम हो वह त्याग नही है। भोग नाशकी ओर ले जाता है और त्याग अमरताकी ओर। रस कोअी स्वतत्र वस्तु नही है। वह तो जीवनके प्रति हमारे रुख पर निर्भर करता है। किसीको नाटकके परदो पर चित्रित दृश्योमे रस मिलता है, तो दूसरेको आकाशमें प्रगट होनेवाले नित्य-नये दृश्योमे।

अिसलिअे रस वैयक्तिक और राष्ट्रीय तालीमका विषय है। हमें बचपनमें जिन चीजोंमें रस लेना सिखाया गया हो अुनमें ही हमें रस मिलता है। और किसी अेक राष्ट्रकी प्रजाको जो वस्तु रसमय मालूम होती है, वह किसी दूसरे राष्ट्रकी प्रजाको रसहीन मालूम होती है। अिस बातके अुदाहरण तो आसानीसे दिये जा सकते हैं।

फिर, यज्ञ करनेवाले कअी सेवक अैसा मानते हैं कि हम निष्काम-भावसे सेवा करते हैं, अिसलिअे हमें लोगोंसे जरूरी और बहुतसी गैर-जरूरी चीजें भी लेनेकी छूट है। यह विचार सेवकके मनमें ज्यों ही आता है त्यों ही वह सेवक नहीं रह जाता, तब वह अत्याचारी शासक बन जाता है।

जो सेवा करना चाहता हो अुसे अपनी सुविधाओंका विचार नहीं करना चाहिये। अपनी सुविधाओंका विचार तो वह अपने स्वामीको — अीश्वरको — सौंप देता है। अीश्वरकी अिच्छा होगी तो वह देगा, न होगी तो नहीं देगा। अिसलिअे सेवक जो कुछ अुसे मिले सो सब अपने अुपयोगके लिअे नहीं रख लेगा, अपने लिअे वह अुसमें से अुतना ही लेगा जितनेकी अुसे सचमुच जरूरत है। बाकीका वह त्याग करेगा। अुसे असुविधायें अुठानी पड़ें तो भी वह शांत रहेगा, क्रोध नहीं करेगा और अपना चित्त स्वस्थ रखेगा। सद्गुणोंकी तरह, अुसकी सेवाका पुरस्कार, सेवा करनेका सुख ही है और अुसीमें वह संतोष मानेगा।

अिसके सिवा, सेवाकार्यमें किसी तरहकी लापरवाही या देर नहीं चल सकती। जो आदमी यह समझता है कि सावधानी और परिश्रमकी आवश्यकता तो सिर्फ अपना व्यक्तिगत कार्य करनेमें है, निःशुल्क किया जानेवाला सार्वजनिक कार्य अपनी सुविधाके अनुसार जब करना हो तब और जिस तरह करना हो अुस तरह किया जा सकता है, कहना चाहिये कि वह यज्ञका क-ख-ग भी नहीं जानता। दूसरोंकी स्वेच्छापूर्वक की जानेवाली सेवा अपनी पूरी शक्ति लगाकर की जानी चाहिये, यह सेवा पहले और अपना निजी कार्य बादमें — यही सेवाका सूत्र होना चाहिये। सारांश यह कि शुद्ध यज्ञ करनेवालेका अपना कुछ बाकी नहीं रहता, वह सब कृष्णार्पण कर देता है।

फ्रॉम यरवडा मन्दिर, पृ० ५३–६०, १९५७

५३
श्रमका गौरव

"विश्वविद्यालयके नवयुवक स्नातकोको अपनी पदवियोकी फेरी करते हुअे हम रोज ही देखते है। वे अैसे आदमियोसे अपनी सिफारिश कराते रहते है जिन्हे शिक्षा तो कुछ नही मिली है, किन्तु जो धनी बहुत है, और १०० मे से ९० मामलोमे तो विश्वविद्यालयोकी पदवियोसे कही अधिक अिज्जत अफसरोकी निगाहमे धनीकी सिफारिशकी ही ठहरती है। अिससे आखिर क्या सावित होता है? यही न कि दिमागी तालीमसे कही अधिक कीमत धनकी लगाअी जाती है। दिमागकी पूछ आजकल बहुत कम है। यह क्यो? क्योकि दिमागको धन पैदा करनेमे सफलता नही मिल सकी है। अिस असफलताका कारण है अैसे कामोकी कमी जिनमे वुद्धिकी जरूरत पडे। मनुष्य-समाजमे सबसे अधिक कीमती और ताकतवर चीज दिमाग ही है। आज अुसकी माग न होनेके कारण वह बेकार वस्तु बन गया है।

"किसानका धन अुसके हाथ है। जमीदारकी ताकत अुसकी जमीनमे है। जमीनका काम खेती है। हाथकी तालीमका नाम अुद्योग है। मै जानता हू कि खेतीको भी कुछ लोग अुद्योगमे ही गिनते है, परन्तु यदि हम अिनके विशिष्ट तत्त्वको देखे, तो समझमे आयेगा कि कृषि और अुद्योग अलग अलग वस्तुअे है।

"शारीरिक श्रमके अुस विभागको अुद्योग कहना मुनासिब होगा, जिसमे हाथोकी तालीमके लिअे बराबर मौका मिलता जाय और जिसमे हमारी आमदनीके क्रमश बढते जानेकी सभावना हो। खेतीमे काम करनेवालोके बारेमे यह नही कहा जा सकता। हल चलानेवाले, बीज बोनेवाले या खेत निरानेवालेको अपने हाथोकी शिक्षाके कारण कुछ अधिक मजदूरी नही मिल सकेगी। खेतीके काममे अधिक आमदनी करनेकी निपुणता सीखनेकी गुजाअिश नही है। अब किसी बढअीको ले लीजिये। वह छोटे-छोटे मामूली बक्स बनानेसे शुरू करता है। अभ्यासके जरिये वही आदमी शराबकी बोतले रखनेका बक्स भी बनाना सीख सकता है। अब यह देखिये कि हाथसे काम करनेकी निपुणतामे अुन्नति होनेके साथ ही साथ अुसकी मजदूरी कितनी बढ गअी। आप विश्वास करे कि जिस आदमीने दो सापोवाला बक्स

बनाया है, जिनके फैले हुअे फणोंमें बोतलकी रक्षा होती है, और हमने मामूली बक्स बनानेके लिअे ही नौकर रखा था। शुरूमें उसकी मजदूरी छह आने रोज थी और दो वर्षोंमें वही क्रमशः बढकर रुपया रोज हो गअी और अुसके बनाये हुअे सामानकी बाजारकी कीमतसे अुसके मालिकको चार आने रोजका नफा भी हो जाता है। अिससे दो सालके भीतर १३३) से ३६५) की वृद्धि देखनेमें आती है।

लेकिन हमारी जनसंख्याके ९८ फीसदी लोग खेतीका काम करते हैं। जमीनके रकबेकी बढती होती नहीं। जनसंख्याकी वृद्धिके साथ साथ मजदूरोंकी बढती होती जाती है। जिस जमीनसे ३० साल पहले ५ आदमियोंकी परवरिश होती थी, अुसी पर अब १२ से १५ आदमियोंकी बसर होती है। कुछ हालतोंमें अिस अूपरी बोझको देशान्तर जाकर कम किया जा सकता है, किन्तु अधिकतर मामलोंमें लाचार होकर प्राणशक्तिके कम प्रमाणसे ही काम चला लेना पडता है।”

अुपरोक्त लेख श्रीयुत मधुसूदन दासके 'बिहार यंग मेन्स अिन्स्टिट्यूट' के सामने १९२४ में दिये गये भाषणका अेक अंश है। अिस भाषणको मैं अपने पास अितने दिनोंसे अिसलिअे रखे रहा कि जब समुचित अवसर मिलेगा तब अिसके आवश्यक अंशोंका मैं अुपयोग करूंगा। व्याख्यानदाताने जो कुछ कहा है अुसमें कोअी नअी बात नहीं है। परन्तु अिन बातोंकी असल कीमत अिसमें है कि मशहूर वकील होते हुअे भी अपने हाथों काम करनेको वे न केवल नफरतकी निगाहसे नहीं देखते हैं, बल्कि स्वयं बडी अुमरमें हाथकी कारीगरी अुन्होंने सीखी है और वह भी बतौर शौकके नहीं, बल्कि नौजवानोंको मेहनत-मशक्कतकी कीमत समझाने और यह बतलानेके लिअे कि अगर वे देशके व्यवसायोंकी ओर नजर नहीं फेरेंगे, तो अिस देशका भविष्य कुछ बहुत अच्छा नहीं होगा। श्रीयुत दासने कटकमें अेक चर्मशाला खुलवाअी है। यह कारखाना कितने ही युवकोंके लिअे, जो अुसके पहले महज अनजान मजदूर थे, शिक्षाकेन्द्र बना हुआ है। मगर सबसे बडा अुद्योग, जिसमें करोडोंकी मेहनतकी जरूरत है, सूत-कताअी ही है। जरूरत अिस बातकी है कि अिस देशके किसानोंकी अत्यन्त बडी संख्याको वृद्धिसे किया जानेवाला अेक और काम दिया जाय, जिससे अुनके हाथ और दिमाग दोनोंको तालीम मिले। अुनके लिअे जो सबसे अच्छी और सस्ती शिक्षा ढूंढी जा सकती है वह यही है। सबसे सस्ती अिसलिअे कि अिसमें तुरत ही आमदनी भी होने लगती है। और यदि हमें भारतवर्षमें सार्वजनिक शिक्षाका प्रचार करना है, तो प्राथमिक शिक्षा लिखाअी, पढाअी और हिसाबकी न होकर सूत कातने और अुससे संबंधित अन्य ज्ञानकी होगी। और जब अिनके जरिये

हाथो और आखोको पूरी तालीम मिल जाती है, तब कही बालक अिन तीनोको सीखनेके लिअे तैयार होता है। मैं जानता हू कि यह कुछ लोगोको तो असभव और कुछको बिलकुल अव्यावहारिक मालूम होगा। मगर जो अैसा सोचते है वे हमारे करोडो भाअी-बहनोकी हालत नही जानते। वे यह भी नही जानते कि हिन्दुस्तानके किसानोके करोडो बच्चोको शिक्षा देनेका क्या अर्थ है। और यह शिक्षा तब तक नही दी जा सकती जब तक शिक्षित भारतवासी, जिन्होने अिस देशमे राजनीतिक जागृति पैदा की है, परिश्रमके गौरवको समझ नही लेते और जब तक हरअेक नौजवान चरखा चलानेकी कलाको सीखना और गावोमे फिरसे अुसे दाखिल करना अपना परम कर्तव्य नही मानता।

हिन्दी नवजीवन, ९-९-'२६, पृ० २९

५४

श्रमकी प्रतिष्ठाको पहचानें

[१६ फरवरी, १९१६ को मद्रासमे वाअि० अेम० सी० अे० के सभा-गृहमे दिये गये अेक भाषणसे।]

आप पूछ सकते है "हमे अपने हाथोका अुपयोग क्यो करना चाहिये?" और कह सकते है "शारीरिक कार्य तो जो अपढ हैं अुनसे करवाया जाना चाहिये। मै तो अपने समयका अुपयोग केवल साहित्य और राजनीतिक लेखोके पठनमे ही कर सकता हू।" मेरा खयाल है कि हमे श्रमकी प्रतिष्ठाको पहचानना है। अगर अेक नाअी या चमार कॉलेजमे जाता हे, तो अुसे नाअी या चमारका धन्धा छोड नही देना चाहिये। मै मानता हू कि नाअीका धन्धा अुतना ही अच्छा और अुपयोगी है जितना कि डॉक्टरका धन्धा हे।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ३८९, १९३३

५५

कर्मयोगका सिद्धान्त

[श्री महादेव देसाईके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

अेक मुलाकातीने गांधीजीसे पूछा कि कर्मयोग पर आपका अनुचित आग्रह भले न हो, पर क्या आप अुस पर जरूरतसे ज्यादा जोर नहीं दे रहे हैं? गांधीजीने अिसका यह जवाब दिया

"नहीं, यह बात बिलकुल नहीं है, मैंने जो भी कहा है अुसका हमेशा वही अर्थ लिया है। अिसमें कोअी अत्युक्ति नहीं है। कर्मयोग पर जरूरतसे ज्यादा जोर देनेकी बात तो कभी हो ही नहीं सकती। मैं तो गीताके सिखाये हुअे सन्देशको ही दोहरा रहा हू, जिसमें भगवान कृष्णने कहा है

यदि ह्यह न वर्तेय जातु कर्मण्यतन्द्रित ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्या पार्थ सर्वश ।।

अर्थात् मै सतत जाग्रत रहकर कर्म न करू, तो सारे मनुष्य मेरा अनुकरण करने लग जायगे। क्या मैंने व्यवसायी लोगोंसे यह प्रार्थना नही की कि वे खुद चरखा चलाकर हमारे तमाम देशवासियोंके सामने अेक सुन्दर अुदाहरण रखें?"

"भगवान बुद्धकी तरह आपको कोअी मनुष्य मिले, तो क्या अुनसे भी आप यही बात कहेंगे?"

"अवश्य, अिसमें मुझे जरा भी हिचकिचाहट नही होगी।"

"तो फिर तुकाराम और ज्ञानदेव जैसे महान सतोंके विषयमें आप क्या कहेंगे?"

"अुनके सबधमे विवेचन करनेवाला मैं होता कौन हू?"

"पर बुद्धके सबधमे आप अैसा करेंगे?"

"अैसा मैंने कभी नही कहा। मैंने तो सिर्फ यह कहा है कि अगर बुद्धकी कोटिके किसी मनुष्यसे प्रत्यक्ष मिलनेका मुझे सद्भाग्य प्राप्त हो, तो मैं अुससे यह कहनेमें जरा भी सकोच न करूगा कि वह ध्यानयोगके स्थान पर कर्मयोगकी पुष्टि करे। जिन महान सतोंसे यदि मेरा मिलना हो, तो अिनसे भी मैं यही बात कहूगा।"

हरिजनसेवक, २-११-'३५, पृ० २९८-९९

मेहनत नहीं तो खाना भी नहीं

कुछ दिन पहले मुझे कलकत्तेके अेक शानदार महलमे ले जाया गया था। अुसे 'मारवल पैलेस' कहते है। अुसमें वहुत कीमती और वहुत सुन्दर चित्रोसे वढिया सजावट की गअी है। मालिक महलके सामने आगनमे जो भी भिक्षुक वहा आये अुन सवको खाना खिलाते है। मुझे कहा गया कि अुनकी नख्या कअी हजार होती है। वेशक, यह राजाओका-सा दान है। अिससे दाताओकी परोपकारकी वृत्ति प्रगट होती हे जो प्रशसनीय है। परन्तु दाताओको जरा भी खयाल नही होता कि अेक तरफ अिस वेहाल मानवताको खिलाना और दूसरी तरफ अुस शानदार महलका मानो अुसकी दुर्दशाकी हसी अुडाना कितना वेमेल है। अैसा ही अेक और दु खद दृश्य मैं जव मसूरी गया था तव मैंने देखा था। वहा स्वागत-समितिने जिलेके भिखारियोको भोजन करानेकी व्यवस्था की थी। 'मारवल पैलेस' मे जिस भीडने मुझे घेर लिया था, वह जमीन पर विछाअी हुअी मैली पत्तलो पर खा रहे भिखारियोकी पक्तिको पार करके आअी थी। कुछ लोगोने अुन पत्तलोको लगभग कुचल दिया था। मसूरीमे जरा अधिक सभ्य व्यवस्था थी, क्योकि भीडको भिखारियोकी पक्ति पार करके नही आना था। परन्तु जो मोटर गाडी मुझे वहा ले गअी थी, अुसे खाना खाते हुअे भिखारियोकी पक्तिके वीचसे धीरे धीरे ले जाया गया था। मुझे अिस विचारसे अधिक अपमान महसूस हुआ कि वह सव मेरे सम्मानमे किया गया था, क्योकि जैसा वहाके अेक मित्रने कहा, 'मै गरीबोका हितैषी हू।' अवश्य ही मेरी यह मित्रता या हितैषिता वडी भद्दी चीज है, यदि मैं मानव-समाजके वडे भागके भिखारी वने रहनेमे सन्तोप मानू। मेरे मित्रोको यह पता नही है कि भारतके कगालोकी हितैपिताने मुझे अितना कठोर-हृदय वना दिया है कि अुनके विलकुल भिखमगे वन जानेकी अपेक्षा मैं अुनका सर्वथा भूखो मर जाना खुशीसे पसद करूगा। मेरी अहिंसा किसी अैसे तन्दुरुस्त आदमीको मुफ्त खाना देनेका विचार वरदाश्त नही करेगी, जिसने अुसके लिअे अीमानदारीसे कुछ न कुछ काम न किया हो, और मेरा वश चले तो जिन सदाव्रतोमे मुफ्त भोजन मिलता है, वे सव सदाव्रत मैं वन्द कर दू। अिससे राष्ट्रका पतन हुआ है और सुस्ती, वेकारी, दभ और अपराधोको भी प्रोत्साहन मिला है। अिस प्रकारका अनुचित दान देशकी भौतिक या आध्यात्मिक सम्पत्तिकी कुछ भी वृद्धि नही करता और दाताके मनमे पुण्यात्मा होनेका झूठा भाव पैदा करता है। क्या ही

अच्छी और बुद्धिमानीकी वात हो, यदि दानी लोग अैसी मस्थायें खोले जहा अुनके लिअे काम करनेवाले स्त्री-पुरुषोंको स्वास्थ्यप्रद और स्वच्छ हालतमे भोजन दिया जाय। मेरा खुदका तो यह विचार है कि चरखा या कपाससे मम्वन्धित क्रियाओमे से कोओी भी क्रिया आदर्श धन्धा होगी। परन्तु अुन्हे स्वीकार न हो तो वे कोओी भी दूसरा काम चुन सकते है। जो भी हो, नियम यह होना चाहिये कि 'मेहनत नही तो खाना भी नही।' प्रत्येक शहरके लिअे भिखमगोकी अपनी अपनी अलग कठिन समस्या हे, जिमके लिजे धनवान जिम्मेदार है। मै जानता हू कि आलसियोको मुफ्त भोजन करा देना वहुत आमान हे, परन्तु अैमी किसी सस्थाको सगठित करना वहुत कठिन हे जहा किसीको खाना देनेमे पहले अुससे ओमानदारीसे काम कराना जरूरी हो। आर्थिक दृष्टिमे, कमसे कम शुरूमे, लोगोसे काम लेनेके वाद अुन्हे खाना खिलानेका खर्च मौजूदा मुफ्तके भोजनालयोंके खर्चसे ज्यादा होगा। लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि यदि हम तेजीसे देशमें वढनेवाले आवारा-गर्द लोगोकी सख्यामे वृद्धि नही करना चाहते, तो अन्तमे यह व्यवस्था अधिक सस्ती पडेगी।

यग अिडिया, १३-८-'२५, पृ० २८२

५७

शर्मनाक

अभी कलकी ही वात है, लगभग पचीस वर्षका अेक हट्टा-कट्टा नौजवान मेरे पाम आया। अुसने मुझसे पूछा, क्या दो-तीन दिन मै आपके पास ठहर मकता हू? वह वहराअिचका रहनेवाला था। घर पर अुसके यहा कुछ अेकड जमीन भी है। वम्वअी काग्रेसमे गया था तभीसे वरावर भ्रमण कर रहा हे और अपरिचित लोगोके सहारे अुसका निर्वाह होता है। रामानुजियोमे वह हिलता-मिलता है। जैसा अुसने मुझे वताया, वे अुसे खाना और थोडा-वहुत रेलभाडा देते है। जव मैने अुससे कहा कि अिस तरह दूसरोके दान पर रहना ठीक नही है, तो अुसने जवाव दिया — 'मुझे तो अपने खाने खर्चके लिअे भीख मागनेमे कोओी वुराओी नही मालूम पडती, क्योकि मै लोगोकी सेवा करनेकी आशा रखता हू।' मतलव यह कि गुजारा तो पहले ही माग ले, फिर किसी समय अुसके वदलेमे व्याज-सहित सेवा कर दे। अिसमे अुसे अनौचित्य कुछ भी नही मालूम पडा। चूकि वह खानेके वक्त आया था, अिसलिअे सवके साथ अुसे भी खाना दिया गया। लेकिन अुसके वाद मैने अुससे कह दिया कि वह हमारे साथ तभी रह सकता है जव कि हमारे

साथ सारे दिन जो काम अुसे दिया जाय अुसे करनेको वह तैयार हो। तबसे अभी तक हममें से किसीको भी वह दिखाअी नहीं दिया है।

मैं चाहता हू कि अैसा मामला फिरसे मेरे सामने न आये तो अच्छा। नौजवान स्त्री-पुरुषोको अपने लिअे भीख मागनेमे शर्म आनी चाहिये। शारीरिक श्रमके लिअे शर्मका जो झूठा भाव हममे आ गया है, अगर अुससे हम मुक्त हो जाये तो जिनमे थोडी-बहुत भी बुद्धि है, अैसे नौजवान स्त्री-पुरुषोके लिअे कामकी कोअी कमी नही है। काफी काम अुनके लिअे पडा हुआ है।

हरिजनसेवक, ८-३-'३५, पृ० २१-२२

५८

पूर्ण प्रायश्चित्त

कुछ समय हुआ मैंने अिस पत्रमें सार्वजनिक दान पर निर्वाह करनेवाले बहराअिचके अेक नवयुवकके विषयमे लिखा था। बादको वह युवक पूरा पश्चात्ताप करके मेरे पास लौट आया, यह बात भी अिस पत्रमे लिखी जा चुकी है। अब भी वह मगनवाडीमे रहता है और हमारे साथ काम करता है। शारीरिक श्रममे वह अपना पूरा हिस्सा देता है। कुछ ही दिनोमे वह बहराअिच जाने लायक किरायेका पैसा कमा लेगा। पर किरायेका पैसा कमाकर मगनवाडीसे तुरन्त ही चले जानेकी अुसकी अिच्छा नही है। अुसका विचार यहा रहकर कुछ सीखनेका और कुछ अधिक लाभ अुठानेका है। अुसके सम्बन्धमे जो आलोचना हुअी अुससे अुसके बहराअिचके मित्रोका दिल दुखा है। अिस युवकका नाम अवधेश है। अवधेश मेरी की हुअी आलोचनाका औचित्य तो स्वीकार करता है, पर अपने बचावमे यह कहता है कि वह दान ले-लेकर यात्रा करने या खाने-पीनेमे कोअी पाप जैसी चीज नही मानता था, क्योंकि अुसके कथनानुसार रामानुज सप्रदायमे अैसी प्रथा है। किन्तु अब चूकि अुसने अपनी गलती मान ली है, अिसलिअे फिरसे अुस भूलको न करनेका अुसने मुझे वचन दिया है। अिस प्रकार अुसने अपनी भूलसे लाभ अुठाया है और जो कुछ भी कलक अुसे लगा हुआ था, अुसे अुसने मेरी आलोचनासे धो डाला है। हम चाहते है कि दूसरे बहुतसे लोग, जो अवधेशकी तरह दान पर गुजर करते है, अिस दृष्टान्तसे लाभ अुठाये और अिसी तरह अपने जीवनमे नया अध्याय आरम्भ करे। मनुष्यसे भूल होना स्वाभाविक है। पर गौरव मनुष्यका अिसीमे है कि जब अुसे अपनी भूलका पता चल जाय, तो वह अुसे सुधारने और अुसे फिरसे न करनेका दृढ सकल्प कर ले।

हरिजनसेवक, १९-४-'३५, पृ० ७४-७५

५९

रोटीकी समस्या

अेक सज्जन लिखते हैं कि वहुतसे वगाली अिसलिअे राष्ट्रीय काममें नही लग सकते और अपनी गुलामीकी वेडिया नही तोड सकते कि अुनके सामने रोटीका सवाल है। हम पढे-लिखे लोगोने पेटके लिअे अुद्योग करनेकी कलासे हाथ धो लिया है। जुलाहो, वुनियो और सूतकारोकी मजदूरीके वढते हुअे सचमुच रोटीका सवाल वाकी रही नही जाता। आठ घटे वुनाअी करनेवाला, शुरुआतमें ही, कमसे कम १) रोज पैदा कर सकता है। होशियार जुलाहे आज २) रोज पैदा करते हैं। हमें केवल 'कलम' के वल पर ही रोजी कमानेका ध्यान नही करते रहना चाहिये।

हिन्दी नवजीवन, २–९–'२१, पृ० १८

६०

शरीर-श्रम ही अेकमात्र हल

मुझसे मिलनेके लिअे आये हुअे कअी भाअियोके साथ चर्चा करके निर्मल-वावूने जो सवाल तैयार किया है, अुसका जवाव मैं अव देता हू। सवाल अिस तरह है "रोटीके लिअे मजदूरी करनेके सिद्धान्तसे आपका क्या मतलव है और मौजूदा परिस्थितिमे अिस सिद्धान्तको किस तरह लागू किया जा सकता है?" रोटीके लिअे मजदूरी करनेके सिद्धान्तका अर्थशास्त्र जिन्दगीका चेतना-भरा रास्ता है। अिसका मतलव यह है कि हरअेक अिन्सानको अपने खाने और अपने कपडोके लिअे खुद शरीर-श्रम करना चाहिये। अिस रोटीके लिअे मजदूरीके सिद्धान्तकी कीमत और अुसकी जरूरतको मैं अगर लोगोके गले अुतार सकू, तो कही भी खाने या कपडेकी तगी न रहे। श्रद्धाके साथ अितना कहनेमे मुझे जरा भी हिचकिचाहट नही होती कि अगर लोग खेतोमे जाकर मजदूरी न करे और खुद न काते या न वुने, तो अुनके भूखो मरने या नगे घूमनेमे जरा भी वुराअी नही है। हम अखवारोमे पढते हैं कि आज सारा हिन्दुस्तान कपडेके विना नगे रहने और खुराकके विना भूखो मरनेके किनारे खडा है। अगर लोग मेरी योजनाको मजूर कर ले तो वे जल्दी ही देखेगे कि हिन्दुस्तानमे काफी खुराक और आम जनता द्वारा खुद तैयार की हुअी काफी खादी आसानीसे मिल सकती है। वेशक अिस काममे आम जनताको यह सीखनेमे मदद देनेकी जरूरत है कि वह किस तरह अच्छेसे अच्छे तरीकेसे होशियारीके साथ जमीनका अुपयोग करे। साथ ही अुसे कातना और वुनना सिखानेवाले शिक्षक

और ये दोनो काम करनेके सावन मिलने चाहिये। वगालमें पानी पुरानेके काममे गहरा रस लेनेवाले यहाके भूतपूर्व गवर्नर मि० केसीसे अपने अिस तरीकेके वारेमे चर्चा करते हुअे मुझे सकोच नही हुआ था। मि० केसीकी योजना वहुत वडी है और अुस पर अमल करनेमे वरसो और लाखो रुपयेकी जरूरत है। अिससे अुलटे मेरा कार्यक्रम पूरी तरह कामका होते हुअे भी लम्वा-चौडा या खर्चीला नही है।

हरिजनसेवक, २१-९-'४७; पृ० २७५

६१

काम ही गरीबीका अेकमात्र अिलाज है

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र'से।]

ग्रामसेवक-विद्यालयके विद्यार्थियोसे वातचीत करते हुअे अेक दिन गाधी-जीने वताया कि हिन्दुस्तानकी वेकारीमे तथा पश्चिमके देशोमे फैली हुअी वेकारीमे क्या भेद है। अुन्होने कहा, "अेक तरहसे हमारा वेकारीका सवाल अुतना नाजुक नही है जितना कि पश्चिमी देशोमें है। क्योकि रहन-सहन भी तो अेक महत्त्वपूर्ण वात है। पश्चिममे वेकार होने पर भी आदमीको और लोगोकी भाति गरम कपडे, वूट, मोजे वगैरा तो जरूरी होते ही है। फिर सर्द आवो-हवावाले मुल्कोमे गरम मकान वगैरा वहुतसी चीजे होनी चाहिये। तो अुनकी भी अुसे जरूरत रहती ही है। हमे अिन सवकी जरूरत नही होती।

"हमारे देशकी भयकर गरीवी और वेकारी देखकर सचमुच कअी वार मुझे रुलाअी तक आ गअी है। मगर साथ ही मुझे यह भी स्वीकार करना पडता है कि हमारा अज्ञान और लापरवाही अिसके लिअे वहुत हद तक जिम्मेवार है। हम असलमें यह जानते ही नही कि मेहनत करना कितने गौरवकी चीज है। मिसालके तौर पर, अेक चमार सिवा जूते वनानेके और कोअी काम करना पसन्द नही करेगा, वह समझता है कि और सव काम नीचे है। यह गलत खयाल दूर हो जाना चाहिये। जो अीमानदारीके साथ अपने हाथ-पैरोंसे काम लेना चाहते हैं, अुनके लिअे हिन्दुस्तानमें काफी काम पडा हुआ है। परमात्माने हरअेक आदमीको अैसी शक्ति और वुद्धि दे रखी है जिसकी मददसे वह अितना पैदा कर सकता है कि अुसके खाते-खाते भी वच जाय। और जो भी अपने अिन गुणोसे काम लेना चाहेगा अुसे काम तो मिल ही जायगा। अीमानदारीके साथ अपनी रोजी कमानेकी अिच्छा रखनेवालेके लिअे कोअी भी काम नीच नही है। सवाल यह है कि आदमी खुद अीश्वरके दिये हुअे हाथ-पैर हिलानेको तैयार है या नहीं?"

हरिजनसेवक, १९-१२-'३६, पृ० ३४५-४६

६२

'अेक महान समता-स्थापक'

[श्री चन्द्रशेखर शुक्लके 'साप्ताहिक पत्र' मे।]

मजदूर अपने ध्येयके प्रति सक्रिय सहानुभूति दिखलानेमे पीछे नही है। बिलासपुरमे बी० अेन० रेलवे मजदूर-भवनने गाधीजीको भाषण देनेके लिअे निमन्त्रित किया और हरिजन-सेवाके लिअे पाच सौ रुपयोकी थैली भेट की। गाधीजी यह देखकर बहुत खुश हुअे कि मजदूरोने ध्येयके प्रति अपनी सहानुभूतिके चिह्नस्वरूप अपनी गाढी कमाअीके अेक हिस्सेका त्याग किया। अिस अवसर पर दिये अुनके पूरे भाषणको मै नीचे देता हू

अगर आप जानते न हो तो अब जान ले कि जबसे मै दक्षिण अफ्रीका गया तभीसे मेरा मजदूरोसे गहरा सबध रहा है। भारतमे या ससारके किसी भी भागमे अुन्होने मुझे अपना अेक मजदूर भाअी मान लिया है और अपना ही समझकर मेरा स्वागत किया है। आपको शायद यह जानकर अचभा होगा कि लकाशायरमे भी मजदूरोने स्वयप्रेरणासे मुझे अपनेमे से अेक मान लिया और सैकडो-हजारोकी सख्यामे मुझे घेर लिया था। हमारे बीच अेकमात्र अतर यह है कि मै अपनी पसन्दसे मजदूर बना हू, जब कि आप परिस्थितिवश मजदूर बने है और अगर सभव हो तो शायद आप मालिक बनना चाहेगे। मैने मालिक बननेकी महत्त्वाकाक्षा शुरूमे ही छोड दी थी, क्योकि अुस हालतमे मै अेक छोटे वर्गका आदमी होता और कगालो, अनाथो, अधभूखो, नगो तथा सबसे छोटोके साथ तादात्म्य स्थापित नही कर सकता था, जैसा कि आज मै अपनी योग्यताके अनुसार करता हू। मै चाहता हू कि मजदूर अपनी स्थिति पर दु ख न माने, अुससे घृणा तो हरगिज न करे और श्रमका गौरव समझे।

यह सर्वथा अुचित है कि आप हरिजनोके प्रति अपनी सहानुभूतिके चिह्नस्वरूप अपनी थैली भेट कर रहे है। अुनके बराबर किसने कष्ट भोगे है? अुनका स्तर हमारे समाजमे सबसे नीचा है। जिन भयकर मुसीबतो और अभावोमें होकर अुन्हे गुजरना पडता है, अुनकी कल्पना अैसे लोगोको कभी नही हो सकती, जो अुनके शिकार नही बने है? दूसरे मजदूर दौलत जमा करके किसी दिन मालिक बननेकी और अिस प्रकार अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढानेकी आकाक्षा रख सकते है। परन्तु हरिजन अैसी महत्त्वाकाक्षा कभी नही रख सकते। अुन पर तो अछूतपनका कलक माके पेटसे ही लग जाता है। वे जन्मसे ही बहिष्कृत होते है ओर मृत्युपर्यन्त बहिष्कृत रहते है। अुन्हे समाजसे बिलकुल अलग गन्दे स्थानोमे रहना पडता है और जीवनकी जो सुख-सुविधाअे औरोको प्राप्त होती है अुनसे वे वचित रखे जाते है। अीश्वरकी मुफ्त देन पानी तक अुन्हे नही मिलता।

मैं मजदूर-सबसे कहता हू कि वह हरिजनो और आपके बीचके तमाम भेदभाव मिटा दे। मैं यह अपील विचारपूर्वक कर रहा हू, क्योकि अहमदाबादके मिल-मजदूरोंके सीधे सपर्कमे आनेके कारण मै जानता हू कि मजदूर हरिजनो और गैर-हरिजनोंके बीच भेदभाव जरूर रखते है। मै और सबकी अपेक्षा मजदूरोसे ये भेदभाव मिटा देनेकी अधिक आशा रखता हू। मेरी यह गहरी श्रद्धा रही है कि हम किसी दिन मजदूरोके द्वारा साम्प्रदायिक अेकता जरूर प्राप्त करेंगे। मैं श्रमको अेकता पैदा करनेका जबरदस्त साधन मानता हू। वह महान समता-स्थापक है। मजदूरोंमें साम्प्रदायिक फूट होना शर्मकी बात है, क्योकि वे सब अपने पसीनेकी कमाअी खाते है और अिसलिअे वे सब अेक विशाल भ्रातृ-समाजके अग है। अिसलिअे वे अस्पृश्यताको सपूर्णत मिटाकर अिसका आरभ करें। यह साम्प्रदायिक अेकताकी दिशामे अेक बडा कदम होगा। अेक बार हरिजनोंके सिरसे अस्पृश्यताका कलक मिट जायगा तो हिन्दुओ, मुसलमानो और देशकी अन्य जातियोके बीच व्यापक अेकताका रास्ता खुल जायगा।

हरिजन, ८-१२-'३३, पृ० ५-६

६३

स्वावलम्बन और परावलम्बन

स्वाश्रयके मानी है किसीकी भी मददके बिना अपने पावो पर खडे रहनेकी शक्ति। अिसका मतलब यह नही कि दूसरोकी सहायताके सबधमे मनुष्य लापरवाह हो जाय अथवा अुसका त्याग करे अथवा दूसरोकी मदद न चाहे या न मागे। परन्तु दूसरोकी मदद चाहने पर भी, मागने पर भी यदि वह न मिल सके तो भी जो मनुष्य स्वस्थ रह सकता है, स्वमानकी रक्षा कर सकता है वह स्वाश्रयी है। जो किसान दूसरोकी मदद मिल सकती हो तो भी स्वय ही हल जोते, अनाज बोये, फसल काटे, खेतीके औजार तैयार करे, अपने कपडे आप ही काते, बुने या सीये, अपने लिअे अनाज भी स्वय तैयार करे और घर भी स्वय तैयार करे, वह या तो बेवकूफ होगा, अभिमानी होगा अथवा जगली होगा। स्वाश्रयमे शरीर-श्रम तो आ ही जाता है। अर्थात् प्रत्येक मनुष्यको अपनी आजीविकाके लिअे आवश्यक शरीर-श्रम करना ही चाहिये। अिसलिअे जो मनुष्य आठ घटे खेतीका काम करता है अुसे जुलाहा, बढअी, लुहार आदि कारीगरोकी मदद लेनेका अधिकार है, अुनसे मदद लेनेका अुसका धर्म है और अुसे वह मदद सहज ही मे मिल सकती है। और बढअी, लुहार आदि कारीगर वर्ग किसानकी मेहनत लेकर अुससे अन्नादि प्राप्त कर सकते है। जो आख

हाथकी सहायताके बिना ही काम चला लेनेका अिरादा रखती है वह स्वाश्रयी नहीं है बल्कि अभिमानी है। और जिस प्रकार हमारे शरीरमें हमारे अवयव अपने अपने कार्यमें स्वाश्रयी हैं, फिर भी अेक-दूसरेकी मदद लेनेके कारण परावलम्बी हैं, वैसे ही हिन्दुस्तान रूपी शरीरके हम लोग तीस कोटि अवयव हैं। सबको अपने अपने क्षेत्रमें स्वाश्रयी बननेका धर्म पालन करना चाहिये और अपनेको राष्ट्रका अंग सिद्ध करनेके लिअे अेक-दूसरेके साथ मददका विनिमय भी करना चाहिये। यह होगा तभी तो राष्ट्रका विकास हुआ गिना जा सकेगा और तभी हम राष्ट्रवादी गिने जा सकेंगे।

हिन्दी नवजीवन, ८–४–'२६, पृ० २६९

६४

नौकरों पर अवलम्बन

घरेलू नौकरोंकी संस्था पुरानी है। परन्तु मालिकका नौकरोंके प्रति रवैया समय-समय पर बदलता रहा है। कुछ लोग नौकरोंको परिवारके आदमी समझते हैं और कुछ अुन्हें गुलाम या जंगम संपत्ति मानते हैं। संक्षेपमें सामान्यतः नौकरोंके प्रति समाजका जो रवैया होता है, वह अिन दो आत्यंतिक विचारोंके बीचमें आ जाता है। आजकल सब जगह नौकरोंकी बड़ी मांग है। अुन्हें अपने महत्त्वका पता लग गया है और अिसलिअे कुदरती तौर पर वे वेतन और नौकरीके बारेमें अपनी ही शर्तें रखते हैं। यदि अिसके साथ ही हमेशा अुन्हें अपने कर्तव्यका ज्ञान हो और वे अुसका पालन भी करें तो ठीक हो। अुस हालतमें वे नौकर नहीं रहेंगे और अपने लिअे परिवारके सदस्योंका दरजा प्राप्त कर लेंगे। परन्तु आजकल तो सबका हिंसामें विश्वास हो गया है। तब फिर नौकर अुचित ढंगसे अपने मालिकोंके परिवारके सदस्योंका दरजा कैसे प्राप्त कर सकते हैं? यह प्रश्न अैसा है जो पूछा जा सकता है।

मेरी रायमें जो आदमी दूसरोंका सहयोग चाहता है और अुन्हें सहयोग देना चाहता है, अुसे नौकरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। यदि नौकरोंकी तंगीके वक्त किसीको नौकर रखना पड़ता है, तो अुसे मुंहमांगा वेतन देना पड़ता है और दूसरी सब शर्तें माननी पड़ती हैं। नतीजा यह होता है कि वह मालिक होनेके बजाय अपने नौकरका नौकर हो जाता है। यह न मालिकके लिअे अच्छा है, न नौकरके लिअे। परन्तु अगर किसी व्यक्तिको दूसरे मानव-बन्धुसे गुलामी नहीं बल्कि सहयोग चाहिये, तो वह न केवल अपनी ही सेवा करेगा बल्कि अुसकी भी करेगा जिसके सहयोगकी अुसे

जरूरत है। अिस सिद्धान्तका विस्तार करनेसे मनुष्यका परिवार अुतना ही विशाल हो जायेगा जितना यह ससार है, और अपने मानव-बन्धुओके प्रति अुसके रवैयेमें वैसा ही परिवर्तन हो जायगा। वाछित अुद्देश्यकी प्राप्तिका दूसरा कोअी मार्ग नही है।

जो अिस सिद्धान्त पर अमल करना चाहता है, वह छोटे-छोटे प्रारम्भ करके सन्तोप मान लेगा। मनुष्यमे हजारोका सहयोग ले सकनेकी योग्यता होते हुअे भी अुसमे अितना सयम और स्वाभिमान होना ही चाहिये कि वह अकेला खडा रह सके। अैसा व्यक्ति कभी सपनेमे भी किसी आदमीको अपना दास नही समझेगा और न अुमे अपने नीचे दवा कर रखनेकी कोशिश करेगा। मच तो यह है कि वह विलकुल भूल जायगा कि वह अपने नौकरोका मालिक हे और अुन्हे अपने स्तर पर लानेकी पूरी कोशिश करेगा। दूसरे शव्दोमे, जो चीज दूसरोको नही मिल सके अुसके विना काम चलाकर अुसे सन्तोप कर लेना चाहिये।

हरिजन, १०-३-'४६, पृ० ४०

६५

काम और फुरसतका दर्शन

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

आजकल गाधीजीसे मिलनेके लिअे जो लोग आते है, वे ज्यादातर शारीरिक श्रमकी नीरसता अयवा शारीरिक श्रमके गौरव आदिकी ही वाते करते है। सादीसे मादी चीजे भी गाधीजीके हाथमे ले लेनेके कारण अव लोगोको रहस्यमय मालूम पडने लगी है। वे सोचमे पड जाते है और पूछते है 'अिसका मतलव क्या होगा?' लेकिन सच वात तो यह है कि ग्रामोद्योग-सघके अुद्देश्य और कार्यको हरअेक व्यक्ति अपनी निजी सकुचित दृष्टिसे ही देखता है, और गाधीजीके अिस नअे कार्यक्रमके कारण मुझे अपने जीवनमे क्या क्या फेरफार करने पडेगे, हरअेक अिसी वातका विचार करता है।

अेक मित्रने गाधीजीसे पूछा "लोगोको फुरसतका समय मिलना चाहिये या नही, अिमका तो आप खयाल ही नही करते। गरीव लोग वहुत ज्यादा मेहनत-मशक्कत करते रहेगे, तो अुन्हे मानसिक विचार द्वारा वुद्धिको वढाने और मनोरजन द्वारा आनन्द प्राप्त करनेके लिअे समय ही नही मिलेगा। पर आप तो अुन्हे और ज्यादा काम करनेकी ही शिक्षा दे रहे है।"

"सचमुच? मै जिन लोगोंके वारेमें सोच रहा हू, अुनके पास तो अितनी फुरसत है कि अुन वेचारोकी समझमे ही नहीं आता कि अुसका

क्या अुपयोग करे। अिस फुरसतके ही कारण अुनमें अैसी सुस्ती आ गअी है, जिसने अुन्हे निर्जीव पत्थरके समान जड बना दिया है। अुनमे अितनी जडता आ गअी है कि कितने ही लोग तो जरा-सा हिलना-डुलना भी नही चाहते।"

"जहा जरूरत हो वहा आप लोगोंको जरूर काम पर लगाअिये। पर आप तो अुनसे अपने हाथो अपने चावल और अनाजकी कुटाअी-पिसाअी करनेके लिअे भी कहते हैं। क्या यह अुनसे सूखा, नीरस काम करानेकी बात नहीं है?"

"अुन्हे आलस्यमे अपना समय बिताना जितना नीरस मालूम होता है अुससे ज्यादा नीरस यह काम नही है। और जब वे यह समझ जायेंगे कि अिससे हमे न सिर्फ कुछ पैसोकी कमाअी ही हो जाती है, बल्कि अिससे हमारी और हमारे देशवासियोकी तन्दुरुस्ती भी ठीक रहती है, तो अुन्हे यह काम नीरस नही लगेगा। आधुनिक कल-कारखानोंमे काम करनेसे ज्यादा नीरस तो निश्चय ही यह काम नही है। कोअी काम कितना ही नीरस क्यो न हो, अगर मनुष्यको अुसमे यह समझनेका आनन्द मिल सकता हो कि मैंने कुछ निर्माण किया है, तो अुसे वह नीरस नही लगेगा। आप किसी जूतोंके कारखानेमे जाअिये। वहा कुछ आदमी जूतोंके तल्ले बना रहे होंगे, कुछ अूपरी हिस्से और कुछ अन्य काम कर रहे होंगे। वह काम नीरस मालूम देगा, क्योंकि वे लोग बुद्धि लगाकर काम नहीं करते। लेकिन जो मोची या चमार स्वय पूरा जूता बनाता है अुसे अपना काम जरा भी नीरस नही मालूम पडेगा। क्योंकि अुसके काम पर अुसकी कुशलताकी छाप होगी और अुसे अिस बातका आनन्द होगा कि अपने हाथो मैंने कोअी चीज बनाअी है। कौन काम किस भावनासे किया जाता है, अिसका बहुत असर पडता है। अपने व्यवहारके लिअे पानी भरने और लकडी चीरनेमे मुझे कोअी आपत्ति न होगी, बशर्ते कि किसीकी जोर-जबरदस्तीसे नही बल्कि अपनी बुद्धिसे सोच-समझकर मैं अैसा करू। कोअी भी श्रम क्यो न हो, अगर वह बुद्धिपूर्वक और किसी अूचे अुद्देश्यको सामने रखकर किया जाय, तो वह अुत्पादक बन जाता है और अुससे आनन्द भी प्राप्त होता है।"

"लेकिन जब आप सारे दिन मनुष्यके शारीरिक श्रम करते रहने पर ही जोर देते है, तब क्या अुसकी बुद्धिको जड बनानेका जोखिम आप अपने अूपर नही ले रहे है? आप दिनभरमे कितने घटेका शारीरिक श्रम आवश्यक समझते है?"

"मुझे खुदको तो आठ घटे काम करनेमे कोअी आपत्ति नही होगी।"

"मै आपकी बात नही करता। आप तो आठ घटे चरखा कातकर भी आनन्द प्राप्त कर सकते है, यह मै जानता हू। पर आपकी बात तो अपवादरूप है। क्योकि आपमे तो अितनी बुद्धि और अुत्पादक शक्ति है कि बाकीके समयमे भी आप अुनका बहुत कुछ अुपयोग कर सकते है।"

"नही, मै तो चाहता हू कि प्रत्येक व्यक्ति आठ घटे मेहनत करके आनन्द प्राप्त करे। सब कुछ काम करनेकी भावना पर निर्भर है। आठ घटे लगनके साथ शुद्ध शारीरिक श्रम करनेके बाद भी बौद्धिक कामोके लिअे काफी समय बच रहता है। मेरा अुद्देश्य तो जडता और आलस्यको दूर करना है। जब मै ससारको यह कह सकूगा कि भारतका हरअेक ग्राम-वासी अपने पसीनेसे २० रुपया महीना कमा रहा है, तब मुझे परम सतोष प्राप्त होगा।"

हरिजनसेवक, २२–३–'३५, पृ० ३३–३४

६६

फुरसतका मोह

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

कुछ समय पहले मैंने श्री अेल० पी० जैक्सकी 'फुरसतके समय' की यह परिभाषा अुद्धृत की थी "मनुष्यके जीवनका वह भाग जिसमे अुसकी आत्मा पर अधिकार जमानेके लिअे घोर देवासुर-सग्राम होता है," और अुनके दिये हुअे आकडो परसे यह दिखानेका प्रयत्न किया था कि फुरसतके समयकी विज्ञान और कला कितनी कठिन है। श्री बर्ट्रैण्ड रसेल, जो प्रत्येक नागरिकके लिअे काफी फुरसतका समय निश्चित करा देनेके लिअे बहुत चिंतित है, सिर्फ चार घटेका शरीर-श्रम रखना चाहते है। लेकिन अुस दिन गाधीजीसे बात करते हुअे अेक आदरणीय मित्रने आश्चर्यचकित होकर कहा "क्या फुरसतके समयका प्रश्न सचमुच अितना मुश्किल है? आठ घटे रोजके शारीरिक श्रम पर आप क्यो जोर देते है? अेक सुव्यवस्थित समाजमे क्या यह सभव नही कि केवल दो घटे रोज शरीर-श्रम कराया जाय और बौद्धिक तथा कलात्मक प्रवृत्तियोके लिअे काफी फुरसतका समय छोड दिया जाय?"

"हम यह जानते है कि श्रमजीवी और मानसिक श्रम करनेवाले दोनो ही वर्गोके लोग, जिन्हे यह सब फुरसतका समय मिलता है, अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग नही करते। सच पूछो तो हमने भी अकसर 'खाली दिमाग शैतानका घर' की कहावत ही चरितार्थ होते देखी है।"

"नही, फुरसतका समय हम बेकार नही जाने देगे। मान लीजिये, हम दिनमे दो घटे तो शारीरिक श्रम करे और छह घटे मानसिक श्रम, तो क्या यह राष्ट्रके लिअे हितकर न होगा?"

"मै नही जानता कि आपकी अिस योजना पर कहा तक अमल हो सकेगा। मैंने अिसका हिसाब लगाकर तो नही देखा, पर अगर कोअी मनुष्य मानसिक श्रम राष्ट्रके लिअे नही बल्कि केवल अपने लाभके लिअे करेगा, तो मुझे अिसमे सदेह नही कि यह योजना विफल ही होगी। हा, सरकार अुनके दो घटेके शरीर-श्रमके लिअे अुसे काफी मजदूरी दे दे और फिर अुसे बगैर कुछ दिये दूसरा काम करनेके लिअे मजबूर करे, तो अलबत्ता वह अेक अच्छी चीज हो सकती है। पर वह तो सरकारकी अैसी जोर-जबरदस्तीकी आज्ञासे ही हो सकता है, जो सब पर अेकसी लागू हो।"

"अुदाहरणके लिअे, आप अपनेको ही ले लीजिये। आप आठ घटेका शारीरिक श्रम तो रोज कर नही सकते। आठ घटे या अिससे भी ज्यादा आपको मानसिक श्रम करना पडता है। आप अपने फुरसतके समयका दुरुपयोग तो नही करते?"

"यह तो अनिवार्य रूपसे करना पडता है। फुरसत अिसमे कहा है? अिस फुरसतमे मै टेनिस वगैरा खेलने तो नही जाता। लेकिन अपने अुदाहरणको लेकर मै आपसे यह कहूगा कि अगर हम अपने हाथसे आठ घटे रोज मेहनत करते होते, तो हमारी मानसिक शक्तियोका अितना अच्छा विकास होता कि जिसकी कोअी हद नही। हमारे मनमें अेक भी निरर्थक विचार न अुठता। यह बात नही कि मेरा मन निरर्थक विचारोसे अेकदम मुक्त हो गया है। आज भी मेरी जो कुछ प्रगति है, वह अिस कारण है कि अपने जीवनमे बहुत पहले मैंने श्रमका महत्त्व जान लिया था।"

"पर अगर शरीर-श्रमकी स्वभावत अैसी महिमा है, तो हमारे यहाके लोग तो आठ घटेसे भी ज्यादा मेहनत करते है। पर अिसका अुनकी मानसिक पवित्रता या दृढता पर अैसा कोअी अुल्लेखनीय असर तो पडा नही है?"

"केवल शारीरिक या मानसिक श्रम अपने आपमें कोअी शिक्षा नही है। हमारे देशके लोग बिना समझे-बूझे जड यत्रकी तरह सख्तसे सख्त मेहनत किये जाते है और अिससे अुनकी सूक्ष्म सहज बुद्धि निष्प्राण हो जाती है। यही मेरी सवर्ण हिन्दुओसे जबरदस्त शिकायत है। श्रमजीवी वर्गके लोगोको अुन्होने जो काम दिया है वह सख्त और जलील मेहनतका है, जिसमे न तो अुन्हे कोअी आनन्द मिलता है और न कोअी दिलचस्पी ही होती है। अगर समाजमे वे सवर्ण हिन्दुओकी बराबरीके समझे जाते, तो जीवनमे अुनका स्थान आज सबसे अधिक गौरवका होता। यह युग तो

'कलियुग' समझा जाता है। सत्ययुगमे — यह मै कह सकता हू — हमारे समाजकी व्यवस्था वर्तमान युगसे कही अच्छी थी। हमारे प्राचीनतम देशमे कितनी ही सभ्यताये आओी और चली गओी। अिसीलिअे यह ठीक-ठीक कहना कठिन है कि किसी खास युगमे हमारी कैसी स्थिति थी। लेकिन अिसमे तो जरा भी शक नही कि हमारी यह हालत शूद्रोके प्रति कओी सदियोसे अुपेक्षाका भाव रखनेसे भी हुओी है। आज गावोकी सस्कृति — अगर अुसे सस्कृति कहा जा सके — अेक भयकर सस्कृति है। गावके लोग आज जानवरोसे भी बदतर हालतमे रहते है। प्रकृति जानवरोको काममे लगने और स्वाभाविक रीतिसे रहनेके लिअे मजबूर करती है। पर हमने अपने श्रमजीवी वर्गोको ठुकराकर अितना नीचे गिरा दिया है कि वे प्राकृतिक रीतिसे न तो काम कर सकते है और न रह ही सकते है। अगर वे लोग बुद्धिका अुपयोग करके रसपूर्वक काम करते, तो हमारी हालत आज कुछ दूसरी ही होती।"

"तो श्रम और सस्कृतिको क्या हम अलग नही कर सकते?"

"नही, प्राचीन रोमवासियोने अैसा करनेका प्रयत्न किया था, पर वे बुरी तरह असफल हुअे। बिना श्रमकी सस्कृति या वह सस्कृति जो श्रमका फल नही है, अेक रोमन कैथलिक लेखकके अनुसार, नाशकारक ही है। रोम-निवासी भोग-विलासमे पड कर नष्ट हो गये, अुनकी सस्कृतिका नाम-निशान भी नही रहा। सिर्फ लिखकर और पढकर या सारे दिन व्याख्यान देकर मनुष्य अपनी मानसिक शक्तियोको विकसित नही कर सकता। मैने जितना कुछ पढा है वह जेलमे मिली हुओी फुरसतके वक्तमे पढा है। अुस पढाओीसे मुझे अिसीलिअे लाभ हुआ है कि मैने यो ही अूटपटाग तरीकेसे नही, बल्कि किसी प्रयोजनसे ही पढा था। हालाकि मैने लगातार आठ-आठ घण्टे महीनो शारीरिक श्रम किया है, तो भी मै समझता हू कि मेरी मानसिक शक्ति अुससे कुछ कम नही हुओी है। मै अकसर दिनमे चालीस चालीस मील चला हू, तब भी मुझे कोओी शिथिलता मालूम नही हुओी।"

"लेकिन आपकी तो मानसिक शक्ति ही अिस प्रकारकी है।"

"नही, यह बात नही है। आपको मालूम नही कि मै स्कूलमें और अिंग्लैडमे भी अेक औसत दरजेका विद्यार्थी था। किसी सभा-सोसायटी या निरामिषाहारियोकी जमात तकमे बोलनेका मेरा साहस नही होता था। आप यह कल्पना न कर बैठे कि अीश्वरने मुझे कोओी असाधारण शक्ति दी है। मेरा खयाल है कि अीश्वरने अुस समय मुझे बहुत बोलनेकी शक्ति न देकर अच्छा ही किया। आपको जानना चाहिये कि हम लोगोमें सबसे कम अगर किसीने पढा है तो वह मै हू।"

हरिजनसेवक, १-८-'३६, पृ० १९१-९२

६७

फुरसतकी कीमत

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

"मेरी कठिनाअी तो यह है कि हमारे गावोमें हालाकि लोग सुवहसे लेकर रात तक गधोकी तरह मशक्कत कर रहे हैं और अुन्हे अेक घटेकी भी छुट्टी नही मिलती, तो भी अुन्हे पेटभर रोटी नसीब नही होती। और आप अुनसे और भी ज्यादा मेहनत लेना चाहते हैं।" कार्यकर्ताने कहा।

"आप जो कहते है यह तो मेरे लिअे नअी वात है। मैं तो अुन गावोको जानता हू, जिनमें लोगोका काफी समय यो ही नष्ट हो रहा है। लेकिन अगर जैसा आप कहते है कि अैसे भी लोग है जो अपनी ताकतसे ज्यादा काम करते है, तो मै अुनसे यह कहूगा कि ठीक आठ घटेके कामकी पेट भरने लायक जितनी मजदूरी होती हे अुससे वे अेक पाअी भी कम न ले।"

"लेकिन यत्रोको क्यो न अपना ले? अुनमे जो अच्छी अच्छी वाते हो अुन सवको ले ले। और अुनकी वुरी वातोको अलग कर दे।"

"मुझे यह नही पुसा सकता कि हमारे मानव-यत्र वेकार पडे रहे। हमारे यहा अितनी अधिक मानव-शक्ति वेकार पडी हुअी हे कि किसी दूसरी 'पॉवर' से चलनेवाली मशीनोके लिअे हमारे यहा गुजाअिश ही नही।"

"आप पॉवरसे चलनेवाली मशीनोको दाखिल कीजिये और अुन्हे अुतने ही समय तक चलाअिये कि जितना हमारे मतलव भरके लिअे आवश्यक हो।"

"आपका आशय क्या है? मान लिया कि हमारी आवश्यकता भरका तमाम कपडा खासकर अुसी मतलवसे खडी की गअी मिलोमे वन जाता है और अुनमे करीव ३० लाख आदमियोको काम मिल जाता हे, फिर? अिन ३० लाख आदमियोके पास अुतना रुपया पहुच जायगा जितना कि सौ वरस पहले ३० करोड आदमियोमे वट जाया करता था।"

"जी, नही,' अुन सज्जनने दलील देते हुअे कहा, "मेरी यह तजवीज है कि हमारी आवश्यकताओके लिअे जितने कामकी जरूरत हो अुससे अधिक काम हमारे आदमियोको नही करना चाहिये। कुछ काम वास्तवमे हम सवके लिअे जरूरी है। पर हम रोज दो घटेसे ज्यादा काम क्यो करे और अपने वचे हुअे समयको अन्य आह्लादक कामोमे क्यो न लगाये?"

"अिससे अगर हमारे आदमियोको रोज अेक ही घटा काम करना हो, तो आप सतुष्ट हो जायेगे ?"

"यह करके देखना चाहिये। लेकिन मुझे तो अवश्य सतुष्ट हो जाना चाहिये।"

"यह मुश्किल है। मै तो जब तक तमाम आदमियोके पास काफी अुत्पादक काम, यानी रोज आठ घटेका काम, न हो तब तक सतुष्ट होनेका नही।"

"लेकिन मुझे आश्चर्य होता है कि आप अिस कमसे कम आठ घटेके काम पर क्यो अितना आग्रह कर रहे है ?"

"क्योकि मै यह जानता हू कि करोडो आदमी कामके खातिर ही काममे नही लगेगे। अगर अुन्हे अपने पेटके लिअे काम करनेकी जरूरत न हो, तो अुन्हे प्रेरणा ही न मिले। मान लीजिये कि चद करोडपति अमेरिकासे आवे और हमारे पास तमाम खाने-पीनेकी चीजे भेज देनेके लिअे कहे और हमसे प्रार्थना करे कि आप लोग कोअी काम न करे, किन्तु हमे परोपकार-वृत्तिसे अपने यहा सदाव्रत खोल लेने दें, तो मै अुनकी यह बात स्वीकार करनेसे साफ अिनकार कर दू।"

"क्या अिसलिअे कि अुससे आपके आत्म-सम्मानको चोट पहुचेगी ?"

"नही, सिर्फ अिसी कारणसे नही बल्कि खासकर अिसलिअे कि अुससे हमारे जीवनके अिस मौलिक नियमका मूलोच्छेद होता है कि हमे अपने पेटके लिअे श्रम करना ही चाहिये, हमे अपने पसीनेकी कमाअीकी ही रोटी खानी चाहिये।"

"पर यह तो आपका व्यक्तिगत विचार है। क्या आप समाजकी व्यवस्थाको खुद समाज पर ही छोड देगे या चद अच्छे मार्गदर्शकोके अूपर ?"

"थोडेसे अच्छे मार्गदर्शकोके अूपर मुझे समाजकी व्यवस्था छोड देनी चाहिये।"

"अिसका अर्थ यह हुआ कि आप 'डिक्टेटरशिप' के पक्षमे है ?"

"नही, महज अिस कारण कि मेरा मौलिक सिद्धान्त अहिसा है और मुझे किसी व्यक्ति या समाज पर बलात्कार नही करना चाहिये। मार्गदर्शनका अर्थ 'डिक्टेटरशिप' नही है।"

यह बहस न जाने कब तक होती रहती, पर गाधीजीके पास और अधिक समय नही था, अिसलिअे अुन सज्जनको अुस दिन अितनेसे ही सतोप करना पडा।

हरिजनसेवक, ७-१२-'३५, पृ० ३४१

६८

आर्थिक समानताका अर्थ

गांधीजी मद्रासका दौरा कर रहे थे, अुन दिनों रचनात्मक कार्यकर्ता-सम्मेलनमें अुनसे पूछा गया, "आर्थिक समानतासे आपका ठीक-ठीक अर्थ क्या है?"

अुनका जवाब यह था, "मेरी कल्पनाकी आर्थिक समानताका अर्थ यह नहीं है कि हरअेकको अक्षरशः अुसी मात्रामें कोअी चीज मिले। अुसका मतलब अितना ही है कि हरअेकको अपनी आवश्यकताके लिअे काफी मिल जाना चाहिये। मिसालके लिअे, ठंडके मौसममें ठंडसे बचनेके लिअे मुझे दो शाल लगते हैं, लेकिन मेरे साथ रहनेवाले मेरे पौत्र कनुको गरम कपडोंकी कोअी जरूरत नहीं होती। मुझे बकरीका दूध, संतरे और दूसरे फल लगते हैं। लेकिन कनुका काम सामान्य आहारसे चल जाता है। मुझे कनुसे अीर्षा होती है, लेकिन अुसका कुछ मतलब नहीं। कनु नौजवान है और मैं तो ७६ सालका बूढ़ा हूं। भोजनका मेरा मासिक खर्च कनुसे बहुत ज्यादा है, लेकिन अिसका यह अर्थ नहीं कि हममें कोअी आर्थिक असमानता है। चींटीसे हाथीको हजार गुनी ज्यादा खुराक चाहिये, परंतु यह असमानताका चिह्न नहीं है। अिस प्रकार आर्थिक समानताका सच्चा अर्थ यह है 'सबको अपनी अपनी जरूरतके अनुसार मिले।' मार्क्सकी व्याख्या भी यही है। यदि अकेला आदमी भी अुतना ही मांगे जितना स्त्री और चार बच्चोंवाला व्यक्ति मांगे, तो यह आर्थिक समानताके सिद्धान्तका भंग होगा।

"किसीको यह कहकर अूंचे वर्गों और जन-साधारणके, राजा और रंकके बीचके बड़े भारी अंतरको अुचित बतानेकी कोशिश नहीं करनी चाहिये कि पहलेकी आवश्यकतायें दूसरेसे अधिक हैं। यह व्यर्थकी दलील होगी और मेरे तर्कका मजाक अुड़ाना होगा। अमीर-गरीबके मौजूदा फर्कसे दिलको बड़ी चोट पहुंचती है। विदेशी हुकूमत और हमारे अपने देशवासी — नगर-निवासी — दोनों ही गरीब ग्रामीणोंका शोषण करते हैं। वे अन्न पैदा करते हैं और भूखे रहते हैं। वे दूध अुत्पन्न करते हैं और अुनके बच्चे दूधके बिना

रहते हैं। यह लज्जाजनक बात है। प्रत्येकको सतुलित भोजन, रहनेको अच्छा मकान, बच्चोकी शिक्षाकी सुविधायें और दवा-दारूकी काफी मदद मिलनी चाहिये। यह है मेरा आर्थिक समानताका चित्र। मै प्रारम्भिक आवश्यकताओसे अधिक हर चीजका निषेध नही करता, मगर अुसका नम्बर तभी आता है जब पहले गरीबोकी मुख्य आवश्यकताये पूरी हो जाय। पहले करने लायक काम पहले ही होने चाहिये।"

हरिजन, ३१-३-'४६, पृ० ६३

६९

आर्थिक समानताके लिअे प्रयत्न

रचनात्मक कामका यह अग अहिंसापूर्ण स्वराज्यकी मुख्य चाबी है। आर्थिक समानताके लिअे काम करनेका मतलब है, पूजी और मजदूरीके बीचके झगडोको हमेशाके लिअे मिटा देना। अिसका अर्थ यह होता है कि अेक ओरसे जिन मुट्ठीभर पैसेवाले लोगोके हाथमे राष्ट्रकी सपत्तिका बडा भाग अिकट्ठा हो गया है अुनकी सपत्तिको कम करना और दूसरी ओरसे जो करोडो लोग अधपेट खाते है और नगे रहते है अुनकी सपत्तिमे वृद्धि करना। जब तक मुट्ठीभर धनवानो और करोडो भूखे रहनेवालोके बीच बेअिन्तहा अन्तर बना रहेगा, तब तक अहिंसाकी बुनियाद पर चलनेवाली राज-व्यवस्था कायम नही हो सकती। आजाद हिन्दुस्तानमे देशके बडेसे बडे धनिकोके हाथमे हुकूमतका जितना हिस्सा रहेगा अुतना ही गरीबोके हाथमे भी होगा, और तब नअी दिल्लीके महलो और अुनकी बगलमे बसी हुअी गरीब मजदूर बस्तियोके टूटे-फूटे झोपडोके बीच जो दर्दनाक फर्क आज नजर आता है, वह अेक दिनको भी नही टिकेगा। अगर धनवान लोग अपने धनको और अुसके कारण मिलनेवाली सत्ताको खुद राजी-खुशीसे छोडकर और सबके कल्याणके लिअे सबके साथ मिलकर बरतनेको तैयार न होगे, तो यह तय समझिये कि हमारे देशमे हिंसक और खूख्वार क्राति हुअे बिना न रहेगी।

ट्रस्टीशिप या सरपरस्तीके मेरे सिद्धान्तका बहुत मजाक अुडाया गया है, फिर भी मै अुस पर कायम हू। यह सच है कि अुस तक पहुचने यानी अुसका पूरा-पूरा अमल करनेका काम कठिन है। क्या अहिंसाकी भी यही हालत नही? फिर भी १९२० मे हमने यह सीधी चढाअी चढनेका निश्चय किया था। अब तक हमने अुसके लिअे जो पुरुषार्थ किया है वह कर लेने जैसा था, अिसे अब हम समझ चुके है। अिस पुरुषार्थकी खास बात यह

है कि रोज-रोजकी खोज और कोशिशमे हमे अधिकाधिक यह जान लेना है कि अहिंसाका तत्त्व किस तरह काम करता है। कांग्रेसवालोंसे यह अुम्मीद की जाती है कि वे सब सजीदगी और लगनके साथ, सचेत रहकर, अिस बातका पता लगाये कि अहिंसा क्या चीज है, क्यो अुसका व्यवहार करना है और वह किस तरह अपना काम करती है। सबको अिस सवाल पर भी सोचना है कि आजकी सामाजिक व्यवस्थामे मनुष्य-मनुष्यके बीच जो तरह-तरहकी असमानताये मौजूद हैं, वे हिंसासे दूर होगी या अहिंसासे। मेरे खयालमे हिंसाका रास्ता कैसा है, यह हम जानते हैं। अुस रास्ते समानताके मामलेमे कही सफलता मिली हमने जानी नही।

अहिंसाके जरिये समाजमे हेरफेर करनेके प्रयोग अभी चल रहे हैं और अुनकी तफसील तैयार हो रही है। अिन प्रयोगोमे प्रत्यक्ष दिखाने जैसा तो कोअी खास या बडा काम हमने नही किया है। मगर यह तय है कि चाल चाहे कितनी ही धीमी क्यो न हो, फिर भी अिस तरीके पर समानताकी दिशामे काम तो शुरू हो चुका है। और चूंकि अहिंसाका रास्ता हृदय-परिवर्तनका रास्ता है, अिसलिअे अुसमें जो भी हेरफेर होते है वे कायमी होते है। जिस समाज या राष्ट्रकी रचना अहिंसाकी नीव पर हुअी है, वह अपनी अिमारत पर होनेवाले तमाम बाहरी या अन्दरुनी हमलोका सामना करनेकी ताकत रखता है। राष्ट्रीय कांग्रेसमे धनवान कांग्रेसी भी हैं। अिस मामलेमे पहल करके अुन्हे औरोको रास्ता दिखाना है। स्वराज्यकी हमारी यह लडाअी हरअेक कांग्रेसीको अिस बातका मौका देती है कि वह अपने दिलकी पूरी गहराअीमे अुतरकर अपने-आपको जाचे-परखे। अपनी लडाअीके अंतमें हमे जिस हिन्दुस्तानकी रचना करनी है, अुसमे यदि समानताको सिद्ध करना हो, तो अुसकी बुनियाद अभीसे पडनी चाहिये। जो लोग यह समझ कर चलते है कि बडे-बडे सुधार तो स्वराज्य कायम होने पर ही होगे या किये जायगे, वे सब जडसे ही अिस बातको समझनेमे गलती करते है कि अहिंसक स्वराज्यका काम किस तरह होता है। यह अहिंसक स्वराज्य किसी अच्छे मुहूर्तमे अचानक आसमानसे नही टपक पडेगा। बल्कि जब हम सब मिलकर अेकसाथ अपनी मेहनतसे अेक-अेक अीट चुनते चलेंगे, तभी स्वराज्यकी अिमारत खडी हो सकेगी। अिस दिशामे हमने काफी लम्बी और अच्छी मंजिल तय की है। लेकिन स्वराज्यकी संपूर्ण शोभा और भव्यताका दर्शन करनेसे पहले हमको अभी अिससे भी ज्यादा लम्बा और थकानेवाला रास्ता तय करना है। अिसलिअे हरअेक कांग्रेसीको अपने-आपसे यह सवाल पूछना है कि अिस आर्थिक समानताकी स्थापनाके लिअे अुसने क्या किया है?

रचनात्मक कार्यक्रम, पृ० ४०–४२, १९५९

७०

आर्थिक समानता प्राप्त करनेकी पद्धतियां — गांधीजीकी और साम्यवादियोंकी

[श्री प्यारेलालके 'गाधीजीका साम्यवाद' नामक लेखसे।]

प्र० — आर्थिक समानताके ध्येयको हासिल करनेके लिअे आपके तरीके और साम्यवादी या समाजवादी तरीकेमे क्या फर्क है?

अु० — साम्यवादियो और समाजवादियोका कहना है कि आज वे आर्थिक समानताको जन्म देनेके लिअे कुछ नही कर सकते। वे अुसके लिअे प्रचार भर कर सकते हैं। अिसके लिअे लोगोमे द्वेष या वैर पैदा करने और अुसे बढानेमे अुनका विश्वास है। अुनका कहना है कि राजसत्ता पाने पर वे लोगोसे समानताके सिद्धान्त पर अमल करवायेगे। मेरी योजनाके अनुसार राज्य प्रजाकी अिच्छाको पूरी करेगा, न कि लोगोको आज्ञा देगा या अपनी आज्ञा जबरन् अुन पर लादेगा। मै घृणासे नही, प्रेमकी शक्तिसे लोगोको अपनी बात समझाअूगा और अहिंसाके द्वारा आर्थिक समानता पैदा करूगा। मै सारे समाजको अपने मतका बनाने तक रुकूगा नही — बल्कि अपने घर ही यह प्रयोग शुरू कर दूगा। अिसमे जरा भी शक नही कि अगर मै ५० मोटरोका तो क्या १० बीघा जमीनका भी मालिक होअू, तो मै अपनी कल्पनाकी आर्थिक समानताको जन्म नही दे सकता। अुसके लिअे मुझे गरीब बन जाना होगा। यही मै पिछले ५० सालोसे या अुससे भी ज्यादा समयसे करता आया हू। अिसीलिअे मै पक्का कम्युनिस्ट होनेका दावा करता हू। अगरचे मै धनवानो द्वारा दी गअी मोटरो या दूसरे सुभीतोसे फायदा अुठाता हू, मगर मै अुनके वशमे नही हू। अगर आम जनताके हितोका वैसा तकाजा हुआ, तो बातकी बातमे मै अुनको अपनेसे दूर हटा सकता हू।

हरिजनसेवक, ३१-३-'४६, पृ० ६३-६४

७१

आर्थिक समानताकी प्राप्ति

प्र० — रचनात्मक कार्य करते हुअे कोजी कांग्रेसी आर्थिक समानताका प्रचार कर सकता है? सविनय आज्ञाभंगके कार्यक्रम पर अमल करके आर्थिक समानताकी स्थापना कैसे की जा सकती है?

अु० — आप अिसका प्रचार अवश्य कर सकते हैं, यदि आपकी भाषा सर्वथा अहिंसक हो और आपका तरीका अैसा न हो जैसा मुझे मालूम है कि कुछ लोगोंने जमींदारों और पूंजीपतियोंकी संपत्ति जबरन् छीन लेनेका प्रचार करके अख्तियार किया है। परन्तु मैंने प्रचार करनेमें ज्यादा अच्छा ढंग बता दिया है। रचनात्मक कार्यक्रम देशको अिस ध्येयकी ओर काफी दूर तक ले जाता है। अुसके लिअे यह सबसे अनुकूल समय है। चरखा और अुसके साथके अुद्योग पूरे सफल हो जायं, तो अुनसे सामाजिक और आर्थिक दोनों तरहकी तमाम असमानताअें लगभग नष्ट हो जायगी। अहिंसासे लोगोंको जो बल मिलता है, अुसके दिनोदिन बढ़ते हुअे परिणामोंसे और बुद्धिपूर्वक अपनी दासतामें सहयोग देनेसे अिनकार करनेसे आर्थिक समानता अवश्य स्थापित हो जायगी।

हरिजन, २५-१-'४२, पृ० १६

७२

समान वितरण

रचनात्मक कार्यक्रम* पर अपने पिछले सप्ताहके लेखमें मैंने तेरह अंगोंमें से अेक अंग धनका समान वितरण बताया था।

* हरिजनसेवक, १७-८-'४०, पृ० २२४-२५ 'रचनात्मक कार्यक्रम किसलिअे'।

रचनात्मक कार्यक्रमके १३ अंगोंके महत्त्वका वर्णन करनेके बाद गांधीजीने लेखके अुपसंहारात्मक परिच्छेदमें कहा

"अगर अिन सबके साथ-साथ आर्थिक समानताका प्रचार न किया गया, तो यह सब निकम्मा समझना चाहिये। आर्थिक समानताका यह अर्थ हरगिज नहीं कि हरअेकके पास अेक समान धन होगा। मगर यह अर्थ जरूर है कि हरअेकके पास अैसा घरबार, वस्त्र और खाने-पीनेका सामान होगा कि जिससे वह सुखसे रह सके। और जो घातक असमानता आज मौजूद है, वह केवल अहिंसक अुपायोंसे ही नष्ट होगी। मगर अिस विषयके लिअे अलग लेखकी आवश्यकता है।"

समान वितरणका सच्चा अर्थ यह है कि प्रत्येक मनुष्यको अपनी सारी कुदरती जरूरतें पूरी करनेके साधन मिल जाय, अुससे ज्यादा नही। अुदाहरणार्थ, यदि किसी आदमीका हाजमा कमजोर है और अुसे रोटीके लिअे पावभर आटेकी ही जरूरत है और दूसरेको आधा सेरकी जरूरत है, तो दोनोको अपनी-अपनी आवश्यकताअें पूरी करनेका मौका मिलना चाहिये। अिस आदर्शकी स्थापनाके लिअे सारी समाज-व्यवस्थाकी फिरसे रचना करनी पडेगी। अहिंसाके आधार पर बने हुअे समाजका और कोअी आदर्श नही हो सकता। शायद हम अिस ध्येयको प्राप्त न भी कर सके, परन्तु हमे अुसे ध्यानमे रखना चाहिये और अुसके निकट पहुचनेके लिअे सतत काम करते रहना चाहिये। जिस हद तक हम अपने ध्येयकी दिशामे प्रगति करेंगे, अुसी हद तक हमे सुख और सतोष प्राप्त होगा और अुतनी ही हद तक हम अहिंसक समाजकी स्थापना करनेमे मदद पहुचायेंगे।

व्यक्तिके लिअे दूसरोके अैसा करनेकी प्रतीक्षा किये बिना अिस प्रकारका जीवन अपना लेना पूरी तरह सभव है। और यदि आचरणके किसी खास नियमका पालन अेक व्यक्ति कर सकता है, तो अिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्तियोका समूह भी वैसा कर सकता है। मेरे लिअे अिस हकीकत पर जोर देना जरूरी है कि कोअी सही रास्ता अख्तियार करनेके लिअे किसीको दूसरोकी प्रतीक्षा करनेकी आवश्यकता नही है। लोगोको जब अैसा लगता है कि अुद्देश्यकी सम्पूर्णत पूर्ति नही हो सकती, तो वे आम तौर पर अुस दिशामे प्रारभ करनेमे सकोच करते है। अिस प्रकारकी मनोवृत्तिसे सचमुच प्रगतिमे बाधा पडती है।

अब हम यह विचार करे कि अहिंसाके जरिये समान वितरण कैसे किया जा सकता है। अिसके लिअे पहली सीढी यह है कि जिसने अिस आदर्शको अपने जीवनका अग बना लिया है, वह अपने निजी जीवनमे आवश्यक परिवर्तन कर ले। भारतकी दरिद्रताको ध्यानमे रखते हुअे वह अपनी जरूरतें कमसे कम कर लेगा। अुसकी कमाअी बेअीमानीसे मुक्त होगी। वह सट्टेकी अिच्छा छोड देगा। अुसका निवासस्थान नअी जीवन-पद्धतिके अनुरूप होगा। जीवनके हर क्षेत्रमे वह सयमसे काम लेगा। जब वह स्वय अपने जीवनमे यथासभव सब कुछ कर लेगा, तभी अुसकी अैसी स्थिति होगी कि वह अपने साथियो और पडोसियोमे अिस आदर्शका प्रचार कर सके।

वास्तवमे समान वितरणके अिस सिद्धान्तकी जडमे धनवानोके अनावश्यक धनकी सरक्षकता या ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त होना चाहिये, क्योकि अिस सिद्धान्तके अनुसार वे अपने पडोसियोसे अेक रुपया भी अधिक नही रख सकते। यह कैसे किया जाय? अहिंसाके द्वारा? या धनवानोसे अुनकी सपत्ति छीन कर? अैसा

करनेके लिअे हमे स्वभावत हिंसाका आसरा लेना पडेगा। अिस हिंसक कार्रवाअीमे समाजका लाभ नही हो सकता। समाज अुलटा घाटेमे रहेगा, क्योकि अिससे समाज अेक अैसे आदमीके गुणोसे वचित रहेगा, जो दौलत जमा करना जानता है। अिसलिअे अहिंसक मार्ग प्रत्यक्ष रूपमे श्रेष्ठ है। धनवानके पास अुसका धन रहेगा, परन्तु अुसका अुतना ही भाग वह अपने काममें लेगा जितना वह अपनी निजी आवश्यकताओके लिअे अुचित रूपमे जरूरी समझता है और वाकीको समाजके अुपयोगके लिअे धरोहर समझेगा। अिस तर्कमे यह मान लिया गया है कि सरक्षक प्रामाणिक होगा।

ज्यो ही मनुष्य अपनेको समाजका सेवक समझने लगता हे, अुसके खातिर कमाने लगता हे और अुसके फायदेके लिअे खर्च करने लगता है, त्यो ही अुसकी कमाअीमे शुद्धता आ जाती हे और अुसके साहसमे अहिंसाका प्रवेश हो जाता है। अिसके अतिरिक्त, यदि मनुष्योके मन जीवनकी अिस प्रणालीकी ओर मुड जाय, तो समाजमे अेक शातिपूर्ण क्रान्ति हो जायगी और वह भी विना किसी कटुताके।

यह पूछा जा सकता है कि क्या अितिहासमे किसी भी समय मानव-स्वभावमे अैसा परिवर्तन हुआ पाया जाता है। निस्सदेह अैसे परिवर्तन व्यक्तियोमे तो हुअे ही है। शायद सारे समाजमे अैसे परिवर्तन होनेका अुदाहरण न दिया जा सके। परतु अिसका अर्थ अितना ही है कि अब तक बडे पैमाने पर अहिंसाका कभी प्रयोग नही हुआ है। किसी न किसी प्रकार हम लोग अिस गलत विश्वासमे फस गये है कि अहिंसा मुख्यत व्यक्तियोका हथियार है और अिसलिअे अुसका प्रयोग व्यक्ति तक ही सीमित रहना चाहिये। असलमे यह बात नही है। अहिंसा निश्चित रूपमे समाजका गुण है। अिस सचाअीका लोगोको पक्का विश्वास करानेके लिअे मेरा प्रयत्न और प्रयोग दोनो चल रहे है। आश्चर्योके अिस युगमे कोअी यह नही कहेगा कि नअी होनेके कारण ही कोअी वस्तु या कल्पना निकम्मी है। यह कहना भी कि कठिन होनेके कारण वह असभव है, अिस युगकी भावनाके अनुसार नही हे। जिन चीजोका सपनेमे भी खयाल नही था वे रोज देखी जा रही है, असभव सदा सभव बनता जा रहा है। हिंसाके क्षेत्रमे अिन दिनो होनेवाले विस्मयकारी आविष्कार हमे सतत आश्चर्यचकित कर रहे है। परतु मै मानता हू कि अहिंसाके क्षेत्रमे अिनसे कही ज्यादा अकल्पित और असभव दिखाअी देनेवाले आविष्कार होगे। धर्मका अितिहास अैसे अुदाहरणोसे भरा पडा हे। समाजसे धर्ममात्रकी जड अुखाडनेका प्रयत्न सर्वथा असभव है। ओर यदि अैसा प्रयत्न सफल भी हो जाय, तो अिसका अर्थ समाजका विनाश होगा। युग-युगमे अधविश्वास, कुरीतिया और दूसरी त्रुटिया धर्ममे घुसकर

कुछ समयके लिअे अुसे विगाड देती है। वे आती है और चली जाती है। परतु धर्म स्वय वना रहता है, क्योकि विस्तृत अर्थमे ससारका अस्तित्व धर्म पर ही कायम है। धर्मकी अतिम व्याख्या औश्वरी कानूनका पालन कही जा सकती है। औश्वर और अुसका कानून पर्यायवाची शब्द है। औश्वर अर्थात् अपरिवर्तनशील, जीता-जागता कानून। वास्तवमे आज तक किसीने अुसे नही पाया है। परतु अवतारो और पैगम्बरोने अपनी तपस्याके वलसे मनुष्य-जातिको अुस शाश्वत धर्मकी हलकी-सी झाकी दिखाअी है।

परन्तु यदि अत्यत प्रयत्न करने पर भी धनवान लोग सच्चे अर्थमे गरीवोके सरक्षक न वने और गरीब दिन-दिन अधिक कुचले जाय और भूखसे मरे, तव क्या किया जाय?

अिस पहेलीका हल ढूढनेके प्रयत्नमे मुझे अहिसक असहयोग और सविनय अवज्ञाका सही और अचूक सावन सूझा हे। अमीर लोग समाजके गरीवोंके सहयोगके विना धन-सग्रह नही कर सकते। मनुष्यका प्रारभसे ही हिंसासे परिचय रहा हे, क्योकि अुसे यह वल अपने पशु-स्वभावसे अुत्तराधिकारमे मिला है। अहिसाकी शक्तिका ज्ञान तो अुसकी आत्माको तभी हुआ जव वह चौपायेकी स्थितिसे अूचा अुठकर दोपाये (मनुष्य) की हालतमे पहुचा। अिस ज्ञानका विकास अुसके भीतर धीरे-धीरे, किन्तु निश्चित रूपमे हुआ है। यदि यह ज्ञान गरीवोके भीतर प्रवेश करके फैल जाय, तो वे वलवान हो जायेगे और अहिसाके द्वारा अपनेको कुचल डालनेवाली अुन असमानताओसे मुक्त करना सीख लेगे, जिनके कारण वे भुखमरीके किनारे पहुच गये है।

हरिजन, २५-८-'४०, पृ० २६०

७३

मजदूरीकी समानता

['गाधीजीकी पैदल यात्राकी डायरी' से।]

प्र० — जिन लोगोका सारा व्यापार चौपट हो गया है, अुनके लिअे आपकी यह सलाह है कि अुन्हे खुद होकर मजदूर वन जाना चाहिये। तव शिक्षा, व्यापार और अिसी तरहकी दूसरी वातो पर कौन ध्यान देगा? अगर आप अिस तरह मेहनतके वटवारेको खतम कर देगे, तो अिससे तहजीव और सभ्यताको नुकसान नही पहुचेगा?

अु० — सवाल पूछनेवालेने मेरे मतलवको नही समझा है। अगर कोअी आदमी अपना पहला व्यापार-धन्धा नही चला सकता, तो अुसे लाजिमी तौर

पर पाखाने साफ करने या पत्थर फोडने जैसा कोओी न कोओी शारीरिक काम करना ही चाहिये। अिसमें अुसकी पसन्द या नापसन्दका कोओी सवाल नही। मेहनत या कामके बटवारेमें मेरा विश्वास है। लेकिन मै जिस बात पर जोर देता हू कि सबकी मजदूरी बराबर हो। अेक वकील, डॉक्टर या मास्टरको भगीसे ज्यादा मजदूरी पानेका कोओी हक नही। अैसा होगा तभी कामका बटवारा राष्ट्र या दुनियाको अूपर अुठायेगा। सच्ची तहजीब या सच्चे सुखका अिससे बेहतरीन कोओी रास्ता नही। अुमूलकी 'स्पिरिट' अिन्सानको जीवन देती है। लेकिन अुसके शब्द अुसे खतम कर देते है। हाथीका सिर कटा हुआ 'गणपति' राक्षसकी तरह है, लेकिन 'ओम्' के प्रतिनिधिके नाते वह अूचा अुठानेवाला प्रतीक है। दस सिरवाला रावण कहानी-किस्सेका बेवकूफ था, लेकिन अगर अुसका मतलब अैसे आदमीसे हो जो बेअक्ल और जोशमें आकर कुछ भी कर बैठता था, तो वह सचमुच कओी सिरवाला राक्षस था।

हरिजनसेवक, २३-३-'४७, पृ० ६९

७४

समान वेतन

['गाधीजीकी पैदल यात्राकी डायरी'से।]

प्र० — आपने १९४१ मे धनकी बराबरीके बारेमें लिखा था। क्या आपका यह खयाल है कि सब लोगोको, जो समाजमें अुपयोगी और जरूरी काम करते हैं — चाहे वे किसान हो या भगी, अिजीनियर हो या हिसाबनवीस, डॉक्टर हो या शिक्षक — समान वेतन पानेका नैतिक अधिकार है? बेशक, प्रश्नकी तहमें यह बात मान ली गअी है कि शिक्षाके या दूसरे खर्च सरकार बरदाश्त करेगी। हमारा सवाल यह है कि क्या सब लोगोको अपनी निजी आवश्यकताओके लिअे समान वेतन नही मिलना चाहिये? क्या आप नही मानते कि अगर हम अिस बराबरीकी कोशिश करे, तो वह छुआछूतको दूसरे सब तरीकोसे जल्दी अुखाड फेंकेगी?

अु० — मुझे कोओी शक नही कि अगर हिन्दुस्तानको आजादीकी जैसी आदर्श जिन्दगी बितानी है, जो दुनियाके लिअे अीर्ष्याकी चीज हो, तो सब भगियो, डॉक्टरो, वकीलो, अुस्तादो, व्यापारियो और दूसरोको अीमानदारीसे दिनभर काम करनेके बदलेमें बराबर मेहनताना मिलना चाहिये। भले ही हिन्दुस्तानी समाज अुस मजिल तक कभी न पहुचे। अगर हिन्दुस्तानको अेक

सुखी देश बनना है, तो हर हिन्दुस्तानीका फर्ज है कि वह किसी दूसरेकी ओर नही, बल्कि अुसी मजिलकी ओर अपने कदम बढाये।

हरिजनसेवक, १६–३–'४७, पृ० ५६

७५
मंत्रियोंके वेतन

१

प्र० — अिस बार काग्रेसके बहुमतवाले प्रान्तोमे मत्रियोकी वेतन-वृद्धि किन सिद्धान्तो पर की जा रही है? क्या कराचीवाला काग्रेस-प्रस्ताव आजकी परिस्थितिमे लागू नही होता? यदि महगाअीके कारण अैसा किया है, तो क्या प्रान्तोके बजटमे अैसी गुजाअिश सभव है कि प्रत्येक सरकारी नौकरका वेतन तिगुना किया जा सके? यदि नही तो यह क्या अुचित है कि मत्री अपने वेतन ५००) से १५००) कर ले और अेक अध्यापक और चपरासीको यह अुपदेश दिया जाये कि वह अपनी गुजर १२) और १५) माहवारमे करे और शासन-प्रबधमे कोअी अस्थिरता अुत्पन्न न करे, क्योकि काग्रेस शासन चला रही है?

अु० — बात बिलकुल ठीक है कि मत्रियोको १५००) क्यो और चपरासी या शिक्षकोको १५) क्यो? लेकिन सवाल अुठानेसे ही वह हल नही हो जाता। अैसे अतरका सिलसिला सनातन-सा है। हाथीको मन क्यो और चीटीको कण क्यो? अिस सवालमे ही जवाब भरा है। जितनी जिसकी जरूरत है, अीश्वर अुसे अुतना दे देता है। मनुष्यकी जरूरत हाथी और चीटीकी-सी स्पष्ट हो सके तो कोअी शका ही न अुठे। अनुभव तो हमे यही बताता है कि सब मनुष्योकी जरूरत अेकसी नही हो सकती, जैसे सब चीटियोकी या सब हाथियोकी होती है। भिन्न-भिन्न लोगो और भिन्न-भिन्न कौमोकी जरूरते अलग-अलग रहती है। अिसलिअे आज जो अतर है, अुसे कमसे कम करनेका शातिसे आदोलन करे, लोकमत बनाये और अेक आदर्श सामने रखकर अुसकी ओर कूच करे। जबरदस्तीसे या सत्याग्रहके नामसे दुराग्रह करके परिवर्तन नही कर सकेगे। मत्रिगण लोगोमे से है। मत्री बननेसे पहले भी अुनकी जरूरते चपरासियो जैसी नही थी। मै चाहूगा कि चपरासी मत्रीपदके लायक बने और तब भी अपनी जरूरते चपरासी जितनी रखे। अितना समझ ले कि कोअी मत्री बधी हुअी मर्यादा तक तनख्वाह लेनेके लिअे बधा नही है।

प्रश्नकारकी अेक वात मोचने लायक अवश्य है। क्या चपरामी १५) में विना रिश्वत लिये अपना और कुटुम्बका गुजारा कर सकता है? यदि नही तो अुसको काफी मिलना ही चाहिये। अिलाज यह है कि यथामभव हम अपने-अपने चपरामी वनें और अितने पर भी जो आवश्यक हो अुनको अुनकी जरूरतके मुताविक तनख्वाह दें और अिम तरह मत्री और चपरासीके जीवनमें जो वडा अतर है अुसे मिटावे।

मत्रियोकी तनख्वाह ५००) से १५००) क्यो हुअी यह भिन्न प्रश्न है, लेकिन मूल प्रश्नके मुकावलेमे छोटा है। मूल प्रश्न हल हो सके तो छोटा अपने-आप हल होता है।

हरिजनमेवक, २१–४–'४६, पृ० ९६

२

थोडे दिन हुअे मैंने 'हरिजन' मे दवी कलमसे अेक पैरा मत्रियोकी तनख्वाह वढानेके वारेमे लिखा था। अुसकी मुझे काफी कीमत अदा करनी पडी है। वहुत लम्वे-लम्वे खत पढने पडते हैं, जिनमे मेरी मावधानी पर दु:ख प्रगट किया जाता है, और मुझे समझाया जाता है कि मैं अपनी राय वदल दू। मत्रियोकी तनख्वाहे पहले ही वहुत ज्यादा हैं। अिनको और भी वढा देना कहा तक ठीक है, जव कि गरीव चपरासियो और क्लर्कोको जो तरक्की मिली है अुसमे अुनका गुजारा भी नही हो पाता। मैंने अपने नोटको फिरसे पढा है और मेरा दावा है कि जो कुछ लेखक चाहते हैं, वह मव अुस छोटेमे नोटमे है। पर कोअी गलतफहमी न हो, अिमलिअे मैं अपना अर्थ स्पष्ट करता हू।

मुझे ताना मिला है कि मैंने कराचीवाले प्रस्तावका मोचा ही नही। मत्रियोको जो थोडी तनख्वाहे लेनी चाहियें, सो मिर्फ अिमलिअे नही कि काग्रेमने अेक प्रस्ताव करके हुक्म दिया है, वल्कि अुसके लिअे अिमसे वहुत अूचे दरजेके कारण हैं। खैर कुछ भी हो, जहा तक मैं जानता हू, काग्रेमने अुम प्रस्तावको कभी वदला नही और वह आज भी अुतना ही लागू होता है, जितना कि पास होनेके वक्त होता था।

मैं यह नही कहता कि जो तनख्वाहे वढाअी गअी है वह ठीक हुआ है। लेकिन मैं मत्रियोकी वात सुने वगैर अिसको वुरा-भला नही कह सकता। टीका करनेवालोको यह समझ लेना चाहिये कि मेरा अुन पर या अपने मिवा किमी और पर भी कोअी कावू नही है। न मैं कार्यकारिणी-समितिके मारे जलसोमे होता हू। जव सभापति चाहते हैं तभी जाता हू। मैं
अपनी राय दे मकता हू, अगर अुसकी कुछ भी हो। और

कीमत तभी हो सकती है जब वह सोच-विचार कर हकीकतके आधार पर दी जाये।

अमीर और गरीबमे, अ्ची नौकरियो और छोटी नौकरियोमें भयानक फर्कका सवाल अेक अलग विषय है। अिसमे वहुत सोच-विचारकी जरूरत है और तब्दीली जडमे करनी पडेगी। थोडे मत्रियो और अुनके सेक्रेटरियोकी तनख्वाहोके सिलसिलेमे लगे हाथ अिसका निपटारा नही हो सकता। दोनो चीजोका अपने अपने महत्त्वके अनुसार निर्णय होना चाहिये। मत्रियोकी तनख्वाहोका सवाल तो मत्री आप ही हल कर सकते है। दूसरा प्रश्न तो अिससे वहुत लम्बा-चौडा है, और अुसमे वहुत बारीकीसे जाच-पडताल करनेकी जरूरत होगी। मै तो यह माननेको हमेशा तैयार हू कि मत्रियोको फौरन ही अपने अपने प्रान्तमे अिस कामको अपने हाथमे लेना चाहिये और सबसे पहले नीची नौकरीवालोकी तनख्वाहो पर सोच-विचार करके, जहा जरूरी हो, तनख्वाहे बढा दी जानी चाहिये।

हरिजनसेवक, ९–६–’४६, पृ० १७६

७६
संरक्षकर्ताका सिद्धान्त

[श्री महादेव देसाअीके 'गाधी-सेवा-मघ-मम्मेलन—२' लेखमे ।]

"मरक्षकताका सिद्धान्त तो मेरी समझमे नही आता। क्या आप मक्षेपमे अिसे ममझा सकेंगे ?" अेक सदस्यने कहा।

गावीजी "भला कुछ मिनटोमे मै अुमे कैसे समझा सकता हू? और जव कुछ मिनटोमे मै अुसे नही समझा मकता तो कुछ घटोमे भी मै अुमे समझा मकूगा या नही, यह मै नही जानता। फर्ज कीजिये कि विरासतके या अुद्योग-व्यवमायके द्वारा मुझे प्रचुर सम्पत्ति मिल गअी, तव मुझे यह जानना चाहिये कि वह मव सम्पत्ति मेरी नही है, वल्कि मेरा तो अुस पर अितना ही अधिकार है कि जिम तरह दूमरे लाखो आदमी गुजर करते है अुसी तरह मै भी अिज्जतके साथ अपनी गुजर भर करु। मेरी शेप सम्पत्ति पर राष्ट्रका हक है और अुसीके हितार्थ अुमका अुपयोग होना आवश्यक है। अिस सिद्धान्तका प्रतिपादन मैने तव किया था जव कि जमीदारो और राजाओकी सम्पत्तिके सम्वन्धमे समाजवादी मिद्धान्त देशके सामने आया था। समाजवादी अिन सुविधाप्राप्त वर्गोको खतम कर देना चाहते है, जव कि मै यह चाहता हू कि वे (जमीदार और राजा) अपने लोभ और सम्पत्तिके स्वामित्वकी भावनाको छोड दे और अपनी सम्पत्तिके वावजूद अुन लोगोके समकक्ष वन जाये जो मेहनत करके रोटी कमाते हैं। मजदूरोको भी यह महसूस करना होगा कि मजदूरका काम करनेकी शक्ति पर जितना अविकार है, मालदार आदमीका अपनी सम्पत्ति पर अुससे भी कम है।

"यह दूसरी वात है कि अिस तरहके मच्चे ट्रस्टी कितने हो सकते है। अगर सिद्धान्त ठीक है तो यह वात गौण है कि अुनका पालन अनेक लोग कर सकते है या केवल अेक आदमी ही कर सकता है। यह प्रश्न आत्म-विश्वामका है। अगर आप अहिंसाके सिद्धान्तको स्वीकार करे, तो आपको अुमके अनुसार आचरण करनेकी कोशिश करनी चाहिये। चाहे अुसमे आपको मफलता मिले या असफलता। आप यह तो कह सकते है कि अिस पर अमल करना मुश्किल हे, लेकिन अिस सिद्धान्तमे अैमी कोअी वात नही है जिमके लिअे यह कहा जा सके कि वह वुद्धिग्राह्य नही हे।"

हरिजनमेवक, ३–६–'३९, पृ० १२३

७७

ट्रस्ट क्या है ?

[‘गाधीजीकी पैदल यात्राकी डायरी’ से।]

“आपने धनवानोको सरक्षक (ट्रस्टी) वन जानेको कहा है। क्या अिसका अर्थ यह है कि अुन्हे अपनी सपत्तिका निजी स्वामित्व छोड देना चाहिये और अुसका अैसा ट्रस्ट वना देना चाहिये, जो कानूनकी नजरमे जायज हो और जिसका प्रवध लोकशाहीके ढगसे हो ? वर्तमान अधिकारीके मरने पर अुसका वारिस कैसे तय किया जायेगा ?”

अिस प्रश्नके अुत्तरमे गाधीजीने कहा, धन-सपत्तिके विषयमें मेरे विचार आज भी वही हैं जो वर्षो पहले थे, यानी प्रत्येक वस्तु ओश्वरकी हे और ओश्वरने ही अुसे वनाया है। अिसलिअे वह अुसकी सारी मनुष्य-सृष्टिके लिअे हे, न कि किसी व्यक्ति-विशेषके लिअे। यदि किसी व्यक्तिके पास जितना अुसे मिलना चाहिये अुससे अधिक हो, तो वह अुसका सरक्षक है, यानी अुसका अुपयोग लोगोके हितमे होना चाहिये।

ओश्वर सर्वशक्तिमान है, अिसलिअे अुसे जमा करके रखनेकी जरूरत नही होती। वह नित्य पैदा करता हे, अिसी प्रकार सिद्धान्तके रूपमे मनुष्यको भी रोजका काम रोज चलाना चाहिये और चीजे अिकट्ठी करके नही रखना चाहिये। यदि लोग आम तौर पर अिस सत्यको अगीकार कर ले, तो अुसे कानूनी रूप मिल जाय और सरक्षकता कानून-सम्मत सस्था वन जाय। मै चाहता हू कि यह ससारके लिअे भारतकी देन वन जाय। फिर कोअी शोषण नही रहेगा और न आस्ट्रेलिया तथा दूसरे देशोकी तरह गोरो और अुनकी सतानोके लिअे स्थान सुरक्षित रखना पडेगा। अिन भेद-भावोमे अैसे युद्धके वीज विद्यमान हैं, जो पिछले दोनो युद्धोसे भी अधिक प्रचड होगा। रही वात अुत्तराधिकारीकी, सो अधिकारारूढ ट्रस्टीको अपना अुत्तराधिकारी नामजद करनेका हक होगा, वशर्ते कि कानून अुसे मजूर कर ले।

हरिजन, २३–२–’४७, पृ० ३७, ३९

७८

संरक्षकताके बारेमें कुछ प्रश्न

प्र० — क्या जो चीज केवल हिंसासे ही प्राप्त की जा सकती है, अुसकी रक्षा अहिंसा द्वारा की जा सकती है?

अु० — जो वस्तु हिंसासे हासिल की जाती है अुसकी अहिंसासे रक्षा नही की जा सकती। अितना ही नही, अहिंसाकी शर्त यह है कि अुस पापकी कमाअीको छोड दिया जाय।

प्र० — क्या खुली या छिपी हुअी हिंसाके सिवा और किसी तरह पूजी अेकत्र करना सभव है?

अु० — खानगी व्यक्तियो द्वारा अिस प्रकारका धन-सचय हिंसक अुपायोके सिवा और किसी तरह असभव है, परतु अहिंसक समाजमे राज्य द्वारा अैसा सचय सभव ही नही है, वाछनीय और अनिवार्य भी है।

प्र० — मनुष्य भौतिक सपत्ति अिकट्ठी करे या नैतिक, परतु वह करता है समाजके दूसरे सदस्योकी सहायता या सहयोगसे ही। तो क्या अुसका कुछ भी भाग मुख्यत व्यक्तिगत लाभके लिअे काममे लेनेका अुसे कोअी नैतिक हक है?

अु० — नही, कोअी नैतिक हक नही है।

प्र० — किसी सरक्षक (ट्रस्टी) का अुत्तराधिकारी कैसे तय किया जायगा? क्या अुसे किसीके नामका सिर्फ प्रस्ताव करनेका ही अधिकार होगा और अन्तिम निर्णय राज्यके हाथमे रहेगा?

अु० — चुनावका अधिकार प्रथम सरक्षक बननेवाले मूल मालिकको होना चाहिये, परतु अिस चुनावको अन्तिम रूप राज्य दे। अैसी व्यवस्थामे राज्य और व्यक्ति दोनो पर अकुश रहता है।

प्र० — सरक्षकताके सिद्धान्त पर अमल होनेमे जब अिस प्रकार व्यक्तिगत सपत्तिकी जगह सार्वजनिक सपत्ति आ जायगी, तब क्या स्वामित्व राज्यका होगा जो हिंसाका साधन है, या राज्यके कानूनोसे अधिकार पानेवाली परन्तु राजी-खुशी और सहकारके आधार पर बनी हुअी पचायतो और म्युनिसिपालिटियो आदि सस्थाओका होगा?

अु० — अिस प्रश्नमे विचारकी कुछ गडबड है। बदली हुअी सामाजिक स्थितिमे कानूनी स्वामित्व सरक्षकका रहेगा, राज्यका नही। राज्य मिल्कियतको

जब्त न करे और समाजकी सेवाके लिये पूजी या मिल्कियतके साथ मालिककी योग्यता भी समाजके काममे आवे, अिसलिअे सरक्षकताका सिद्धान्त अमलमें लाया जाता है। यह भी जरूरी नही कि राज्यका आधार सदा हिंसा पर ही हो। सिद्धान्तके रूपमे अैसा हो सकता है, परतु अिस सिद्धान्तको कार्यान्वित करनेके लिअे काफी हद तक अहिंसाके आधार पर चलनेवाले राज्यकी जरूरत होगी।

हरिजन, १६-२-'४७; पृ० २५

७९

मै क्यो संरक्षकताके सिद्धान्तको तरजीह देता हूं?

[९ और १० नवम्बर, १९३४ को श्री निर्मलकुमार बोसने गाधीजीके साथ अिस विषयकी चर्चा की थी, जिसका गाधीजी द्वारा सशोधित विवरण 'दि मॉडर्न रिव्यू' के अक्तूबर, १९३५ के अकमे प्रकाशित हुआ था। अुस विवरणमे से कुछ प्रश्नोत्तर नीचे दिये जाते है।]

प्र० — क्या प्रेम या अहिंसा परिग्रह या शोषणसे किसी भी रूपमे सगत है? यदि परिग्रह और अहिंसा साथ-साथ नही रह सकते है, तो क्या आप जमीन और कारखानोकी वैयक्तिक मालिकीका अनिवार्य बुराअीके रूपमे अुस समय तक समर्थन करेगे, जब तक लोग अितने अधिक परिपक्व या शिक्षित नही हो जाते कि अिसके बिना अपना काम चला सके? अगर अैसा खयाल हो तो फिर क्या यह अधिक अच्छा नही होगा कि सारी जमीन राज्यके अधिकारमे हो और राज्य जनताके नियत्रणमे रहे?

अु० — प्रेम और वर्जनशील परिग्रह अेकसाथ कभी नही रह सकते। सिद्धान्तके तौर पर, जब प्रेम परिपूर्ण होता है तब अपरिग्रह भी परिपूर्ण होना चाहिये। यह शरीर हमारा अन्तिम परिग्रह है। अिसलिअे कोअी मनुष्य केवल तभी सपूर्ण प्रेमको व्यवहारमे ला सकता है और पूर्णतया अपरिग्रही हो सकता है, जब कि वह मानव-जातिकी सेवाके खातिर मृत्युका आलिंगन करने तथा देहका त्याग करनेके लिअे भी तैयार रहता है। लेकिन यह सिद्धान्तमे ही सत्य हे। यथार्थ जीवनमे हम मुश्किलसे ही सम्पूर्ण प्रेमका व्यवहार कर सकते है, क्योकि यह शरीर परिग्रहके रूपमे हमेशा हमारे साथ रहनेवाला है। मनुष्य सदैव अपूर्ण रहेगा और फिर भी वह सदैव पूर्ण बननेकी कोशिश करेगा। अतअेव जब तक हम जीवित रहेगे तब तक

पूर्ण प्रेम या पूर्ण अपरिग्रह अलभ्य आदर्शके रूपमे ही रहेंगे। परन्तु अुन आदर्शकी ओर बढनेकी हमें निरतर कोशिश करते रहना चाहिये।

जिनके पास अभी सपत्ति है, अुनसे कहा जाता है कि वे अपनी सपत्तिके ट्रस्टी बन जाय और गरीबोंके खातिर अुसकी रक्षा और सार-सभाल करे। आप कह सकते हैं कि ट्रस्टीशिप या सरक्षकता तो कानूनकी अेक कल्पनामात्र है, व्यवहारमें अुसका कही कोअी अस्तित्व नही दिखाअी पडता। लेकिन यदि लोग अुस पर सतत विचार करे और अुसे आचरणमें अुतारनेकी कोशिश भी करते रहे, तो मानव-जातिके जीवनकी नियामक शक्तिके रूपमें प्रेमकी आज जितनी सत्ता दिखाअी देती है अुससे कही अधिक दिखाअी देगी। बेशक, पूर्ण सरक्षकता तो युक्लिडकी बिन्दुकी व्याख्याकी तरह अेक कल्पना ही है और अुतनी ही अप्राप्य भी है। लेकिन यदि हम अुसके लिअे कोशिश करे तो दुनियामे समानताकी सिद्धिकी दिशामे हम दूसरे किसी अुपायसे जितने आगे जा सकेंगे अुसके बजाय अिस अुपायसे ज्यादा आगे बढ सकेंगे।

प्र० — अगर आप कहते हैं कि वैयक्तिक परिग्रहका अहिंसाके साथ कोअी मेल नही बैठ सकता, तो फिर आप अुसे क्यो बरदाश्त करते हैं?

अु० — यह छूट हमे अुन लोगोंके लिअे रखनी होती है, जो धन तो कमाते हैं लेकिन अपनी कमाअीका अुपयोग स्वेच्छासे मानव-जातिकी भलाअीमें नही करना चाहते।

प्र० — तब वैयक्तिक सपत्तिके स्थान पर राज्यके स्वामित्वकी स्थापना करके हिंसाको कमसे कम क्यो न किया जाय?

अु० — यह वैयक्तिक मालिकीसे अधिक अच्छा है। लेकिन हिंसाकी मददमे अैसा किया जाय तो यह भी आपत्तिजनक है। मेरा दृढ विश्वास है कि यदि राज्यने पूजीवादको हिंसाके द्वारा दबानेकी कोशिश की, तो वह खुद ही हिंसाके जालमें फस जायेगा और कभी भी अहिंसाका विकास नही कर सकेगा। राज्य हिंसाका अेक केन्द्रित और सगठित रूप ही है। व्यक्तिमे आत्मा होती है, परन्तु चूकि राज्य अेक जड यत्रमात्र है, अिसलिअे अुसे हिंसासे कभी अलग नही किया जा सकता। क्योंकि हिंसा पर ही अुसका अस्तित्व निर्भर करता है। अिसलिअे मैं सरक्षकताके सिद्धान्तको तरजीह देता हू।

प्र० — हम अेक विशिष्ट अुदाहरण पर आयें। कल्पना कीजिये कि अेक कलाकार कुछ चित्र अपने पुत्रके पास छोड जाता है, वह पुत्र राष्ट्रके लिअे अुनका कोअी मूल्य नही समझता है, अिसलिअे वह अुन्हे बेच देता या बरबाद कर देता है। अिससे राष्ट्र अेक व्यक्तिकी मूर्खताके कारण कुछ बहुमूल्य चित्रोंसे वचित रहता है। अगर आपको यह विश्वास करा दिया

जाय कि वह पुत्र अुस अर्थमे सरक्षक कभी नही वन सकेगा जिस अर्थमें आप अुसे वनाना पसद करते है और अैसी स्थितिमे राज्य कमसे कम हिंसाका प्रयोग करके वे चित्र अुससे छीन ले, तो क्या राज्यके अिस कदमको आप अुचित नही मानेंगे ?

अु० — हा, राज्य सचमुच अुन चित्रोको छीन लेगा और मै मानता हू कि राज्य यदि अिस काममे कमसे कम हिंसाका अुपयोग करे तो वह न्यायसगत होगा। लेकिन यह डर हमेशा वना रहता है कि कही राज्य अुन लोगोके खिलाफ, जो अुससे मतभेद रखते है, वहुत ज्यादा हिंसाका अुपयोग न करे। सम्वन्धित लोग यदि स्वेच्छासे सरक्षकोकी तरह व्यवहार करने लगे, तो मुझे सचमुच वडी खुशी होगी। लेकिन यदि वे अैसा न करे तो मै मानता हू कि हमे राज्यके द्वारा भरसक कम हिंसाका प्रयोग करके अुनकी सपत्ति ले लेनी पडेगी। अिसी कारणसे मैंने गोलमेज परिपदमे यह कहा था कि सभी निहित हितवालोकी सम्पत्तिकी जाच होनी चाहिये और जहा आवश्यक मालूम हो वहा अुनकी सम्पत्ति राज्यको — स्थितिके अनुसार मुआवजा देकर या मुआवजा दिये विना — अपने हाथमें कर लेनी चाहिये।

व्यक्तिगत तौर पर मै अिसे ज्यादा पसद करूगा कि राज्यके हाथमे सत्ता केन्द्रित होनेके वजाय सरक्षकताकी भावना समाजमे व्यापक वने। क्योकि मेरी रायमे राज्यकी हिंसाकी तुलनामे वैयक्तिक मालिकीकी हिंसा कम हानिकर है। लेकिन यदि राज्यकी मालिकी अनिवार्य ही हो, तो मैं राज्यकी कमसे कम मालिकीका समर्थन करूगा।

प्र० — तव क्या हम यह समझे कि आपमे और समाजवादियोमे मौलिक अन्तर यह है कि आपका विश्वास है कि मनुष्य अपने जीवनकी व्यवस्थामे आदतकी अपेक्षा आत्म-निर्देशन या सकल्प-शक्तिसे अधिक प्रेरित होते है, और अुनका विश्वास है कि मनुष्य सकल्प-शक्तिकी अपेक्षा आदतसे अधिक प्रेरित होते है ? क्या अिसी कारणसे आप आत्म-सुधारके लिअे प्रयत्न करते हैं, जव कि वे अैसी पद्धतिकी रचनाका प्रयत्न करते है जिसमें लोगोके लिअे दूसरोका शोषण करनेकी अपनी अिच्छाको कार्यान्वित करना असभव हो जायेगा ?

अु० — यह स्वीकार करते हुअे भी कि मनुष्य वास्तवमे आदतोके वल पर जीवित रहता है, मेरा विचार हे कि अुसका अपनी सकल्प-शक्तिको आचरणमे अुतारकर जीना अधिक अच्छा है। मै यह भी विश्वास रखता हू कि मनुष्यमे अपनी सकल्प-शक्तिको अिस हद तक विकसित करनेकी क्षमता है, जो शोषणको घटाकर कमसे कम कर दे। मैं राज्यकी सत्ताकी वृद्धिको वडेसे वडे भयकी दृष्टिसे देखता हू। क्योकि जाहिरा तौर पर तो

वह शोपणको कमसे कम करके समाजको लाभ पहुचाती है, परन्तु मनुष्यके व्यक्तित्वको — जो सब प्रकारकी अुन्नतिकी जड है — नष्ट करके वह मानव-जातिको बडीसे बडी हानि पहुचाती है। हम अैसे कितने ही अुदाहरण जानते है जिनमें लोगोने सरक्षकताको अपनाया है, लेकिन अैसा अेक भी अुदाहरण नही है जहा राज्यका अस्तित्व सचमुच गरीबोके लिअे हो।

प्र० — लेकिन सरक्षकताके अुदाहरणोके रूपमें आप जिन लोगोके नाम कभी कभी पेश करते है, अुनकी अिस विशेपताका कारण क्या आपका व्यक्तिगत प्रभाव ही नही है ? आपकी कोटिके शिक्षक कभी कभी ही आते है। अतअेव यह क्या अधिक अच्छा न होगा कि आप जैसे मनुष्योके प्रास-गिक आगमन पर निर्भर रहनेके बजाय मनुष्यमे अिन आवश्यक परिवर्तनोको सिद्ध करनेका काम किसी सगठनको सौंप दिया जाय ?

अु० — मेरी बात छोड दीजिये। आप तो यह याद रखिये कि मानव-जातिके सभी महान शिक्षकोका प्रभाव अुनके जीवनके बाद भी कायम रहा है। मुहम्मद, बुद्ध या ओसाके समान हरअेक पैगम्बरकी शिक्षाओमें कुछ स्थायी अग होता है और कुछ अैसा जो तत्कालीन जरूरतोकी दृष्टिसे दिया गया होता है और अिसलिअे जिसकी अुपयोगिता अुसी कालके लिअे होती है। हम अुनकी शिक्षाके स्थायी पहलूके साथ साथ अस्थायी पहलूको भी पालनेकी कोशिश करते है, अिसीलिअे धार्मिक आचारोमें अितनी विकृतिया पैदा हो जाती है। लेकिन यह तो आप देख सकते है कि अुनकी मृत्युके बाद भी अुनका प्रभाव निरतर बना रहा है।

अिसके सिवा, मुझे जो बात नापसद है वह है बल पर आधारित सग-ठन। राज्य अैसा ही सगठन है। स्वेच्छापूर्वक किया जानेवाला सगठन जरूर होना चाहिये।

८०

खाओीको पाटनेके लिअे पुल

[श्री महादेव देसाओीके 'साप्ताहिक पत्र' से मैसूर नगरपालिकाके मानपत्र पर गाधीजी द्वारा दिये गये अुत्तरका अेक अश।]

मै राजाके महलसे और लखपतिकी शानदार हवेलीसे ओीर्पा नही करता हू। लेकिन मेरा अुनसे सानुरोध निवेदन है कि अुन्हे अुस खाओीको पाटनेके लिअे कुछ करना चाहिये जो अुन्हे किसानोसे अलग करती है। वे अैसे पुलका निर्माण करे जो अुन्हे गरीव किसानोके नजदीक लाये। वे अपना जीवन अैसा वनाये कि अुनके जीवनमे और अुनके आसपासके गरीवोकी जिन्दगीमे कही कुछ मेल तो हो। मै अपनी वुद्धिके अनुसार अिस पुलको वनानेकी कोशिश कर रहा हू और मै अत्यन्त नम्रतापूर्वक कहना चाहता हू कि आप यह पुल आपकी सोनेकी खदानो और भद्रावती जैसे कारखानोसे नही वना सकते है।

यग अिडिया, ४-८-'२७, पृ० २४२-४३

८१

कानूनी ट्रस्टीशिप

[श्री प्यारेलालके 'गाधीजीका साम्यवाद' नामक लेखसे।]

आजके धनवानोको वर्ग-सघर्ष और स्वेच्छासे धनके ट्रस्टी वन जानेके दो रास्तोमे से अेक रास्ता चुन लेना होगा। अुन्हे अपनी जायदादकी रक्षाका हक होगा। अुन्हे यह भी हक होगा कि अपने स्वार्थके लिअे नही वल्कि देशके भलेके लिअे और अिसलिअे दूसरोका शोषण किये विना वे धनको वढानेमें अपनी वुद्धिका अुपयोग करे। अुनकी सेवा और अुसके द्वारा होनेवाले समाजके कल्याणको ध्यानमे रखकर राज्य अुन्हे निश्चित कमीशन भी देगा। अुनके वच्चे योग्य हुअे तो ही वे अुस जायदादके सरक्षक वन सकेंगे।

खयाल कीजिये कि कल हिन्दुस्तान आजाद हो जाता है, तो अुस हालतमें सारे पूजीपतियोको अपने धनके कानूनी ट्रस्टी होनेका मौका दिया जायगा। मगर अैसा कोओी कानून अुन पर अूपरसे लादा नही जायगा। वह नीचेसे आयेगा। जव लोग ट्रस्टीशिपके मानी समझ लेगे और अिसके लिअे देशमें

वातावरण पैदा हो जायगा, तो लोग खुद ग्राम-पचायतोंसे शुरू करके अैसा कानून बनायेंगे और अुस पर अमल करेंगे। अिस तरहकी बात जब नीचेसे पैदा होगी, तो सब अुसे खुशी-खुशी मजूर कर लेंगे। अूपरसे लादने पर वह जड चीजके समान बोझिल मालूम होगी।

हरिजनसेवक, ३१-३-'४६, पृ० ६३

८२

संरक्षकताका व्यावहारिक फार्मूला

[श्री प्यारेलालके 'गाधीजीका सरक्षकताका सिद्धान्त' नामक लेखसे।]

जेलसे छूटने पर हम लोगोने अिस प्रश्नको आगाखा महलकी नजरबन्द छावनीमें जहा छोडा था वहासे फिर हाथमे लिया। किशोरलालभाअी और नरहरिभाअी भी सरक्षकताका अेक सीधा-सादा और व्यावहारिक फार्मूला तैयार करनेमें शरीक हो गये। वह बापूके सामने रखा गया। अुन्होने अुसमें थोडेसे फेरबदल किये। अन्तिम मसौदा अिस प्रकार है

१- सरक्षकता (ट्रस्टीशिप) अैसा साधन प्रदान करती है, जिससे समाजकी मौजूदा पूजीवादी व्यवस्था समतावादी व्यवस्थामे बदल जाती है। अिसमें पूजीवादकी तो गुजाअिश नही है, मगर यह वर्तमान पूजीपति-वर्गको अपना सुधार करनेका मौका देती है। अिसका आधार यह श्रद्धा है कि मानव-स्वभाव अैसा नही है, जिसका कभी अुद्धार न हो सके।

२ वह सपत्तिके व्यक्तिगत स्वामित्वका कोअी हक मजूर नही करती, हा, अुसमे समाज स्वय अपनी भलाअीके लिअे किसी हद तक अिसकी अिजाजत दे सकता है।

३- अिसमें धनके स्वामित्व और अुपयोगके कानूनी नियमनकी मनाही नही है।

४- अिस प्रकार राज्य द्वारा नियत्रित सरक्षकतामे कोअी व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धिके लिअे या समाजके हितके विरुद्ध सपत्ति पर अधिकार रखने या अुसका अुपयोग करनेके लिअे स्वतन्त्र नहीं होगा।

५ जैसे अुचित न्यूनतम जीवन-वेतन स्थिर करनेकी बात कही गअी है, ठीक अुसी तरह यह भी तय कर दिया जाना चाहिये कि समाजमे किसी भी व्यक्तिकी ज्यादासे ज्यादा कितनी आमदनी हो।

न्यूनतम और अविकतम आमदनियोंके वीचका फर्क अुचित, न्यायपूर्ण और समय समय पर अिस प्रकार वदलता रहनेवाला होना चाहिये कि अुसका झुकाव अुस फर्कको मिटानेकी तरफ हो।

६ गाधीवादी अर्थ-व्यवस्थामे अुत्पादनका स्वरूप समाजकी जरूरतसे निश्चित होगा, न कि व्यक्तिकी सनक या लालचसे।

हरिजन, २५–१०–’५२, पृ० ३०१

८३

अहिसक समाजमे संरक्षकका स्थान

प्र०—आपके लेखोंसे यह खयाल होता है कि आपका ‘सरक्षक’ अेक वहुत सद्भावनाशील परोपकारी और दानदातासे अधिक कुछ नही है—वैसा ही जैसे कि प्रथम पारसी वैरोनेट ताता, वाडिया, विडला और श्री वजाज आदि है। क्या यह ठीक है? क्या आप कृपा करके समझायेंगे कि किसी धनवानकी सपत्तिसे लाभ अुठानेका सवसे पहला हक आप किसका समझते है? आय और पूजीके हिस्से या रकमकी वह मर्यादा आप वता सकते है जहा तक वह अपने पर, अपने रिश्तेदारो पर और सार्वजनिक कामो पर खर्च कर सकता है? जो अिस सीमाका अुल्लघन करे अुसे अैसा करनेसे रोका जा सकता है? यदि वह सरक्षकके नाते अपनी जिम्मेदारी पूरी करनेके लिअे अयोग्य हो या अन्यथा असफल सिद्ध हो, तो क्या वह अुस सपत्तिके लाभके अधिकारी व्यक्ति द्वारा या राज्य द्वारा हटाया जा सकता है और हिसाव देनेको मजवूर किया जा सकता है? क्या राजाओ और जमीदारो पर भी यही सिद्धान्त लागू होते है या अुनकी सरक्षकता भिन्न प्रकारकी है?

अु०—यदि सरक्षकताका विचार जोर पकड जायगा, तो परोपकारको जिस रूपमें हम जानते है वैसा वह नही रहेगा। जिन जिनके नाम आपने गिनाये है अुनमे से जमनालालजी ही अिसके निकट पहुचे थे, परतु सिर्फ निकट ही। सरक्षकका जनताके सिवा कोअी अुत्तराधिकारी नही होता। अहिसा पर आधारित राज्यमे सरक्षकोका कमीशन नियत्रित होगा। राजाओ और जमीदारोका दर्जा दूसरे धनवानोका-सा ही होगा।

हरिजन, १२–४–’४२, पृ० ११६

८४

अपने धनका संरक्षक

[श्री महादेवभाओी देसाओीके 'अेक रसिक सवाद – २ अेक वहनके प्रश्न' नामक लेखसे ।]

प्र० — अहिंसाके सिद्धान्तको माननेवाला क्या धन-दौलत रख सकता है? अगर हा, तो अहिंसा द्वारा वह अुसकी रक्षा कैसे करेगा?

अु० — अहिंसावादी अपनी दौलतका मालिक नही हो सकता। भले अुसके पास लाखो रुपये हो, मगर वह अपनेको अुस धनका सरक्षक ही समझेगा। अगर चोर या डाकुओमे जाकर अुसे रहना है, तो कमसे कम सामान अुसे अपने पास रखना होगा। शायद अेक लगोटसे ही अुसे सतोष मानना पड़े। अगर वह अैसा करेगा तो वह चोर-डाकूका हृदय जरूर पलट सकेगा।

मगर अितने पर हम कोओी व्यापक सिद्धान्त नही वना सकते। अहिंसक राज्यमे तो वहुत कम चोर-डाकू होगे अैसा मान लेना चाहिये। व्यक्तिके लिअे यही सहज नियम समझा जाये कि अुसे पूरा अपरिग्रही वनकर रहना है। फर्ज कीजिये कि मैंने 'जरायम पेशा' कहलाती कौमके वीचमें जाकर रहनेका निश्चय किया है, तो मुझे चाहिये कि मै अपने पास कुछ भी न रखू। खानेका भी अुनसे माग लू और अगर वे कुछ न दें तो भूखा रहू। जव वे देखेंगे कि मैं अुन लोगोके वीचमें शुद्ध सेवाभावसे ही रहता हू, तो वे मेरे मित्र वन जायेंगे। अिस मनोवृत्तिमें ही सच्ची अहिंसा है।

हरिजनसेवक, १४–९–'४०, पृ० २६१

८५

अस्तेय और अपरिग्रह

अिन व्रतो पर ज्यादा लिखनेकी जरूरत नही। पाच वडे व्रतोमे से ये है। जो आत्म-दर्शन करना चाहते है, अुनके लिअे ये व्रत जरूरी है। अिसलिअे अिन्हे आश्रमके व्रतोमें स्थान दिया गया है।

अस्तेय

अिस व्रतके पालनके लिअे सिर्फ अितना ही काफी नही है कि दूसरेकी चीज अुसकी अिजाजतके विना न ली जाय। जो चीज हमें जिस कामके लिअे मिली हो अुससे ज्यादा समय तक अुसे काममे लेना यह भी चोरी ही है। अिस व्रतकी वुनियादमे यह सूक्ष्म सत्य है कि परमात्मा प्राणियोके लिअे हमेशाकी जरूरतकी चीजे ही हमेशा पैदा करता है और अुन्हे देता है। अुससे ज्यादा वह पैदा ही नही करता। अिसका अर्थ यह हुआ कि अपनी कमसे कम जरूरतसे ज्यादा मनुष्य जितना लेता है वह चोरीका लेता है।

अपरिग्रह या गरीबी

अपरिग्रह अस्तेयके भीतर ही समाया हुआ है। अनावश्यक चीजें जैसे ली नही जानी चाहिये, वैसे ही अुनका सग्रह भी नही होना चाहिये। यानी जिस खुराक या साज-सामानकी हमे जरूरत न हो, अुसका सग्रह करना अिस व्रतका भग करना है। जिसका कुर्सीके विना काम चल सकता है अुसे कुर्सी रखनी ही न चाहिये। अपरिग्रही मनुष्य अपना जीवन हमेशा सादेसे सादा वनाता जाय।

अपरिग्रह और अस्तेय मनकी स्थितिया ही है। शरीरके लिअे अुनका पूरा अमल असभव है। शरीर खुद ही अेक परिग्रह है। और जव तक वह है तव तक दूसरे परिग्रहोकी आशा रखता ही है। कुछ परिग्रह अनिवार्य है। 'कुछ' की तादाद भी हर मानसिक स्थितिके अनुसार होगी। जैसे जैसे वह अिन व्रतोकी तरफ मुडती जायगी, वैसे वैसे मनुष्य शरीरका मोह छोडता जायगा और अपनी जरूरते घटाता जायगा। सवके लिअे अेक ही माप निश्चित नही किया जा सकता। चीटीका परिग्रह दूसरा ही होगा। कणसे ज्यादा जमा करनेवाली चीटी परिग्रही है। हजारो कण समा जाय अितनी घास जिस हाथीके सामने पडी हो, अुसे परिग्रही नही माना जा मकता।

अैसी परेशानियोसे सन्यासकी प्रचलित कल्पना पैदा हुअी मालूम होती है। अैसे सन्यासका पालन करना आश्रमका ध्येय नही। किसीके लिअे अैसा

सन्यास जरूरी भले ही हो। भले किसीमें दिगम्बर बनकर, समाधि लगाकर, गुफामें बैठकर विचारमात्रसे जगतका कल्याण करनेकी शक्ति हो। पर सभी गुफामें बैठ जाय तो नतीजा खराब ही होगा। साधारण स्त्री-पुरुषोंके लिअे मानसिक सन्यास ही सभव है। दुनियामें रहते हुअे भी सेवाभावसे और सेवाके लिअे ही जो जीता है वह सन्यासी है।

अैसा सन्यास सिद्ध करनेकी आश्रमको आशा है। वह अुसी दिशामें जा रहा है। अिस मानसिक सन्यासमें जरूरी चीजोंका सग्रह रहता है, फिर भी परिग्रहमात्रके (शरीर तकके) त्यागकी तैयारी होनी चाहिये। यानी अेक भी वस्तुके जानेमें चोट न लगनी चाहिये। और जब तक शरीर है तब तक सेवाका जो काम आये वह किया जाय। खाने-पहननेको मिले तो ठीक, न मिले तो भी ठीक। अैसी परीक्षाका समय आये तब कोअी आश्रमवासी हारे नही।

सत्याग्रह आश्रमका अितिहास, पृ० ३८–४०, १९५९

८६

अस्तेय-व्रत

[ता० १६–२–'१६ को मद्रासमें वाय० अेम० सी० अे० के सभागृहमें दिये गये भाषणसे।]

मै कहना चाहता हू कि अेक दृष्टिसे हम सब चोर है। जिस चीजका मेरे लिअे तुरत अुपयोग न हो अैसी चीज अगर मै लेता हू और अुसे अपने पास रख छोडता हू, तो मै अुस चीजकी चोरी करता हू। मै यह कहना चाहता हू कि बिना किसी अपवादके सृष्टिका यह नियम है कि वह हमारी जरूरतकी चीजे रोज पैदा करती है। और अगर हर आदमी अपनी जरूरत जितना ही ले, अुससे अधिक न ले, तो अिस दुनियामे गरीबी न रहे और न कोअी मनुष्य भुखमरीका ही शिकार हो। हमारे बीच यह असमानता मौजूद है अिसका अर्थ ही है कि हम सब चोरी करते है। मै समाजवादी नही हू। और जिनके पास सपत्ति है अुनसे मै अुसे छीनना भी नही चाहता। लेकिन मै अितना जरूर कहना चाहता हू कि हममे से जो व्यक्ति अन्धकारमे से प्रकाशमे जाना चाहते है अुन्हे जरूर यह अस्तेय-व्रत पालना चाहिये। मै किसीसे अुसकी सपत्तिका अपहरण नही करना चाहता। अगर मै असा करता हू तो अहिंसा-धर्मसे विमुख होता हू। भले मेरी अपेक्षा किसी दूसरेके

पास अधिक सम्पत्ति हो। लेकिन मुझे कहना चाहिये कि कमसे कम अपना जीवन व्यवस्थित करनेके लिअे तो मुझे जिस चीजकी जरूरत नही है वह मै अपने पास नही रख सकता। हिन्दुस्तानमे अैसे तीस लाख मनुष्य है जिन्हे अेक जून खाकर ही सतोप मानना पडता है। और वह भी केवल सूखी रोटी और चुटकीभर नमकसे ही। जब तक अिन तीस लाख मनुष्योको पूरे वस्त्र और भोजन नही मिल जाता, तब तक आपको और मुझे हमारे पास जो कुछ है अुसे रखनेका अधिकार नही। मुझे और आपको, जिन्हे अधिक ज्ञान है, अपनी जरूरते नियमित करनी चाहिये और स्वेच्छापूर्वक भूखे भी रहना चाहिये, ताकि अिन लोगोकी सेवा-शुश्रूषा, भोजन और वस्त्रकी व्यवस्था हो सके। अिसमे से अपने-आप ही अपरिग्रह-व्रतका अुद्भव होता है।

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, चतुर्थ सस्करण, पृ० ३७७, ३८४

८७

अैच्छिक गरीबी

[ता० २३–९–'३१ को लन्दनके गिल्ड-हाअुसमे दिये गये भाषणसे।]

जब मैने अपने-आपको राजनीतिक जीवनकी भवरोमे खिचा हुआ पाया, तब मैने अपने-आपसे पूछा कि मुझे अनैतिकतासे, असत्यसे और जिसे राजनीतिक लाभ कहा जाता है अुससे अछूता रहनेके लिअे क्या करना जरूरी है।

मै आपको अपने अुस प्रयत्नकी तफसीलमे नही ले जाना चाहता, यद्यपि अुसके सम्बन्धमे मैने जो कुछ किया वह दिलचस्प है और मेरे लिअे पवित्र भी है — मै आपसे सिर्फ यह कह सकता हू कि आरम्भमे मुझे काफी कठिन सघर्पसे गुजरना पडा और अपनी पत्नीके साथ तथा, जैसा कि मै खूब स्पष्टतापूर्वक याद कर सकता हू, अपने बच्चोके साथ भी बहुत झगडना पडा। लेकिन जो हुआ अुसे जाने दीजिये, मतलबकी बात यह है कि मै अिस दृढ निश्चय पर पहुचा कि यदि मुझे अुन लोगोकी सेवा करना है, जिनके बीच मेरा जीवन आ पडा है और जिनकी कठिनाअियोको मै दिन-प्रतिदिन देखता हू, तो मुझे समूची सपत्ति तथा सारे परिग्रहका त्याग कर देना चाहिये।

मै आपसे यह नही कह सकता कि ज्यो ही मै अिस निश्चय पर पहुचा, त्यो ही मैने अेकदम प्रत्येक चीजका परित्याग कर दिया। मुझे आपके सामने

स्वीकार करना चाहिये कि पहले-पहल प्रगति धीमी रही। और अब जब मैं संघर्षके अुन दिनोंको याद करता हू, तो मैं देखता हू कि आरम्भमें यह दु:खद भी था। लेकिन ज्यो ज्यो दिन बीतते गये, मैंने महसूस किया कि कअी अन्य चीजोका भी, जिन्हे मैं तब तक अपनी मानता था, त्याग करना चाहिये और अेक समय आया जब अुन वस्तुओंका त्याग मेरे लिअे निश्चित रूपमे हर्षका विषय हो गया। और, तब अेकके बाद अेक ये सारी वस्तुअे बहुत तेजीसे मुझसे छूटती गअी। और आपको अपने ये अनुभव सुनाते हुअे, मैं कह सकता हू कि मेरे कन्धोंसे अेक भारी बोझ अुतर गया। मुझे महसूस हुआ कि अब मैं राहतके साथ चल सकता हू तथा अपने बन्धुओंकी सेवाके अपने कार्यको भी अधिक निश्चितता और अधिक प्रसन्नताके साथ कर सकता हू। फिर तो किसी भी चीजका परिग्रह मेरे लिअे कष्टदायक और भाररूप बन गया।

अुस हर्षके कारणकी खोज करते हुअे मैंने पाया कि यदि मैं किसी भी चीजको अपनी मानकर अपने पास रखता हू, तो मुझे अुसकी सारी दुनियासे रक्षा भी करना पडती है। मैंने यह भी देखा कि कअी लोग है जिनके पास यह चीज नही है, यद्यपि वे अुसे चाहते तो है, और यदि वे भूखे, अकाल-पीडित लोग मुझे अेकान्त स्थानमे पायें, तो वे केवल मेरे पासकी अुस चीजका बटवारा करके ही सन्तुष्ट नही होगे, बल्कि अुसे मुझसे छीन भी लेगे और अैसी हालतमे मुझे पुलिसकी सहायता भी प्राप्त करनी होगी। मैंने अपने-आपसे कहा यदि वे अिसे चाहते हैं और लेते हैं तो अैसा वे किसी अीर्षापूर्ण हेतुसे नही करते है, लेकिन वे अैसा अिसलिअे करते है कि अुनकी आवश्यकता मेरी आवश्यकतासे कही अधिक है।

और तब मैंने अपने-आपसे कहा परिग्रह अपराध है। मैं तब ही अमुक चीजोका सग्रह कर सकता हू, जब मुझे ज्ञात हो कि दूसरे भी जो अुन चीजोका सग्रह करना चाहते हैं अैसा कर सकते है। लेकिन हम जानते हैं — हममे से हरअेक यह अनुभवसे कह सकता हे कि अैसा होना असभव है। अतअेव अेक ही चीज अैसी है जो सबके द्वारा सग्रह की जा सकती हे, और वह हे अ-परिग्रह। दूसरे शब्दोमे स्वेच्छापूर्ण त्याग।

तब आप मुझे कह सकते हैं लेकिन जब आप स्वेच्छा-स्वीकृत गरीबी तथा अपरिग्रहके बारेमे बोल रहे हैं अुसी समय हम देखते हैं कि आप अपने शरीर पर बहुतसी चीजें धारण किये हुअे हैं। और, यदि आप जिस चीजके बारेमें मैं अभी कह रहा हू, अुसके अर्थको अूपरी तौर पर ही समझे हैं तो आपका यह कटाक्ष ठीक भी होगा। किन्तु आप अुसके अूपरी अर्थको नही आन्तरिक अर्थको समझिये। जब तक आपके पास शरीर है

तव तक आपको शरीरको कुछ-न-कुछ पहनाना भी पडेगा लेकिन। तव आप अपने शरीरके लिअे वह सव नही लेगे जो आपको मिल सकता है, लेकिन यथासभव कम लेगे, जितनेसे आपका काम चल जाय अुतना ही लेगे। आप अपने मकानकी आवश्यकताकी पूर्तिके लिअे अनेक हवेलिया नही चाहेगे, वल्कि मामूली झोपडीसे ही सतोप कर लेगे। आपके भोजन आदिके सम्वन्वमें भी यही नियम लागू होगा।

अव आप देख सकते है कि आप और हम जिस चीजको सम्यता समझते है और जिस आनन्दपूर्ण तथा अभीष्ट अवस्थाका मै आपके सामने चित्रण कर रहा हू, अुन दोनोके वीच सघर्प है—अैसा सघर्प जो रोज-रोज चल रहा हे। दूसरी ओर सम्यताका आवार आवश्यकताओकी वृद्धि समझा जाता है। यदि आपके पास अेक कमरा है, तो आप दो तीन कमरोकी अिच्छा करते है और जितने अधिक कमरे होते है अुतने ही खुश होते है और अिसी तरह आप आपके मकानमे जितना आ सकता हो अुतना ही ज्यादा साज-सामान रखनेकी अिच्छा रखते है। अिस तरह आप अपनी आवश्यकताये वढाते रहते है और आपकी अिस अिच्छाका कोअी अन्त नही होता। और जितना अधिक आप सग्रह करते है, माना जाता हे कि आप अुतनी ही अुत्तम सस्कृतिका प्रतिनिधित्व करते है। शायद मै अिसे अुतनी अच्छी तरहसे आपके सामने नही रख पा रहा हू जितना कि अुसे अिस सम्यताके हिमायती रखेगे। परन्तु जैसा मै अिसे समझता हू, अुसी ढगसे आपके सामने पेश कर रहा हू।

दूसरी तरफ आप पाते है कि जितना कम आप रखते है, जितना कम चाहते है अुतने ही आप अधिक अच्छे वनते है। अच्छे किसके लिअे? अिस जीवनके सुखभोगके लिअे नही, लेकिन अपने सहजीवियोकी अुस व्यक्तिगत सेवाके सुखका स्वाद लेनेके लिअे, जिसके लिअे कि आप अपनी देह, वुद्धि और आत्माका अर्पण करते है। यह शरीर भी आपका नही है। वह आपको अस्थायी परिग्रहके तौर पर दिया गया है। और जिसने दिया है वह अुसे आपसे ले भी सकता है।

अिसलिअे अपनेमे वह अडिग विश्वास रखकर मुझे हमेशा अैसी अिच्छा करना चाहिये कि अीश्वरकी अिच्छाके अनुसार अिस शरीरका भी समर्पण हो और जव तक वह मेरे पास है, अिसका अुपयोग विलासमें न हो, न अैश-आराममें हो, लेकिन सेवाके लिअे ही हो और हमेशा—अपनी जागृतिके हर क्षणमें—सेवाके लिअे ही हो। और यदि यह नियम देहके लिअे सही है, तो फिर वस्त्रादि वस्तुओके सम्वन्वमें तो कितना ज्यादा सही है?

और जिन्होंने अिस स्वेच्छा-स्वीकृत गरीबीके व्रतका सचमुच यथासंभव सम्पूर्णताकी सीमा तक पालन किया है (सम्पूर्णता तक पहुचना असंभव है, लेकिन मनुष्य जिस सीमा तक जा सकता है अुस सीमा तक), जो अिस आदर्श दशा तक पहुचे है, वे गवाही देते है कि जब आप अपने संग्रहकी हरअेक चीजका त्याग कर देते है, तब दुनियाकी सारी धन-सम्पत्ति आपकी हो जाती है। दूसरे शब्दोंमें, आपको वे सब वस्तुअें अनायास मिल जाती है जो आपके लिअे सचमुच जरूरी है। यदि आपको भोजनकी आवश्यकता है, तो आपको भोजन मिल जाता है।

आपमें से कअी स्त्री-पुरुष प्रार्थना करनेवाले है और मैंने बहुतसे अैसा-अियोसे सुना है कि अुनकी अन्न-वस्त्रकी आवश्यकताओंकी पूर्ति प्रार्थनाके फलस्वरूप होती है। मेरा अुनकी अिस बातमे विश्वास है। लेकिन मैं चाहता हू कि आप मेरे साथ अेक कदम और आगे आयें और मेरे साथ विश्वास करे कि जो पृथ्वीकी हरअेक चीजको स्वेच्छापूर्वक त्याग देते है — यहा तक कि अपने शरीरको भी अर्थात् जो हरअेक चीजको छोडनेके लिअे तैयार है (और अुन्हे अपनी अिस तैयारीकी जाच बारीकीसे और सख्तीसे करनी चाहिये व अपने विरुद्ध हमेशा प्रतिकूल निर्णय देना चाहिये) — जो अिस व्रतका पूरा-पूरा पालन करेंगे, वे सचमुच कभी भी किसी अभावका अनुभव नही करेंगे। . . .

अभावका शाब्दिक अर्थ नही लिया जाना चाहिये। पृथ्वीतल पर मैंने अीश्वर जैसा कठोर मालिक नही देखा। वह आपकी पूरी पूरी परीक्षा लेता है। और जब आपको अैसा लगता है कि आपकी श्रद्धा या आपका शरीर आपका साथ नही दे रहा है और आपकी नैया डूब रही है, तब वह आपकी मददको किसी न किसी तरह पहुच जाता है और आपको विश्वास करा देता है कि आपको श्रद्धा नही छोडनी चाहिये, और यह कि वह आपका संकेत पाते ही आनेको तैयार है, परन्तु आपकी शर्त पर नही, अपनी ही शर्त पर। मैंने यही पाया है। मुझे अेक भी मौका अैसा याद नही आता जब अैन वक्त पर अुसने मेरा साथ छोड दिया हो। .

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, चतुर्थ संस्करण, पृ० १०६६

‘आशीर्वादरूप गरीबी’

मेरे अेक मित्र अच्छे पढे-लिखे है और पैसे-टकेसे भी काफी सुखी है। ससारी भोगोका भी अुन्होने खासा अनुभव किया है। अिधर कुछ वर्षोसे अुन्होने सभी प्रकारकी सवारियोका त्याग कर दिया है। वर्षामे, जाडेमे, धूपमे, तन्दुरुस्तीमे, बीमारीमे आग्रहपूर्वक अुन्होने सवारीके त्यागका प्रण निबाहा है। मुझे अुनके अिस प्रण-पालनमे कअी जगह अति जान पडी है। पर अुनके आचरणका निर्णय करनेवाला मै कौन होता हू? मुझे वे बराबर चिट्ठी-पत्री लिखते रहते है। अुनका अेक पत्र मुझे हरिजन-यात्रामें मिला था। अुसे मैंने ‘हरिजनबन्धु’के पाठकोके लिअे रख छोडा था। अुस पत्रमें से अुन सज्जनके कुछ अनुभव मै नीचे देता हू

“यो तो मैने अनेक व्रत ग्रहण किये, पर यह पैदल चलनेका व्रत तो मुझे बडा ही आनन्ददायक लगा। अिसमे मुझे अनेक अनुभव प्राप्त हुअे और होते जा रहे है। अीश्वर पर मेरी श्रद्धा बहुत बढ गअी है। अहमदाबादसे दो बरस पहले जब मै भ्रमणके लिअे निकला था, तबसे आज मेरी वह श्रद्धा शायद तिगुनी बढ गअी है।

“अिस पैदल यात्रामे मैने गरीबी भी देखी और अमीरी भी। अमीरीमे अधिकतर मैने मगरूरी ही पायी और अनेक जगह धन-वानोका अमर्यादित या अुच्छृखल जीवन दिखाअी दिया। अधिकारियोमे प्राय हुक्मतका मद देखा। और गरीबीमे स्वभावत अीश्वर-परायणता, सेवाभाव और सकट झेलनेकी शक्ति देखनेमे आअी। ‘गरीबी प्रभुको प्यारी है, अमीरी क्या बिचारी है?’ अिसका मुझे डग डग पर अनुभव मिला। अीश्वर मुझे हमेशा गरीबी या फकीरीकी ही हालतमे रखे, गरीबीमे ही मै सदा गुजरान करता रहू। किसी भी चीजको जेबमे रखनेका मुझे मोह न हो। कलके लिअे रोटीका अेक टुकडा रख छोडू अैसी परिग्रह-वृत्तिसे भी अीश्वर मुझे दूर रखें। मै तो अपने रामकी दी हुअी फकीरीमें ही हरदम मगन रहू।

“और क्या देखा, ससारी लोगोमें पापी मनुष्योके प्रति तिरस्कार। अरे, हममे से कौन अिस दोषसे मुक्त हो सकता है? पापके प्रति घृणाभाव रखो, पापीके प्रति नही, यह महासूत्र भी मेरी समझमे आ गया।”

अिन सज्जनने गुजरातसे लेकर ठेठ अुत्तर तक — देहरादूनसे भी आगे — पैदल यात्रा की है। सैकडो गावोसे ये गुजरे और गाववालोके सपर्कमे आये

हैं। अिसलिअे अुनका यात्रानुभव आदरणीय है। सभी देशों और सभी युगोंके पुरुषोंको पग-पर्यटन तथा अपरिग्रहके चमत्कारका अैसा ही अनुभव हुआ है। थोरोकी पदयात्राकी स्तुति-पुस्तक 'वाल्डेन' को कौन नहीं जानता? संसारके जिन महान सुधारकोंने समय समय पर धर्ममें संशोधन किये हैं, अुन्होंने शायद ही सवारीका अुपयोग किया हो। अुन्होंने तो हजारों कोस पैदल चलकर ही अपने धर्मचक्रका प्रवर्तन किया था। आज हवाअी जहाजमें बैठकर अेक जगहसे दूसरी जगह अुडनेवाले मनुष्योंसे जो नहीं हो सकता, अुस कामको हमारे पूर्वजोंने निश्चय ही किया था। 'अुतावला सो बावला, धीर सो गंभीर'—ठीक अैसी ही अेक कहावत* अंग्रेजीमें भी है। ये लोकोक्तियां जिस तरह पूर्वकालमें सच्ची थीं अुसी तरह आज भी हैं।

हरिजनसेवक, ५-१०-'३४, पृ० ३२४-२५

८९

धनिकोंका प्रश्न

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

पीअर सेरेसोल[1] और जो विल्किन्सन[2] को २३ जूनको यूरोप जाना था, अिसलिअे वर्धासे बम्बअी तक वे हमारे साथ ही आये। वर्धामें सेरेसोलने अेक अैसी पुस्तक पढी थी, जिसमें कम्युनिस्ट लेखकने अहिंसा-सिद्धान्तकी आलोचना की थी। सेरेसोलने कहा, "मुझे अिस आलोचनाकी परवाह नहीं। लेखककी कुछ दलीलोंके साथ तो मैं भी सहमत हूं। पर यह बात किसी तरह मेरी समझमें नहीं आ रही है कि ये साम्यवादी लोग बिलकुल ही असत्य और सत्यके विकृत रूपको पेश करके अपनी स्थितिके समर्थनका प्रयत्न आखिर किसलिअे कर रहे हैं। मुझे यह कहते हुअे दुःख होता है कि अिस पुस्तकमें निरा असत्य ही असत्य भरा हुआ है। गांधीके सिद्धान्तके फलस्वरूप पूंजीवादके साथ अेक बुरी तरहका समझौता करना पडता है—यह कहकर संतोष माननेके बजाय यह आदमी कहता क्या है कि गांधी गरीब लोगोंके साथ प्रेमभाव दिखानेका ढोंग रचता है और

---

* Not mad rush, but unperturbed calmness brings wisdom

१ आन्तर-राष्ट्रीय सेवासेनाके संस्थापक अध्यक्ष।

२ दीनबन्धु अेण्डूजके कहनेसे ये भाअी बिहार भूकंप-पीडित लोगोंकी सहायताके लिअे सेरेसोलके साथ आये थे।

धनिकोके प्रति अुसका जो सच्चा प्रेम है अुसे वह अिस ढोगके ढक्कनसे ढाके रहता है और अिस तरह पूजीवादको टिकाये हुअे है। पूजीवाद और पूजी-पतियोके साथ हमारा क्या सम्बन्ध है, अिस विषयकी शकाये तो मेरे मनमे भी भरी हुअी है। मगर यह असत्य तो मेरी समझमे आ ही नही सकता।" रेलमें सेरेसोलने अपनी अिस विषयकी कुछ शकाओको गाधीजीके आगे खूब सोच-विचार कर रखा।

"धनिकोके लिअे अुनके रहन-सहनका कोअी नियम क्या हम निश्चित कर सकते है? अर्थात् क्या यह निश्चित किया जा सकता है कि धनिकोका अधिकार कितने धन पर हो और कितने पर नही?"

गाधीजीने मुस्कराते हुअे कहा, "हा, यह निश्चित किया जा सकता है। धनी मनुष्य अपने खर्चके लिअे अपनी सम्पत्तिका पाच प्रतिशत या दस प्रतिशत अथवा पन्द्रह प्रतिशत भाग ले सकता है।"

"पर ८५ प्रतिशत तो नही?"

"मै तो २५ प्रतिशत तक जानेका विचार कर रहा था। पर ८५ प्रतिशत लेनेका विचार तो अेक लुटेरेको भी नही करना चाहिये!"

पीअर सेरेसोलकी असल कठिनाअी यह थी कि धनिकके गले यह वात अुतारनेके लिअे हमे कब तक राह देखनी चाहिये।

गाधीजीने कहा, "यही साम्यवादियोके साथ मेरा मतभेद हे। मेरी अतिम कसौटी अहिसा है। हमे यह हमेशा याद रखना चाहिये कि अेक दिन हम लोग भी धनिको जैसी ही स्थितिमे थे। हमे अपनी सपत्तिका त्याग करना आसान नही मालूम हुआ था। हमने जिस तरह स्वय अपने प्रति धीरज रखा, अुसी तरह हमे दूसरोके प्रति भी रखना चाहिये। अिसके अति-रिक्त, मुझे यह मान लेनेका कोअी हक नही कि मै सच्चा हू और वह धनी झूठा है। जब तक मै अुसके गले अपनी वात नही अुतार सकता, तब तक मुझे राह देखनी ही चाहिये। अिस बीचमे अगर वह कहे कि 'मै २५ प्रतिशत अपने लिअे रखकर बाकीका ७५ प्रतिशत परोपकारके कामोमे लगानेको तैयार हू', तो मै अुसकी बात मान लूगा। क्योकि मै जानता हू कि सगीनके भयमे दिये हुअे १०० प्रतिशत धनसे स्वेच्छापूर्वक दिया हुआ ७५ प्रतिशतका यह दान कही अच्छा है। अहिसाका अचल तो हम दोनोको ही पकडे रखना चाहिये।

"अिस पर शायद आप यह कहे कि जो मनुष्य आज बलात्कारसे अपना धन सुपुर्द कर देता है, वह कल अपनी अिच्छासे अिस स्थितिको कबूल कर लेगा। यह सभावना मुझे बहुत दूरकी मालूम होती है और अिस पर मै अधिक निर्भर नही करता। अितनी बात पक्की है कि यदि

मै आज हिंसाका अुपयोग करता हू, तो कल निश्चय ही मुझे अधिक भारी हिंसाका सामना करना पडेगा। अहिंसाको अगर हम जीवनका नियम बना लेते है, तो अिसमें सदेह नही कि जीवनमें हमे अनेक समझौते करने पडेगे। किन्तु अनन्त अखण्ड कलहकी अपेक्षा यह स्थिति अधिक अच्छी है।"

"धनी मनुष्यकी न्याय्य स्थितिका वर्णन अेक शब्दमें आप किस प्रकार करेगे?"

"वह ट्रस्टी है। मै अैसे कितने ही मित्रोको जानता हू जो गरीबोके लिअे पैसा कमाते है और खर्च करते है और खुदको अपनी सपत्तिका स्वामी नही किन्तु ट्रस्टी मानते है।"

"मेरे भी कुछ अमीर और गरीब मित्र है। मै खुद अपने पास कोअी सपत्ति नही रखता, पर मेरे धनी मित्र जो धन मुझे देते है अुसे मै स्वीकार कर लेता हू। अिस बातको मै किस तरह अुचित मान सकता हू?"

"आप खुद अपने लिअे कुछ भी स्वीकार न करे। सैर-सपाटेकी गरजसे स्विटजरलैड जानेके लिअे आप कोअी चेक स्वीकार न करे, पर हरिजनोके लिअे कुअें, स्कूल अथवा औषधालय बनवानेके लिअे आप लाख रुपये भी स्वीकार कर ले। स्वार्थकी भावना अुडा देनेसे यह प्रश्न सहज ही हल हो जाता है।"

"पर मेरा निजी खर्च कैसे चलेगा?"

"आपको अिस सिद्धान्तके अनुसार चलना होगा कि हरअेक मजदूरको अुसकी मजदूरी मिलनी चाहिये। आपको अपनी कमसे कम मजदूरी लेनेमे कोअी सकोच नही होना चाहिये। हम सब यही तो करते है। भणसालीकी मजदूरी केवल गेहूका आटा और नीमकी पत्तिया है। हम सब भणसाली तो नही हो सकते। लेकिन वे जैसी जिन्दगी बसर कर रहे है अुसके नजदीक पहुचनेका प्रयत्न तो हम कर ही सकते है। मै अपनी आजीविका प्राप्त करके सतोष मान लूगा, पर मै किसी धनी आदमीसे यह सिफारिश नही कर सकता कि वह मेरे लडकेको अपने यहा किसी अच्छी जगह पर रख ले। मुझे तो अितनी ही चिन्ता रखनेकी जरूरत है कि जब तक मै समाज-सेवा करता रहू, तब तक मेरा यह शरीर टिका रहे।"

"किन्तु जब तक मै किसी धनवानसे अपने निर्वाहका खर्च लेता हू, तब तक निरतर अुससे यह कहते रहना क्या मेरा कर्तव्य नही है कि तुम्हारी स्थिति किसीके लिअे ओीर्षाकी चीज नही है, और तुम्हारी आजीविका पर जितना खर्च होता है अुसके सिवा बाकीकी सम्पत्ति परसे तुम्हे अपना स्वामित्व हटा लेना चाहिये?"

"हा अवश्य अैसा कहना आपका कर्तव्य है।"

"पर ये धनी मनुष्य भी सब अेक समान थोडे ही होते है? अुनमें से कुछ तो शराबके व्यापारसे मालामाल बन जाते है।"

"हा, भेद आप अवश्य करे। आप खुद कलवारका पैसा न ले, पर आपने अगर किसी सेवाकार्यके लिअे धनकी अपील निकाली हो तो आप क्या करेगे? क्या आप लोगोंसे यह कहते फिरेगे कि जिन्होने न्यायके पथ पर चलकर पैसा कमाया हो वे ही अिस फण्डमे पैसा दे? अिस शर्त पर अेक पाअीकी भी आशा रखनेके बजाय मै अपीलको ही वापस ले लेना पसन्द करूगा। यह निर्णय करनेवाला कौन है कि अमुक मनुष्य धर्मवान है और अमुक अधर्मी। और धर्म भी तो अेक सापेक्ष वस्तु है। हम अपने ही दिलसे पूछे तो पता चलेगा कि हम आजीवन धर्म या न्यायका अनुसरण करके नही चले। गीतामे कहा है कि सबका अेक ही लेखा है, अिसलिअे दूसरोके गुण-दोष देखते फिरनेके बजाय दुनियामे अलिप्त बनकर रहो। अहभावका नाश ही सच्चा जीवन-रहस्य है।"

सेरेसोलने कहा, "ठीक, अिसे मै समझता हू।" और थोडी देर वे शात रहे। फिर आह भरकर अुन्होने कहा, "पर कभी कभी स्थिति अत्यन्त क्लेश-कर मालूम होती है। बिहारमे मै कुछ अैसे आदमियोसे मिला हू, जो दो आनेसे भी कम और कभी कभी तो अेक आनेसे भी कमकी मजदूरीके लिअे सवेरेसे शाम तक जी-तोड परिश्रम करते है। अुन लोगोने मुझे अकसर यह कहा है कि अमीर आदमी आज अन्यायका पैसा जोड जोडकर खूब मौज अुडा रहे है, क्या ही अच्छा हो कि अुनसे यह पैसा छीन लिया जाय। मै यह सुनकर अवाक् हो जाता था और आपकी याद दिलाकर अुनका मुह बन्द कर दिया करता था।"

सेरेसोलकी सभी शकाओका समाधान तो नही हुआ। तमाम दिन काम करनेके बाद गाधीजीको मारे थकानके नीद आ रही थी, नही तो सेरेसोलकी बातोका सिलसिला जारी ही रहता। पर अुन्होने अपनी मनोदशाको जिस वेदनाके साथ आगे रखा और अिस प्रश्नकी चर्चा करते हुअे अुनके चेहरे पर जो विषादकी रेखा दिखाअी देती थी, अुसे देखकर अैसा लगता था कि यह हो नही सकता कि अन्यायकी अैसी अैसी बातें सुनकर किसीके अतरको चोट न पहुचे। अुन्हे अितना तो प्रकट ही हो गया कि यह प्रश्न अतमे अहिसाका बन जाता है और तब यह सवाल हमारे सामने आ जाता है कि अहिसाके पालनमे हम कहा तक आगे बढनेको तैयार है।

हरिजनसेवक, ७-६-'३५, पृ० १२६-२७

९०

धनी संरक्षक है

अेक मित्र लिखते है

"आपको यह जानकर खुशी होगी कि वनियोकी सरक्षकता (ट्रस्टीशिप) के वारेमे आपके जो विचार है, अुनकी कल्पना १,३०० वर्ष पूर्व भी की गअी थी। पवित्र ग्रथ हदीसमे अिस आशयका पद्य हे —'लोगोके पास जो कुछ धन-दौलत है वह मेरी सम्पत्ति है, क्योकि गरीव मेरे वच्चे है और धनी अुनके पास जो धन-दौलत है अुसके सरक्षक। अिसलिअे जो धनी मेरे गरीव वच्चोकी ओरसे खर्च नही करेगे अुन्हे मै दोजख (नरक) मे भेज दूगा, जहा अुनकी कोअी सार-सम्हाल नही होगी।'"

यह पत्र गुजरातीमे है और अुसमें किसी अखवारसे लिया हुआ, जिसका नाम नही दिया गया है, वह सारा पद्य गुजराती लिपिमें अुसके गुजराती अनुवादके साथ दिया हुआ है। देवनागरी लिपिमे अुसका अविकल रूप अिस प्रकार है

"अल मालु माली वल फकराओ अयाली वल अग्नियाओ वक्लाअी फमन वखलाव माली अला अयाली अुदखलहुन्नार वला अुवाली।"

पाठकोको यह जानकर आश्चर्य होगा कि गुजराती पाठक पच्चीस प्रतिशत शब्दोको आसानीसे समझ लेते है यानी अुनकी भाषामें ये प्रचलित है।

हरिजनसेवक, ३०-९-'३९, पृ० २६३

९१

अैच्छिक गरीबी बनाम धनवानोकी संरक्षकता

प्र० — धर्ममय अुपायोसे लाखो रुपये कैसे कमाये जा सकते है? स्व० श्री जमनालालजी, जो अुत्तम व्यवसायी थे, कहा करते थे कि धन कमानेमे पाप तो होता ही है। धनिक कितना ही सज्जन क्यो न हो, वह अपने कमाये हुअे धनमे से अपनी सच्ची जरूरतसे कुछ अधिक तो खर्च कर ही डालता है। यह भी पाप है। अिसलिअे ट्रस्टी वननेकी वात छोडकर धनवान न वनने पर ही जोर क्यो न दिया जाय?

अु० — प्रश्न अच्छा है। अिससे पहले भी यह मुझसे पूछा जा चुका है। जमनालालजीने जो यह कहा कि धन कमानेमें पाप तो है ही, वह ठीक वैसा ही हे जैसा गीतामे कहा गया है कि आरम्भमात्र दोषपूर्ण है। मेरा यह विश्वास

है कि जान-वूझकर पाप न करते हुअे भी धन कमाया जा सकता है। अुदाहरणके लिअे, अगर मुझे अपनी अेक अेकड जमीनमे सोनेकी कोअी खान मिल जाय, तो मै धनवान वन जाअूगा। पर धनवान न वनने पर तो मेरा जोर है ही। मैने जो धन कमाना छोड दिया, अुसका मतलव ही यह है कि धनी लोग अपने धनका अुपयोग सेवाके लिअे करे। यह भी ठीक है कि धनवान भरसक कोशिश करने पर भी अकसर अपने गरीव साथियोके मुकावले कुछ ज्यादा ही खर्च कर डालेगा। लेकिन यह कोअी नियम नही है। आम तौर पर स्व० जमनालालजी मध्यम श्रेणीके अनेक लोगोकी और अपने साथियोकी तुलनामे कम ही खर्च करते थे। मैने अैसे सैकडो धनवानोको देखा है, जो अपने लिअे वडे कजूस होते है। वे जैसे तैसे अपना गुजारा करते है। यह भी नही कि अिसमे वे किसी तरहका गौरव अनुभव करते है, अपने अूपर कम खर्च करनेका अुनका अेक स्वभाव ही वन जाता है।

धनवानोके लडकोके वारेमे भी मुझे यही कहना है। मेरा आदर्श तो यह है कि धनवान लोग अपनी सन्तानके लिअे धनके रूपमे कुछ न छोडे। हा, अुनको अच्छी शिक्षा दे, रोजगार-धन्धेके लिअे तैयार करे और स्वावलम्वी वना दे। परन्तु दुख तो यह है कि वे अैसा नही करते। अुनके वालक पढते है, गरीवीकी महिमा भी गाते है, लेकिन अपने लिअे वे अधिकसे अधिक धन चाहते है। अैसी हालतमे मै अपनी व्यावहारिक वुद्धिका अुपयोग करके अुन्हे वही सलाह देता हू जो अुनके वसकी होती है। हम लोगोको, जो गरीवीको पसन्द करते है, अुसे अपना धर्म मानते है और अधिक समानताके हामी है, धनवानोसे द्वेष न करना चाहिये। यदि वे अपने धनका सदुपयोग करते है, तो अुससे हमे सतोष होना चाहिये। साथ ही हमें यह श्रद्धा रखनी चाहिये कि अगर हम अपनी गरीवीमे सुखी और आनन्दित रहेगे, तो धनवान लोग भी हमारी नकल करेगे। सच तो यह है कि गरीवीमे धर्मका दर्शन करनेवाले और मिलने पर भी धनका त्याग करनेवाले लोग दुनियामे अिनेगिने ही पाये जाते है। अिसलिअे हमे अपने जीवनके द्वारा यह सिद्ध कर दिखाना होगा कि असलमे धर्मके रूपमे स्वीकार की गअी गरीवी ही सच्ची सम्पत्ति है।

हरिजनसेवक, १–३–'४२, पृ० ६२

९२

गरीबोंके संरक्षक और सेवक बनें

[७ मार्च, १९३१ को दिल्लीमें भारतीय व्यापारी-संघके समक्ष दिये गये गांधीजीके भाषणसे ।]

आपके अध्यक्ष महोदयने कांग्रेसकी बहुत तारीफ की है और साथ ही अुन्होंने यह भी सुझाया है कि आर्थिक मामलोंमें कोअी भी निर्णय करनेसे पहले कांग्रेसको व्यापार-विशेषज्ञोंका अभिप्राय ले लेना चाहिये। मैं अिस सुझावका स्वागत करता हूं। कांग्रेस हमेशा आपकी सलाह और सहायता पानेको अुत्सुक रहेगी। लेकिन मुझे आपसे कहना चाहिये कि कांग्रेस किसी अेक खास वर्गकी संस्था नहीं है। वह तो सभी वर्गोंकी है। मगर चूंकि हिन्दुस्तानकी आबादी ज्यादासे ज्यादा किसानोंकी है अिसलिअे वह किसानोंकी प्रतिनिधि बनना चाहती है। कांग्रेसको दरअसल हिन्दुस्तानके गरीबोंका ही प्रतिनिधित्व करना चाहिये। लेकिन अिसका यह अर्थ नहीं कि और सब वर्गों — मध्यम-वर्ग, व्यापारी वर्ग या जमींदारों — का नाश करके गरीबोंका हित साधना है। अिसका अर्थ मात्र अितना ही है कि दूसरे सब वर्गोंको गरीबोंके हितके अनुकूल होकर रहना है। कांग्रेस हिन्दुस्तानमें व्यापार-अुद्योगकी अुन्नति चाहती है। अिसके लिअे वह सतत प्रयत्नशील है। धीरे धीरे व्यापारी वर्ग कांग्रेसकी ओर आकृष्ट होता चला आ रहा है। पिछले वर्ष व्यापारियोंने आन्दोलनमें जो मदद दी है वह स्तुत्य है। मुझे भी आपने निमंत्रण देकर जो आज यहां बुलाया है वह मेरे नामके कारण नहीं बल्कि अिसलिअे कि मैं कांग्रेसका नम्र सेवक हूं और दरिद्र-नारायणका प्रतिनिधि हूं। व्यापारी वर्गकी ओरसे की गअी सेवाओंको मैं भूल नहीं सकता। लेकिन मैं चाहता हूं कि आप अेक कदम और आगे बढ़ें। आप कांग्रेसको अपनाअिये, अुसे अपनी बना लीजिये, तो हम खुशी खुशी आपके हाथोंमें अुसकी लगाम सौंप देंगे। यह काम आपके हाथों ज्यादा अच्छी तरह होगा। लेकिन कांग्रेसकी लगाम आप अपने हाथमें अिसी शर्त पर ले सकेंगे कि आप अपनेको गरीबोंके संरक्षक और सेवक समझें या पंडित मालवीयजीके शब्दोंमें कहूं तो आपको 'शुद्ध कौड़ी' पाकर संतोष मानना चाहिये। आप कहेंगे कि यह असम्भव है। लेकिन अैसी बात नहीं। शुद्ध नीतिसे व्यापार करनेवाले अनेक मित्रोंको मैं जानता हूं। अब यह खुली बात है कि आप चाहें तो आसानीसे कांग्रेसकी बागडोर अपने हाथमें ले सकते हैं। आप जानते हैं कि कांग्रेसके विधानके जैसा कोअी लोकशाही विधान

नही है। वह पिछले दस वर्षसे विना किसी रुकावटके काम करता रहा है। वह वस्तुत बालिग मताधिकारके आधार पर ही रचा गया है।

यग अिंडिया, १६–४–'३१, पृ० ७८, ७९

९३

अपनी दौलतका त्याग करके तू अुसे भोग

[खेडा जिलेके अेक गावमे हुअी अेक सशस्त्र डकैतीके सिलसिलेमे गाधीजी द्वारा लिखित 'अेक दु खद घटना' शीर्षक लेखसे।]

"धनवानोको अपना धर्म सोच लेना है। अगर अपनी जायदादकी रक्षाके लिअे अुन्होने सिपाही वगैरा रखे, तो मुमकिन है कि लूट-मारके हगाममे ये रक्षक ही अुनके भक्षक वन जायेगे। अिसलिअे धनवानोको या तो हथियार चलाना सीख लेना चाहिये या अहिसाकी दीक्षा ले लेनी चाहिये। अिस दीक्षाको लेने और देनेका सबसे अुत्तम मत्र है 'तेन त्यक्तेन भुजीथा'— अपनी सपत्तिका त्याग करके तू अुसे भोग। अिसको जरा विस्तारसे समझाकर कहू तो यह कहूगा "तू करोडो खुशीसे कमा। लेकिन समझ ले कि तेरा धन सिर्फ तेरा नही, सारी दुनियाका है, अिसलिअे जितनी तेरी सच्ची जरूरते हो अुतनी पूरी करनेके बाद जो बचे अुसका अुपयोग तू समाजके लिअे कर।" शान्तिकी साधारण अवस्थामे तो अिस नसीहत पर अमल नही हुआ। लेकिन सकटके अिस समयमे भी अगर धनिकोने अिसे नही अपनाया, तो दुनियामे वे अपने धन और भोगके गुलाम बनकर ही रह सकेगे और अन्तमे शरीर-बलवालोकी गुलामीमे बध जायेगे।

"मै अुस दिनको आता देख रहा हू जब धनकी सत्ताका अन्त होनेवाला है और गरीबोका सिक्का चलनेवाला है, फिर चाहे वह शरीर-बलसे चले या आत्मबलसे। शरीर-बलसे प्राप्त की हुअी सत्ता मानव-देहकी तरह क्षणभगुर होगी, जब कि आत्मबलसे प्राप्त की हुअी सत्ता आत्माकी तरह अजर-अमर रहेगी।"

हरिजनसेवक, १–२–'४२, पृ० २०

[गाधीजीके अुपरोक्त नोटके सिलसिलेमे श्री शकरराव देवने जो प्रश्न पूछा था अुसका जवाब देते हुअे गाधीजी द्वारा 'हरिजनसेवक' के १ मार्च, १९४२ के अकमे पृ० ६३ पर लिखित 'अशुद्ध ही नही' शीर्षक लेख।]

श्री शकरराव देव लिखते है

"पिछले 'हरिजनसेवक' के 'अेक दु खद घटना' शीर्षक अपने लेखमे आप धनवानोंसे कहते है कि वे करोडो खुशीमे कमायें, लेकिन यह समझ ले कि अुनका वह धन सिर्फ अुन्हीका नही सारी दुनियाका है, अिसलिअे अपनी सच्ची जरूरतोको पूरा करनेके बाद जितना धन बचे अुसका अुपयोग अुन्हे समाजके लिअे करना चाहिये। जब मैंने अिसे पढा तो पहला सवाल मनमें यह अुठा कि अैसा क्यो होना चाहिये ? पहले करोडो कमाना और फिर समाजके हितके लिअे अुन्हे खर्च करना ? आजकी अिस समाज-रचनामे करोडो कमानेके साधन अशुद्ध ही हो सकते है, और जो आदमी अशुद्ध साधनोसे करोडो कमाता है, अुसमे 'तेन त्यक्तेन भुजीथा' मत्रके अनुसार चलनेकी आशा नही रखी जा सकती, क्योकि अशुद्ध साधनो द्वारा करोडो कमानेकी क्रियामें कमानेवालेका चरित्र दूषित या भ्रष्ट हुअे बिना रह ही नही सकता। अिसके सिवा, आप तो हमेशासे शुद्ध भावना पर जोर देते रहे है। मुझे डर है कि अिस मामलेमे कही लोग गलतीसे यह न समझ ले कि आप साधनोकी अपेक्षा साध्य पर ज्यादा जोर दे रहे है।

"अतअेव मेरा निवेदन है कि आप कमाअीके साधनोकी शुद्धता पर भी अधिक नही तो अुतना जोर अवश्य दीजिये, जितना कमाये हुअे धनको लोकहितके कामोमें खर्च करने पर देते है। मेरे विचारमे यदि साधनोकी शुद्धिका दृढतासे पालन किया जाय, तो कोअी आदमी करोडो कभी कमा ही नही सकेगा और अुस दशामे समाजके हितके लिअे अुसे खर्च करनेकी कठिनाअी बहुत गौण रूप ले लेगी।"

मै अिससे सहमत नही हू। मै निश्चित रूपसे यह मानता हू कि आदमी बिलकुल शुद्ध साधनोसे करोडो रुपये कमा सकता है। अिसमें यह मान लिया गया है कि अुसे कानूनन सम्पत्ति रखनेका अधिकार है। दलीलके तौर पर मैंने यह माना है कि निजी सपत्ति अपने आपमें अशुद्ध नही समझी गअी है। अगर मेरे पास किसी अेक खानका पट्टा है और मुझे अुसमे से अचानक कोअी अनमोल हीरा मिल जाता है, तो मै अेकाअेक करोडपति बन सकता हू और कोअी मुझ पर अशुद्ध साधनोका अुपयोग करनेका दोष नही लगा सकता। ठीक यही बात अुस समय हुअी थी, जब कोहिनूरसे कही अधिक मूल्यवान क्यूलीनन नामक हीरा मिला था। अैसे और कअी अुदाहरण आसानीसे गिनाये जा सकते है। नि सदेह करोडो कमानेकी बात मैंने अैसे ही लोगोके लिअे कही थी।

मै अिस रायके साथ निसकोच अपनी सम्मति जाहिर करता हू कि आम तौर पर धनवान — केवल धनवान ही क्यो, वल्कि ज्यादातर लोग — अिस वातका विशेष विचार नही करते कि वे पैसा किस तरहसे कमाते है। अहिसक अुपायका प्रयोग करते हुअे हमे यह विश्वास तो होना ही चाहिये कि कोअी आदमी कितना ही पतित क्यो न हो, यदि अुसका अिलाज कुशलतासे और सहानुभूतिके साथ किया जाय तो अुसे सुधारा जा सकता है। हमे मनुष्योमे रहनेवाले दैवी अशको जगानेका प्रयत्न करना चाहिये। और आशा रखनी चाहिये कि अुसका अनुकूल परिणाम निकलेगा। यदि समाजका हरअेक सदस्य अपनी शक्तियोका अुपयोग वैयक्तिक स्वार्थ-साधनके लिअे नही वल्कि सबके कल्याणके लिअे करे, तो क्या अिससे समाजकी सुख-समृद्धिमे वृद्धि नही होगी? हम अैसी जड समानताका निर्माण नही करना चाहते, जिसमे कोअी आदमी अपनी योग्यताओका पूरा पूरा अुपयोग कर ही न सके। अैसा समाज अन्तमे नष्ट हुअे विना नही रह सकता। अिसलिअे मेरी यह सलाह विलकुल ठीक है कि धनवान लोग चाहे करोडो रुपये कमाये (वेशक, केवल ओीमानदारीसे), लेकिन अुनका अुद्देश्य वह सारा पैसा सवके कल्याणमे समर्पित कर देनेका होना चाहिये। 'तेन त्यक्तेन भुजीथा' मत्रमे असाधारण ज्ञान भरा पडा है। मौजूदा जीवन-पद्धतिकी जगह, जिसमे हरअेक आदमी पडोसीकी परवाह किये विना केवल अपने ही लिअे जीता है, सवका कल्याण करनेवाली नयी जीवन-पद्धतिका विकास करना हो, तो अुसका सबसे निश्चित मार्ग यही है।

९४

'कलकी चिन्ता न करे'

['सार्वजनिक खर्च' शीर्षक लेखसे नीचेका भाग दिया गया है।]

जब हम अैसी निश्चिन्तता हासिल कर लेंगे कि 'खानेको मिल जाये तो ठीक, न मिले तो हरि-अिच्छा' तब हम अनेक झंझटोंसे मुक्ति पा जायेंगे और स्वतन्त्रता हमारे आंगनमें आकर नाचने लगेगी। कोअी यह न माने कि निश्चिन्त लोगोंको अन्तमें भूखका ही शिकार होना पड़ता है। कीडीको कन और हाथीको मन भर देनेवाला भगवान मनुष्यके लिअे भी अुसकी रोजकी खुराक जुटा ही देता है। सृष्टिके जीव कलकी चिंता न करके दूसरे दिनकी प्रतीक्षा भर करते हैं। पर मनुष्यने घमंडमें आकर यह मान लिया कि मैं ही सृष्टिके निर्माण और नाशका स्वामी हूं। अुसका यह घमंड अीश्वर रोज अुतारता है, मगर मनुष्य अुसे छोड़ना नहीं चाहता। सत्याग्रह यह घमंड दूर करनेके लिअे ही आयोजित वस्तु है।

यंग अिंडिया, २१-५-'३१, पृ० ११८

९५

अपरिग्रहकी ओर

क्या जरूरत है कि हम सब लोग जायदाद रखें? हम अुसे कुछ अुम्र तक रखनेके बाद छोड़ क्यों न दें? धर्माधर्मका जिन्हें खयाल नहीं अैसे व्यापारी बेअीमानीसे भरे मतलबोंके लिअे अैसा करते हैं, तो फिर हम अेक बड़े और नीतियुक्त मतलबको हासिल करनेके लिअे अैसा क्यों करें? हिन्दुओंके लिअे अेक खास अुम्र हो जाने पर यह मामूली बात थी। प्रत्येक हिन्दूसे यह आशा रखी जाती थी कि अेक अर्से तक गृहस्थाश्रममें रहनेके बाद वह वैसा ही जीवन अख्तियार करे, जिसमें जायदाद पास नहीं रखी जाती। यह पुरानी अुम्दा रूढ़ि हम फिरसे ताजी क्यों न करें? आखिर अिसका अर्थ यही होता है कि हम अपने निर्वाहके लिअे अुनकी दया पर निर्भर रहते हैं, जिन्हें हमने अपनी जायदाद सौंप दी है। यह विचार मेरे दिलको बड़ा आकर्षक मालूम होता है। अैसे विश्वासके लाखों अुदाहरणोंमें अेक भी दृष्टांत अैसा नहीं मिलेगा, जिसमें विश्वासका दुरुपयोग हुआ हो।

अवश्य अिसमे से कितने ही नैतिक सवाल पैदा होते है। अेक पिता-पुत्रका दृष्टात लीजिये। यदि पुत्र पिताके जैसा ही असहयोगी है तो फिर पिता अपनी जायदादकी मालिकीके हकका वोझ अुस पर लादकर अुसे क्यो लल-चाये ? अैसे सवाल तो हमेशा ही पैदा होगे। मनुष्यकी नैतिक कीमत कितनी है अिसकी जाच सदाचारके अैसे गूढ प्रश्न वारीकीसे तौलनेकी अुसकी शक्ति कितनी है अिस पर निर्भर है। वेअीमान शख्सोको अिसका दुरुपयोग करनेका मौका न देकर यह रूढि किस तरह व्यवहारमे लाअी जा सकती है, अिसका निर्णय तो अेक वडे अर्सेके अनुभवके वाद ही हो सकता है। फिर भी अिस खयालसे कि अुसका दुरुपयोग होगा, किसीको अिसका प्रयोग करनेके प्रयत्नसे रुकना न चाहिये। गीताके दिव्य रचयिता 'दिव्य गीता' का सदेश देनेसे न रुके, यद्यपि वे शायद जानते थे कि सब प्रकारकी वुराअिया, यहा तक कि खूनको भी न्यायसगत ठहरानेके लिअे अुसको खूब तोडा-मरोडा जायगा।

हिन्दी नवजीवन, ६–७–'२४, पृ० ३८२

९६

पूंजीपतियोंका कर्तव्य

श्री घनश्यामदास विडलाने अुस दिन महाराष्ट्र व्यापारी सम्मेलन (शोलापुर) की अध्यक्षता करते हुअे अेक भाषण दिया, जिसमे अुन्होने अपने विचार श्रोताओके सामने वहुत निःसकोच भावसे प्रगट किये।

पूजीपतियोके कर्तव्य पर वोलते हुअे अुन्होने अेक अैसा आदर्श पेश किया, जिसमें कोअी सुधार या सशोधन करना अेक श्रमिकके लिअे भी कठिन होगा। व्यापारी-वर्गके बीच अेकताकी वकालत करते हुअे अुन्होने कहा

> "लेकिन मुझे स्पष्ट करने दीजिये कि मै व्यापारियोके लिअे जिस अेकताकी सूचना कर रहा हू अुस अेकताका अुद्देश्य सेवा होना चाहिये, शोषण नही। आधुनिक पूजीपतियोकी अिधर कुछ समयसे काफी निंदा की जाती रही है। लोगोकी अैसी धारणा हो गयी है कि अुनका अेक पृथक् वर्ग है। लेकिन प्राचीन कालमे परिस्थिति विलकुल भिन्न थी। अगर हम प्राचीन कालके वैश्यके कार्योका विश्लेषण करे, तो हम पायेगे कि अुन्हे व्यक्तिगत लाभके वजाय सामाजिक भलाअीके लिअे अुत्पादन और वितरणका कर्तव्य सौपा गया था। अपनी सारी सम्पत्ति वह राष्ट्रके हितके लिअे अेक सरक्षकके रूपमे रखता था।

पूजीपति यदि अपना वास्तविक कार्य पूरा करना चाहते है, तो अुन्हे शोपकोके रूपमें न रहकर समाजके सेवकोंके रूपमें रहना चाहिये। अगर हम अपना कर्तव्य समझें और अुसका पालन करे, तो साम्यवाद या वोलशेविज्म नही पनप सकता। मैं तो यहा तक कहूगा कि अपने कर्तव्यकी अुपेक्षा करके हम खुद ही साम्यवाद और वोलशेविज्मको वढनेके लिअे अुपजाअ् जमीन प्रदान करते है। अगर हम अपने कर्तव्यको समझें और अुसका श्रद्धापूर्वक पालन करे, तो मुझे पूरा भरोसा हे कि हम समाजको कअी वुराअियोंसे वचा सकते है। मै वता चुका हू कि हमारा सच्चा कार्य अुत्पादन और वितरण करना हे। आअिये, हम समाजकी सेवाके लिअे अुत्पादन और वितरण करे। हम जीये और यदि सवके हितके लिअे हमें अपना वलिदान भी करना पडे तो अुसके लिअे तैयार रहे।"

यग अिडिया, १९–१२–'२९, पृ० ४१३

९७

विशेष प्रतिनिधित्व

[लन्दनकी दूसरी गोलमेज परिपदकी फेडरल स्ट्रक्चर कमेटीमें दिये हुअे गाधीजीके 'अेक विनम्र शिकायत' नामसे छपे दूसरे भापणसे।]

अव मै अुपधारा पाच — विशेप वर्गोके विशेप मतदार मडलोके प्रतिनिधित्व पर आता हू। वालिग मताधिकारमे मजदूरो और अुनके जैसे वर्गोके खास प्रतिनिधित्वकी कोअी जरूरत नही है, अिसका कारण मै आपको समझाअूगा। काग्रेसकी या मूक गरीवोकी यह अिच्छा विलकुल नही है कि जमीदारोसे अुनकी मिल्कियत छीन ली जाय। वे तो केवल यह चाहते है कि जमीदार मजदूरोके सरक्षक वन जाय। मेरे खयालसे जमीदारोको अिस वातका गौरव महसूस करना चाहिये कि अुनकी रैयत, ये लाखो ग्रामवासी, वाहरसे आनेवाले लोगो या अपनेमे से किसीके वजाय जमीदारोको ही अपने प्रतिनिधि चुनना पसद करती है।

अिसलिअे जमीदार अपनी रैयतका साथ दें अिससे भला और सुन्दर क्या हो सकता है? लेकिन अगर जमीदारोने यह आग्रह रखा कि दो सभाअे हो तो दोमे से अेकमें अथवा अेक सभा हो तो अुसमें अुनके खास प्रतिनिधि लिये जायें, तो वे सचमुच झगडेका वीज वोयेंगे। और मैं आशा

करता हू कि जमीदारो या अैसे किसी वर्गकी तरफसे अैसी माग नही की जायगी।

यग अिडिया, ८–१०–'३१, पृ० २९६, २९८

९८

वैध परिग्रह

अपरिग्रह अस्तेयके साथ जुडा हुआ है। कोअी चीज मूलमे चुराअी हुअी न हो तो भी अुसे चोरीका माल ही कहा जायगा, यदि हम अुसे विना जरूरतके अपने पास रखते है। परिग्रहका अर्थ है भविष्यके लिअे व्यवस्था करना। कोअी सत्य-शोधक, प्रेमपन्थका पथिक, कलके लिअे कोअी वस्तु नही रख सकता। अीश्वर कलके लिअे कुछ भी जमा नही रखता। वह वर्तमानके लिअे जितना आवश्यक हो अुतना ही पैदा करता है, अुससे अधिक कभी पैदा नही करता। असलिअे यदि हमे अुसकी शक्ति और व्यवस्थामे विश्वास है, तो हमे अिस वारेमे निश्चित रहना चाहिये कि वह हमें अपनी नित्यकी रोटी दे देगा, अर्थात् वह हमारी हर जरूरत पूरी कर देगा। सन्तो और भक्तोने, जिनका जीवन अिस प्रकार श्रद्धामय रहा है, अपने अनुभवसे अिस श्रद्धाको सही पाया है। अीश्वरीय कानून मनुष्यको अुसकी दैनिक आजीविका देता है, अुससे अधिक नही देता। अिस कानूनके हमारे अज्ञान या अवहेलनाके कारण असमानताअे पैदा हो गअी है और अुनसे तरह तरहकी मुसीवते हमे अुठानी पडती है। अमीरोके पास अनावश्यक चीजोके भडार भरे रहते है, जिनकी अुन्हे जरूरत नही होती और असलिअे जिनकी अवहेलना और वरवादी होती है। अुधर करोडो लोग जीविकाके अभावमे भूखो मरते है। यदि हरअेक अुतनी ही चीजे अपने पास रखे जितनीकी अुसे जरूरत हो, तो किसीको भी तगी न रहे और सब सतोपसे रहे। आज तो अमीरोको गरीवोसे कम असन्तोष नही है। गरीब आदमी लखपति वनना चाहता है और लखपति करोडपति वनना चाहता है। सन्तोषकी वृत्तिको सर्वत्र फैलानेकी गरजसे वनवानोको अपरिग्रहकी दिशामे पहल करनी चाहिये। यदि वे अपनी सपत्तिको ही साधारण मर्यादाके भीतर रखे, तो भी भूखोको आसानीसे खाना दिया जा सकता है और वे भी अमीरोके साथ साथ सन्तोषका पाठ सीख लेगे। अपरिग्रहके आदर्शकी सम्पूर्ण सिद्धिकी शर्त यह है कि पक्षियोकी तरह मनुष्यके पास कोअी आसरा न हो, कोअी वस्त्र न हो और कलके लिअे भोजन-सामग्री न हो। वेशक अुसे अपनी रोजकी रोटीकी जरूरत होगी, मगर अुसे

जुटाना अीश्वरका काम होगा, अुमका नही। अिस आदर्श तक विरले ही लोग पहुच सकते है। अूपरसे असभव दिखाअी देनेवाले अिम आदर्शमे हम साधारण जिज्ञासुओको दूर नही भागना चाहिये। हमें अिस आदर्शको सदा दृष्टिमे रखना चाहिये और अुसके प्रकाशमे अपने परिग्रहकी जाच करते रहना चाहिये तथा अुसे कम करनेका प्रयत्न करना चाहिये। सच्ची सम्यता आवश्यकताओकी वृद्धिमे नही है, परन्तु जान-बूझकर और स्वेच्छापूर्वक अुनके घटानेमे है। अिसीसे सच्चे सुख और सन्तोषकी वृद्धि तथा सेवाशक्तिकी वृद्धि होती है। अिस कसौटी पर कसकर देखनेसे हमें मालूम होता है कि हम आश्रमवासियोके पास अैसी बहुतसी चीजे है, जिनकी जरूरत हम साबित नही कर सकते और अिस प्रकार हम अपने पडोसियोको चोरी करनेका प्रलोभन देते है।

शुद्ध सत्यकी दृष्टिसे शरीर भी अेक परिग्रह ही है। यह सच कहा है कि भोगकी अिच्छाके कारण आत्माके लिअे शरीरोकी सृष्टि होती है। जब यह अिच्छा मिट जाती है तब फिर शरीरकी आवश्यकता नही रह जाती और मनुष्य जन्म-मरणके कुचक्रसे मुक्त हो जाता है। आत्मा सर्व-व्यापक है, अुसे पिंजडे जैसे शरीरमे बन्द रहने या अुस पिंजडेके खातिर बुराअी करने या किसीके प्राण लेनेकी भी चिन्ता क्यो करनी चाहिये? अिस प्रकार हम सपूर्ण त्यागके आदर्श तक पहुच जाते है और जब तक शरीर रहता है तब तक सेवाके काममे अुसका अुपयोग करना सीखते है, यहा तक कि सेवा, न कि रोटी, हमारे जीवनका आधार बन जाती है। हम केवल सेवाके लिअे खाते, पीते, सोते और जागते है। अैसी मनोवृत्तिसे समय पाकर हमे सच्चा सुख और आनन्ददायक दृष्टि प्राप्त होती है। हम सबको अिस दृष्टि-कोणसे आत्म-निरीक्षण करना चाहिये।

हमे याद रखना चाहिये कि अपरिग्रहका सिद्धान्त वस्तुओकी भाति विचारो पर भी लागू होता है। जो मनुष्य अपने मस्तिष्कको व्यर्थ ज्ञानसे भर लेता है, वह अुस अमूल्य सिद्धान्तका भग करता है। जो विचार हमें अीश्वरसे विमुख करते है, या अुसकी ओर नही ले जाते, वे हमारे मार्गमें बाधक होते है। अिस सम्बन्धमे हम गीताके १३ वे अध्यायमें दी हुअी ज्ञानकी व्याख्याका विचार कर सकते है। वहा हमें यह बताया गया है कि अमानित्व (नम्रता) आदि ज्ञान है, अन्य सब कुछ अज्ञान है। यदि यह सब सच है — और अिसके सच होनेमे कोअी शका नही है — तो आज हम ज्ञान समझकर जिसे गले लगाते है वह सब निरा अज्ञान है और अिस-लिअे अुससे कोअी लाभ होनेके बजाय केवल हानि ही होती है। अिससे दिमाग भटकता है और अन्तमें खाली हो जाता है। असन्तोष फैलता है

और अनर्थ वढते है। कहना न होगा कि यह जडताकी वकालत नही है। हमारे जीवनका अेक अेक क्षण मानसिक या शारीरिक प्रवृत्तिसे भरा होना चाहिये। परन्तु वह प्रवृत्ति सात्त्विक, सत्योन्मुख होनी चाहिये। जिसने अपना जीवन सेवाके लिअे अर्पण कर दिया है, वह अेक क्षण भी वेकार नही रह सकता। परन्तु हमें सत्प्रवृत्ति और दुष्प्रवृत्तिमें भेद करना सीखना होगा। सेवापरायण मनुष्यको यह विवेक सहज ही प्राप्त होता है।

फ्रॉम यरवडा मदिर, प्रक० ६

९९

वैध परिग्रहका बचाव

प्र० — जव तक धन-दौलत है, हर हालतमें, अुसकी हिफाजत भी होनी चाहिये। फिर क्या वजह है कि आप अिस चीजको समझ नही पाते? प्रत्येक स्थितिमे हिसासे वचे रहनेका आपका आग्रह विलकुल अव्यावहारिक और असगत है। मेरे विचारमे अहिसा कुछ चुने हुअे लोगोके ही कामकी चीज हो सकती है।

अु० — अिस सवालका जवाव अिन पृष्ठोमें और 'यग अिडिया' में भी कअी वार किसी न किसी रूपमें दिया जा चुका है। लेकिन यह अेक सनातन सवाल है। अिसलिअे मेरा काम है कि जितनी वार यह पूछा जाय, मै अिसका जवाव दू। और, जव प्रश्नकर्ताके समान सच्चे जिज्ञासु पूछते है, तव तो जवाव देना ही चाहिये। मेरा दावा यह है कि आज भी, जव हमारे समाजकी रचनाका आधार सोच-समझकर अपनाअी हुअी अहिसा नही है, सारे ससारमें मनुष्य-जाति अेक-दूसरेकी भलमनसाहत पर ही जी रही है और अपनी दौलतको वचाये हुअे है। अगर अैसा न होता तो दुनियामें वहुत ही थोडे और वहुत ही क्रूर आदमी वचे होते। लेकिन हकीकत यह नही है। परिवारमे लोग परस्पर स्नेहके वन्धनमें वधे रहते है। और परिवारोकी तरह ही सभ्य माने जानेवाले मानव-समाजमें राष्ट्रोंके अलग अलग दल भी परस्परके अिन वन्धनोसे वधे हुअे हैं। फर्क अितना ही है कि वे जीवनमें अहिसाके नियमको सर्वोपरि नही मानते। अिसका मतलव यह हुआ कि अभी अुन्होने अिसकी असीम शक्तियोकी थाह नही लगाअी है। मै यह कहूगा कि अव तक सिर्फ अपनी जडताके कारण ही हम यह मानते रहे है कि अहिसाका सपूर्ण पालन अपरिग्रह आदि सयम-सूचक व्रतोको धारण करनेवाले कुछ अिनेगिने लोग ही कर सकते हैं। वात यह है कि अगर हमें अहिसाके

क्षेत्रमें नित-नजी शोध करनी हो और मानव-जाति पर शासन करनेवाले अिस सनातन और महान नियमकी नयी नयी शक्तियोंका समय समय पर संसारको परिचय कराना हो, तो अिसके लिअे यम-नियमोंका पालन आवश्यक है। अगर संसारका यही सर्वश्रेष्ठ नियम है, तो यह सबके लिअे कल्याण-कारक होना चाहिये। जो अनेक असफलताअें हमारे देखनेमें आती हैं, वे अिस नियमकी नहीं, अिसका पालन करनेवालोंकी हैं। क्योंकि अुनमें से कअियोंको यह पता तक नहीं रहता कि वे जाने-अनजाने अिस नियमके अधीन बरत रहे हैं। जब मां अपने बच्चेके लिअे खुद मरनेको तैयार हो जाती है, तो वह अनजाने ही अिस नियमका पालन करती है। मैं पिछले पचास बरससे लोगोंको यह समझाता रहा हूं कि वे अिस नियमको समझ-बूझकर अपनायें और असफल होने पर भी अिसके पालनमें दत्तचित्त बने रहें। पचास वर्षके अिस प्रयोगका परिणाम आश्चर्यजनक हुआ है और अहिंसामें मेरी श्रद्धा अुत्तरोत्तर बढ़ती गअी है। मैं दावेके साथ कहता हूं कि लगातार प्रयत्न करते रहनेसे अेक समय वह आयेगा, जब लोग सर्वत्र अीमानदारीसे कमाये हुअे धनका स्वेच्छासे आदर करेंगे और अुसकी रक्षामें सहायक होंगे। अिसमें शक नहीं कि यह धन पापका धन न होगा और जिसमें असमानताओंका वह अद्भुत प्रदर्शन भी न होगा जिसमें आज हम घिरे हुअे हैं। अहिंसाके व्रतधारीको अन्याय और अनीतिसे कमाये जानेवाले धनसे आतंकित न होना चाहिये, क्योंकि अुसके पास हिंसाका सफल प्रतिकार करनेके लिअे सत्याग्रह और असहयोगका अहिंसक शस्त्र मौजूद है। जहां कहीं अिस शस्त्रका सचाअीके साथ पर्याप्त अुपयोग किया गया है, वहां हिंसक शस्त्रोंकी कोअी आवश्यकता ही नहीं रह गअी है। अहिंसाके संपूर्ण शास्त्रको जनताके सामने रखनेका दावा तो मैंने कभी नहीं किया। अुसके लिअे अैसा दावा कभी किया भी नहीं जा सकता। जहां तक मैं जानता हूं, किसी भी भौतिक शास्त्रके लिअे, यहां तक कि गणित जैसे निश्चित शास्त्रके लिअे भी, जिस तरहका दावा नहीं किया जा सकता। मैं तो अेक सत्य-शोधक मात्र हूं और प्रश्नकर्ताकी तरह सत्यकी अिस शोधमें मेरा अनुसरण करनेवाले मेरे कुछ साथी भी हैं। अपने अिन साथियोंको मैं आमंत्रण देता हूं कि सत्यकी अिस अत्यन्त कठिन किन्तु अतिशय रसपूर्ण शोधमें वे मेरा साथ दें।

हरिजनसेवक, १५-२-'४२, पृ० ४३-४४

१००

अन्यायपूर्वक कमाये हुअे धनका त्याग

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र' से।]

ग्रामसेवक विद्यालयके विद्यार्थियोकी ओरसे अेक प्रश्न यह पूछा गया था "लोगोके अन्यायपूर्वक कमाये हुअे धनको कैसे छीना जाय? समाजवादी यही करना चाहते है।"

गाधीजीने जवाब दिया "अिस बातका निर्णय कौन करेगा कि यह न्यायपूर्वक कमाया हुआ है और वह अन्यायपूर्वक? अिसका निर्णय तो केवल अन्तर्यामी अीश्वर ही कर सकता है या फिर धनिको और निर्धनोके द्वारा नियत किये गये योग्य विशेषज्ञ अिसका निर्णय कर सकते है। पर अगर तुम यह कहते हो कि सभी तरहकी मिल्कियत और धन-दौलतका रखना चोरी है, तो फिर सभीको अपनी अपनी सपत्तिका त्याग कर देना चाहिये। क्या हमने यह त्याग किया है? यह आशा रखकर कि दूसरे हमारा अनुसरण करेगे हम खुद सपत्ति-परित्यागका आरम्भ कर दे। अुन लोगोके लिअे, जिनका यह विश्वास है कि अुनकी खुदकी सपत्ति अन्याय-अर्जित है, अिसके सिवा दूसरा कोअी मार्ग ही नही।"

हरिजन, १-८-'३६, पृ० १९३, १९५

१०१

अगर धनवान संरक्षक न बने तो

प्र० — आप कहते है कि राजा, जमीदार या पूजीपति सरक्षक (ट्रस्टी) बनकर रहे। आपके खयालसे क्या अैसे राजा, जमीदार या पूजीपति अभी मौजूद है? या वर्तमान राजा वगैरामे से किन्हीके अिस प्रकार बदल जानेकी अुम्मीद है?

अु० — मेरे खयालसे अैसे कुछ राजा, जमीदार और पूजीपति आज भी है। अिसका मतलब यह नही कि वे पूरे पूरे सरक्षक बन चुके है। लेकिन अुनकी गति अुस ओर है। यह पूछा जा सकता है कि क्या वर्तमान राजाओ ओर दूसरे लोगोसे गरीबोके सरक्षक बननेकी आशा रखी जा सकती है। यदि वे अपने आप ट्रस्टी नही बन जाते है, तो परिस्थितिका जोर जबर-दस्ती अुनसे यह सुधार करा लेगा। हा, वे सपूर्ण विनाशको आमत्रित करे तो दूसरी बात है। जब पचायत-राज स्थापित हो जायेगा, तो लोकमत वह काम

करेगा जो हिंसा कभी नहीं कर सकती। जमींदारों, पूंजीपतियों और राजाओंकी वर्तमान सत्ता तभी तक कायम रह सकती है, जब तक साधारण लोग अपनी खुदकी ताकतको अच्छी तरह पहचान नहीं लेते। यदि लोग जमींदारी या पूंजीवादकी बुराअीके साथ असहयोग कर दें, तो वह निष्प्राण होकर मर जायगी। पंचायत-राजमें पंचायतकी ही बात मानी जायेगी और पंचायत अपने बनाये हुअे कानूनके जरिये ही काम कर सकती है।

हरिजनसेवक, १-६-'४७, पृ० १४८

१०२
विपत्तिसे बचें

हालके अुत्तर प्रदेशके दौरेमें मुझे जितना हर्ष अिस बातको देखकर हुआ अुतना और किसी बातसे नहीं हुआ कि कअी युवक जमींदारों और तालुकेदारोंने अपने जीवनको काफी सादा बना लिया है और देशभक्तिपूर्ण अुत्साहसे प्रज्वलित होकर वे किसानोंका भार कम कर रहे हैं। मैंने बहुतसे जमींदारोंके कथित अत्याचारोंके भयंकर वर्णन सुने थे और यह भी सुना था कि वे तरह तरहके मौकों पर किस तरह जायज और नाजायज कर वसूल करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप किसानोंकी स्थिति बिलकुल गुलामकी-सी हो गअी है। अिसलिअे अिस तरहके कअी नौजवान तालुकेदार जब मेरे देखनेमें आये, तो मुझे सानंद आश्चर्य हुआ।

परन्तु अिस सुधारके और आगे बढ़ने और संपूर्ण होनेकी जरूरत है। अुनमें से अच्छेसे अच्छोंके और किसानोंके बीच अभी भी अेक बड़ी खाअी है। जो थोड़ासा काम किया गया है अुसके लिअे अुनके मनमें अहंकार-मूलक कृपाकी और आत्म-संतोषकी भावना भी है, जो नहीं होनी चाहिये। असल बात यह है कि कुछ भी किया जाय, वह किसानोंको अुनका हक देरसे लौटा देनेके सिवा और कुछ नहीं है। यह वर्णाश्रम धर्मकी भयंकर विकृतिका परिणाम है कि तथाकथित क्षत्रिय अपनेको श्रेष्ठ मानता है और गरीब किसान परम्परागत निकृष्टताका दर्जा चुपचाप यह मानकर स्वीकार कर लेता है कि अुसके भाग्यमें वही लिखा है। यदि भारतीय समाजको शान्तिपूर्ण मार्ग पर सच्ची प्रगति करनी है, तो धनिक वर्गको निश्चित रूपसे यह स्वीकार कर लेना होगा कि किसानके भी वैसी ही आत्मा है जैसी अुनके है और अपनी दौलतके कारण वे गरीबसे श्रेष्ठ नहीं हैं। जैसा जापानके अुमरावोंने किया, अुसी तरह अुन्हें भी अपने आपको संरक्षक मानना चाहिये। अुनके पास जो धन है अुसे यह समझकर अुन्हें रखना चाहिये कि अुसका अुपयोग अुन्हें अपने

सरक्षित किसानोकी भलाअीके लिअे करना है। अुस हालतमे वे अपने परिश्रमके कमीशनके रूपमे वाजिव रकमसे ज्यादा नही लेगे। अिस समय धनिक वर्गके सर्वथा अनावश्यक ठाठवाट और फिजूलखर्चीमे तथा जिन किसानोके वीचमे वे रहते है अुनके गदगी भरे वातावरण और कुचल डालनेवाले दारिद्रयमे कोअी अनुपात नही हे। अिसलिअे अेक आदर्श जमीदार किसानका वहुत कुछ वोझा, जो वह अभी अुठा रहा है, अेकदम घटा देगा। वह किसानोके गहरे सपर्कमे आयेगा और अुनकी आवश्यकताओको जानकर अुस निराशाके स्थान पर, जो अुनके प्राणोको सुखाये डाल रही है, अुनमे आशाका सचार करेगा। वह किसानोके सफाअी और तन्दुरुस्तीके नियमोके अज्ञानको दर्शककी तरह देखता नही रहेगा, वल्कि अिस अज्ञानको दूर करेगा। किसानोके जीवनकी आवश्यकताओकी पूर्ति करनेके लिअे वह स्वय अपनेको दरिद्र वना लेगा। वह अपने किसानोकी आर्थिक स्थितिका अध्ययन करेगा और अैसे स्कूल खोलेगा, जिनमे किसानोके वच्चोके साथ साथ वह अपने खुदके वच्चोको भी पढायेगा। वह गावके कुअे और तालावको साफ करायेगा। वह किसानोको अपनी सडके और अपने पाखाने खुद आवश्यक परिश्रम करके साफ करना सिखायेगा। वह किसानोके वेरोकटोक अिस्तेमालके लिअे अपने खुदके वाग नि सकोच भावसे खोल देगा। जो गैर-जरूरी अिमारते वह अपनी मौजके लिअे रखता है, अुनका अुपयोग अस्पताल, स्कूल या अैसे ही दूसरे कामोके लिअे करेगा। यदि पूजीपति वर्ग कालका सकेत समझकर सम्पत्तिके वारेमे अपने अिस विचारको वदल डाले कि अुस पर अुसका अीश्वर-प्रदत्त अधिकार है, तो जो सात लाख घूरे आज गाव कहलाते है अुन्हे आनन-फाननमे शान्ति, स्वास्थ्य और सुखके धाम वनाया जा सकता है। मेरा दृढ विश्वास है कि यदि पूजीपति जापानके अुमरावोका अनुसरण करे, तो वह सचमुच कुछ खोयेगा नही और सव कुछ पायेगा। केवल दो मार्ग है जिनमे से पूजीपतियोको अपना चुनाव कर लेना है। अेक तो यह कि पूजीपति अपना अतिरिक्त सग्रह स्वेच्छामे छोड दे ओर अुसके परिणामस्वरूप सवको वास्तविक सुख प्राप्त हो जाय। दूसरा यह कि अगर पूजीपति समय रहते न चेते, तो करोडो जाग्रत किन्तु अज्ञान और भूखे लोग देशमे अैसी गडवड मचा दे जिसे अेक वलशाली हुकूमतकी फौजी ताकत भी नही मिटा सकती। मैने यह आशा रखी हे कि भारतवर्ष अिस विपत्तिसे वचनेमे सफल रहेगा। अुत्तर प्रदेशके कुछ नौजवान तालुकेदारोसे मेरा जो घनिष्ठ सपर्क हुआ हे, अुससे मेरी यह आशा वलवती वनी है।

यग अिडिया, ५–१२–'२९, पृ० ३९६

सूची

अन्य विचारप्रेरक पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
आत्म-रचना अथवा आश्रमी शिक्षा भाग १-२-३	४ ५०
आशाका एकमात्र मार्ग	२ ००
उस पारके पडोसी	३ ५०
एकला चलो रे	२ ००
गाधी ओर माम्यवाद	१ २५
गाधीजी और गुरुदेव	० ८०
गाधीजीकी साधना	३ ००
गीता-मथन	३ ००
ग्राम-सस्कृतिका अगला चरण	१ ८०
जडमूलसे क्रान्ति	१ ५०
जीवन-शोधन	३ ००
तालीमकी वुनियादे	२ ००
नेहरूजी — अपनी ही भाषामे	३ ५०
वापूकी छायामे	४ ००
विहारकी कौमी आगमे	३ ००
वुनियादी शिक्षामे अनुवधकी कला	२ ५०
राजा राममोहनरायसे गाधीजी	२ ००
विचार-दर्शन १–२	३ ००
विवेक और साधना	४ ००
शराववदी क्यो ?	० ६२
शिक्षाका विकास	१ २५
शिक्षामे विवेक	१ ५०
ससार और धर्म	२ ५०
सूर्योदयका देश	२ ५०
स्मरण-यात्रा	३ ५०
स्त्री-पुरुष-मर्यादा	१ ७५
हमारी वा	२ ००

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४

मेरे सपनोका भारत

लेखक गाधीजी

अिस सग्रहमे भारतके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि सारे महत्त्वपूर्ण प्रश्नो पर गाधीजीके विचार पेश किये गये है। अिनमे पता चलता है कि राष्ट्रपिता स्वतत्र भारतसे क्या क्या आशाये रखते थे, और अुसका कैसा निर्माण करना चाहते थे। राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अपनी प्रस्तावनामे लिखते है "मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक गाधीजीकी शिक्षाके बुनियादी अुसूलोको प्रस्तुत करनेवाले साहित्यमे अेक कीमती वृद्धि करेगी।"

कीमत २ ५०   डाकखर्च १ ००

शरीर-श्रम

लेखक गाधीजी

हमारे समाजमे शरीरकी मेहनतको और मेहनत करके रोटी कमानेवालोको हलकी नजरमे देखा जाता है। गाधीजीने श्रमकी प्रतिष्ठाको बढानेका प्रयत्न किया। यहा अिस विषयमे गाधीजीके जो विचार पेश किये गये है, अुनसे शरीर-श्रमकी व्याख्या और अुसके महत्त्वका, अुसकी आवश्यकताका और समाजको अुससे होनेवाले लाभोका पता चलता है।

कीमत ० २५   डाकखर्च ० १३

सर्वोदय

लेखक गाधीजी

गाधीजीके मतानुसार सर्वोदयका अर्थ आदर्श समाज-व्यवस्था है। अिस पुस्तकमे सर्वोदयकी विस्तृत चर्चा की गअी है और बताया गया है कि वह कैसे सिद्ध किया जा सकता है। अिस सग्रहका अुद्देश्य ससारके सामने गाधीजीका शाति और स्वतत्रताका अुदात्त सदेश पेश करना है।

कीमत २ ००   डाकखर्च ० ८५

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४